ISSN 0976-0830

Mānaviki

A PEER REVIEWED INTERDISCIPLINARY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

Volume 16 • Number 1 • 'Varsh Pratipada', April 2025

विशेषांक

(संगोष्ठी कार्यवृत्त)

: अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी :

सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः

(महाकुम्भ २०२५ : परम्परा, अनुष्ठान एवं महत्त्व)

फाल्गुन कृष्ण नवमी एवं दशमी, कलियुगाब्द ५१२६

विक्रमी संवत् २०८१, तद्नुसार - शनिवार एवं रविवार

दिनांक २२-२३ फरवरी, २०२५

Editors

Pradeep Kumar Rao

Om Jee Upadhyay

Subodh Kumar Mishra

The Journal of Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhusan, Gorakhpur (U.P.)

Mānavikī

A PEER REVIEWED INTERDISCIPLINARY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

Editorial Advisory Board

U.P. Singh, Ex Vice Chancellor, V.B.S. Purvanchal University, Jaunpur

Surendra Dubey, Ex Vice Chancellor, Siddhartha University, Kapilvastu, Siddharthanagar

V.K. Singh, Ex Vice Chancellor, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Shri Prakash Mani Tripathi, Ex Vice Chancellor, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak (M.P.)

Chandrashekhar, Ex Vice Chancellor, Raja Mahendra Pratap Singh Vishwavidyalaya, Aligarh

Murli Manohar Pathak, Vice Chancellor, Sri Lal Bahadur Shastri Central Sanskrit University, New Delhi

A.K. Singh, Ex Vice Chancellor, Mahayogi Guru Gorakhnath Ayush Vishwavidyalaya, Gorakhpur

K. Ramchandra Reddy, Vice Chancellor, Mahayogi Guru Gorakhnath Ayush Vishwavidyalaya, Gorakhpur

Surinder Singh, Vice Chancellor, Mahayogi Gorakhnath University, Gorakhpur

Sadanand Prasad Gupta, Ex Executive Chairman, U.P. Hindi Sansthan, Lucknow

V.K. Srivastava, Professor, Geography. D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Pratibha Khanna, Professor, Education. D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

S.S. Das, Professor, Chemistry, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

D.K. Singh, Professor, Zoology, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Rajawant Rao, Professor, Ancient History, Archaeology and Culture. D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Himanshu Chaturvedi, Professor, History, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Harsh Sinha, Professor, Defence and Strategic Studies, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Shikha Singh, Professor, English, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Divya Rani Singh, Professor, Home Science, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Shailja Singh, Professor, Education, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Raj Sharan Shahi, Professor, Education, Bhimrao Ambedkar Central University, Lucknow

Vivek Nigam, Professor, Economics, Ewing Christian College, Prayagraj

Pragya Mishra, Professor, Ancient History, Ram Manohar Lohia Awadh University, Faizabad

Rajesh Singh, Professor, Political Science, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Vinod Kumar Singh, Professor, Defence & Strategic Studies, D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

Mrityunjay Kumar, Renowned Journalist

ISSN 0976-0830

Mānaviki

A PEER REVIEWED INTERDISCIPLINARY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
Volume 16 • Number 1 • 'Varsh Pratipada', April 2025

विशेषांक

(संगोष्ठी कार्यवृत्त)

: अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी :

सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः

महाकुम्भ 2025 : परम्परा, अनुष्ठान एवं महत्त्व

फाल्गुन कृष्ण नवमी एवं दशमी, कलियुगाब्द 5126

विक्रमी संवत् 2081, तद्नुसार - शनिवार एवं रविवार

दिनांक 22-23 फरवरी, 2025

The Journal of
Maharana Pratap Mahavidyalaya
Jungle Dhusan, Gorakhpur (U.P.)

This Journal is a Peer Reviewed & *Referral* Volume.

ISSN-0976-0830

Volume 16 ● Number 1 ● Varsh Pratipada, April 2025

Mānaviki, an interdisciplinary *referred & peer reviewed* journal of Humanities and Social Sciences is a biannual (Varsh Pratipada and Vijaya Dashami, i.e. April and October months of a year) and bilingual journal of Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhusan, Gorakhpur (UP).

Copyright of the published articles, including abstracts, vests in the Editors. The objective is to ensure full Copyright protection and to disseminate the articles, and the journal, to the widest possible readership. Authors may use the article elsewhere after obtaining prior permission from the editors.

Research Papers related to Humanities and Social Sciences are invited for publication in the journal. Research papers, book reviews, Subscription and other enquiries should be sent to - Subodh Kumar Mishra, Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhusan, Gorakhpur - 273014 (U.P.), Mob.: 9452971570, 7376584058. You may also e-mail your contributions and correspondence at *manavikijournals@gmail.com* or *mpmpg5@gmail.com*

Guidelines for Contributors given on the inner side of the back cover.

The Editors and the Publisher cannot be held responsible for errors and any consequences arising from the use of information contained in this journal. The views and opinions expressed do not necessarily reflect those of the editors and the publisher.

Designed & Printed at : R-Tech Offset Printers, Delhi

Subscription Rates

	Individual		Institutional	
Annual	Rs. 300	US $ 30	Rs. 500	US $ 50
Five Years	Rs. 1250	US $ 80	Rs. 2000	US $ 125
Life (15 Years)	Rs. 2500	US $ 150	Rs. 4000	US $ 200

Mānaviki
A Peer Reviewed Interdisciplinary Journal of Humanities & Social Sciences
Volume 16 Number 1 Varsh Pratipada, April 2025

CONTENTS

Articles **Pages**

1. भारतीय धार्मिक चेतना में स्नान, तीर्थाटन एवं महाकुम्भ पर्व : एक ऐतिहासिक विश्लेषण
   प्रो. विपुला दुबे........5
2. कुम्भ-मंथन
   रण विजय सिंह........15
3. महापर्व कुम्भ संगम में स्नान का महत्त्व : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण
   प्रो. (डॉ.) शिवशरण दास........18
4. Maha Kumbha 2025 : A Lifetime Experience
   Prof. Bhabatosh Biswas........22
5. Maha Kumbh Mela 2025: Socio-Religious Dimensions and Philosophy
   Prof. B.B. Malik........24
6. Socio-Economic Perspective of Mahakumbh : An Overview
   Prof. Usha Kumari........31
7. भारतीय समाज और संस्कृति पर कुम्भ का प्रभाव
   डॉ. पुष्पा सिंह........39
8. कुम्भ के दौरान धार्मिक अनुष्ठानों एवं प्रथाओं का महत्व
   डॉ. नीलम सिंह........45
9. कुम्भ तीर्थ : एक अवलोकनात्मक दृष्टि
   डॉ. सुनील कुमार........52
10. भारतीय समाज और संस्कृति पर कुम्भ का प्रभाव
   देवेन्द्र कुमार सिंह........62
11. महाकुम्भ और सनातन चेतना
   डॉ. विश्वम्भर द्विवेदी........68
12. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में महाकुम्भ पर्व
   अनूप कुमार पांडेय........73

13. महाकुम्भ : सनातन चेतना का प्रतीक
शैलेश कुमार.....77
14. भारतीय सनातन संस्कृति, समाज और कुम्भ मेला
डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र.....83
15. महाकुम्भ : आराधना से साधना तक
सुश्री श्वेता सिंह.....89
16. महाकुम्भ-2025: सुशासन के आवरण में सनातन सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक
डॉ. विनय कुमार पटेल.....92
17. अमृतकुम्भ (कुम्भपर्व की पृष्ठभूमि में)
डॉ. सुशीलकुमार पाण्डेय 'साहित्येन्दु'.....103
18. नारदपुराण में प्रयाग के मकर स्नान का शैक्षिक दर्शन
डॉ. समीरकुमार पाण्डेय.....108
19. महाकुम्भ (प्रयागराज) 2025 : एक भौगोलिक अध्ययन
सन्तोष यादव.....113
20. कुम्भ मेलों का ऐतिहासिक महत्त्व
डॉ. वीरेन्द्र चावरे.....119
21. महाकुम्भ-आस्था, संस्कृति, परम्परा और मानवता के संगम का भव्य उत्सव
प्रो. सुषमा पाण्डेय, कु. नित्या गुरुंग.....124
22. महाकुम्भ का परिचय एवं मानव जीवन में महत्त्व
डॉ. आरती सिंह.....132
23. प्रयागकुम्भ का माहात्म्य
हरिकेश यादव.....136
24. भारतीय समाज और संस्कृति पर कुम्भ का प्रभाव
डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय.....141
25. महाकुम्भः समरसताश्च
डॉ. मनीषा त्रिपाठी.....146
26. महाकुम्भः 'भारतीय ज्ञान परम्परा' का दैदीप्यमान पर्व
ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह.....149
27. Mahakumbh in Ancient Scriptures : A Comprehensive Study
Vikas Kumar.....157
28. सनातन का शंखनाद : रामलला प्राण प्रतिष्ठा और महाकुम्भ-2025
अजय कुमार सिंह, डॉ. प्रदीप कुमार राव.....165
29. परिशिष्ट.....189

Mānavikī सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

भारतीय धार्मिक चेतना में स्नान, तीर्थाटन एवं महाकुम्भ पर्व : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

प्रो. विपुला दुबे*

महाकुम्भ पर्व[1] भारत की धार्मिक, आध्यात्मिक एवं खगोलीय चेतना का महोत्सव (पर्व) है जिसे भारतीय मनीषा की विराट्, वैश्विक एवं अभेदपूर्ण दृष्टि का साक्षी कहा जा सकता है। कुम्भ या महाकुम्भ वर्ग, जाति, लिङ्ग एवं देशगत सीमा एवं हिंसा से परे एक ऐसा धार्मिक आयोजन है जो हर व्यक्ति को कुम्भयोग के अवसर पर नदियों में 'स्नान' एवं उससे प्राप्त धार्मिक लाभ का अवसर देता है। और यही इसकी लोकप्रियता एवं धार्मिक आस्था का बड़ा कारण प्रतीत होता है।[2] ध्यानार्थ है कि भारत में श्रौत (वैदिक यज्ञादि) एवं स्मार्त धर्म (स्मृति पोषित) विशेष रूप से प्रभावी रहे हैं। श्रौत परम्परा जहाँ अभिजनों (वर्ग विशेष) को यज्ञादि का विशेष अवसर देती रही है, वहीं स्मार्त धर्म ने केन्द्र में 'लोक' को स्थापित कर दिया और इन्हीं के चतुर्दिक धार्मिक कृत्यों का ताना-बाना बुना गया। यह भारतीय मनीषा के उस सतत धार्मिक चिन्तन, विश्लेषण का परिणाम था जो देश-काल के परिवर्तन के साथ अपेक्षित था।

उल्लेख्य है कि उत्तर वैदिक काल में यज्ञों के यजन के समानान्तर जिन धार्मिक कृत्यों को सर्वसमाज के लिए प्रस्तावित किया गया उनमें स्नान (कुम्भ, पवित्र नदियों में), तीर्थाटन, दान, मन्दिर, मूर्ति, जलाशय इत्यादि का निर्माण प्रमुख थे।[3]

भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों में (कला, धर्म इत्यादि) जल से पूर्ण कलश या कुम्भ का अपना अलग वैशिष्ट्य रहा है।[4] घट, घड़ा, कलश (Pitcher, Water Jar), राशिचक्र-कुम्भराशि, राजशीर्ष (The Sign of Zodiac Aquarius)[5] अर्थ का वाची जल से परिपूर्ण 'कुम्भ' भारतीय सांस्कृतिक चेतना में पूर्णता, रचनाधर्मिता (गर्भाशय, कुम्भज) अमरता, मंगल या सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। इसका प्रमाण 'पूर्ण-घट' धारण की हुई ऋग्वेदीय स्त्रियाँ हैं जिन्हें 'उदक कुम्भिनी' कहा गया है।[6] इसी प्रकार 'उदक कुम्भकन्याओं' का भी उल्लेख अभिषेक के अवसर (श्रीराम एवं युधिष्ठिर के यज्ञ में) पर मिलता है जो पुरोहितों एवं मुनियों के पूर्व राजाओं को अभिषिक्त करती थीं। यह उनकी पवित्रता का आख्यान है।[7]

---

*पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

वैदिक वाङ्मय[8] में 'कुम्भ' का बहुशः उल्लेख है। सर्वत्र यह कुम्भ-कलश पूर्णता या अमरता, अमृतत्त्व की व्यञ्जना करता प्रतीत होता है। अथर्ववेद[9] में 'कलश' को नदियों का प्राण कहा गया है। इसी प्रकार ऋग्वेद में वर्णित 'भद्रकलश' (सोमरस से परिपूर्ण) एवं अथर्ववेद[10] में उल्लिखित घृत एवं अमृत से परिपूर्ण कुम्भ में परवर्ती 'महाकुम्भ' पर्व के मूल बीज के बिम्ब को देखा जा सकता है। पौराणिक आख्यानों में समुद्र-मन्थन से प्राप्त चौदह रत्नों में से 'अमृतघट' ही इस कुम्भ आयोजन का हेतु बना। इसी मूल तत्त्व का वितान पुराणों के समुद्र-मन्थन (देवासुर संग्राम) आख्यान में दिखाई देता है।

उल्लेख्य है कि परवर्ती काल में 'पूर्णकुम्भ' का सम्बन्ध ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश से स्थापित किया गया, जो यह दर्शाता है कि घट रूपी मनुष्य किस प्रकार विराट् विश्वरूपी 'महाकुम्भ' से व्यष्टि रूप में, पुनः उसी समष्टि रूपी महाकुम्भ में समाहित हो जाता है। वैदिक वाङ्मय[11] से मृत्जनों की हड्डियों को 'कलश' में स्थापित करने का उल्लेख मिलता है जो इसी तथ्य की ओर संकेत करता है।

मनुष्य अपनी जीवनयात्रा में सर्वाधिक भयभीत मृत्यु से रहा है, जो ध्रुव है। उस पर विजय पाने या आवागमन के चक्र से मुक्त होने के जो अनेक उपक्रम मानव के द्वारा किये गये या भारतीय मनीषा के द्वारा प्रस्तावित किये गये उनमें नदी-स्नान तीर्थाटन के साथ कुम्भयोग[12] के अवसर पर कुम्भ-स्नान को एक बड़ा फलक मिला क्योंकि इस धार्मिक कृत्य के सम्पादन में कोई भेद-भाव नहीं था, जिसका प्रत्यक्ष दर्शन विश्व ने 2025 के 'महाकुम्भ' में किया है। उल्लेख्य है कि यह स्मार्त कृत्य पाप-प्रच्छालन के साथ आवागमन-चक्र से मुक्ति दिलाने वाला 'निवर्तक' धर्म था।[13]

यहाँ प्रश्न है कि कुम्भपर्व या उत्सव का आयोजन कब से और क्यों होने लगा? महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारतवर्ष के जिन चार पवित्र स्थलों, प्रयाग, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन में क्रमशः बृहस्पति के वृषभ राशि, कुम्भ राशि, सिंह एवं वृश्चिक राशि में प्रवेश होने पर कुम्भ योग बनता है[14] और यह कुम्भ योग 12 वर्षों एवं 6 वर्षों के अन्तराल पर आता है जो क्रमशः महाकुम्भ एवं अर्द्धकुम्भ के स्नान का धार्मिक आधार है।

प्रस्तुत आलेख में स्मृतियों एवं पुराणों में बहुप्रशंसित निवर्तक धर्मों में परिगणित (कुम्भ) स्नान, दान, कूप, जलाशय उत्खनन तथा पवित्र स्थलों की बदलती अवधारणा का इतिहास क्या है? इस पर विचार किया गया है।

इस सन्दर्भ में यदि भारतीय संस्कृति का सजग, सूक्ष्म अवगाहन किया जाय तो ज्ञात होता है कि भारतीय मनीषी, चिन्तक देश-काल के परिवर्तन के साथ अपनी धार्मिक चेतना का भी परीक्षण, परिष्कार करते रहे हैं। यही कारण है कि भारत में (हिन्दू-संस्कृति) धार्मिक जड़ता कभी नहीं आयी। इसका बड़ा प्रमाण वैदिक काल से लेकर परवर्ती काल तक धर्म, धार्मिक कृत्य एवं पवित्र स्थलों की बदलती अवधारणा में निहित है। प्रारम्भिक वैदिक समाज यज्ञप्रधान था तथा ऋत्, सत्य, धर्म, तपश्चर्या इनके जीवन का गन्तव्य था। उल्लेख्य है कि स्मार्त (स्मृति पोषित), पौराणिक

एवं आगमिक ग्रन्थों में गृहस्थ के लिए षट्कर्म (सन्ध्यास्नानं जपो होमं स्वाध्यायोदेवतार्चनम्। वैश्वेदेवातिथियंच षट्कर्माणि दिने-दिने। पराशर, I)[15] पर जोर दिया गया। इनमें भी स्नान, पवित्र स्थलों (त्रि-स्थली प्रयाग, काशी, गया) की यात्रा, दान महत्त्वपूर्ण धार्मिक कृत्यों में समाहित हो गया। श्रुतिपोषित कर्म (वैदिक यज्ञ) एवं स्मृति पोषित (स्नान, दान, तीर्थाटन, मूर्ति-मन्दिर निर्माण, कूप, तालाब उत्खनन इत्यादि)[16] कर्म में बड़ा अन्तर यह था कि जहाँ वैदिक यज्ञ करने का अधिकार वर्ग विशेष को था वहीं स्मार्त कर्म अर्थात् तीर्थाटन, स्नान, दान इत्यादि समाज का प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री, चाण्डाल, शूद्र इत्यादि) कर सकता था तथा फल की प्राप्ति में कोई भेदभाव नहीं था। वैदिक यज्ञ सांसारिक सुख एवं स्वर्ग प्राप्ति का साधन था तो वहीं स्मार्त कर्म को (स्नान, तीर्थाटन) सांसारिक भोग-मोक्ष दोनों की प्राप्ति का हेतु कहा गया है (नदी वहति पापघ्नी मुक्ति-भुक्ति प्रदायिनी)। पवित्र नदी में स्नान एवं पवित्र स्थलों की यात्रा मात्र से भोग एवं मुक्ति दोनों की प्राप्ति का आश्वासन सभी वर्ग को मिला। यही कारण था स्मार्त-आगमिक धर्म धीरे-धीरे विशेष वर्ग से लेकर सामान्य जनों में अत्यन्त लोकप्रिय होता गया।

इतिहास साक्षी है कि वैदिक यज्ञों का सम्पादन शुङ्ग-सातवाहनों से लेकर गुप्त एवं वाकाटकों के शासनकाल तक विशेष रूप से हुआ (पुष्यमित्र, नागान्तिका, भवनाग, समुद्रगुप्त, कुमारगुप्त, प्रवरसेन इत्यादि)। इसके पश्चात् वृहद् स्तर पर वैदिक यज्ञों का सम्पादन अवरुद्ध हुआ। इसका स्थान पवित्र नदियों, तीर्थस्थलों की यात्रा, मन्दिर, मूर्ति निर्माण इत्यादि ने ले लिया। द्वितीय सदी ई. से ही तीर्थस्थलों पर वृहद् स्नान का उल्लेख मिलने लगता है।[17] राजा भी यज्ञ के स्थान पर लोक-कल्याणकारी कृत्य सम्पन्न करने लगे तथा स्वयं भी तीर्थाटन एवं पवित्र नदी में जल-समाधि लेने लगे। इस विषय पर विमर्श से पूर्व पवित्र स्थलों की बदलती अवधारणा (Concept of Holi Land) पर मैं चर्चा करना चाहूँगी।

पवित्र भूमि की अवधारणा एवं तीर्थस्थलः

भारतीय इतिहास के प्रारम्भिक चरण में पवित्रस्थल के रूप में ब्रह्मावर्त[18] (सरस्वती एवं दृषद्वती के मध्य का भू-भाग) एवं ब्रह्मर्षि देश[19] का नाम विशेष रूप से मिलता है। यह वह क्षेत्र था जो पवित्र यज्ञभूमि के रूप में ख्यात था। उल्लेखनीय है कि इसी क्षेत्र (मत्स्य - राजस्थान, कुरुक्षेत्र, शूरसेन, मथुरा) से द्वितीय सदी ई. से तृतीय-चतुर्थ सदी ई. के 'यज्ञयूप' अभिलेख भी प्राप्त हैं।[20] इन स्थलों एवं यहाँ के लोगों की नैतिकता की गाथाएँ प्रारम्भ से परवर्ती काल के ग्रन्थों तक (कुरुधम्मजातक) मिलती हैं। भगवद्गीता में कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा गया है। ध्यानार्ह है कि उत्तरवैदिक काल से पवित्र स्थलों की अवधारणा बदलती है तथा पश्चिमोत्तर से मध्य गंगाघाटी में स्थानान्तरित होती दिखाई देती है। इसमें त्रि-स्थली (प्रयाग, काशी, मथुरा) का महत्त्व विशेष रूप से बढ़ गया। स्मृतियों एवं पुराणों (विष्णु, मत्स्य, पद्म, नरसिंह इत्यादि) में इनके माहात्म्य का बहुशः वर्णन हम पाते हैं। यहाँ स्थान परिवर्तन के साथ धार्मिक चेतना में भी परिवर्तन आया। वैदिक यज्ञों के स्थान पर लोकधर्म (स्नान, तीर्थाटन इत्यादि) की महत्ता बढ़ी। इसका ऐतिहासिक रूप में

समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता स्वीकार की गयी। इस कारण अनेक जातियों का अस्तित्व में आना तथा वैदिक यज्ञों का एक जाति एवं वर्ग विशेष तक सीमित होना, दूसरी ओर स्मार्त कर्म को सभी के लिए खोल देना इसकी लोकप्रियता का कारण बना।

सर्वप्रथम मैं 'प्रयाग' जिसे तीर्थराज की संज्ञा मिली तथा 'कुम्भ' के आयोजन के चार पवित्र स्थलों- प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, उज्जैन में से एक है, उस पर चर्चा करूँगी। महाभारत के वनपर्व[21] में यज् धातु से यज्ञ के अर्थ में प्रयाग की व्युत्पत्ति बतायी गयी है अर्थात् वह स्थल जहाँ प्रकृष्ट यज्ञ सम्पन्न हुआ। एक मत से भगवान् ब्रह्मा (प्रजापति) ने स्वयं यहाँ यज्ञ किया, इसलिए इसे प्रयाग या प्रजापति क्षेत्र कहते हैं। गुप्त महीपति समुद्रगुप्त ने भी दीर्घकाल तक चलने वाले 12 वर्षीय अश्वमेध यज्ञ का यजन प्रयाग में ही किया था तथा यह सम्भावना व्यक्त की जाती है कि अशोक के जिस 35 फीट ऊँचे पाषाण स्तम्भ पर समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति उत्कीर्ण है उसे यज्ञयूप के रूप में उपयोग किया गया था तथा उसी समय उस स्तम्भ को कौशाम्बी से प्रयाग लाया गया था जो सम्प्रति अकबर के किले में संरक्षित है।[22]

उल्लेख्य है कि ब्रह्मावर्त तथा ब्रह्मर्षि देश भी भगवान् ब्रह्मा से सम्बद्ध थे तथा यज्ञ, ज्ञान एवं पवित्रता के वाची थे। प्रयाग को पुराणों में 'प्रजापति क्षेत्र' कहा गया है। लेकिन ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठ साक्ष्य के रूप में भवदत्तवर्मन के रिथपुर ताम्रपत्र[23] में (लगभग 300 ई. से 600 ई.) प्रयाग को 'प्रजापति क्षेत्र' कहा गया है। विश्वरूपसेन के अभिलेख में भी ब्रह्मा के द्वारा त्रिवेणी के किनारे यज्ञ सम्पन्न करने का उल्लेख मिलता है।[24] उल्लेखनीय है कि मत्स्य एवं कूर्म पुराण में (1.36) 'प्रजापति क्षेत्र' का वर्णन मिलता है लेकिन रामायण एवं महाभारत में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं मिलता। यद्यपि वटवृक्ष का उल्लेख रामायण में मिलता है।[25] गंगा, यमुना एवं अन्तःसलिला सरस्वती के संगम का साक्षी 'प्रयाग' (प्रतिष्ठान) के गौरव का गान अनेक पुराणों में हुआ है। 'प्रयाग' का इसलिए भी विशेष महत्त्व था क्योंकि इस भूमि में एक साथ ब्रह्मा, विष्णु (योगमूर्ति या बेनीमाधव) तथा शिव (वटवृक्ष के रूप में) के निवास का विवरण प्राप्त होता है। विष्णु, मत्स्य एवं पद्म पुराण में प्रयाग की पवित्र भूमि का वर्णन करते हुए कहा गया है कि पाँच योजन की परिधि में विस्तृत इस भूमि की मिट्टी के स्पर्श मात्र से ही मनुष्य 1000 अश्वमेध, 100 वाजपेय एवं एक करोड़ बार पृथ्वी की परिक्रमा का फल प्राप्त करता है।[26] उल्लेखनीय तथ्य यह है कि पुराणों में वैदिक यज्ञों को स्थानापन्न कर तीर्थस्थलों की महिमा का गान होने लगा जो सभी के धर्मलाभ के लिए समानरूपेण खुला हुआ था। इतिहास साक्षी है कि राजा-रंक, स्त्री-पुरुष (कलचुरि शासक गांगेयदेव ने अपनी रानियों के साथ प्रयाग में आत्मोत्सर्ग किया था), ब्राह्मण, शूद्र, चाण्डाल सभी तीर्थाटन तथा स्नान कर सकते थे (अधिकारी भवेच्छूद्रः पूर्तधर्मे न वैदिकी)[27]।

ग्रहों की राशि प्रविर्तन[28] पर स्नान या कुम्भ स्नान का प्रथम ऐतिहासिक बिम्ब उत्तरगुप्त शासक आदित्यसेन के अपसढ़ अभिलेख[29] में दिखाई देता है। कुम्भ पर्व का इतिहास समुद्र-मन्थन से प्राप्त 'अमृतघट' से उद्भूत प्रतीत होता है। इस अभिलेख में उत्तरगुप्त शासक

कुमारगुप्त एवं मौखरी शासक ईशानवर्मा (554 ई.) के मध्य हुए युद्ध के वर्णन में प्रशस्तिकार ने पुराणों के समुद्रमन्थन को उपमान के रूप में ग्रहण किया है यथा राजाओं में चन्द्रमातुल्य ईशानवर्मा की भयंकर सेना को कुमारगुप्त ने उसी प्रकार मथ डाला जिस प्रकार लक्ष्मी की प्राप्ति का हेतु क्षीरसागर मेरु पर्वत के द्वारा मथा गया। यह प्रथम ऐतिहासिक साक्ष्य है जो समुद्रमन्थन का उल्लेख करता है। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस युद्ध में विजयी होने के पश्चात् कुमारगुप्त, जिसे अभिलेख में शूरवीर एवं सत्यव्रती कहा गया है, प्रयाग गया। यह वह काल था जब सूर्य - धनु राशि में प्रवेश कर रहा था। ध्यातव्य है कि जब सूर्य धनुराशि (दिसम्बर 15) में प्रवेश करता है तब 'खरमास' आरम्भ होता है, जिसमें शुभकार्य वर्जित होता है। यहाँ यह प्रश्न स्वाभाविक है कि कुमारगुप्त ने इस मास को आत्मोत्सर्ग हेतु क्यों चुना? यह एक अलग विमर्श का विषय है। इस आलेख में मेरा इतना लक्ष्य है कि ग्रहों के राशि परिवर्तन पर स्नान का इतिहास प्रामाणिक रूप से कब से मिलता है। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि कुमारगुप्त केवल प्रयाग की धार्मिक यात्रा के लिए ही नहीं गया था बल्कि वहाँ जाकर पुष्पमालाओं से अलंकृत होकर उसने जलराशि में प्रवेश करने के समान ही उपलाओं (गोबर के कण्डे) द्वारा प्रज्वलित अग्नि में प्रवेश कर आत्मोत्सर्ग कर दिया। अग्नि में आत्माहुति को पौराणिक साहित्य में श्रेष्ठ आत्मोत्सर्ग माना गया है। यद्यपि इस अभिलेखिक वर्णन को लेकर इतिहासकार कुमारगुप्त की विजय पर ही प्रश्न करते हैं लेकिन यहाँ विमर्श का यह मुख्य विषय नहीं है।

छठीं-सातवीं सदी ई. तक आते-आते 'प्रयाग' की एक विशिष्ट धार्मिक पहचान बन चुकी थी। वर्द्धन सम्राट हर्ष अपने राजशासन के प्रत्येक पाँचवें वर्ष में 'पंचवर्षीय दानोत्सव' (महामोक्ष परिपद) का आयोजन प्रयाग में करता था।[30] इसकी विशेषता यह थी कि इस अवधि में संचित अपने पूरे कोष का दान वह हिन्दू, बौद्ध, जैन, अनाथों, अपाहिजों, गरीबों में कर देता था। अस्त्र-शस्त्र को छोड़कर अपने वस्त्रों का दान भी सम्राट के द्वारा कर दिया जाता था। चूँकि अस्त्र-शस्त्र दान के योग्य नहीं माने जाते थे तथा राज्य की सुरक्षा भी इन्हीं पर निर्भर थी, इसीलिए उन्हें नहीं दिया जाता था। प्रयाग के दानोत्सव का उल्लेख करते हुए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है- इस दानोत्सव में पाँच लाख श्रमण निर्ग्रन्थ, ब्राह्मण, निर्धन, अनाथ सम्मिलित हुए थे। इसके अतिरिक्त पंचभारत के 20 राज्यों के राजा भी आये थे जिनमें कामरूप (असम) नरेश भास्कर वर्मा एवं वलभी नरेश (गुजरात) ध्रुवसेन भी सम्मिलित हुए थे। इनके ठहरने की राजोचित व्यवस्था थी। यह उत्सव 75 दिनों तक चला था।[31] यह आयोजन सम्राट की दानशीलता के साथ त्रिवेणी के संगम पर बसे प्रजापति क्षेत्र प्रयाग के माहात्म्य को भी रेखांकित करती है।

प्रयाग के संगम में स्नान, दान, आत्मोत्सर्ग का इतिहास थमा नहीं बल्कि उत्तरोत्तर राजाओं एवं सामान्य जनों में दृढ़ीभूत होता गया। कलचुरि शासक गांगेयदेव ने अपनी 100 रानियों के साथ प्रयाग के 'वटवृक्ष' के नीचे आत्मोत्सर्ग किया।[32] वटवृक्ष से कूदकर प्राण त्यागने एवं धार्मिक लाभ

प्राप्त करने का उल्लेख ह्वेनसांग ने भी किया है। लक्ष्मीधर के तीर्थकल्पतरु[33] में भी इसका उल्लेख मिलता है। प्रयाग–वटवृक्ष के धार्मिक माहात्म्य का उल्लेख वाल्मीकि रामायण से भी प्राप्त होता है। तदनुसार वनगमन के समय महामुनि भरद्वाज ने सीता को वटवृक्ष (श्यामवट) की पूजा करने की सलाह दी थी तथा इसके माहात्म्य का वर्णन किया था।[34] ऐसी मान्यता थी कि वटवृक्ष से कूदकर प्राण त्यागने वाला व्यक्ति सभी लोकों का अतिक्रमण कर 'रुद्रलोक' को प्राप्त करता है।

मोक्षदायिनी प्रयाग की महत्ता उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। चन्देलवंश के महान शासक धंग (950–1102 ई.) ने 100 वर्ष की आयु प्राप्त करने के पश्चात् प्रयाग के गंगा–यमुना के संगम पर अपने आराध्य भगवान् शिव का स्मरण करते हुए जलसमाधि के द्वारा मुक्ति प्राप्त की।[35] अनन्त नामक ब्राह्मण मन्त्री ने भी संगम पर अपने शरीर का परित्याग किया था। उत्तर से लेकर दक्षिण तथा पूरब से पश्चिम तक के अनेक राजाओं ने प्रयाग में आत्मोत्सर्ग किया। इनमें सेनशासक (बंगाल) वल्लाल सेन[36] तथा राष्ट्रकूट शासक ध्रुव (दक्षिण) के भी आत्मदाह का उल्लेख मिलता है।[37]

ऐतिहासिक साक्ष्यों के आलोक में निर्विवाद रूप से छठीं शती ई. से आगमिक एवं स्मार्त धर्म इतना प्रभावी हुआ कि सामान्य जनों के साथ सांसारिक वैभव एवं राजसत्ता के शीर्ष पर बैठे अनेक राजा–रानी भी अपना सर्वस्व त्यागकर 'प्रयाग' में जलसमाधि, वटवृक्ष से कूदकर या प्रज्वलित अग्नि में प्रवेश कर आत्मदाह करने लगे। पुराणों, स्मृतियों में इस पावन कृत्य को मुक्ति प्रदायी कहा गया है। यदि वैदिक यज्ञ स्वर्ग प्राप्ति के साधन थे तो स्मार्त कर्म को मुक्ति एवं भुक्ति दोनों का साधन बताया गया है।

कुम्भ पर्व से सम्बद्ध जो तीन अन्य तीर्थस्थल बताये गये हैं (जहाँ पौराणिक आख्यान के अनुसार अमृतघट की बूँदें गिरीं) वे तीनों तीर्थस्थल हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन तीन पवित्र नदियों (गंगा, गोदावरी एवं शिप्रा) के किनारे बसे हैं[38] तथा ये क्रमशः विष्णु, त्र्यम्बक एवं महाकालेश्वर शिव द्वारा रक्षित हैं। परवर्ती काल में नदी स्नान की पवित्रता के माहात्म्य के साथ त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की उपासना भी बढ़ी।[39] महत्त्वपूर्ण है इस काल में पवित्र स्थलों की अवधारणा भी बदली। ब्रह्मावर्त, ब्रह्मर्षि देश के स्थान पर प्रयाग, काशी एवं गया के धार्मिक महत्त्व का विशेष वर्णन पुराणों में मिलने लगता है, जो राजा से रंक को पवित्र स्नान द्वारा पापप्रक्षालन से लेकर मुक्ति का आश्वासन देता है।

महाकुम्भ–2025 ने पूर्ववर्ती सभी महाकुम्भों एवं अर्द्धकुम्भों के इतिहास को नेपथ्य में धकेल दिया है।[40] इसमें धार्मिक आस्था का एक ऐसा सैलाब दिखा जिसने सरकारी अनुमान (45 करोड़ लोगों के स्नान का) को भी पीछे छोड़ दिया। लगभग 65 से 66 करोड़ श्रद्धालुओं का प्रयाग 'महाकुम्भ' में स्नान प्रमाण है कि भारतीयों (हिन्दुओं) की धार्मिक आस्था की जड़ें अत्यन्त गहरी हैं एवं दृष्टि अभेदपूर्ण है। कुम्भ स्नान करने वाले जाति, लिङ्ग, धर्म, देश की सीमाओं से परे 'मानव' मात्र थे तथा अमृतत्व प्राप्त करने के सभी समान अधिकारी थे। भारतीय ज्ञान परम्परा

'श्रेष्ठता' की बात करते समय 'मनुष्य' को अपना इकाई मानती है न कि जाति, धर्म, देश को (न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्) जो उसके उदात्त चिन्तन का ही प्रतिफल है। 2025 के महाकुम्भ की भव्यता एवं भारतीय धार्मिक चिन्तन की उदात्तता का साक्षात्कार विश्व ने भी किया है।

यह कुम्भ महापर्व धार्मिक चेतना के साथ ही भारतीयों के नक्षत्र-राशि विद्या में पारंगत होने का भी प्रमाण है। ग्रहों (सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति) के राशियों में प्रवेश के साथ किस प्रकार की सकारात्मक ऊर्जा का सृजन होता है इसका सूक्ष्म ज्ञान भारतीय मनीषा को था। इस ज्ञान को धार्मिक चोला पहनाकर जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास पुराणों के द्वारा किया गया।

यह महाकुम्भ धर्म एवं अर्थ का भी अद्‌भुत संगम था। समाचार-पत्रों, सोशल मीडिया, प्रत्यक्षदर्शियों, श्रद्धालुओं से जो सूचना मिली उससे ज्ञात है कि अनेक वणिक, व्यापारी, उद्यमी, लघु व्यवसायियों ने इस महाकुम्भ में कल्पना से भी अधिक धन का उपार्जन किया। भारत में आरम्भ से ही राजशास्त्र के ज्ञाताओं ने धर्म एवं अर्थ के अविनाभाव सम्बन्ध को स्वीकारा है। कौटिल्य जैसे महाज्ञानी तो धर्म से पहले 'अर्थ' को स्थान देते हैं। यहाँ तक कि विद्या को भी 'अर्थकरी' होना चाहिए ऐसा हमारी ज्ञान परम्परा मानती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में राजा, राज्य का यह परम कर्त्तव्य माना गया है कि वह अपनी जनता के धार्मिक विश्वास, भाषा-बोली, वेश-भूषा इत्यादि को अपनाने में किसी प्रकार की कोई बाधा न आने दे। यहाँ यह कहना अत्युक्तिपूर्ण नहीं कि वर्तमान उत्तर प्रदेश सरकार (एवं केन्द्र सरकार) के मुखिया माननीय योगी आदित्यनाथ जी ने इस महापर्व 2025 को सकुशल सम्पन्न कराने में प्राण-प्रण से जो सेवा की, वह प्रशंसनीय है।

संदर्भ:

1. बारह-बारह वर्ष के अन्तर से चार मुख्य तीर्थों में लगने वाले स्नान-दान का ग्रहयोग। इसके चार स्थल प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन हैं।

   प्रयाग में कुम्भ - बृहस्पति वृषभ राशि पर, सूर्य-चन्द्र मकर राशि पर हो, अमावस्या हो, ये सब योग जुटने पर प्रयाग में कुम्भ योग पड़ता है। जिस समय बृहस्पति कुम्भ राशि एवं सूर्य मेष राशि पर हो तो हरिद्वार में, बृहस्पति सिंह राशि, सूर्य और चन्द्र कुम्भ राशि पर हों तो नासिक, तथा जब बृहस्पति वृश्चिक राशि पर, सूर्य तुला राशि पर हो तो उज्जैन में कुम्भपर्व मनाया जाता है। (उद्धृत- **हिन्दू धर्मकोश**, राजबली पाण्डेय, लखनऊ, 1988, पृ. 190)
2. तत्रैव
3. इष्टं यागादि श्रौतं कर्म

   पूर्तं वापी कूप तडागादि स्मार्तं मन्यमाना।। (मुण्डक; 1.2.10);

   इष्टापूर्ते इष्टं यागजं पूर्तमारामादि क्रियाजंफलं।

   उद्धृत- पाठक, विश्वम्भरशरण, **स्मार्त रेलीजियश ट्रेडीशन**, मेरठ, 1987, पृ. 28
4. अग्रवाल, वासुदेवशरण, **भारतीय कला**, पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, 1977, पृ. 61

5. Monier Williams, **Sanskrit-English Dictionary**, Delhi, 1986, p. 293; अमरकोश, 2.4.34, 2.8.37 कुम्भौ तु पिण्डौशिरस:। घट, 2.9.32
6. **ऋग्वेद;** त्रि: सप्तंमयूर्य: सप्तस्वसारोमग्रुव:।
   तास्ते विषं विजम्रिर उदकं कुम्भिनीरिव।।14।।
7. **भारतीय कला**, पृ. 61
8. **ऋग्वेद;** 1.89.7; 1.8.6, 1.116.7; अथर्ववेद : 19.53.3
9. **अथर्ववेद;** 18.4.58
   प्राण: सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रद्‌दिन्द्रस्य हार्दिमाविशन्मनीषया।।58।।
10. **अथर्ववेद;** 3.12.8
11. तत्रैव, **Sanskrit-English Dictionary**, Delhi, 1986, p. 293
12. पाण्डुरङ्ग वामन काणे, **धर्मशास्त्र का इतिहास**, भाग-चतुर्थ, लखनऊ, पृ. 117
13. पूर्त्तेन धर्मेणनिवर्तकेन मुक्तिर्भवति वेत्संयमिनश्च बोधात्। 9A, XVIII, p. 210
14. **धर्मशास्त्र का इतिहास**, पृ. 117
15. उद्धृत, Pathak, V.S., **Smart Religious Tradition**, Meerut, 1987, p. 33
16. तत्रैव, पृ. 29; अधिकारी भवेच्छूद्र: पूर्त्ते धर्मे न वैदिकी।
17. पाण्डेय, राजबली, **हिस्टॉरिकल एण्ड लिटरेरी इंस्क्रिप्शन्स**, वाराणसी, 1962, पृ. 59
   प्रभासे पुण्यतीर्थे ब्राह्मणेभ्य: अष्ट भार्याप्रदेन।
   इबा-पारादा-दमण-तापी-करवेणा-दाहनुका-नावा पुण्य-तरकरेण एतासां च नदीनां।।
   (उषवदात का नासिक गुहालेख)
18. **मनुस्मृति**, द्वितीयोऽध्याय: 17;
   सरस्वतीदृषद्वत्योदेवनद्योर्यदन्तरम्।
   तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते।।17।।
19. **मनुस्मृति**, तत्रैव, श्लोक 19
   कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चाला: शूरसेनका:।
   एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तर:।।19।।
20. तत्रैव, **हिस्टॉरिकल एण्ड लिटरेरी इंस्क्रिप्शन्स**, Nandasa (Udaipur, Rajasthan) Sacrificial Pillar Inscription of the Malavas, Krta 282, p. 56; Badva Sacrificial Pillar Inscription of the Maukharis, Krta year 259 - 238 AD., p. 55 etc.
21. **महाभारत**, वनपर्व, 87ए 18-19, उद्धृत, **हिन्दू धर्मकोश**, राजबली पाण्डेय, लखनऊ, 1988, पृ. 424
22. पाठक, वी.एस., **प्रयाग की ऐतिहासिकता**
23. भगवत: प्रजापति (ते:) क्षेत्रे गंगायमुनयो: सवैधे प्रयागस्थिते। एपि.इण्डिका, XIX., p. 102

24. उद्धृत, पाठक, वी.एस., स्मार्त रेलीजियश ट्रेडीशन, पृ. 77
तीरोत्संगे त्रिवेण्याः कमलमवमखारम्भनिर्व्याजपूते।
25. **रामायण**, अयोध्याकाण्ड, पञ्चपञ्चाशः सर्गः, श्लोक 6,7 (श्यामवट)
26. पाण्डेय, राजबली, **हिन्दू धर्मकोश**, पृ. 423-24
27. उद्धृत, पाठक, वी.एस., **स्मार्त रेलीजियश ट्रेडीशन**, पृ. 29
28. द्रष्टव्य-तत्रैव, **हिन्दू धर्मकोश**, पृ. 190-91
29. वाजपेयी, कृष्णदत्त, **ऐतिहासिक भारतीय अभिलेख**, जयपुर 1992, पृ. 206
शौर्य सत्यव्रत धरो यः प्रयाग गतो धने।
अम्भसीव करीषाग्नौ मग्नः सपुष्पपूजितः।।
30. उद्धृत, पाठक, विशुद्धानन्द, **उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास** (600-1200 ई.), लखनऊ, 2011, पृ. 68-69
31. तत्रैव
32. जबलपुर अभिलेख, एपि.ई., 11, पृ. 1-7;
'प्राप्ते प्रयाग वटमूलनिवेश वन्धौसार्द्धशतैन गृहिणीमरमुत्रमुक्तम्।।12।।'
33. वटमूलं समासाद्य यस्तु प्राणान्परित्यजेत्।
सर्वलोकानतिक्रम्य रुद्रलोकं स गच्छति।।
34. वाल्मीकीय **रामायण**, अयोध्याकाण्ड, पञ्पञ्चाशः सर्गः, श्लोक 6-7
परीतं बहुभिर्वृक्षैः श्यामं सिद्धोपसेवितम्।।6।।
तस्मिन् सीताञ्जलिं कृत्वा प्रयुञ्जीताशिषांक्रियाम्।
समासाद्य च तं वृक्षं वसेद् वातिक्रमेत वा।।7।।
35. रुद्रं मुद्रितलोचनः सहृदये ध्यान्यञ्जयन्
जाह्नवीकालिन्द्यौः सलिले कलेवरपरित्यागद्न्निर्वृत्तिम्।।55।।
एपि.ई., भाग 1, पृ. 137
36. नाना-दानतिलाम्बुसम्बलनभ सूर्यात्मजा संगमं
गंगायां निरचय्य निर्जरपुरं भार्यानुातो गतः।।10।।
N.G. Majumdar, Insciptions of Bengal, Vol III, Rajasthani, 1929
37. उद्धृत, पाठक, वी.एस., **स्मार्त रेलीजियश ट्रेडीशन**, पृ. 77-78
38. **हिन्दू धर्मकोश**, पृ. 190
तत्रैव, पृ. 699, हरिद्वार, प्रति बारहवें वर्ष जब सूर्य और चन्द्र मेष राशि पर तथा बृहस्पति 'कुम्भ' राशि में स्थित होते हैं तब यहाँ कुम्भ का पर्व होता है। उसके छठें वर्ष अर्द्धकुम्भी होती है।
नासिक : यहाँ बृहस्पति के सिंह राशि में आने पर बारह वर्ष के अन्तर पर स्नानपर्व या कुम्भ मेला होता है; द्रष्टव्य, तत्रैव, पृ. 364-65
39. विस्तार के लिए द्रष्टव्य, पाठक, वी.एस., स्मार्त रेलीजियश ट्रेडीशन, पृ. 58

40. उद्धृत, **हिन्दुस्तान**, गुरुवार, 27 फरवरी, 2025, महाकुम्भ में सनातन शक्ति का फिर साक्षी बना संगम, आनन्द मिश्रा

‘तीन महाकुम्भ और दो कुम्भ में से दो महाकुम्भ (2001, 2025) और एक कुम्भ (2019) प्रदेश की भाजपा सरकार के कार्यकाल में हुए। महाकुम्भ 2013 और कुम्भ 2007 सपा शासनकाल में हुआ।’

Mānavikī सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

कुम्भ-मंथन

रण विजय सिंह*

कुम्भ के मूल में मंथन है। देवताओं और दैत्यों द्वारा किया गया समुद्र का मंथन, जो मूलत: अमृत के लिए किया गया था। अमृत निकला तो उसके कुम्भ के लिए दोनों पक्षों में संघर्ष शुरू हो गया। इन्द्र के पुत्र जयंत अमृतघट लेकर भाग रहे थे और दैत्य उनसे छीनने की कोशिश कर रहे थे। भाग-दौड़ में घड़े से अमृत ही क्यों न हो, छलकना तो स्वाभाविक है। चार जगहों पर छलका भी। आज उन्हीं स्थानों पर कुम्भ स्नान पर्व आयोजित होते हैं, अमृत की खोज में। उसके लिए तो देवता तरसते थे फिर हम मनुष्य क्यों न ढूँढें? इसलिए इन अवसरों पर भारी संख्या में सनातन धर्म के अनुयायी जुटते हैं और वहाँ के अमृत स्वरूप जल से स्नान और आचमन करते हैं।

उत्तर में हरिद्वार, दक्षिण में नासिक, मध्य में उज्जैन और प्रयागराज अर्थात् पूरे आर्यावर्त को एक सूत्र में बाँधने का काम कुम्भ मेलों के माध्यम से होता है। सुदूर दक्षिण कुम्भकोणम में पाँचवाँ कुम्भ भी हर बारहवें साल आयोजित होता है। पूरे आर्यावर्त के आस्थावान इस समय कायिक अथवा मानसिक रूप से इन स्थानों के साथ जुड़ जाते हैं।

समुद्र मंथन की सामर्थ्य तो मुझमें नहीं है किन्तु कुम्भ अर्थात् घट और उसी के माध्यम से कुम्भ मेले का मंथन तो किया ही जा सकता है। हमारे-आपके घरों में भी तो कुम्भ या मटके में दही मथ कर नवनीत निकाला जाता है। मैं अपने मस्तिष्क की मथानी से कुम्भ पर्वों का मंथन कर अन्य रत्नों के साथ अमृत निकालने का प्रयास करने जा रहा हूँ।

धर्म, शाश्वत नियमों के अतिरिक्त समय और स्थान के सन्दर्भों पर भी आधारित होता है। इनमें समय और स्थान के अनुसार परिर्वतन आवश्यक है। शाश्वत नियमों में यदि समय के साथ विसंगति आ गई है तो उसका परिमार्जन भी करणीय है। कुम्भ मेलों में धर्म संसद का आयोजन होता है जिसमें धर्म के सामने आ रही चुनौतियों पर धर्माचार्य विचार करते हैं तथा सम्यक् विचार मंथन के बाद उचित समाधान से धर्मावलंबियों का मार्गदर्शन करते हैं। किसी भी धर्म के लिए यह

*IAS (allied) - IRTS-Retd.

आत्मशोधन अत्यंत आवश्यक है। सनातन ने इसे आदिकाल में ही जान लिया था इसीलिए तदनुसार हमारे ऋषि-मुनि तथा धर्माधिकारी धर्म में शोधन और प्रक्षालन करते रहे और आज भी कर रहे हैं। प्राचीन काल में नैमिषारण्य में शौनक ऋषि की महाशाला में आयोजित धर्म सभा और वर्तमान में कुम्भ की धर्म संसदें इसीलिये धार्मिक पुनर्जागरण और संगठन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। यही कारण है कि समुद मंथन के बाद कुम्भ से छलका वह अमृत, प्रतीक रूप में ही सही सनातन धर्म को अमरत्व के साथ-साथ निरंतर अजरता भी प्रदान किए हुए है।

हर धर्म को समय और स्थान के साथ आयी हुई कुरीतियों में संशोधन की आवश्यकता होती है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। उसकी अवहेलना सम्भव नहीं है। आज हम सारी यात्राएँ घोड़ों-ऊँटों पर नहीं कर सकते। ग्लोबल गाँव के काल में समुद्र पार की यात्रा पर प्रतिबंध भी नहीं लगा सकते। इसलिए यदि कहीं ऐसे नियम हैं तो उनमें संशोधन आवश्यक हो जाता है।

यूरोप में सोलहवीं सदी पुनर्जागरण की सदी थी। वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के बाद लोगों ने यह महसूस किया कि सम्पूर्ण प्रगति और मनुष्य के आत्मसम्मान हेतु धार्मिक संशोधन भी आवश्यक है। प्रयास प्रारम्भ हुए, पर परिवर्तन इतना आसान नहीं था। प्रतिरोध प्रबल एवं व्यापक था। आवश्यकता एक व्यापक आंदोलन के साथ धार्मिक क्रांति की थी। मार्टिन लूथर जो स्वयं एक पादरी थे, के नेतृत्व में एक बड़े आंदोलन और ईसाई धर्म के कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट में विभाजन के बाद ही वांछित सुधार किये जा सके। चाहे देश हो या धर्म, जनता की तात्कालिक उचित आवश्यकताएँ यदि नहीं पूरी हुईं तो वे प्रोटेस्ट कर प्रोटेस्टेंट बन जायेंगे, बांग्लादेश बना लेंगे। अहमदिया बन जायेंगे या संघ से टूट यूक्रेन और उज्बेकिस्तान आदि बना लेंगे।

आर्यावर्त एक बहुत विशाल भूभाग पर फैला हुआ है। सनातन धर्म इसकी मूल आत्मा है। धर्मग्रंथ सनातन धर्म और संस्कृति के वाहक हैं। आस्थावान इनसे राष्ट्र के विशाल भूभाग के विभिन्न स्थानों, तीर्थों के बारे जानकारी प्राप्त करते हैं। इससे इन स्थानों के बारे में उनकी जिज्ञासा बढ़ती है, उन्हें देखने और समझने की। कुम्भ मेले उन्हें संपूर्ण देश को भौगोलिक रूप से जानने का अवसर देते हैं। प्रयागराज के वर्तमान कुम्भ मेले में कश्मीर से कन्याकुमारी, आइजवाल से लेकर द्वारका तक के लोग आये हुए हैं। सभी धर्माधिकारी भी वहाँ हैं। अर्थात् यहाँ सनातन धर्म के हर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व है। विदेशों का भी। हर क्षेत्र से आये लोग धर्म पर अपनी आस्था और ज्ञान का नवीनीकरण कर रहे हैं। राष्ट्र के भौगोलिक, धार्मिक और सांस्कृतिक तथा सामाजिक विविधताओं का अनुभव और अध्ययन कर रहे हैं। केवल मेला क्षेत्र ही नहीं बल्कि अपने पूरे यात्रा मार्ग वाले भौगोलिक विस्तार के सन्दर्भ में भी।

कुम्भ मेले उनमें आने वालों की आस्था के साथ उनके धैर्य और संयम की भी परीक्षा लेते है। जहाँ एक अपार जनसमुदाय जो इस बार एक दिन इटली आदि देशों की जनसंख्या से भी अधिक था, कुछ हेक्टर क्षेत्र में एकत्रित हो एक ही दिन वह भी सीमित अवधि में स्नान, ध्यान,

पूजन आदि करता है। इसके लिए कुशल भीड़ प्रबंधन के साथ भीड़ का संयम भी आवश्यक है। यह कुशल व्यवस्था और आपदा प्रबंधन का ही प्रतिफल था कि प्रयागराज के वर्तमान कुम्भ मेले में व्यवस्था को त्वरित गति से पटरी पर लाकर बड़ी जनहानि से बचाया जा सका।

मंथन अभी बाकी है। अमृत निकलना शेष है, पर जो रत्न अभी तक हाथ आये हैं उनका संकलन तो कर ही लिया जाये -----। कुम्भ से सनातन धर्म की भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता के सुदृढ़ीकरण, धार्मिक एकरूपता एवं शोधन के संवहन, अति विशाल जनसमुदाय के आतिथ्य एवं सुरक्षा की व्यवस्था की स्थानीय प्रशासकीय क्षमता तथा इस विशाल समूह के धैर्य और संयम की अपूर्व शक्ति रूपी रत्न अभी तक निकले हैं। इनको संकलित कर प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस मंथन में कुम्भ से अमृत ही निकलेगा। विष को तो महादेव ने अपने गले में कैद कर रखा है इसलिए अब उसके निकलने की कोई संभावना नहीं है।

इन चार के बाद अभी और भी रत्न निकलेंगे। शायद चौदह से भी अधिक, और अंत में अमृत तो निकलेगा ही। मंथन अभी रुका नहीं है, वह तो निरन्तर गतिमान है। आप बस अमृत की प्रतीक्षा कीजिये।

महापर्व कुम्भ
संगम में स्नान का महत्त्व : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्रो. (डॉ.) शिवशरण दास*

भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जिसकी आध्यात्मिकता उसकी शक्ति है और अध्यात्म इस देश की आत्मा का संगीत है। भारतवर्ष में कुम्भ स्नान की परम्परा आदिकाल से चली आ रही है। यह हमारी सनातन संस्कृति का एक महापर्व है। इस महापर्व कुम्भ के धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व के साथ ही साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इसका महत्त्व बहुत बड़ा है। प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले में लोग गंगा, यमुना और लुप्तप्राय सरस्वती नदी के संगम स्थल पर स्नान कर अपने पापों से मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति की कामना से डुबकी लगाते हैं। यूँ कहें तो लोगों की प्रगाढ़ आस्था इस कुम्भ स्नान से संलग्न है और लोगों की मान्यता है कि कुम्भ में स्नान करने से आत्मशुद्धि होती है तथा अनेक संतों और साधुओं के आश्रम में जाकर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर भी प्राप्त होता है।

कुम्भ मेले में अनेक साधु-संतों और गुरुओं के विशालकाय निवास स्थलों पर सत्संग का आयोजन होता है, जहाँ भक्त लोग अपने गुरुओं से मिलते हैं, उनके आशीर्वाद से ज्ञान प्राप्त करते हैं। सामाजिक समरसता और भाईचारे का प्रतीक यह कुम्भ पर्व भारतीय संस्कृति का एक अतिमहत्त्वपूर्ण धार्मिक आयोजन है।

भारतवर्ष में प्रत्येक हिन्दू उत्सव और अनुष्ठान का एक ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार होता है। कुम्भ स्नान एक ऐसा महापर्व है, जिसमें करोड़ों लोग देश-विदेश के विभिन्न नगरों और गाँवों से आते हैं और अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए पवित्र नदियों के जल में डुबकी लगाते हैं और साधु-संतों के सान्निध्य में रहकर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर अपने मन और तन दोनों को शुद्ध करते हैं। अद्‌भुत आस्था का प्रतीक है कुम्भ स्नान और कुम्भ मेला।

कहा जाता है कि कुम्भ पर्व का प्रारम्भ सनातन धर्म में वर्णित समुद्र-मंथन की कथा से होता है। इस कथा के अनुसार महान ऋषि दुर्वासा के शाप के कारण भगवान् इन्द्र और अन्य

*आचार्य (सेवानिवृत्त), रसायनशास्त्र विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

देवतागण जब कमजोर पड़ गये थे तो असुरों ने देवलोक पर आक्रमण कर देवताओं को हराकर देवलोक को जीत लिया। हारे हुए इन्द्र और अन्य देवता भगवान् विष्णु के पास गये और उनसे सहायता माँगी। भगवान् विष्णु ने देवताओं से समुद्र-मंथन कर अमृत कलश निकालने और उस अमृत पेय को पीकर ताकतवर और अमर हो जाने को कहा। ऐसा करने पर असुर उन्हें हरा नहीं पाएँगे। किन्तु समुद्र-मंथन अकेले देवताओं के वश में नहीं था इसलिए विष्णु भगवान् ने असुरों को भी अमृत-कलश और अमरत्व पाने के लिए मना लिया। देवता और असुर दोनों मिलकर समुद्र-मंथन कर अमृत-कलश निकालने का प्रयास करने लगे।

जब अमृत-कलश निकला तो देवताओं के इशारे पर इन्द्र के पुत्र जयन्त इस अमृत-कलश को उठाकर भागने लगे। असुरों ने जयन्त का पीछा किया और देवताओं से लड़ाई शुरू हो गयी जो 12 दिनों तक चली। इस लड़ाई के अनुसार अमृत-कलश से अमृत की कुछ बूँदें छलककर पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक) पर गिर गयीं। अतः इन्हीं चार शहरों में कुम्भ के अमृत स्नान का आयोजन किया जाता है। मान्यता के अनुसार देवलोक के 12 दिन पृथ्वी के 12 वर्षों के बराबर होते हैं, अतः प्रत्येक 12 वर्ष पर इन्हीं चार स्थानों पर कुम्भपर्व का आयोजन आदिकाल से चला आ रहा है।

कुम्भपर्व की तिथि और स्थान का निर्धारण ग्रहों और राशियों पर निर्भर है, जिसमें सूर्य, चन्द्र और गुरु का विशेष महत्त्व है। जब सूर्य मकर राशि में और गुरु का वृषभ राशि में प्रवेश होता है तब कुम्भपर्व का आयोजन गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम स्थल पर प्रयागराज में होता है। जब सूर्य का प्रवेश मेष राशि में और गुरु का प्रवेश कुम्भ राशि में होता है तब कुम्भस्नान पर्व का आयोजन हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे होता है। और जब सूर्य और गुरु दोनों ही सिंह राशि में प्रवेश करते हैं तब कुम्भपर्व नासिक नगर में गोदावरी नदी के तट पर आयोजित किया जाता है। इसी तरह जब सूर्य का मेष राशि में और गुरु का सिंह राशि में प्रवेश होता है तो ऐसी स्थिति में कुम्भ स्नान पर्व का आयोजन क्षिप्रा नदी के तट पर उज्जैन नगर में किया जाता है। गुरु के सिंह राशि में प्रवेश करने के कारण ही इन दोनों कुम्भ को सिंहस्थ कुम्भ की संज्ञा दी जाती है।

इसी प्रकार जब गुरु वृश्चिक राशि में और सूर्य का प्रवेश मकर राशि में होता है तब अर्धकुम्भ का आयोजन किया जाता है। इसे कुम्भ पर्व का आधा चक्र माना गया है।

धार्मिक, सांस्कृतिक, आस्था और परम्परा के इस अद्‌भुत कुम्भपर्व का वैज्ञानिक महत्त्व भी है। यूँ कहा जाय कि वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित इस कुम्भ स्नान को धर्म से इसलिए जोड़ दिया गया, जिससे अमृत-स्नान की यह परम्परा धर्म से जुड़ने के कारण सदियों तक चलती रहे और लोग कुम्भ स्नान की डुबकी लगाकर स्वास्थ्यलाभ उठा सकें।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यदि हम देखें तो गंगा, यमुना और अन्य पवित्र नदियाँ अपने उद्‌गम

स्थान से निकलकर हिमालय पर्वत की चट्टानों के बीच बहती हुई अपने साथ अनेक प्रकार के चट्टानों और पत्थरों से अनेक प्रकार के खनिज, लवण और तत्त्वों को अपनी लहरों के साथ बहाकर लाती हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से गंगा का जल सभी नदियों के जल से उत्कृष्ट माना जाता है क्योंकि सालों साल रखने के बाद भी गंगाजल दूषित नहीं होता है। यह इस तथ्य को इंगित करता है कि गंगा के जल में लाभकारी रसायन हैं जो हानिकारक बैक्टीरिया आदि को नष्ट कर देते हैं।

वैज्ञानिक विश्लेषणों के आधार पर भी यह बात सिद्ध हो चुकी है कि गंगा का पानी पूर्णतया शुद्ध है और संगम स्थल पर गंगा-यमुना का जल अल्कलाइन वॉटर जितना शुद्ध है। वैज्ञानिक शोधों के आधार पर यह तथ्य भी सामने आया है कि संगम के पानी में अनेक प्रकार के बैक्टीरियोफेज पाये जाते हैं और इस जल को उष्मायन तापमान पर कई घण्टे रखने के बाद भी किसी भी तरह के नुकसानदायक बैक्टीरिया नहीं पाये गये। सालों रखने के बाद भी गंगाजल में दुर्गन्ध उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं में वृद्धि नहीं होती है।

पर्वतों पर अत्यन्त वेग से बहने वाली गंगा और यमुना नदियाँ मैदानी इलाकों में आकर शान्त हो जाती हैं और इनकी बहती लहरों की एक निश्चित गति और आवृत्ति होती है। जब संगम में दोनों नदियाँ मिलती हैं, तो इनकी लहरों की आवृत्ति और तरंग-दैर्ध्य में परिवर्तन आ जाता है, और अब दोनों नदियाँ एक साथ बहने लगती हैं। अब लहरों की आवृत्ति तरंग-दैर्ध्य और आयाम में वृद्धि हो जाती है, और दोनों नदियों के साथ आये हुए रसायन, तत्त्व और खनिज पदार्थ मिलकर बैक्टीरियोफेज की संख्या में वृद्धि कर देते हैं। संगम का जल मानव स्वास्थ्य के लिए और भी लाभकारी हो जाता है।

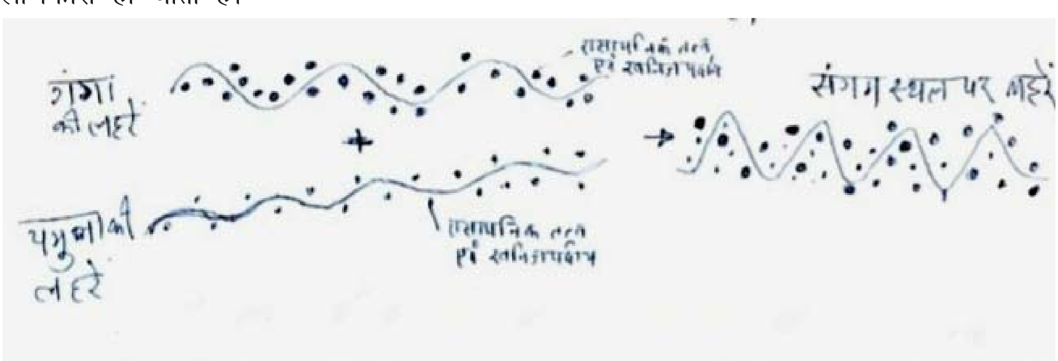

अब जब सूर्य की किरणें इन लहरों पर पड़ती हैं तो दोनों नदियाँ किरणों के साथ आने वाली विद्युत चुम्बकीय किरणों को अवशोषित कर लेती हैं और लहरों के साथ बहने वाले रसायनों और खनिजों के गुणों की तीव्रता और बढ़ जाती है। जब दोनों नदियाँ संगम पर मिलती हैं तो संगम-स्थल पर लहरों के गुण विद्युत चुम्बकीय किरणों के कारण और शक्तिशाली होकर बढ़ जाते हैं और ये विद्युत चुम्बकीय किरणें नदियों के साथ बहकर आये हुए रसायनों के गुण में अपूर्व

परिवर्तन ला देती हैं।

सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति और अन्य ग्रहों से आने वाली इन विद्युत चुम्बकीय किरणों की शक्ति ग्रहों और राशि की दशा पर निर्भर होती है। इसीलिए जब सूर्य और बृहस्पति ग्रह एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते हैं, तभी कुम्भ पर्व का आयोजन किया जाता है क्योकि उस समय सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति से आने वाली विद्युत चुम्बकीय किरणें नदियों के जल के गुणों में परिवर्तन और जल को शुद्ध करने की अपार क्षमता रखती हैं। इन विद्युत चुम्बकीय किरणों के कारण गंगा-यमुना संगम स्थल का जल शुद्ध और स्वास्थ्य की दृष्टि से अमृत समान हो जाता है, और शायद इसीलिए कुम्भ स्नान को अमृत स्नान माना जाता है। इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जिन बातों और तथ्यों का जो मैंने उल्लेख किया है, उस पर अभी अनेक शोधकार्य की आवश्यकता है जिससे पूर्णतया मेरा यह कथन प्रमाणित सिद्ध हो सके।

महापर्व कुम्भ में संगम में स्नान के महत्त्व को मैंने एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वर्णन करने का प्रयास किया है। वास्तव में विज्ञान को धर्म से इसीलिए जोड़ा गया था कि विज्ञान सदियों तक निरन्तर मानवकल्याण के लिए लाभप्रद हो, किन्तु धीरे-धीरे विज्ञान धर्म में लुप्त हो गया और बहुत से लोगों में धर्म के प्रति आस्था कम होने लगी। अब आवश्यकता है सभी धार्मिक पर्वों, अनुष्ठानों में विज्ञान के अस्तित्व को उजागर करने के लिए सामूहिक वैज्ञानिक प्रयास की।

हिन्दू समाज के सनातन धर्म की आस्था, सामाजिक समरसता और हिन्दू संस्कृति का प्रतीक महाकुम्भ पर्व को जिस निष्ठा और लगन से हमारे उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने आयोजित किया और कराया है, उसके लिए वे निश्चय ही वन्दनीय हैं।

Maha Kumbha 2025 : A Lifetime Experience

Prof. Bhabatosh Biswas*

Let me express from the bottom of my heart that the ' Experience of Maha Kumbha 2025' visit has been unique and I will cherish the unbelievable memories for ever. I never had the opportunity to visit Kumbha mela earlier and didn't dare to plan a visit of the Mega event 2025 specifically in view of huge crowd and logistics. However my dream of Maha Kumbha mela 2025 darshan and dip came to reality. If I look back , the happenings relating to my visit seemed nicely planned and superbly executed. I am still puzzled, how it happened?

Nobody has invited me but I reached there. I am sure all 62 crore believers reached Prayagraj the same way by 'Faith' only. As I saw 'Maha Kumbha 2025' has been the largest human gathering in our planet. This Mega event has certainly been planned meticulously and executed flawlessly. No doubt, this event has set 'Global Benchmark for mega event management' in future. I was fortunate to spend three days in Prayagraj Maha Kumbha mela 2025 premises. I enjoyed every moment of this period. The entire period of my stay at mela premises had been full of surprises, learnings and realisation about our motherland Bharat mata, human race of whole world, strength of 'Faith', self imposed discipline of every visitor etc.

I was surprised to witness the infrastructure expansion, transformation of city, creation of jobs , health care systems, sanitary arrangements as well as every other issues relating to this mega event. I learnt that Kumbh mela 2025 was organised in 4000 hectares divided in 25 sectors having 12 kilometres long Ganga Ghat for 'Dip' of devotees. For convenience of huge number of devotees 1,50,000 public toilets and 1,50,000 tents

*Former Vice Chancellor of West Bengal Health University as well as Veteran Thoracic & Cardiovascular Surgeon of India

were installed. 67,000 street lights, 1,850 hectare vehicle parking areas accommodating 7 lac vehicles, 31 paltun bridges covering 400 kilometres, 1,249 kilometres long drinking water pipelines, 14 new flyovers, 2 new electrical sub stations with 66 transformers etc have been added for comfortable stay of visitors. 37,000 policemen, 14,000 home guards, 2,700 CCTV cameras, 18 police control rooms, 3 water police stations, 20 fire posts, 10,000 fire engines, 50 watch towers were also arranged for alround comfort and safety of devotees. Witnessing all these arrangements I had no doubt about declared 3 lakh crores economic boom with the mega event 'Kumbh mela 2025' . These are statistical figures only. Certainly figures are great but not enough to showcase the greatness of mega event. Maha Kumbh 2025 has been able to establish India's highest cultural and spiritual standings in front of the entire globe.

The Maha Kumbh mela 2025, the greatest ever event spreading over 45 days (from 13th January to 26th February 2025) has been certainly a spiritual journey show-casing great Indian heritage, unity in diversity, rich traditions, superbly executed mega event and establishing the concept of 'Basudhaiva Kutumbakam'. I am sure this mega event will leave a permanent impression on the hearts of every individual who had the opportunity to participate or enjoy from a distance.

Maha Kumbh Mela 2025: Socio-Religious Dimensions and Philosophy

Prof. B.B. Malik*

The 2025 Maha Kumbh Mela is a socio-religious gathering reflecting India's profound cultural, spiritual, and historical legacy. By embracing this monumental event, India can restore and amplify its "pristine glory," reminding the world of its timeless spiritual wisdom, resilience, and unity.These values are embedded in our nation, in its philosophy and constitutional practice. All such visions have been reflected in our constituent assembly debates too. All narratives and efforts in the constitutional assembly debates are fruitful.The constitution makers invoke the divine blessings that their actions become characterised not only by common sense, public spirit, and genuine patriotism but also by wisdom, tolerance, justice, and fairness to all and, most importantly, with a vision that has the potential to restore India to her pristine glory and to give her a place of honour and equality among the great nations of the world. When the constitutent assembly summed up the fate of our significant, historical, and ancient nation in magnificent lines, let us not disremember to validate the pride of the prodigious Indian poet, Iqbal, and his conviction in the immortality of the destiny of our country.

यूनान, मिस्र, रोमा सब मिट गए जहां से, बाकी अभी तलक है नाम-ओ-निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा,
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।

(*Yunan-o-Misr-o-Roma sab mit gaye jahan se, Baqi abhi talak hai nam-o-nishan hamara. Kuchh bat hai ke hasti mit-ti nahin hamari, Sadion raha hai dushman daur-e-zaman hamara, Sare Janha Se achchha Hindusthan Humara)*.

These lines of Iqbal put forth the most significant message, which is valid and

*Professor, Dept of Sociology, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow, Uttar Pradesh; Email: bbmalik57@gmail.com

justifies even today to its fullest extent that even though Greece, Egypt, and Rome have all vanished from the surface of the Earth, the name and fame of India, our land, has endured the ravages of time and the catastrophies of the ages. Indeed, an immortal element in us has thwarted any attempts to eradicate us; however, the heavens have been rolling and turning for a considerable time. Years and centuries, in a spirit of animosity and enmity towards us. You must bring a broad and comprehensive perspective to the task because the Bible teaches us, "Where there is no vision, the people perish." I ask you to put this into practice. (Applause) .

(Constituent Assembly of India Monday, 9th December 1946: 18-19,*https://eparlib.nic.in/bitstream/123456789/782459/1/Golden_Jubilee_Republic_of_India.pdf)*

It holds the potential to reinforce India's cultural prominence on the global stage while instilling a sense of pride and connection among its people.The 2025 Maha Kumbh Mela in Allahabad (Prayagraj) is expected to significantly restore and highlight India's cultural, spiritual, and historical legacy, symbolising a unique convergence of faith, history, and national identity. The reputation of this event in the broader context of India's "pristine glory" can be understood through several key dimensions.

Socio-religious Philosophy

Kumbh Mela, also known as the festival of the holy pitcher, is the most significant peaceful gathering of pilgrims on the planet. During this event, participants bathe or dip in a sacred river. People who are devoted to the Ganges think that by bathing in the Ganges, they can be cleansed of their sins and liberated from the constant circle of birth and death. It is estimated that millions of individuals show up at the place without receiving any invitation. Various individuals, including ascetics, saints, sadhus, aspirants (kalpavasis), and guests, made up the congregation. Every four years, the festival is rotational in Allahabad, Haridwar, Ujjain, and Nasik. It is attended by millions of people regardless of their caste, creed, or gender.

On the other hand, most of its bearers are members of religious organisations, such as ashrams and akhadas, or persons living off of alms. Throughout the nation, the Kumbh Mela is regarded as a significant spiritual event that has a profound impact on the lives of ordinary Indians. Because the event encompasses the fields of astronomy, astrology, spirituality, ceremonial traditions, social and cultural customs and practises, it is exceptionally abundant in information. As a result of the fact that it takes place in four distinct places

across India and incorporates a variety of social and cultural activities, this festival is characterised by its cultural diversity.Using ancient religious writings, oral traditions, historical travelogues, and works created by prominent historians, the knowledge and skills associated with the tradition are passed down from generation to generation.

On the other hand, the teacher-student relationship between sadhus in ashrams and akhadas continues to be the most significant way to transmit and preserve information and abilities about Kumbh Mela. As per astrological (*jyotishiya)* analysis, bathing in Maha Kumbh is essential because Saturn is the planet responsible for sorrow, crisis, disease, distress, or long-lasting problems and is currently in its Aquarius sign. Since Saturn comes into Aquarius every thirty years, it is next to the next, i.e., whenever Saturn comes into Aquarius, the time of Kumbh Mela or Kumbh Snan moves forward. Saturn is in Aquarius at the scheduled time, but it is not getting it before or after the Kumbh Snan. At this time, it is a golden time, meaning it can be called icing on the cake. Saturn is in its Aquarius sign, and it is also the time of Aquarius; hence, bathingis essential, and therefore, whoever wants the solution to his complex problems must bathe in Mahakumbh.

DIMENSIONS OF KUMBH MELA

1. Spiritual and Religious Significance:

The Maha Kumbh Mela is one of the world's largest and most significant religious gatherings. It attracts millions of Hindu pilgrims from India and abroad who bathe in the sacred confluence of the Ganges, Yamuna, and mythical Sarasvati rivers. Many think a cleansing ceremony may cleanse one of the sins and bring spiritual enlightenment. The Kumbh Mela reinforces India's deep spiritual heritage by continuing this ancient tradition and reaffirms its central role in the global spiritual community.

2. Preserving Ancient Traditions:

The Maha Kumbh Mela is a living symbol of India's rich cultural and religious traditions, passed down for millennia. By organising such large-scale events, India reinforces the significance of its ancient customs and rituals. It serves as a reminder of India's role as a custodian of age-old spiritual practices that continue to thrive in the modern era.

3. Tourism and Global Attention:

The Maha Kumbh Mela draws people from all corners of the world, including international tourists, scholars, and spiritual seekers. It offers an opportunity for India to

showcase its vast cultural heritage, attract global attention, and boost tourism. This international interest can help restore and preserve the grandeur of Indian civilisation by making it visible and accessible to people worldwide.

4. Promotion of Cultural Unity:

The Kumbh Mela brings together people from diverse regions, languages, and communities across India. This mass congregation provides a platform for people to transcend regional and cultural barriers, fostering national unity. It strengthens "unity in diversity," a core value of India's national identity.

5. Economic Impact:

The Kumbh Mela generates a massive economic impact through tourism, infrastructure development, and local business activities. With millions of visitors, Prayagraj and surrounding areas see an influx of pilgrims, tourists, and service providers. This helps the region's economy and positions India as a global hub for spiritual tourism.

6. Environmental Awareness:

The event has also inspired a focus on preserving the sacred rivers, especially the Ganges, which hold immense spiritual significance for Hindus. The Mela emphasises the importance of environmental conservation. She can catalyse sustainable practices and initiatives to restore India's pristine rivers, promoting ecological health and spiritual well-being.

7. Symbol of India's Heritage:

The Kumbh Mela represents a link between the ancient past and modern India. It underscores the continuity of India's heritage, even in the face of globalisation and modernisation. The 2025 Maha Kumbh Mela will be an essential occasion to celebrate India's enduring cultural and spiritual essence, helping to restore a sense of pride in India's unique traditions and global relevance.

8. Global Leadership in Spirituality and Peace:

As the world faces various challenges, India's ability to host such a large-scale event based on peace, spirituality, and communal harmony will emphasise its role as a global leader in promoting peace, harmony, and spiritual growth. The Kumbh Mela can be a powerful reminder of the universal spiritual awakening and personal transformation message.

9. Revitalising Traditional Knowledge and Practices:

The Maha Kumbh Mela is not just about the spiritual significance of the rituals but

also about the wealth of traditional knowledge it preserves. From ancient forms of meditation, yoga, and Ayurvedic practices to the knowledge of astronomy and Vedic sciences, the Kumbh is a living testament to the depth of India's intellectual and philosophical heritage. By highlighting these ancient practices during the 2025 Mela, India can foster a global revival of interest in its traditional ways of knowledge, further cementing its place as a leader in global thought and wisdom.

10. Cultural Diplomacy:

The Maha Kumbh Mela acts as a platform for India to showcase its cultural diplomacy on a global scale. People from different nations, cultures, and belief systems come together at this massive gathering. By hosting the Mela with its cultural and spiritual richness, India sends a message of inclusivity, harmony, and peace, reinforcing its role as a cultural leader that encourages interfaith dialogue and global understanding. The Mela can also serve as an opportunity for international collaborations in education, tourism, and sustainable development.

11. Reinforcing India's Religious Heritage:

The Kumbh Mela represents the essence of India's religious diversity, a cornerstone of its national identity. In addition to the vast Hindu participation, the event welcomes people from various other faiths who come to witness and partake in the experience. The Mela also reinforces the significance of India's religious pluralism — a message that strengthens the cultural fabric and promotes mutual respect among different communities. It showcases India as a nation that respects and celebrates diverse faiths.

12. Reviving the Ganga's Sacred Role:

The Ganga, regarded as a goddess in Hinduism, is central to the Kumbh Mela. Beyond its spiritual symbolism, the Ganga has historically been India's civilisation's lifeblood. The 2025 Kumbh Mela provides an opportunity to raise awareness about the need to preserve this sacred river from pollution and ecological degradation. As part of the more extensive Clean Ganga campaign, the event can help catalyse efforts to restore the river's purity, underscoring India's commitment to protecting its natural heritage alongside its spiritual one.

13. Promoting National and International Peace:

The gathering of millions of people in one place in a peaceful manner underscores India's capacity to manage large-scale events with order and discipline. The Kumbh Mela manifests India's long-standing tradition of non-violence, tolerance, and spiritual peace,

resonating with its global image of promoting peace. In times when the world faces conflict, climate change, and rising tensions, the Kumbh Mela stands as a living example of harmony in action, reinforcing India's call for global peace and cooperation.

14. Scientific and Technological Innovation:

The Maha Kumbh Mela also provides an opportunity to showcase India's advancements in science and technology, especially in managing large crowds, logistics, and sustainability. For instance, in the past, Kumbh Melas, India, has employed advanced crowd management technologies, surveillance systems, and digital services to ensure the safety and comfort of millions of pilgrims. The use of technology in such an ancient, spiritual event symbolises how modernity and tradition can co-exist, presenting a holistic approach to addressing contemporary challenges while respecting cultural practices.

15. Empowering Local Communities:

The Kumbh Mela generates extensive employment opportunities, from temporary setups for food, hospitality, and transport to roles in security, sanitation, and medical assistance. Local artisans and craftsmen benefit by showcasing and selling their handmade goods to a global audience. It acts as an economic lifeline for many individuals and small businesses. The Mela revitalises regional economies and empowers local communities, providing a sustainable means for development in rural areas while preserving cultural heritage.

16. Showcasing India's Environmental and Spiritual Renaissance:

The 2025 Kumbh Mela will be an occasion to highlight India's emerging focus on sustainability, blending ancient practices with modern environmental consciousness. As the world grapples with climate change, India's approach to maintaining a balance between environmental conservation and spiritual practices at the Kumbh will send a powerful message. Eco-friendly practices, like waste management, promoting sustainable materials, and encouraging pilgrims to adopt eco-conscious practices, will demonstrate India's commitment to spiritual renewal and environmental stewardship.

17. Promotion of Yoga and Well-being:

Given the increasing global interest in wellness, especially in practices such as yoga and meditation, the Kumbh Mela offers an ideal platform to promote these aspects of India's cultural heritage. Attracting spiritual seekers, health-conscious individuals, and wellness tourists, the event acts as an ambassador for India's ancient wellness systems.

The global popularity of yoga continues to rise, and the Mela offers a significant opportunity to promote this ancient practice further, aligning it with modern global health trends.

18. Reflection of India's Resilience:

The Maha Kumbh Mela embodies the resilience and continuity of India's civilisation. Despite the challenges of time, societal changes, and even political upheavals, the Mela has continued to be celebrated over centuries. This continuity reinforces India's historical endurance and spiritual strength, reminding the world of India's ability to adapt, evolve, and stay rooted in its ancient wisdom and values.

19. Strengthening the Global Indian Identity:

The Kumbh Mela is a moment for the global Indian diaspora to reconnect with their cultural roots. Many Indians living abroad look to the Mela to reinforce their identity and spiritual connection with their homeland. By actively participating in or supporting the event, the diaspora can help spread the message of India's cultural and spiritual grandeur globally, thus playing a pivotal role in restoring India's image as a beacon of tradition, wisdom, and peace.

Conclusion

The 2025 Maha Kumbh Mela in Prayagraj is a monumental event that extends far beyond a religious festival. It serves as a focal point for a deeper understanding of India's vast cultural, spiritual, and historical legacy, which continues to shape the global consciousness. By emphasising unity, environmental sustainability, scientific innovation, economic empowerment, and cultural diplomacy, the Maha Kumbh Mela cansolidifies India's role as a leading global spiritual and cultural power, helping restore and enhance the nation's pristine glory.

References

1. Golden Jubilee of the Republic of India, Lok Sabha Secretariat, New Delhi (2001),https://eparlib.nic.in/bitstream/123456789/782459/1/Golden_Jubilee_Republic_of_India.pdf
2. https://ich.unesco.org/en/RL/kumbh-mela-1258#:~:text= Kumbh%20 Mela%20 (the % 20 festival % 20 of, cycle % 20 of % 20 birth % 20 and % 20 death.

SOCIO-ECONOMIC PERSPECTIVE OF MAHA KUMBH: AN OVERVIEW

Prof. USHA KUMARI*

Abstract: The Kumbh Mela is a leading religious gathering that fosters community, religious characteristics, and nationwide unity. It is a Hindu carnival focused on spirituality and devotion, attracting pilgrims who bathe in sacred rivers of India for purification and salvation. The festival promotes social inclusivity, bringing together people from diverse backgrounds and reducing social hierarchies temporarily. Economically, Maha Kumbh helped high businesses, created jobs,encouraged infrastructure development and provided greater opportunities to local vendors to grow their professional skills. A well-managed Maha Kumbh contributed to long-term regional growth and development.The Maha Kumbh Mela, which is held every twelve years, is an outstanding pilgrimage where millions gather at sacred rivers to bathe and seek spiritual purification. Originating from ancient Hindu mythology, it symbolizes the cosmic cycle of time. Devotees believe that participating in the celebration washes offenses and allows salvation. The vibrant atmosphere is filled with rituals, chants, and cultural displays, making it one of the largest gatherings on Earth, uniting faith and tradition.

Keywords: Amritkalash, Magh, Bathe, Prayagraj, Society, Economy, GDP, Akhada, Sustainability, Ganges, Technology, Moksha, Kumbh spirituality.

INTRODUCTION

The Maha Kumbh is one of the most anticipated Hindu festivals. It wasorganized in Prayagraj, Uttar Pradesh in January and February of 2025. The significant event, which occurs every 12 years, draws millions of devotees seeking

*Professor in Political Science, Sri Agrasen Mahila Mahavidyalay, Azamgarh-276001, India

blessings. The origins of the Kumbh Mela are rooted in Hindu mythos, predominantly the tale of *Samudra Manthan* or the churning of the deep-sea. According to tale, the gods and demons worked together to obtain *Amrit*, the nectar of immortality from the ocean. During this process, a *Kumbh* (pot) containing the nectar materialized. To protect it from the demons, Lord Vishnu, concealed as Mohini, carried the pot. As he fled, a few drops of nectar spilled at four locations–Prayagraj, Haridwar, Ujjain and Nashik. These places became consecrated and host the Kumbh Mela based on *panchang and* many Hindu devotees believes the Kumbha Mela tradition has been started since ancient days. Verses in the Rig Veda, Yajur Veda, and Atharva Veda mention the Kumbh or *purnakumbh* which some traditional investigators link to the Kumbh festival. Exclusively, a verse in the Atharva Veda refers to four kumbhas, seen by spiritual scholars as a reference to the four Kumbha Melas.

The Kumbh Mela, inducted by Adi Shankaracharya in the eighth century, features thirteen *akharas* of monks and seers. Every 144 years held in Prayagraj, the Maha Kumbh fosters community gathering through shared traditions and legends. This large religious gathering occurs every twelve years at the confluence of the Ganges, Yamuna, and Saraswati (now invisible) rivers, attracting millions. Blending tradition and modernity, the Kumbh Mela offers a rich experience to those who join it during the high time. On every occasion, the attendance has always been surged despite the long journey to reach the Kumbh site. Besides modern technology aids such as AI, digital streaming, high surveillance, the Mela administration has provided improved infrastructure, food, water, medical facilities, security, and more in the gatherings of 2025. This synergy enhanced both tradition and modernity while making plans associated with commerce, religious activities, public health, governance, and special event management.

The location of the Kumbh Mela is decided based on*Jyotish Shastra*. The Kumbh takes place where the rays of sun fall when the planets align in a straight line. The congregation is held at Haridwar, Prayag, Ujjain, and Nashik when the Sun, Moon, and Jupiter align. The twelve-year cycle holds significance in the Hindu calendar and *Jyotish Shastra*. During celestial placement period, Hindus are advised by *Shastras* to engage in various activities such as *Amrit Snan* (bathing in the holy rivers), donations (*daan*), singing devotional songs (*bhajans*), and prayer (*pooja*). *Amrit Snan* is a notable aspect of Kumbh Mela, involving bathing in the holy river at

the pilgrimage site at a specific auspicious time, offering *Arghya* to the Sun and conducting prayer to the river.

Afterwards, *Akhadas* and their Sadhus have precedence during *Amrit Snan*, with special *Shobha Yatras* organized for them. Traditionally, they bathe first followed by common pilgrims. During this auspicious period, prayer is conducted in *Shaiva Akhadas* for different forms of Lord Shiva, while *Vaishnav* Akhadas worship various forms of Lord Vishnu. *Sadhus* from various *Akhadas* participate in the gathering, organizing *Havans*, chanting Vedic *mantras,* holding religious discourses (*Pravachans* and *Updesh*), and conducting other religious events for attendees. While most Sadhus belong to one of the *Akhadas*, so as they participate individually. Categories of *Akhadas* participated in Kumbh includes *Shaiva*, *Vaishnav*, *Naga*, *Nagpanthi*, Women's *Akhada*, *Kinnar* or Transgender *Akhada*, and *Udasin* (*Akhada* of the *Udasi* Sect). Historically, *Akhadas* were established to protect Hindu pilgrimage sites. In 1398, during an attack by Taimurlang on the Mela held at Haridwar, *Naga Sadhus* took up weapons to defend the pilgrims. Since then, a section of *Naga Sadhus* has carried weapons, divided into *Sastradhari* (weapon-wielding) and *Shastradhari* (*Grantha*-wielding).

Social Perspective

The Annual *Magha Mela* in Prayaga, celebrated as the Kumbh every twelve years, along with Ujjain and Nashik-Tryambakeshwar and these have been observed for many centuries. Some historians suggest that the tradition of *Magha-Snana* (bathing during January and February) started in the Neolithic times. Hiuen Tsang visited India in the seventh century and provided evidence of a fair held every five years at Prayag.

The society in India largely acknowledged the Kumbh, and this brings together people from various backgrounds, includes different castes, region, and economic levels. In a diverse country like India, this could promote unity and a sense of shared identity, and the 2025 Maha Kumbh has shown the strength of *Ek Bharat-Shresth Bharat*-adage as well. The event served as a center for traditional practices, rituals, and teachings. Sadhus and ascetics participated in Kumbh significantly, showcasing ancient traditions, thereby aiding in the preservation of cultural heritage and its transmission to younger generations. Additionally, arts, music, and crafts are often promoted, which supported the artisans.

For many attendees, the event provides an opportunity for spiritual growth and purification. Bathing in the holy rivers is believed to cleanse sins and lead to spiritual salvation, the *moksha*. The gathering also fosters social cohesion by supporting the unity in diversity and shared cultural heritage. Profoundly, the Kumbh Mela embodies reflective symbolism and spiritual significance, contemplating the eternal quest for transcendence and self-realization. The act of bathing in the sacred river *Ganges*, symbolizes the purification of the body, mind, and soul, while the convergence of millions of pilgrims underscores the humanity and connected principles.

Furthermore, the Maha Kumbh represents a rare opportunity to seek blessings from revered saints and *gurus* and participate in sacred rituals, immersing themselves in the divine atmosphere of the festival grounds. The Kumbh is directly and ultimately linked with the introspection, prayer, and renewal, as pilgrims strive to deepen their spiritual connection and achieve spiritual liberation. Beyond its religious significance, the Maha Kumbh holds immense cultural and historical importance, serving as a custodian of rich heritage and traditions of India. The festival acts as a vibrant showcase of cultural diversity, with pilgrims from diverse linguistic, ethnic, and socio-economic backgrounds coming together in a spirit of harmony and unity.

In addition, the Kumbh has played a pivotal role in shaping national identity and consciousness of India. From the struggle for independence against colonial rule to the promotion of cultural pluralism and religious tolerance, the Maha Kumbh of 2025 has been a symbol of resilience, unity, and spiritual intensity of India.

Economic Perspective

The Maha Kumbh, recognized as the largest religious gathering globally, has a remarkable economic impact. In 2013, it generated Rs. 12,000 crores, which increased to Rs. 1.2 lakh crore in the year 2019. It was estimated that the revenues of rupees two lakh crore would be collected in theMaha Kumbh of 2025, driven by an expected attendance of 450 million people over forty-five days. In 2019, daily spending per person ranged from Rs. 300 to 500 and was anticipated to rise to Rs. 500 in 2025 due to inflation. The Maha Kumbh of 2025 was anticipated to have significant economic implications with an expected attendance of over forty crores. This event, which spanned forty-six days and covered 10,000 acres of area, functioned as both a major religious gathering and an economic

drive. Earlier in the year 2019, the Kumbh Mela contributed Rs. 1.2 lakh crore economy to Uttar Pradesh, drawing twenty-four crore visitors, which was twice the number of events of 2013 Kumbh. With a supporting budget of Rs. 7,500 crores (Rs. 5,400 crores from the Uttar Pradesh and Rs. 2,100 crores from the central government), Maha Kumbh 2025 was projected to generate an economic impact of rupees four lakh crores, potentially contributing over one percent to GDP of India.

The Kumbh Mela acted as a massive employment generator. In the previous Kumbh of 2013, it created nearly 100,000 direct jobs and a similar number of indirect employment opportunities. In 2019, this number rose to over 600,000 employments. In 2025, it was estimated that more than 800,000 occupations would be created within a month, covering diverse sectors such as tourism and hospitality, where 300,000 individuals are expected to find work in hotels, guesthouses, and other lodging facilities. Approximately 150,000 people, including drivers, conductors, and logistics personnel, benefited from the increased demand for public and private transportation.The tourism and hospitality sectors stand to gain substantially from the influx of visitors. Transportation was another major beneficiary of the Maha Kumbh. In 2019, the Indian Railways operated over 1,000 special trains to cater to the influx of pilgrims. For 2025, it was to exceed 1,500 special trains and many motor vehicles, contributing Rs. 20,000 crores in revenue. Similarly, state owned bus services, private operators, generated approximately an additional Rs. 12,000 crores. Ride-acclaiming platforms like Ola and Uber, as well as local taxi and auto-rickshaw operators, were expected to earn over Rs. 4,000 crores during the gatherings at Prayagraj.

The planning and management at Maha Kumbh have proved Indian potential with insignificant negligence. Hosting an event of this magnitude requires substantial investment in infrastructure. For the 2025 Maha Kumbh Mela, the Uttar Pradesh government has allocated nearly Rs. 5,500 crores to improve roads, bridges, sanitation, and fresh water supply. This spending not only ensured success, though leaves a legacy for the residents of Prayagraj. Improved connectivity and urban amenities have enhanced the appeal as a tourist destination, fostering long-term economic growth.

The Maha Kumbh has provided a unique platform for branding and marketing. In 2019, businesses invested nearly Rs. 2,000 crores in advertising and sponsorships. For 2025, this figure roughly exceeded Rs. 3,000 crores. Products across sectors such as

banking and telecom influenced the massive audience to improve their reach and visibility during the festival. Additionally, the promotional efforts, including digital campaigns and international broadcasts, further boosted the economic influence. Beyond its immediate benefits, the Maha Kumbh contributed to the long-term economic development of the region. The infrastructure upgradation and global exposures associated with the event enhanced the profile of Prayagraj as a cultural and tourist core. The improved amenities and connectivity attracted investments in the city and would likely sustain economic growth in future.

Maha Kumbh: The Socio-Economic Impact

The Maha Kumbh of 2025 has been considered as one of the most important festivals of Hinduism held in Prayagraj in January and February. It witnessed the activities of *akhadas* sects within Hinduism comprising s*adhu* with its own legacy and governed by related rituals, practices, and code of conduct. While there was a perception that *sadhus* and ascetics in Hinduism are focused on spiritual matters and disconnected from worldly concerns, *sadhus* have often taken roles as protectors of the *dharma* within society. This is particularly evident in the institution of the *akhada*, which were initially formed as combatant groups to protect Hindu religion (*dharma*) and its followers.

Historical accounts provide evidence of the role *akhadas* played in various disputes. In 1666, when Mughal Emperor Aurangzeb attacked the devotees and *sadhus* at the Kumbh Mela in Haridwar, the abstainers fought against the Mughal Army. Similarly, it is said that the *Naga Sadhus* defended numerous temples and monasteries from invaders. One notable incident occurred in 1757, when many *sadhus* and common people reportedly lost their lives defending Gokul from Ahmad Shah Abdali's army, achieved their objective despite facing a superior opponent.

Various storylines highlight the contributions of *akhadas* in preserving Hindu religion and its institutions during periods of invasion and colonization. However, the majority have often overlooked their roles. The 2025 Maha Kumbh presents an opportunity to acknowledge the historical legacy of *akhadas* and their role in protecting Hindu *dharma*.A key feature of the Maha Kumbh is the ceremonial procession of *akhadas* to the sacred site in Prayagraj, known as *Nagar Aagman* (earlier *peshwai*). This tradition, part of the Maha Kumbh legacy, exhibited the unique rituals and performances of these *akhadas*, reflecting their spiritual and warriorlike history. The Peshwai ceremony (*Nagar Aagman)* of major *akhadas*, specifically including Juna

Akhada, Naga Akhada, Kinnar Akhada, and Mahanirvani Akhada, has established the stage in Maha Kumbh for pilgrims.

It is worth to reveal here that the 2025 festival has been conceptualized as a green Maha Kumbh as well, integrating principles of environmental conservation with Hindu practices and the global discourse on sustainability. Sustainable schemes at the Maha Kumbh include plastic-free campaigns, eco-friendly sanitation, zero waste zones, green transportation, battery operated vehicles, renewable energy use, and community-driven cleanliness. These efforts were rooted in local traditions and involved the community in managing the Kumbh and, it also extended both the opportunities and challenges for the host city, Prayagraj. Thus, offering economic benefits and cultural upgrading while posing management and sustainability issues. The 2025 Maha Kumbh is expected to significantly boost the economy of host state. Historical data shows that the 1882 Kumbh Mela generated a substantial profit. Maha Kumbh 2025 is projected to bring in around Rs 25,000 crore or more in revenue for the state.

Conclusion

The Kumbh Mela is one of the largest religious gatherings in the world, attracting millions of pilgrims from India and abroad. It has a long history rooted in ancient Indian civilization, connected with various religious, cultural, and historical narratives that have influenced the subcontinent for millennia. The event is a combination of spirituality and business, generating economic surges and leaving lasting infrastructure and cultural impacts on society, and this impact extends far beyond the edge of religion, encompassing diverse sectors such as hospitality, transportation, and infrastructure development. The Maha Kumbh of 2025 has attracted pilgrims seeking self-discovery and spiritual restoration. Balancing profit with sustainability, equity, and environmental stewardship is essential for future events. Despite rapid globalization and technological progress, the Maha Kumbh remains a global attraction, crossing borders and cultures. Its message of harmony, peace, and spiritual awakening resonates with people of all faiths and backgrounds, inspiring a sense of collective purpose and shared humanity.

REFERENCE

1. Amin, Zubair. (10 February 2025). *Massive Maha Kumbh Turnout As Nearly*

One-Third Of India's Population Descends On Prayagraj, Numbers Exceed All Projections. https://www.newsx.com/maha-kumbh-2025/massive-maha-kumbh-turnout-as-nearly-one-third-of-indias-population-descends-on-prayagraj-numbers-exceed-all-projections/#google_vignette Noida. NewsX.

2. Chaubey, Santosh. (16 January 2025). *Maha Kumbh 2025: A massive spiritual gathering with unparalleled astronomical economic potential*. https://ddnews.gov.in/en/mahakumbh-2025-a-massive-spiritual-gathering-with-unparalleled-astronomical-economic-potential/. DD National.
3. Dixit, Kapil (03 February 2025). *Maha Kumbh 2025: A beacon of service, inclusion, and social harmony*. Maha Kumbh 2025: https://timesofindia.indiatimes.com/city/allahabad/prayagraj-maha-kumbh-2025-a-beacon-of-service-inclusion-and-social-harmony-/articleshow/117884735.cms. Times of India.
4. ET News Digital. (13 January 2025). *Maha Kumbh Mela 2025, Prayagraj: Understanding the economic impact. Maha Kumbh Mela 2025*, https://www.etnownews.com/economy/maha-kumbh-mela-2025-prayagraj-understanding-the-economic-impact-article-117186613. ET Now.
5. Flood, D. Gavin. (1996). *An introduction to Hinduism*. UK. Cambridge University Press.
6. Lipner, Julius. (1994). *Hindus: Their Religious Beliefs and Practices*. London. Routledge.
7. Maclean, Kama. (2008). *Pilgrimage and Power, The Kumbh Mela in Allahabad, 1765-1954*. New York. Oxford University Press.
8. Namita. (14 January 2025). *Mahakumbh expected to boost economy by Rs 2-4 lakh crore*. https://www.newindianexpress.com/nation/2025/Jan/14/mahakumbh-expected-to-boost-economy-by-rs-2-4-lakh-crore. The New Indian Express.
9. Swami, Loknath HH. (2020). *Kumbh: The Festival of Immortality*. Pune. Padyatra Press.
10. Tully, Mark. (2001). *The Kumbh Mela*. Delhi. Indica Publication.

Mānaviki सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

भारतीय समाज और संस्कृति पर कुम्भ का प्रभाव

डॉ. पुष्पा सिंह*

शोध-संक्षेप : भारतीय समाज पर कुम्भ का प्रभाव एक व्यापक और बहुस्तरीय विषय है। कुम्भ मेला एक महत्त्वपूर्ण हिंदू त्योहार है जो हर 12 वर्षों में आयोजित किया जाता है, और यह भारतीय समाज पर कई तरह के प्रभाव डालता है।

कुम्भ मेले का भारतीय समाज पर सामाजिक प्रभाव बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह त्योहार लोगों को एक साथ लाता है और उन्हें अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को मनाने का अवसर प्रदान करता है। कुम्भ मेले के दौरान, लोग अपने परिवार और मित्रों के साथ मिलते हैं और अपनी सांस्कृतिक विरासत को साझा करते हैं।

कुम्भ मेले का भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह त्योहार लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान करते हैं। कुम्भ मेले के दौरान, स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा मिलता है, और यह त्योहार स्थानीय समुदायों के लिए एक महत्त्वपूर्ण आय स्रोत बन जाता है।

कुम्भ मेले का भारतीय संस्कृति पर भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह त्योहार भारतीय संस्कृति की समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित करता है। कुम्भ मेले के दौरान, लोग अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को मनाते हैं और अपनी सांस्कृतिक विरासत को साझा करते हैं।

इस प्रकार, कुम्भ मेले का भारतीय समाज पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जो सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है।

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार माना जाता है कि पहले कुम्भ का आयोजन राजा हर्षवर्द्धन के राज्यकाल (606 ई. - 643 ई.) में आरंभ हुआ था। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी भारत यात्रा का उल्लेख करते हुए कुम्भ मेले के आयोजन का उल्लेख किया है। साथ ही साथ उसने राजा हर्षवर्द्धन की दानवीरता का भी जिक्र किया है। ह्वेनसांग ने कहा है कि राजा हर्षवर्द्धन हर पाँच साल में नदियों के संगम पर एक बड़ा आयोजन करते थे, जिसमें वह अपना पूरा कोष गरीबों और जरूरतमंद लोगों में दान दे देते थे। प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों के अनुसार इन संयोगों में कुम्भ का

*सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, कर्मादेवी स्मृति महाविद्यालय, संसारपुर, बस्ती, उ.प्र.

आयोजन होता है- प्रथम बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा के किनारे पर कुम्भ का आयोजन होता है। दूसरा बृहस्पति के मेष राशि में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चंद्र के मकर राशि में होने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुम्भ का आयोजन होता है। तीसरा बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में आने पर नासिक में गोदावरी के किनारे पर कुम्भ का आयोजन होता है और बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में क्षिप्रा तट पर कुम्भ का आयोजन होता है।

धार्मिक ग्रन्थों में कुम्भः

1. "कुम्भे स्नानं पापं नाशयति"- यह उद्धरण वेदों में आता है, जिसका अर्थ है कि कुम्भ में स्नान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं।
2. "कुम्भे स्नानं पुण्यं जन्मसहस्रैः प्रदानं"- यह उद्धरण पुराणों में आता है, जिसका अर्थ है कि कुम्भ में स्नान करने से पुण्य मिलता है, जो सहस्रों जन्मों के पुण्य के बराबर होता है।
3. "कुम्भे स्नानं यः कुर्यात स पापैः प्रमुच्यते" - यह उद्धरण महाभारत में आता है, जिसका अर्थ है कि जो व्यक्ति कुम्भ में स्नान करता है, वह पापों से मुक्त हो जाता है।
4. प्राचीन भारतीय महाकाव्यों यथा महाभारत में प्रयागराज के महत्त्व और कुम्भ-स्नान की धार्मिकता का उल्लेख है। भागवत पुराण में समुद्र मंथन और अमृत कलश की कथा विस्तार से दी गई है। पद्म पुराण में प्रयागराज में स्नान के महत्त्व को दर्शाया गया है। स्कन्द पुराण में कुम्भ पर्व के दौरान संगम स्नान के लाभ बताए गए हैं।

इन उद्धरणों से पता चलता है कि कुम्भ को हिंदू धर्म में एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक आयोजन माना जाता है, जो पापों से मुक्ति और परमगति को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है।

कुम्भ का इतिहास और उसकी महता

इतिहास के पन्नों में कुम्भ एक महत्त्वपूर्ण आयोजन के रूप में दर्ज है। यहाँ कुछ ऐतिहासिक तथ्य हैं जो कुम्भ के महत्त्व को दर्शाते हैं-

प्राचीन काल

कुम्भ मेले की परंपरा कितनी पुरानी है, इसका कोई निश्चित प्रमाण तो नहीं है, लेकिन कई ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि यह मेला कम से कम 2000 वर्षों से भी अधिक पुराना है। चीनी यात्री ह्वेनसांग (7वीं शताब्दी) ने अपने यात्रा-वृत्तांतों में प्रयागराज में एक भव्य मेले का वर्णन किया है, जिसे आज के कुम्भ मेले से जोड़ा जाता है।

मध्यकाल

16वीं शताब्दी में अकबर ने प्रयागराज को विशेष धार्मिक केंद्र के रूप में स्थापित किया। 18वीं शताब्दी में मराठा शासकों, विशेष रूप से पेशवाओं ने कुम्भ मेले को सुव्यवस्थित करने में योगदान दिया।

आधुनिक काल

ब्रिटिश शासनकाल में इस मेले के प्रशासन को व्यवस्थित किया गया। 1954 के बाद से भारत सरकार इस मेले की व्यवस्था संभालने लगी। 2017 में यूनेस्को ने कुम्भ मेले को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता दी।

धार्मिक महत्त्व

यह त्योहार हिंदुओं के लिए धार्मिक रूप से सबसे महत्त्वपूर्ण है। हर कुम्भ अवसर पर, लाखों हिंदुओं ने समारोह में भाग लिया है। हरिद्वार में 2003 में कुम्भ के दौरान 10 लाख से अधिक भक्त इकट्ठे हुए थे। भारत के सभी कोनों से संन्यासी, पुजारी और योगी कुम्भ में भाग लेने के लिए एकत्र हुए। हरिद्वार को बहुत ही पवित्र तीर्थ माना जाता है, इस तथ्य के कारण कि गंगा यहाँ से पहाड़ों से मैदानों में प्रवेश करती है। इस त्योहार का पूरे भारत के सभी आश्चर्यजनक संतों द्वारा दौरा किया जाता है। नागा साधु ऐसे विलक्षण संत हैं, जो कभी भी कोई कपड़ा नहीं पहनते हैं और राख में लिप्त रहते हैं। इन लंबे बाल वाले नागाओं पर भीषण सर्दी और गर्मी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। परिव्राजक वे लोग हैं जो चुप्पी साधे रहते हैं और लोगों को अपने रास्तों से बाहर निकालने के लिए घंटियों का प्रयोग करते हैं। सिरसासिन वे लोग हैं जो 24 घंटे सर के बल खड़े होकर तप करते हैं। कल्पवासी वे लोग हैं जो दिन में तीन बार स्नान करते हैं और पूरे कुम्भ के दौरान गंगा के किनारों पर समय बिताते हैं। यह माना जाता है कि कुम्भ के दौरान स्नान करना सभी पापों और बुराइयों का इलाज करता है और बाघ, मोक्ष प्रदान करता है। यह भी माना जाता है कि कुम्भ योग के समय गंगा का पानी सकारात्मक ऊर्जा से भरा होता है और कुम्भ के समय जल सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति की सकारात्मक विद्युत चुम्बकीय विकिरणों से भरा होता है।

वाल्मीकि रामायण में कहा गया है कि राम अपने वनवास काल में जब ऋषि भरद्वाज से मिलने गए तो वार्तालाप में ऋषिवर ने कहा कि 'हे राम, गंगा-यमुना के संगम का जो स्थान है वह बहुत ही पवित्र है। आप वहाँ भी रह सकते हैं।' श्रीरामचरितमानस में प्रयागराज के महत्त्व का वर्णन बहुत रोचक तरीके से और विस्तारपूर्वक किया गया है–

माघ मकरगति रवि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई।।
देव दनुज किन्नर नर स्रेनी। सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी।।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार माघ के महीने में त्रिवेणी संगम स्नान का यह रोचक प्रसंग कुम्भ के समय साकार होता है। साधु-संत प्रातःकाल संगम पर स्नान करके कथा कहते हुए ईश्वर के विभिन्न स्वरूपों और तत्त्वों की विस्तार से चर्चा करते हैं। कुम्भ भारतीय संस्कृति का महापर्व है और इस पर्व पर स्नान, दान, ज्ञान मंथन के साथ ही अमृत प्राप्ति की बात भी कही गई है। कुम्भ का बौद्धिक, पौराणिक ज्योतिष के साथ-साथ वैज्ञानिक आधार भी है। इसका वर्णन भारतीय संस्कृति के आदिग्रंथ वेदों में भी मिलता है। प्रयागराज की महत्ता वेदों और पुराणों में विस्तार से

बताई गई है। एक बार शेषनाग से ऋषिवर भरद्वाज ने भी यही प्रश्न किया था कि प्रयागराज को तीर्थराज क्यों कहा जाता है? इस पर शेषनाग ने उत्तर दिया कि एक ऐसा अवसर आया, जब सभी तीर्थों की श्रेष्ठता की तुलना की जाने लगी, उस समय भारत में समस्त तीर्थों को तुला के एक पलड़े पर रखा गया और प्रयागराज को दूसरे पलड़े पर, फिर भी प्रयागराज का पलड़ा भारी पड़ गया। दूसरी बार सप्तपुरियों को एक पलड़े में रखा गया और प्रयागराज को दूसरे पलड़े पर, वहाँ भी प्रयागराज वाला पलड़ा भारी रहा। इस प्रकार प्रयागराज की प्रधानता होने से इसे तीर्थों का राजा कहा जाने लगा। इस पावन क्षेत्र में दान, पुण्य, कर्म, यज्ञ आदि के साथ–साथ त्रिवेणी संगम का अति महत्त्व है।

रामायण के अनुसार यह संपूर्ण विश्व का एकमात्र स्थान है जहाँ पर तीन–तीन नदियाँ गंगा, यमुना, सरस्वती मिलती हैं, यहीं से अन्य नदियों का अस्तित्व समाप्त होकर आगे एकमात्र नदी गंगा का महत्त्व शेष रह जाता है। इस भूमि पर स्वयं ब्रह्माजी ने यज्ञ आदि कार्य संपन्न कर ऋषि और देवताओं ने त्रिवेणी संगम में स्नान कर अपने आपको धन्य माना। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यहाँ पर स्नान करने वाले विभिन्न दिव्यलोक को प्राप्त करते हैं और उनका पुनर्जन्म नहीं होता है। पद्म पुराण कहता है कि यह यज्ञभूमि है, देवताओं द्वारा सम्मानित इस भूमि में यदि थोड़ा भी दान किया जाता है तो उसका अनंत फल प्राप्त होता है। प्रयागराज की श्रेष्ठता के संबंध में यह भी कहा गया है कि जिस प्रकार ग्रहों में सूर्य और नक्षत्रों में चंद्रमा विशेष होता है उसी तरह तीर्थों में प्रयागराज सर्वोतम तीर्थ है।

भारतीय समाज पर कुम्भ का प्रभाव

कुम्भ भारतीय समाज और संस्कृति पर एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है। यह आयोजन भारतीय समाज में धार्मिक एकता, सांस्कृतिक समृद्धि, आर्थिक विकास, सामाजिक सौहार्द, और पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखने में मदद करता है।

धार्मिक महत्त्व

कुम्भ एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक आयोजन है, जो हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह आयोजन भारतीय समाज में धार्मिक एकता और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देता है। कुम्भ के दौरान लाखों श्रद्धालु और साधु–संत एकत्रित होते हैं और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं।

सांस्कृतिक महत्त्व

कुम्भ भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह आयोजन भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को प्रदर्शित करता है। कुम्भ के दौरान विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे कि संगीत, नृत्य, और नाटक। ये कार्यक्रम उपस्थित श्रद्धालुओं को भारतीय संस्कृति से परिचित कराते हैं।

आर्थिक महत्त्व

कुम्भ एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक आयोजन भी है। यह आयोजन भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्त्वपूर्ण योगदान करता है, खासकर पर्यटन और व्यापार के क्षेत्र में। कुम्भ के दौरान करोड़ों श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते हैं। ये पर्यटक और श्रद्धालु स्थानीय व्यवसायों में निवेश करते हैं और भारतीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करते हैं।

सामाजिक महत्त्व

कुम्भ एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक आयोजन भी है। यह आयोजन भारतीय समाज में सामाजिक एकता और सौहार्द को बढ़ावा देता है। कुम्भ के दौरान विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे कि अन्नदान, वस्त्रदान, और शिक्षा कार्यक्रम। ये कार्यक्रम भारतीय समाज में सामाजिक एकता और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं।

पारंपरिक महत्त्व

कुम्भ एक महत्त्वपूर्ण पारंपरिक आयोजन है। यह आयोजन भारतीय समाज में पारंपरिक मूल्यों और रीति-रिवाजों को बनाए रखने में मदद करता है। कुम्भ के दौरान विभिन्न प्रकार के पारंपरिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे कि पूजा-पाठ, हवन, और यज्ञ। ये कार्यक्रम भारतीय समाज में पारंपरिक मूल्यों और रीति-रिवाजों को बनाए रखने में मदद करते हैं।

निष्कर्ष:

कुम्भ मेला, अपनी भव्यता और पवित्रता के साथ, भारत के स्थायी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक ताने-बाने का एक प्रमाण है। यह स्मारकीय उत्सव मात्र धार्मिक अनुष्ठान से आगे बढ़कर एक ऐसी घटना को मूर्त रूप देता है जो परंपरा को आधुनिकता, आध्यात्मिकता को सामाजिक जिम्मेदारी और स्थानीय पहचान को वैश्विक मान्यता के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से मिश्रित करता है। इस खोज के दौरान, हमने देखा है कि कुम्भ मेला भारतीय समाज के एक सूक्ष्म जगत् के रूप में कैसे कार्य करता है। यह देश की समृद्ध ऐतिहासिक विरासत को दर्शाता है, जिसकी जड़ें प्राचीन पौराणिक कथाओं और परंपराओं में गहराई से समाहित हैं। आर्थिक रूप से, यह एक पावरहाउस है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मज़बूत करता है, पर्यटन को बढ़ावा देता है और बुनियादी ढाँचे के विकास को बढ़ावा देता है। सांस्कृतिक रूप से, यह कला, शिल्प और परंपराओं का एक जीवंत मोज़ेक है, जो भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य की विविधता और समृद्धि को जीवंत करता है। कला, साहित्य और मीडिया पर इस उत्सव का गहरा प्रभाव इसके व्यापक प्रभाव को दर्शाता है, यह रचनात्मक दिमागों को प्रेरित करता है और भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत की वैश्विक प्रशंसा को बढ़ावा देता है। फिर भी, कुम्भ मेला अपनी चुनौतियों से रहित नहीं है। पर्यावरण संबंधी चिंताएँ, भीड़ प्रबंधन के मुद्दे और परंपरा को बनाए रखने तथा आधुनिकता को अपनाने के बीच नाजुक संतुलन ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान देने और कार्रवाई करने की आवश्यकता

है। इन चुनौतियों के बावजूद, कुम्भ मेले का यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल होना और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों तथा विद्वानों के लिए इसका आकर्षण, इसके वैश्विक महत्त्व को रेखांकित करता है। यह केवल एक उत्सव नहीं है; यह विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने वाला, वैश्विक संवाद को बढ़ावा देने वाला और आपसी समझ और सम्मान को बढ़ावा देने वाला एक पुल है। जैसे ही हम इस अन्वेषण का समापन करते हैं, यह स्पष्ट होता है कि कुम्भ मेला केवल एक आयोजन नहीं है; यह जीवन, आस्था और एकता का उत्सव है। यह मानवीय भावना, लचीलापन और एकजुटता का सार समेटे हुए है, जो हमें उन साझा मूल्यों और सामूहिक विवेक की याद दिलाता है जो हम सभी को एक साथ बाँधते हैं। मतभेदों और विभाजनों से चिह्नित दुनिया में, कुम्भ मेला आशा और सद्भाव की एक किरण के रूप में उभरता है, जो हमें समकालीन समाज में इसके द्वारा प्रचारित गहन पाठों और मूल्यों को प्रतिबिंबित करने, जुड़ने और संजोने के लिए आमंत्रित करता है। इसलिए, कुम्भ मेला उन कालातीत नदियों की तरह बहता रहता है जिनके तट पर इसे मनाया जाता है।

सन्दर्भ-सूची

- ◆शर्मा, रामविलास, 'कुम्भ- एक सांस्कृतिक अध्ययन'
- ◆कुमार, कृष्ण, 'कुम्भ मेला- एक ऐतिहासिक विश्लेषण'
- ◆श्रीवास्तव, सरोजिनी, 'भारतीय समाज में कुम्भ का महत्त्व'
- ◆कुमार, विजय, 'कुम्भ : एक धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन'
- ◆कुमार, राजेश, 'कुम्भ मेले का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव'
- ◆'कुम्भ- एक सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजन' - शोध-पत्र, दिल्ली विश्वविद्यालय
- ◆'कुम्भ मेला' - विकिपीडिया
- ◆'कुम्भः एक सांस्कृतिक अध्ययन'- ऑनलाइन पुस्तक, गूगल बुक्स
- ◆'कुम्भ मेले का महत्त्व' - ऑनलाइन लेख, हिंदी न्यूज़ पोर्टल

Mānaviki सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्तःअनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

कुम्भ के दौरान धार्मिक अनुष्ठानों एवं प्रथाओं का महत्व

डॉ. नीलम सिंह*

प्रस्तावना : कुम्भ मेला भारतीय संस्कृति का एक अनूठा और गहन धार्मिक महोत्सव है, जो न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि मानवीय आध्यात्मिकता का जीवंत प्रतीक भी है। कुम्भ मेला भारत में आयोजित होने वाला एक विश्व-प्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक महोत्सव है, जो हर 12 साल में एक बार चार प्रमुख तीर्थ स्थलों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित होता है। वहीं महाकुम्भ मेला 12 कुम्भ मेलों के बाद यानि 144 साल में लगता है, जहाँ देश-विदेश से हिंदू-धर्म में आस्था रखने वाले लाखों श्रद्धालु पवित्र नदी में स्नान करते हैं और सुख-शांति की कामना करते हैं। कुम्भ मेला में उपस्थित लोग हिंदू धार्मिक जीवन के सभी वर्गों से आते हैं, जिनमें साधु भी शामिल हैं, उनमें से कुछ साल भर नग्न रहते हैं या सबसे कठोर शारीरिक अनुशासन का पालन करते हैं। तपस्वी जो केवल इन तीर्थयात्रियों के लिए अपना एकांत छोड़ते हैं और यहाँ तक कि नवीनतम तकनीक का उपयोग करने वाले रेशमी वस्त्रधारी शिक्षक भी शामिल हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में कुम्भ के दौरान होने वाले धार्मिक अनुष्ठानों एवं प्रथाओं के महत्त्व के बारे में पाठकों को जागरूक करने का प्रयास किया गया है।

कुंजी-शब्द : आध्यात्मिकता, अमूर्त, समरसता, गहन, सागर-मंथन, अमृत-कलश, वृत्तांत, आवेशित।

कुम्भ मेले का इतिहासः

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ होता है-घड़ा (बर्तन), कुम्भ एक राशि का नाम भी है, जिसमें इस समयावधि में बृहस्पति रहता है। कुम्भ मेले का इतिहास कम से कम 2000 साल पुराना है, 7वीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के काल में इसका पहला ऐतिहासिक उल्लेख मिलता है। आदि शंकराचार्य ने इसे संगठित स्वरूप दिया। उन्होंने चर्चा और बहस के लिए विद्वान तपस्वियों की नियमित सभाओं

*सहायक प्राध्यापक, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

की स्थापना भी की थी। कुम्भ मेले का एक और उल्लेख प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनत्सांग के वृत्तांतों में मिलता है जिन्होंने 629-645 ई. के दौरान भारत की अपनी यात्रा के दौरान कुम्भ मेले की भव्यता का दस्तावेजीकरण किया था। उनके लेखन में नदियों के पवित्र संगम पर राजा हर्षवर्धन के उदार कार्यों पर प्रकाश डाला गया है, जहाँ राजा हर्षवर्धन ने विद्वानों और तपस्वियों को उपहार और दान दिये थे। राजा हर्षवर्धन को प्रयाग में पवित्र संगम पर एक भव्य पंचवर्षीय सभा का आयोजन करने के लिए भी जाना जाता है, जिसके दौरान उन्होंने अपनी सारी संपत्ति दान कर दी थी । श्रीमद्भागवतपुराण, विष्णुपुराण, महाभारत आदि पुराणों में समुद्र-मंथन की कथा विस्तार से वर्णित है, जो कुम्भ मेले के मूल में है। विष्णुपुराण में विशेष रूप से ग्रहों की स्थिति के आधार पर कुम्भ के आयोजन का विवरण दिया गया है। प्रो. गिरिजाशंकर शास्त्री (बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी) के अनुसार स्कंदपुराण में मेले की उत्पत्ति का उल्लेख है लेकिन अब तक जिन संस्करणों का अध्ययन किया गया है, उनमें विस्तृत संदर्भ नहीं मिलते। स्कंदपुराण हिंदू धर्म के 18 महापुराणों में से एक है। यह भगवान् शिव के द्वारा रचित माना जाता है।

कुम्भ के पौराणिक संदर्भ:

कुम्भ मेले का पौराणिक इतिहास समुद्र मंथन से जुड़ा हुआ है, पौराणिक कथा के अनुसार जब महर्षि दुर्वासा के शाप से देवता कमजोर पड़ गए तो भगवान् विष्णु ने उन्हें दैत्यों के साथ क्षीर सागर का मंथन करने की सलाह दी। इस मंथन के दौरान कई तरह के रत्न उत्पन्न हुए जिन्हें देवताओं और असुरों ने बाँट लिया। समुद्र मंथन के आखिर में अमृत निकला जिसे इंद्र के पुत्र जयंत ने अमृत कलश में रखा। राक्षसों ने अमृत पाने की लालसा में जयंत का पीछा किया और 12 दिन तक देवताओं और दानवों के बीच भीषण युद्ध हुआ। इस छीना-झपटी में अमृत की कुछ बूंदें धरती के 4 स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिर गईं। माना जाता है कि तभी से इन चार स्थानों पर हर 12 साल के अंतराल में कुम्भ का आयोजन किया जाता है। यहाँ श्रद्धालु पवित्र नदियों में स्नान करने आते हैं ताकि वे अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकें और पुण्य कमा सकें।

कुम्भ का सामाजिक और आध्यात्मिक महत्त्व:

यह मेला भारतीय धार्मिक परंपरा और आस्था का प्रतीक है, जिसमें विशेष रूप से स्नान की महिमा का वर्णन किया जाता है। कहा जाता है कि जब भक्त पवित्र नदियों (गंगा, यमुना, गोदावरी और क्षिप्रा) में स्नान करते हैं, तो वे न केवल शारीरिक रूप से शुद्ध होते हैं बल्कि मानसिक और आत्मिक शुद्धि भी प्राप्त करते हैं। **यूनेस्को ने कुम्भ मेला को 2017 में अपनी 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' सूची में शामिल किया।** यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल होने से कुम्भ मेला का महत्व और भी बढ़ गया है और यह सुनिश्चित करता है कि यह अद्भुत धरोहर आने वाली पीढियों तक सुरक्षित रहेगी। वर्तमान में महाकुम्भ मेला 13 जनवरी 2025 से प्रयागराज में आयोजित किया जा रहा है जो 26 फरवरी 2025 को महाशिवरात्रि

के दिन समाप्त होगा जिसमें लगभग 40 करोड़ लोगों के शामिल होने की संभावना है।

कुम्भ मेला केवल धार्मिक उत्सव ही नहीं बल्कि संस्कृतियों का संगम और आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक भी है, यह विश्व का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण सम्मेलन है। कुम्भ मेले में दान के कई रूप होते हैं। गौ दान, वस्त्र दान, द्रव्य दान, स्वर्ण दान जैसे कई दान किए जाते हैं। संतों और विद्वानों के प्रवचन सुनकर श्रद्धालु आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, आत्म साक्षात्कार की ओर अग्रसर होते हैं। कुम्भ मेला भारतीय संस्कृति की जीवंत परंपरा है जो एकता, करुणा और आस्था के मूल्यों को जीवंत रखता है, यह आध्यात्मिक शुद्धि और आंतरिक जागृति का महापर्व है।

कुम्भ मेलों के प्रकार :

कुम्भ मेले जो कई सप्ताह तक चलते हैं, हिंदू परंपरा के अनुसार विभिन्न समय और स्थानों पर मनाए जाते हैं। इन मेलों का बहुत आध्यात्मिक महत्त्व है और ये दुनिया भर से लाखों भक्तों को आकर्षित करते हैं। मेलों की आवृत्ति अलग-अलग होती है, कुछ सालाना होते हैं और महाकुम्भ मेला (महान कुम्भ महोत्सव) प्रयागराज में हर 144 साल में होता है। यह मेला प्रयागराज में आयोजित किया जाता है। कुम्भ मेला हर 03 साल में एक बार हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन में आयोजित किया जाता है। अर्धकुम्भ मेला हर 06 साल में एक बार हरिद्वार और प्रयागराज में आयोजित होता है। पूर्ण कुम्भ मेला हर 12 साल में एक बार हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन में आयोजित होता है। महाकुम्भ मेला हर 144 साल में एक बार प्रयागराज में आयोजित किया जाता है।

महाकुम्भ के प्रमुख अनुष्ठान और प्रथाएं:

पेशवाई जुलूस :

कुम्भ मेले की शुरुआत पेशवाई जुलूस से होती है, जो अखाड़ों (परंपरागत हिंदू मठवासी संगठन जो आध्यात्मिक और सैनिक अनुशासन का मिश्रण करते हैं) का उत्सव के मैदान में औपचारिक प्रवेश है। पारंपरिक राजसी पोशाकों से सुसज्जित हाथी, घोड़े और रथों पर सवार होकर, संत और द्रष्टा सड़कों पर चलते हैं और दर्शकों को आशीर्वाद देते हैं। प्राचीन परंपराओं में निहित, अखाड़े धार्मिक प्रथाओं, दर्शन और शारीरिक प्रशिक्षण को संरक्षित करते हैं।

अखाड़े:

अखाड़ा शब्द का अर्थ कुश्ती का मैदान होता है और यह आध्यात्मिक विकास और शारीरिक अनुशासन दोनों पर ध्यान केंद्रित करता है। ऐतिहासिक रूप से अखाड़े शिक्षा और रक्षा के केंद्र थे, जो सामाजिक परिवर्तनों और आक्रमणों के दौरान हिंदू धर्म की रक्षा करते थे। वे पवित्र स्थलों की रक्षा करते थे और सांसारिक जीवन का त्याग करने वाले तपस्वियों के लिए संरचना प्रदान करते थे।

निरंजनी अखाड़ा- यह अखाड़ा ध्यान, योग और पवित्र ग्रंथों पर ध्यान केंद्रित करता है;

पवित्रता और वैराग्य पर ध्यान केंद्रित करता है एवं आध्यात्मिक प्रवचन और अनुष्ठान आयोजित करता है।

वैष्णव अखाड़ा- भक्ति, योग, मंत्र और भगवद्गीता जैसे शास्त्र, भक्ति और सेवा पर जोर देते हैं और कीर्तन (भक्ति गाायन) आध्यात्मिक शिक्षाएँ और अनुष्ठान प्रदान करता है।

महानिर्वाणी अखाड़ा- आध्यात्मिक मुक्ति के लिए तप, योग ब्रह्मचर्य और शिव की भक्ति और शैव विरासत का उजागर करने वाले अनुष्ठान और जुलूस।

जूना अखाड़ा- ज्ञान प्राप्ति के लिए कठोर प्रशिक्षण, ध्यान, तपस्या और शास्त्र अध्ययन और साधुओं, हाथियों और संगीत के साथ भव्य जुलूस, उत्सव की आध्यात्मिक शुरुआत को चिह्नित करते हैं।

किन्नर अखाड़ा- ट्रांसजेंडर व्यक्तियों का सामाजिक न्याय, समानता और आध्यात्मिक समावेश तथा विविधता का प्रतीक है, मानदंडों को चुनौती देता है, और संस्कृति को बढ़ावा देता है, जिससे व्यापक ध्यान आकर्षित होता है।

शाही स्नान :

शाही स्नान कुम्भ मेले का सर्वोच्च अनुष्ठान माना जाता है, जिसमें नागा साधु सबसे पहले नदी में डुबकी लगाते हैं उसके बाद लाखों श्रद्धालु स्नान करते हैं। नागा साधुओं द्वारा किया जाने वाला प्रथम स्थान अत्यंत पवित्र माना जाता है। कुम्भ मेले का सबसे बड़ा आकर्षण नागा साधु हैं ये साधु हिमालय और घने जंगलो में तपस्या करते हैं और केवल कुम्भ जैसे आयोजनों में सार्वजनिक रूप से दिखाई देते हैं।

विशेषताएं- राख से सजा नग्न शरीर, लंबी जटाएं, अद्वितीय अनुष्ठान- नागा साधुओं का शाही स्नान पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के लिए एक अनोखा अनुभव होता है। वे त्रिवेणी संगम पर भव्य जुलूस के साथ पहुंचते हैं जो इस महाकुम्भ को और भी विशेष बनाता है। शाही स्नान में 17 प्रकार केश्रृंगार करते हैं, संगम पर पवित्र डुबकी लगाते हैं, भगवान शिव की आराधना करते हैं, महाशिवरात्रि पर विशेष अनुष्ठान करते हैं। नागा साधु इस दौरान अपने आंतरिक और बाह्य शुद्धिकरण पर ध्यान देते हैं जो उनकी तपस्या का मूल उद्देश्य होता है।

महाकुम्भ मेला अनुष्ठानों का एक भव्य समागम है, जिसमें स्नान समारोह सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। त्रिवेणी संगम पर आयोजित इस पवित्र अनुष्ठान में भाग लेने के लिए लाखों तीर्थयात्री एकत्रित होते हैं, जो इस विश्वास पर गहराई से आधारित है कि पवित्र जल में खुद को विसर्जित करने से व्यक्ति के सभी पाप धुल जाते हैं। माना जाता है कि शुद्धिकरण का यह कार्य व्यक्ति और उसके पूर्वजों दोनों को पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्त करता है जो अंतत: मोक्ष या आध्यात्मिक मुक्ति की ओर ले जाता है। स्नान अनुष्ठान के साथ-साथ तीर्थयात्री पवित्र नदी के तट पर पूजा भी करते हैं और साधुओं और संतों के नेतृत्व में ज्ञानवर्धक प्रवचनों में भाग लेते हैं जो अनुभव में

आध्यात्मिक गहराई की एक परत जोड़ते हैं। पूरे प्रयागराज महाकुम्भ में पवित्र जल में डुबकी लगाना पवित्र माना जाता है, लेकिन कुछ तिथियाँ विशेष महत्त्व रखती हैं जैसे पौष पूर्णिमा (13 जनवरी) मकर सक्रांति (14 जनवरी) आदि। इन तिथियों पर संतों, उनके शिष्यों और विभिन्न अखाड़ों (धार्मिक आदेशों) के सदस्यों की शानदार शोभायात्राएं देखी जाती हैं जो शाही स्नान या राजयोगी स्नान के रूप में जाने वाले भव्य अनुष्ठान में भाग लेते हैं। यह महाकुम्भ मेले की आधिकारिक शुरुआत का प्रतीक है, और इस आयोजन का मुख्य आकर्षण है। शाही स्नान की परंपरा इस विश्वास पर आधारित है कि जो लोग अनुष्ठान में भाग लेते हैं, उन्हें पुण्यकर्मों का आशीर्वाद और अपने पहले आए संतों का गहन ज्ञान प्राप्त होता है, क्योंकि वे खुद को पवित्र जल में डुबोते हैं। महाकुम्भ 2025 का पहला शाही अमृत स्नान 13 जनवरी 2025 को गंगा और यमुना के पवित्र संगम पर रवि योग के दौरान सुबह 7:15 से 10:38 बजे तक होगा।

आरतीः

नदी के किनारे होने वाली मनमोहक गंगा आरती समारोह प्रतिभागियों के लिए अविस्मरणीय दृश्य होता है। इस पवित्र अनुष्ठान के दौरान, पुजारी जलते हुए दीपकों को थामे हुए जटिल अनुष्ठान करते हैं जो एक शानदार नजारा पेश करता है। गंगा आरती में हजारों श्रद्धालु आते हैं, जो पवित्र एवं मोक्षदायिनी गंगा नदी के प्रति गहरी भक्ति और श्रद्धा का भाव जगाते हैं।

कल्पवासः

कल्पवास महाकुम्भ मेले का एक गहन लेकिन कम ज्ञात पहलू है, जो साधकों को आध्यात्मिक अनुशासन, तपस्या और उच्च चेतना के लिए समर्पित एक पवित्र आश्रय प्रदान करता है। संस्कृत से व्युत्पन्न कल्प का अर्थ है ब्रह्मांडीय युग और वास का अर्थ है निवास जो गहन आध्यात्मिक अभ्यास की अवधि का प्रतीक है। कल्पवास में भाग लेने वाले तीर्थयात्री सादगी का जीवन अपनाते हैं, सांसारिक सुखों का त्याग करते हैं और ध्यान, प्रार्थना और शास्त्र अध्ययन जैसे दैनिक अनुष्ठानों में संलग्न होते हैं। इस अभ्यास में वैदिक यज्ञ और होम, पवित्र अग्नि, अनुष्ठान भी शामिल हैं जो दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करते हैं, और सत्संग, बौद्धिक और भक्ति विकास के लिए आध्यात्मिक प्रवचन सुनते हैं। यह विसर्जित अनुभव बड़े तीर्थयात्री के भीतर गहन भक्ति और आध्यात्मिक परिवर्तन को बढ़ावा देता है।

प्रार्थना और अर्पणः

भक्त कुम्भ के दौरान संगम पर आने वाले देवताओं के सम्मान में देव पूजन करते हैं। श्राद्ध (पूर्वजों को भोजन और प्रार्थना अर्पित करना) और वेणी दान (गंगा में बाल चढ़ाना) जैसे अनुष्ठान इस त्योहार का अभिन्न अंग है, जो समर्पण और शुद्धि का प्रतीक है। सत्संग, या सत्य के साथ जुड़ना, एक और मुख्य अभ्यास है, जहाँ भक्त संतों और विद्वानों के प्रवचन सुनते हैं। ज्ञान का यह आदान-प्रदान आध्यात्मिकता की गहरी समझ को बढ़ावा देता है, जो उपस्थित लोगों को उच्च

आत्म–साक्षात्कार करने के लिए प्रेरित करता है। कुम्भ के दौरान परोपकार एवं दान का बहुत महत्त्व है। इस दौरान गौ दान, वस्त्र दान, द्रव्य दान, और स्वर्ण दान जैसे दान के कार्य पुण्य माने जाते हैं।

यज्ञ (अग्नि समारोह):

यज्ञ पवित्र अग्नि अनुष्ठान हैं जो पुजारियों और आध्यात्मिक नेताओं द्वारा किए जाते हैं। पवित्र वैदिक ग्रंथों से मंत्रों के जाप के बीच घी, अनाज और जड़ी–बूटियों जैसी भेंटें पवित्र अग्नि में डाली जाती हैं। इन समारोहों का उद्देश्य पर्यावरण को शुद्ध करना, ईश्वरीय कृपा प्राप्त करना और प्रकृति के प्राकृतिक क्रम को बनाए रखना है।

दीप दान:

प्रयागराज में कुम्भ मेले के दौरान, दीप दान की रस्म, पवित्र नदियों को एक मनमोहक दृश्य में बदल देती है। भक्त कृतज्ञता के रूप में त्रिवेणी संगम के बहते पानी पर हजारों जलते हुए दीये प्रवाहित करते हैं। ये दीये, जो अक्सर गेहूँ के आटे से बनाए जाते हैं और तेल से भरे होते हैं, एक दिव्य, चमक पैदा करते हैं, जो आध्यात्मिकता और भक्ति का प्रतीक है। मेले की पृष्ठभूमि में नदी पर टिमटिमाते दीयों का नजारा वातावरण को धार्मिक उत्साह और एकता की गहरी भावना से भर देता है। यह दृश्य तीर्थयात्रियों पर एक अमिट छाप छोड़ता है।

प्रयागराज पंचकोशी परिक्रमा:

प्रयागराज की परिक्रमा करने की ऐतिहासिक रस्म को तीर्थयात्रियों को प्राचीन प्रथाओं से फिर से जोड़ने के लिए पुनर्जीवित किया गया है। यह परिक्रमा द्वादश माधव और अन्य महत्त्वपूर्ण मंदिरों जैसे पवित्र स्थलों को शामिल करती है, जो सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए आध्यात्मिक तृप्ति प्रदान करती है। इसका उद्देश्य एक ऐतिहासिक अनुष्ठान को पुनर्जीवित करना है, साथ ही युवा पीढ़ी को इस महत्त्वपूर्ण आयोजन की समृद्ध सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विरासत से जुड़ने और उसकी सराहना करने का अवसर प्रदान करना है।

उपसंहार:

महाकुम्भ मेला धार्मिक समागम से कहीं बढ़कर है। यह आस्था, अनुष्ठानों और आध्यात्मिक ज्ञान से जुड़ा एक जीवंत उत्सव है जो भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का सार प्रस्तुत करता है। यह देश के गहरे लोकाचार का एक गहन प्रतिबिंब है, जो मानवता और ईश्वर के बीच स्थायी संबंध को दर्शाता है। पवित्र नदियों में पवित्र स्नान, उपवास, दान, और हार्दिक भक्ति जैसे सदियों पुराने अनुष्ठानों के माध्यम से, यह भव्य उत्सव प्रतिभागियों को मोक्ष का मार्ग प्रदान करता है। कुम्भ मेले में होने वाली प्रथाएं समय और स्नान की सीमाओं को पार करती हैं, जो लाखों लोगों को उनकी पैतृक जड़ों और आध्यात्मिक उत्पत्ति से जोड़ती है। यह एकता, करुणा, और विश्वास के कालातीत मूल्यों का एक जीवंत प्रमाण है जो समुदायों को एक साथ बाँधते हैं। संतों का भव्य जुलूस, गूंजते मंत्र और नदियों के संगम पर किए जाने वाले पवित्र अनुष्ठान मेले

को एक दिव्य अनुभव में बदल देते हैं जो हर प्रतिभागी की आत्मा को छू जाता है। कुम्भ मेला भारतीय संस्कृति का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह न केवल आध्यात्मिकता की खोज का माध्यम है बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक धरोहर को भी संजोए रखता है। इसके अनुष्ठान और प्रथाएं मानवता के लिए गहन संदेश देती हैं कि भक्ति, सेवा और समर्पण ही जीवन के सर्वोच्च मूल्य हैं। कुम्भ मेला हर 12 साल में हमें याद दिलाता है कि हम सभी एक ही मानवता के हिस्से हैं,जो ईश्वर की कृपा से जुड़े हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ-

* हमारे त्योहार और मेले- हिंदुलॉजी बुक्स
* श्रीमद्भागवत पुराण
* ऋग्वेद
* समाचार-पत्र - 04 दिसंबर 2024 पी.आई.बी दिल्ली
* लेख - नेहा मेवारी, प्रह्लाद सबनानी

कुम्भ तीर्थ : एक अवलोकनात्मक दृष्टि

डॉ. सुनील कुमार*

सार : तीर्थस्थल मनुष्य के उस स्थान के साथ उस विशेष समय में एकीकरण के पवित्र क्षण होते हैं। हिन्दू धर्म के अनेक तीर्थों में कुम्भ दुनिया के सबसे बड़े हिंदू समागमों में से एक है, जो अपने अनुयायियों को शुभता और पवित्रता प्रदान करने के लिए जाना जाता है। कुम्भ नदी के तट पर मनाया जाने वाला सबसे बड़ा उत्सव है। यह पवित्र नदियों में स्नान और पूजा करने का उत्सव है। यह नदी के तट पर होने वाली सबसे पुरानी धार्मिक सभाओं में से एक है। इस शोधपत्र के माध्यम से कुम्भ के एक महत्त्वपूर्ण हिंदू तीर्थस्थल के रूप में महत्त्व एवं इसके गतिशीलता को समझने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द : कुम्भ तीर्थ, कुम्भ मेला, तीर्थयात्रा, प्रयाग, स्नान, धार्मिक अनुष्ठान।

हिन्दू धर्म में रीति-रिवाज, नियम, नीति, वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान, व्रत, पर्व तथा त्योहार आदि का विशेष महत्त्व है। कुम्भमेला इन पर्व-उत्सवों में अग्रगण्य है। कुम्भ एक महत्त्वपूर्ण और सार्वभौम महापर्व माना जाता है, जिसमें विराट मेले का आयोजन होता है। कुम्भमेला भारत का ही नहीं, अपितु विश्व का सबसे बड़ा मेला है। देश भर के हिन्दू धर्म के अनुयायी, इस पर्व पर स्नान करने के लिये इस मेले में आते हैं। इसमें देश-भर के विभिन्न धर्म, जाति, भाषा तथा संस्कृति के लोग एकत्रित होते हैं। हिन्दू धर्म में यह दृढ़ मान्यता है कि इस पर्व पर किया गया स्नान अमरत्व की प्राप्ति में मदद करता है तथा पापों से मुक्ति प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति में इसका आयोजन कितना पुराना है इस विषय में निश्चित रूप से कुछ कह पाना कठिन है।

*रिसर्च एसोसिएट, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ; दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर; Email: skrsingh.bhu@gmail.com

तीर्थयात्रा

सभी धर्मों में कुछ विशिष्ट स्थलों की पवित्रता पर बल दिया गया है और वहाँ जाने के लिए धार्मिक व्यवस्था बतायी गयी है। उनकी तीर्थयात्रा करने के विषय में प्रशंसा के वचन कहे गये हैं। भारतवर्ष की एकता और अखण्डता में तीर्थ के पवित्र स्थानों ने अति महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। विशाल एवं लम्बी नदियाँ, पर्वत एवं वन सदैव पुण्यप्रद एवं दिव्य स्थल कहे गये हैं। यद्यपि भारतवर्ष कई राज्यों में विभाजित है और लोग भाँति-भाँति के सम्प्रदायों एवं उपसम्प्रदायों के अनुयायी हैं, किन्तु तीर्थयात्राओं ने भारतीय संस्कृति एवं देश की महत्त्वपूर्ण मौलिक एकता की भावना को संबंधित कर रखा है। पवित्र स्थानों से सम्बन्धित परम्पराएँ, तीर्थयात्रियों की संयमशीलता, पवित्र एवं दार्शनिक लोगों के समागम एवं तीर्थों का वातावरण यात्रियों को एक उच्च आध्यात्मिक स्तर पर स्थित कर देता है। उनके मन में एक ऐसी श्रद्धा-भक्ति की भावना भर देता है, जो तीर्थयात्रा से लौटने के उपरान्त भी दीर्घकाल तक उन्हें अनुप्राणित किये रहती है। तीर्थयात्रा करना एक ऐसा साधन है जो साधारण लोगों को स्वार्थमय जीवन-कर्मों से दूर रखने में सहायक होता है और उन्हें उच्चतर एवं दीर्घकालीन महान नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन-मूल्यों के विषय में सोचने को प्रेरित करता रहता है।[1]

तीर्थयात्रा व्यक्ति को ईश्वरत्व और मानवता से जोड़ती है और व्यक्तिगत, सामुदायिक और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देती है। यह व्यक्तिगत, पारस्परिक, सामाजिक, वर्ग, राजनीतिक और राष्ट्रवादी स्तरों पर प्रभाव डालती है। यह लोगों को एक साथ जोड़ने के लिए प्रतीक और प्रक्रियाएँ प्रदान करती है। पुनर्निर्मित परंपराओं के साथ तीर्थयात्रा हमें दूसरों और समुदाय से जुड़ने में मदद करती है। तीर्थयात्रा दिन-प्रतिदिन की चिंताओं, अभिव्यक्ति और दुख के मानवीय अनुभव के समाधान की खोज की ओर अग्रसर करती है। प्राचीन धर्मशास्त्रकारों ने तीर्थों की यात्राओं पर बल दिया है। विष्णुधर्मसूत्र[2] ने सामान्य धर्म में तीर्थयात्रा का स्थान दिया है।

तीर्थ में नदी का महत्त्व

नदी भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग है और इसे पवित्र माना जाता है। गंगा को एक पवित्र नदी और भारत की जीवन-रेखा माना जाता है, जिसके सभी स्रोतों पर तीर्थस्थल विकसित किए गए हैं। इन पवित्र नदियों के आसपास धार्मिक अनुष्ठान, समारोह, त्योहार और यहाँ तक कि अंतिम संस्कार भी किए जाते हैं। इन नदियों में स्नान करना एक शुद्धिकरण अनुष्ठान माना जाता है। पवित्र नदियाँ धार्मिक प्रथाओं, त्योहारों और संस्कारों के साथ निरंतर सांस्कृतिक जुड़ाव का स्रोत हैं, जिनका पालन सभी तटों पर किया जाता है। कुम्भ मेले में शुभ मुहूर्त के दौरान यहाँ की नदियों में स्नान का विशेष महत्त्व होता है। स्नान और पवित्र जल का सेवन करने का महत्त्व पुराणों में सर्वत्र बताया गया है।[3]

कुम्भमेला एक तीर्थस्थल के रूप में

कुम्भ तीर्थ में एक साथ बड़ी संख्या में लोगों के उपस्थित होने से यह मेले का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। एक तीर्थस्थल के रूप में, कुम्भ तीन अलग-अलग नदियों के संगम में उत्सव और स्नान के साथ-साथ देश के दूर-दराज के कोनों से आने वाले तीर्थयात्रियों और भक्तों के साथ राष्ट्रीय एकीकरण का कार्य करता है। यह हिंदू धर्म की विविध धार्मिक और पारंपरिक प्रथाओं और भक्ति को एकीकृत करता है। कुम्भ के साधु अपने शरीर पर पवित्र राख (विभूति) लगाकर कठोर तपस्या करते हैं और अपने दर्शन की इच्छा रखने वाले तीर्थयात्रियों को आशीर्वाद देते हैं। कुम्भ मेले को यूनेस्को की प्रतिनिधि सूची 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' में शामिल किया गया है।[4]

अर्धकुम्भ एवं कुम्भ

कुम्भ प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन-चारों स्थानों पर प्रत्येक बारह वर्ष में होता है, किन्तु अर्धकुम्भ पर्व प्रत्येक छः वर्षों में केवल प्रयाग और हरिद्वार में मनाया जाता है। हरिद्वार तथा प्रयाग में छह साल के पश्चात् अर्धकुम्भ का मेला भी आयोजित होता है। हरिद्वार के अर्धकुम्भ के अवसर पर नासिक का कुम्भ मेला होता है। प्रयागराज में कुम्भ मेला हरिद्वार में कुम्भ के लगभग 3 वर्ष बाद और उज्जैन में कुम्भ से 3 वर्ष पहले मनाया जाता है। दोनों एक ही वर्ष में या एक वर्ष के अंतर पर मनाए जाते हैं - जिसमें उज्जैन मेला नासिक के बाद होता है।

कुम्भ के ऐतिहासिक उल्लेख

इस महान मेले का पहला ऐतिहासिक वर्णन 643ई. में चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेनत्सांग द्वारा किया गया था, जो बौद्ध पवित्र ग्रंथों की खोज के लिए भारत आए थे। यद्यपि यह उल्लेख एक विशाल मेले व आयोजन के रूप में किया गया है। परंतु कुम्भ का नाम नहीं लिया गया है, जो बौद्ध दान समारोह जैसा प्रतीत होता है। उन्होंने तीर्थयात्रियों के एकत्र होने और राजा हर्ष की उदारता के अपने अनुभवों का वर्णन माघ महीने के दौरान उनके लंबे उत्सव में किया है। संभवतः यह कुम्भ का पूर्व रूप रहा हो या यही बाद में कुम्भ के रूप में विकसित हो गया हो। इससे संबंधित यह उल्लेख बाणभट्ट के हर्षचरित में भी पाये जाते हैं। इन विवरणों के अनुसार महाराजा हर्षवर्धन पाँच वर्ष पूरे होने पर प्रत्येक छठें वर्ष में प्रयाग और हरिद्वार जाकर राजकार्यों से पाँच वर्षों का अर्जित संपूर्ण धन-धान्य दान कर देते थे तथा अपनी बहन से पुराना वस्त्र माँगकर पहनते थे और पुनः राजकार्य में लग जाते थे। उन्हीं के काल में अन्य सम्राट और संतजन भी पुण्य प्राप्त करने की लालसा से आते थे, जिनके मास पर्यन्त निवास और भोजन की व्यवस्था स्वयं सम्राट हर्ष करते थे। कुम्भ मेले के वर्तमान स्थलों पर ऐतिहासिक दस्तावेजों में माघ मेले का निरंतर उल्लेख प्राप्त होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रक्रिया बौद्ध परंपरा के उत्कर्ष काल से ही जारी रही है। जो माघ मेले से होते हुए कुम्भ मेले के विराट स्वरूप में परिणत हो चुकी है। यद्यपि प्रयागराज में कुम्भ मेले का आयोजन प्राचीन है, लेकिन आधुनिक काल में इसका पहला आधिकारिक आयोजन 1870

में ब्रिटिश हुकूमत द्वारा किया गया था।[5]

कुम्भ के पौराणिक उल्लेख

कुम्भ शब्द का अर्थ घट या घड़ा होता है। कुम्भ शब्द प्राचीन है जिसका उल्लेख ऋग्वेद[6], अथर्ववेद[7] में घट या घड़े के रूप में मिलता है। कुम्भ के संदर्भ में पुराणों में देव-असुरों के समुद्र मंथन की कथा मिलती है, जिसके अनुसार देवताओं और असुरों ने समुद्र मंथन के दौरान अमृत कलश प्राप्त किया था। कुम्भ का आयोजन गंगा तट (हरिद्वार), त्रिवेणी संगम (प्रयाग), शिप्रा तट (उज्जैन)और गोदावरी तट (नासिक) पर होता है। पौराणिक मान्यता है कि देवों के बारह दिन मनुष्यों के लिये बारह वर्ष के बराबर होते हैं। इस कारण कुम्भमेला भी बारह वर्ष के बाद एक स्थान पर होता आया है, इसे पूर्णकुम्भ के नाम से जाना जाता है। अर्थात् 12 वर्षों के अन्तराल में हरिद्वार, प्रयाग, नासिक एवं उज्जैन में यह कुम्भ महापर्व ज्योतिषीय योग के अनुसार सूर्य, बृहस्पति एवं चन्द्रमा के विभिन्न राशियों के योग से होता है।

प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन में कुम्भ के ज्योतिषीय योग

प्रयाग में कुम्भ का विशेष महत्त्व है क्योंकि यह 12 वर्षों के बाद गंगा-यमुना-सरस्वती के त्रिवेणी संगम पर आयोजित किया जाता है। ज्योतिषीय योग के अनुसार जब सूर्य और चन्द्रमा मकर राशि में हों और बृहस्पति मेष राशि में हो, तभी प्रयाग में कुम्भ-योग पड़ता है। यह स्थिति माघ महीने की अमावस्या को बनती है। इस अवसर पर तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ पर्व मनाया जाता है। प्रयाग में कुम्भ और अर्धकुम्भ का योग माघ मास में मकर संक्रांति से प्रारम्भ होता है और मास पर्यन्त रहता है। इस कुम्भ-स्थल में अन्य सभी कुम्भ-स्थलों की अपेक्षा बहुत अधिक जनसमुदाय उमड़ता है तथा यहाँ मेले का विस्तार क्षेत्र भी सर्वाधिक होता है।

ज्योतिषीय योग के अनुसार जब सूर्य सिंह राशि में स्थित हो, चन्द्रमा और बृहस्पति भी सिंह राशि में हों अर्थात् तीनों के तीनों ग्रह आकाश में एक ही स्थान सिंह राशि में हों, तब गोदावरी तट पर नासिक में कुम्भ योग होता है। भाद्रपद (भादो) मास की अमावस्या को यह स्थिति आती है। वृश्चिक राशि पर बृहस्पति का योग होने पर नासिक में पूर्णकुम्भ का योग होता है जहाँ कुम्भ का मेला लगता है।

उज्जैन मध्यप्रदेश में क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। यह हिन्दू-धर्म में प्रचलित सात मोक्ष-दायक पुरियों में से एक है। ज्योतिषीय योग के अनुसार मेष राशि में जब सूर्य हो और सिंह राशि में बृहस्पति हो तब उज्जैन में कुम्भ-योग पड़ता है। यह स्थिति वैशाख मास की पूर्णिमा को होती है।

हरिद्वार हिमालय पर्वत श्रृंखला के शिवालिक पर्वत के नीचे उत्तराखंड में स्थित है। हरिद्वार को तपोवन, मायापुरी, गंगाद्वार, मोक्षद्वार आदि नामों से भी जाना जाता है। ज्योतिषीय योग के अनुसार जब कुम्भ राशि का बृहस्पति हो और मेष राशि में सूर्य संक्रांति हो, तब हरिद्वार में कुम्भ होता है।

यहाँ पर यह स्थिति मेष संक्रांति के समय अर्थात् चैत्र या वैशाख मास में होती है।[8]

अखाड़े : कुम्भ के तपस्वी शिविर

अखाड़ा गुरु-शिष्य परंपरा में धार्मिक साधुओं के लिए संप्रदाय व मठ के संदर्भ में भोजन, आवास और प्रशिक्षण की सुविधाओं के साथ अभ्यास का स्थान है। कुम्भ में कुल 14 अखाड़े सम्मिलित होते हैं। ये अखाड़े हैं- निर्वाणी अखाड़े (शैव अनुयायी संप्रदाय)- श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी, प्रयागराज, श्री पंच अटल अखाड़ा, वाराणसी, श्री पंचायती अखाड़ा निरंजनी, प्रयागराज, टोपीनिधि श्री आनंद अखाड़ा पंचायती, नासिक, श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा, वाराणसी, श्री पंचदशनाम आह्वान अखाड़ा, वाराणसी, श्री पंचदशनाम पंचाग्नि अखाड़ा, जूनागढ़, वैरागी वैष्णव अखाड़े (विष्णु के अनुयायी)- श्री दिगंबरी अखाड़ा, साबरकांठा, श्री निर्वाणी अखाड़ा, अयोध्या, श्री निर्मोही अखाड़ा, मथुरा, श्री पंचायती बाबा उदासीन, प्रयागराज, उदासीन संप्रदाय- श्री पंचायती अखाड़ा नया उदासीन, हरिद्वार, श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा, हरिद्वार, महिलाओं का अखाड़ा (श्री सर्वेश्वर महादेव वैकुंठधाम मुक्तिद्वार अखाड़ा) - परी अखाड़ा, प्रयागराज। प्रत्येक अखाड़े के अपने प्रतीक चिह्न और ध्वज निश्चित हैं। कुम्भ के मेले में प्रत्येक अखाड़ा अपने ध्वज और प्रतीकों के साथ पूर्व से निर्धारित स्थानों पर अपने-अपने शिविर में रहता है। जब कुम्भ की तिथियाँ नज़दीक आती हैं, तो सरकार विभिन्न अखाड़ों के प्रमुखों को मेले के लिए औपचारिक निमंत्रण भेजती है। जब ये अखाड़े और उनके सेनापति, महामंडलेश्वर, कुम्भ मेला मैदान में जुलूस के रूप में प्रवेश करते हैं, तो इस घटना को प्रवेश कहा जाता है। एक बार जब मेले में उनका शिविर स्थापित हो जाता है, तो प्रत्येक अखाड़ा शिविर की केंद्रीय वेदी पर भूमि पूजा करता है, ताकि भूमि को पवित्र किया जा सके। प्रत्येक शिविर अखाड़े के देवता के प्रतीक के रूप में एक विशाल ध्वजस्तंभ उठाता है। अखाड़े में प्रवेश के लिए मुख्य सड़कों में से एक के साथ बड़े प्रवेश द्वार बनाए जाते हैं।

कुम्भ के प्रमुख आयोजन और उसका महत्त्व

तीर्थयात्रियों की भीड़ का बड़े मंडप में स्वागत किया जाता है, जहाँ सैकड़ों लोग एक प्रसिद्ध साधु या शिक्षक के प्रवचनों के लिए बैठ सकते हैं, जिनके लिए यह महान मेला अपने अनुयायियों को इकट्ठा करने और नए लोगों को जोड़ने का एक मौका होता है। गुरु अपने शिष्यों के साथ बैठते हैं और पवित्र ग्रंथों की व्याख्या करते हैं। योगी अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों का प्रदर्शन करते हैं। लोकप्रिय गायकों और संगीत कलाकारों को मंच पर प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। कुछ बड़े मंडप विशेष रूप से थिएटर समूहों को रखने के लिए बनाए जाते हैं, जहाँ लीला-मंचन किया जाता है; धार्मिक नाटक, जिसमें अभिनेता रामायण या कृष्ण के जीवन से पसंदीदा दृश्यों का अभिनय करते हैं। ये प्रदर्शन दिन में दो बार, सुबह और शाम को होते हैं। और पूजा, धार्मिक गीतों और देवताओं को चित्रित करने वाले प्रमुख अभिनेताओं को एक

औपचारिक दीप और पुष्प अर्पण के साथ समाप्त होते हैं। लीलाओं में मल्टीमीडिया का इस्तेमाल होता है जो मेले को जीवंतता और ऊर्जा प्रदान करता है।

पेशवाई शोभायात्रा की शुरुआत में सभी साधुओं और मेले के प्रतिभागियों का अतिथि के रूप में मेले में स्वागत किया जाता है। जोरदार संगीत और नृत्य के साथ एक विशाल जुलूस होता है, जिसके बाद लंगर होता है, जहाँ आगंतुकों को सामूहिक भोजन कराया जाता है। स्नान अनुष्ठान सबसे महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है और इसे साधुओं के एक समूह द्वारा शुरू किया जाता है, जिन्हें नागा साधु कहा जाता है, जिन्हें आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से सबसे शक्तिशाली माना जाता है। वे भगवान् शिव के प्रबल अनुयायी होते हैं और उन्होंने परिवार, धन और कपड़ों सहित इस धरती पर सभी भौतिक संपत्ति का त्याग कर दिया होता है। वे राख से स्नान करते हैं और इसे दैवीय सुरक्षा के संकेत के रूप में अपने शरीर पर लगाते हैं और कभी-कभी एक लंगोटी को छोड़कर नग्न रहते हैं।

हर कुम्भ मेले में हज़ारों अनुयायी नागा साधु बनने की इच्छा रखते हैं और उन्हें दीक्षा की एक गुप्त प्रक्रिया के माध्यम से साधुओं के समूह में स्वागत किया जाता है। दीक्षा के बाद, उनके सिर के बाल मुंड़वा दिए जाते हैं जो कि आत्म-मृत्यु और भौतिकवादी शरीर के त्याग का प्रतीक है। इसके बाद, वे पूरी रात पवित्र ग्रंथों का जाप करते हैं और अगले दिन भोर में, वे सभी के लिए स्नान अनुष्ठान शुरू करते हैं। साधुओं के पवित्र जल में डुबकी लगाने के बाद, अन्य लाखों तीर्थयात्रियों को घाट में प्रवेश करने की अनुमति दी जाती है। इसके अलावा, कई नावें हैं जिन पर साधु अनुष्ठान करते हैं और नदी में एक भेंट (फूल, नारियल या माला) डाली जाती है।

शाही स्नान

कुम्भ मेले में अखाड़ों की ओर से शाही स्नान की अत्यन्त रोचक परम्परा है। शाही स्नान के दिन, ज्योतिषीय रूप से शुभ होते हैं, इसलिए इन दिनों पवित्र जल की शक्ति और आकर्षण बढ़ जाता है, और भीड़ उमड़ पड़ती है। माघ महीना शाही स्नान का समय है। शाही स्नान मकर संक्रांति, पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी, माघी पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के दिन होते हैं। इसे शाही स्नान या अमृत स्नान माना जाता है क्योंकि साधु पवित्र स्नान के लिए शुभ दिनों पर शाही जुलूसों में मालाओं से सजे होते हैं और छत्र से सुसज्जित रथ में सिंहासन पर बैठते हैं। अलग-अलग अखाड़ों से सम्बद्ध साधु-गण अपने-अपने अस्त्र-शस्त्रों का प्रदर्शन करते हुए स्नान को एक साथ शोभायात्रा के रूप में निकलते हैं। इस भव्य शोभायात्रा में अपने-अपने अखाड़ों के प्रमुख संतों की सवारी सजे-धजे हाथी, पालकी या भव्य रथ पर निकलती है। उनके आगे-पीछे सुसज्जित हाथी, ऊँट, घोड़े और बैण्ड भी होते हैं। इस दौरान, विभिन्न अखाड़ों के प्रत्येक साधु को स्नान करने के लिए पूर्व निर्धारित समय दिया जाता है। विभिन्न अखाड़ों के लिए इस शाही स्नान का क्रम भी पूर्व में ही सुनिश्चित रहता है। सबसे पहले क्रम में दशनामी संन्यासी आते हैं और

उसके बाद वैरागी आते हैं। पवित्र नदियों में स्नान और कुम्भ में भाग लेने वाले पवित्र साधुओं के दर्शन को आशीर्वाद और सान्निध्य प्राप्त करने का अवसर माना जाता है।

आरती

गंगा और संगम की आरती के बाद प्रार्थना और प्रवचन होते हैं। यह पवित्र नदियों के महत्त्व को समझने और उनकी रक्षा करने की पहल है। संकल्प धारणा और षोडशोपचार पूजा जैसे अनुष्ठान किए जाते हैं। तीन प्रकार की आरती की जाती है- जलती हुई धूप से आरती (धूप आरती), जलते हुए दीपों से आरती (झार आरती), और कपूर से आरती (सयान आरती)। ये सभी अनुष्ठान उनसे जुड़ी मुद्राओं, ध्वनियों (उच्च, मध्यम और निम्न) और मंत्रों के जाप के साथ किए जाते हैं।

धूनी

धूनी (व्यक्तिगत पवित्र अग्नि कुंड) ब्रह्मांड के सभी पाँच आवश्यक तत्त्वों, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिलकर बना है, जो साधु के बाहरी भौतिक शरीर और आंतरिक मनोवैज्ञानिक शरीर दोनों का प्रतिनिधित्व करता है, जो एक दिन जलकर राख हो जाएगा। कुम्भ मेले में हजारों धूनी साधुओं के स्थूल और सूक्ष्म जगत् का प्रतिनिधित्व करता है। अग्नि से उत्पन्न राख, जिसे विभूति या भस्म कहते हैं, इस तथ्य का प्रतीक है कि सभी पदार्थ एक दिन एक ही धूसर धूल में बदल जाते हैं। यह साधुओं के साथ-साथ अन्य लोगों को भी सभी भौतिक रूपों की अनित्यता की याद दिलाता है। धूनी की अग्नि साधु के त्याग को जीवित रखती है, उसे सामाजिक संबंधों और भौतिक सुखों की बाहरी दुनिया से और विचारों और अनुभूतियों की आंतरिक दुनिया से अलग होने की याद दिलाती है, जो ईश्वर के साथ विलय के लिए आवश्यक सांसारिकता से विरागस्वरुप है।

सत्संग

कुम्भ के तीर्थयात्री कुम्भ में भाग लेने वाले विभिन्न अखाड़ों के तपस्वियों और धार्मिक गुरुओं की संगति की कामना करते हैं, उनसे बातचीत करते हैं और उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। उनका मानना है कि इन पवित्र पुरुषों के दर्शन करना और उनकी संगति में कुछ पल बिताना, उनके प्रवचन सुनना और उनका आशीर्वाद प्राप्त करना उनके जीवन के पापों को धो देता है। पवित्र पुरुष (कल्पवासी) और आध्यात्मिक आकांक्षी इस अवधि के दौरान प्रार्थना, ध्यान और सत्संग के लिए खुद को समर्पित करते हुए त्याग का कठोर जीवन जीते हैं। वे संगम के पानी में प्रतिदिन दो बार सुबह और शाम डुबकी लगाते हैं, आध्यात्मिक प्रवचन सुनते हैं और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। वे शिविर के दैनिक कार्यों में भी मदद करते हैं।

दान

दान एक सेवा भाव है, एक उपहार आधारित कार्य है। दान सर्वाधिक पुण्यस्वरुप धार्मिक कार्य माना जाता है। लोगों, संस्थाओं और यहाँ तक कि सरकारी निकायों द्वारा दिया जाने वाला दान इसे अपना सेवा कर्तव्य मानता है। इस दौरान की जाने वाली पवित्र गतिविधियों के लिए किया जाने वाला दान धार्मिक पुण्य प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इससे एक लंबे आयोजन को चलाना भी संभव हो जाता है, जिसमें विभिन्न धार्मिक परंपराओं के लाखों लोगों का सह-अस्तित्व बना रहता है। सेवा भावना और दान समुदाय के सामाजिक और आर्थिक कल्याण में भी मदद करते हैं। दान की यह अवधारणा एक सामंजस्यपूर्ण सामाजिक बंधन को बढ़ावा देती है।

कुम्भमेला यज्ञ के रूप में

यज्ञ का अर्थ है पूजा-अर्चना करना, देवपूजन, श्रद्धापूर्ण दृष्टि विकसित करना, श्रेष्ठ धर्मपरायण लोगों की संगति करना, तथा दान और व्यक्तिगत धन के त्याग के माध्यम से धार्मिक पुण्य प्राप्त करना। नदियों का संगम स्थल एक महान यज्ञभूमि है जिसे पृथ्वी-वेदी के रूप में भी जाना जाता है। इसलिए कुम्भमेला को वृहद स्तर पर यज्ञ के बराबर माना जाता है। कुम्भयज्ञ प्रतिभागियों को उन्हें अहंकारी और स्वार्थी स्वभाव से खुद को मुक्त करने की प्रेरणा देती है।

शारीरिक जलतत्त्व शुद्धिगत प्रभाव

कुम्भ मेला प्रेरणा और परिवर्तन का स्रोत है। एक आयोजन के रूप में, आनंद की खोज के लिए तीर्थ यात्रा, स्थूल ब्रह्मांडीय स्तर (ग्रह, सौर मंडल और ब्रह्मांड) और सूक्ष्म ब्रह्मांडीय स्तर पर भूत शुद्धि (पांच तत्त्वों की शुद्धि) का एक प्रकार है, जो हमारे अपने शरीर-तंत्र के पाँच तत्त्वों (72 प्रतिशत जल, 12 प्रतिशत पृथ्वी, 6 प्रतिशत वायु, 4 प्रतिशत अग्नि और शेष आकाश) को शुद्ध करती है।

चूँकि सूक्ष्म और स्थूल ब्रह्मांडीय दोनों स्तरों पर अधिकांश तत्त्व जल हैं, इसलिए आंतरिक और बाह्य रूप से जल किसी भी तीर्थयात्रा में बहुत बड़ा प्रभाव डालता है। विज्ञान के रूप में कुम्भ इस अवधारणा का उपयोग कुछ अक्षांशों पर और सौर चक्र के विभिन्न समयों पर नदियों के संगम में कर रहा है; जहाँ भी दो जल निकाय एक निश्चित बल के साथ मिलते हैं, वहाँ जल मंथन होता है।[9] ऐसे आयोजनों में भाग लेने और उस विशेष समय पर पवित्र डुबकी लगाने से शरीर को जल प्राप्त करने में मदद मिलती है और आंतरिक और बाह्य रूप से जल निकायों के प्रभाव का अधिकतम लाभ प्राप्त करने का शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिकरूप से अवसर मिलता है।

एक आध्यात्मिक दृष्टि का अवसर

कुम्भ मेला गृहस्थों और जन-सामान्य को पुण्य-अर्जित करने का अवसर प्रदान करने के साथ ही साथ सन्त-महात्माओं और आध्यात्मिक-चेतना से सम्पन्न व्यक्तियों और दार्शनिकों के लिए हंस:

सोऽहं की प्रत्यभिज्ञा में अभिमुख होने व उसमें रत रहने का अद्‌भुत अवसर प्रदान करने का महापर्व है।

हिन्दू संस्कृति के वैशिष्ट्य विविधता का प्रतिफलन

भारतीय तीर्थो एवं पर्वो के पीछे सांस्कृतिक एकता, सहिष्णुता एवं सामाजिक समरसता का संदेश छिपा हुआ है। यह प्रत्यक्ष ही देखा जा सकता है कि उत्तर भारत के लोग दक्षिण भारत में तिरुपति, रामेश्वरम् आदि तीर्थस्थानों में जाकर अपने को कृतार्थ मानते हैं और दक्षिण भारत के लोग उत्तर भारत में स्थित प्रसिद्ध तीर्थ बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, जगन्नाथपुरी, काशी तथा प्रयाग आदि तीर्थस्थानों की यात्रा करके अपने को धन्य मानते हैं।

कुम्भपर्व में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, राज्य, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, वेशभूषा आदि सभी संदर्भों में अनेकता में एकता का दर्शन होता है। साधु संत, धनी, विद्वान, कर्मकाण्डी, योगी, ज्ञानी, कथावाचक, तत्त्वदर्शी, सिद्ध महापुरुष, सेठ साहूकार, भिखारी, व्यापारी, गृहस्थ, संन्यासी, ब्रह्मचारी, कल्पवासी, अधिकारी, बूढ़े, जवान, सभी का इस कुम्भ में समागम होता है। विभिन्न संप्रदायों के साधु-संत कुम्भ मेले में एकत्रित होते हैं और धार्मिक चर्चाएँ और प्रवचन करते हैं। विभिन्न धर्म, संस्कृति तथा सम्प्रदायों का संगम इन कुम्भ मेलों में होता है जो एक सहज आकर्षण है। यह मेला पन्थ, जाति, वर्ग और व्यक्ति के सापेक्ष नहीं है, अपितु यह सार्वभौमिक, सर्वजनहिताय की भावना का परम द्योतक है।

कुम्भ मेले में चुनौतियाँ

सामूहिक आयोजन के रूप में कुम्भ शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों तरह से स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ पेश करता है। शारीरिक स्तर पर, भीड़ प्रबंधन की चुनौतियाँ, सीमित बुनियादी सुविधाएँ, कम स्वच्छता की स्थिति और पर्यावरण प्रदूषण के संपर्क में आने से रोगजनकों का संचरण हो सकता है। कुम्भ के मामले में, अनुष्ठानों में फर्श पर लोटना और नदियों में स्नान करना शामिल है, जिससे त्वचा, श्वसन, जठरांत्र और जननांग संक्रमण हो सकता है।[10] कुम्भ के दौरान वायुमंडल में धूल के स्तर में एरोसोल ऑप्टिकल डेप्थ वैल्यू और आकार वितरण में वृद्धि देखी जाती है।[11] आयोजन के कारण होने वाले शोर का मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों में सिरदर्द में वृद्धि, कार्य कुशलता में कमी, आमने-सामने और टेलीफोन पर संचार में व्यवधान, नींद में खलल और पुतली के फैलाव के साथ थकान मुख्य है।[12]

निष्कर्ष

तीर्थयात्रा बाहरी यात्रा के साथ एक आंतरिक चिंतनशील यात्रा पर जोर देती हैं जो शांति निर्माण तथा मूल्य निर्माण में प्रेरणा प्रदान करती है। सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों रूप से, तीर्थयात्रा दुःख की समस्या को संबोधित करने का एक सम्मोहक और प्रभावी साधन है। कुम्भ मेला विभिन्न परंपराओं के तपस्वियों, विद्वानों, चिकित्सकों, स्वयंसेवकों और तीर्थयात्रियों को एक साथ आने की

सुविधा प्रदान करता है। उनमें से अधिकांश स्वयं को ऊपर उठाने और समाज को लाभ पहुँचाने के सकारात्मक इरादे से प्रवचनों, चर्चाओं, चिंतन और ध्यान में भाग लेते हैं। आधुनिक समय में कुम्भ मेले का आयोजन बहुत बड़े पैमाने पर होता है और इसमें लाखों–करोड़ों लोग भाग लेते हैं। तकनीकी और प्रशासनिक चुनौतियों के बावजूद, सरकार और प्रशासन कुम्भ मेले को सफलतापूर्वक आयोजित करते हैं। कुम्भ मेले का सांस्कृतिक प्रभाव बहुत गहरा है। यह मेला विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का संगम स्थल है। कुम्भ मेले के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य, संगीत और कला प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं। कुम्भ मेले का आर्थिक प्रभाव भी बहुत अधिक है, क्योंकि यह पर्यटन और व्यापार को बढ़ावा देता है। भविष्य में कुम्भ मेले को और भी बेहतर ढंग से आयोजित करने की आवश्यकता है ताकि भारी भीड़ के प्रबंधन से भगदड़ आदि घटनाओं से बचा जा सके तथा इसकी पवित्रता और महत्त्व बना रहे।

संदर्भः

1. काणे, पांडुरंग वामन, **धर्मशास्त्र का इतिहास**, तृतीय भाग, 2003, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पृष्ठ 1300
2. **विष्णुधर्मसूत्र** 2016–17
3. **मत्स्य पुराण**, 107–7 और **पद्म पुराण**, उत्तर खंड 23–14
4. https://ich.unesco.org/en/RL/kumbh-mela-01258
5. https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/prayagraj/story-historical-significance-of-kumbh-mela-first-official-event-organized-by-british-in-1870-201734416069316.html
6. **ऋग्वेद**, 10,89,7
7. **अथर्ववेद**, 19,53,3
8. **मठ, मंदिर एवं परम्परा**, इग्नू, नई दिल्ली, पृष्ठ 389–90
9. Divya B R, Keshavamurthy, Review study of kumbh mela as a pilgrimage site, Yoga Mîmâmòsâ, Volume 52, Issue 2, July-December 2020, Pp 92
10. Pellerin, J., & Edmond,M. B., Infections associated with religious rituals, International Journal of Infectious Diseases, 7, 2013, 945-948
11. Suryavanshi, A., Taori, A., & Rao, S. V., Investigating the aerosoloptical depth variation during a persisting mass gathering event of Kumbh-2019 in India, Remote Sensing Applications: Society and Environment, 20, 2020,100363
12. Madan, S., & Pallavi, P, Assessment of noise pollution in Haridwarcity of Uttarakhand State, India during Kumbh Mela 2010 and its impacton human health, Journal of Applied and Natural Science, 2 (2), 2010,293-295

भारतीय समाज और संस्कृति पर कुम्भ का प्रभाव

देवेन्द्र कुमार सिंह*

शोध सार : कुम्भ का आयोजन प्राचीन काल से भारत में अनवरत रूप से होता चला आ रहा है। इस बार महाकुम्भ 2025 भव्य रूप से आयोजित किया जा रहा है क्योंकि ज्योतिष की गणना के अनुसार पूरे 144 वर्षों बाद ऐसा संयोग बन रहा है जो इस कुम्भ को विशेष बना दे रहा है। वर्तमान में जन्मे या रहने वाले मानव को इस जन्म में 144 वर्ष वाला संयोग पुन: नहीं प्राप्त होगा। महाकुम्भ का वर्णन भारतीय ग्रन्थों में वर्णित है। यह महाकुम्भ भारतीय समाज एवं संस्कृति को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहा है। करोड़ों लोग भारत ही नहीं पूरे विश्व से इस महापर्व में आ रहे हैं और त्रिवेणी संगम में डुबकी लगा रहे हैं। यहाँ पर जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेद मिट जाता है। आज पूरा भारतीय समाज अपनी संस्कृति पर गर्व कर रहा है। महाकुम्भ भारत का सबसे बड़ा धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन है। महाकुम्भ का आयोजन 12 वर्षों में प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक में होता है। कुम्भ शब्द का अर्थ घड़े से लगाया गया है। वेद, उपनिषद्, पुराण और महाकाव्य में कुम्भ का वर्णन है। एक कथा समुद्र-मंथन से भी जुड़ी है। ऐसी मान्यता है कि अमृत की एक बूँद प्रयागराज में गिरी थी। तब से यह स्थान पवित्र माना जाने लगा।

बीज-शब्द : महाकुम्भ, अमृत, पुण्य, सामाजिक एकता, संस्कृति, वेद, पुराण, त्रिवेणी, संगम, मानवता, घड़ा, अध्यात्म।

प्रस्तावना

महाकुम्भ लोगों की आस्था का उत्सव है। लोग यहाँ अपने पापों से मुक्ति पाने आते हैं। महाकुम्भ में सामाजिक एकता का उदाहरण तब देखने को मिलता है जब लोग भेदभाव रहित होकर एक साथ संगम में डुबकी लगाते हैं। यहाँ पर जाति-पाँति, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर का भाव मिट जाता है। पूरा मानव समाज एक होकर इस उत्सव में शामिल होता है। करोड़ों की संख्या में लोग

*शोध छात्र, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.; सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.

महाकुम्भ में पुण्य की डुबकी लगा रहे हैं। ऐसी मान्यता भारतीय समाज में है कि संगम में डुबकी लगाने से सारे पापों से मुक्ति मिल जाती है। आज जब पूरा विश्व महाकुम्भ की ओर खिंचा आ रहा है तो हर भारतीय को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना चाहिए कि भारतीय संस्कृति में कुछ तो बात है कि भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व महाकुम्भ में डुबकी लगाने को आतुर है। यह तथ्य भारतीय संस्कृति को भीतर तक प्रभावित किए बिना नहीं रह सकता है। समाज का प्रत्येक वर्ग महाकुम्भ में भाई-चारे का संदेश दे रहा है।

महाकुम्भ 2025 का आयोजन पूरे 144 वर्षों बाद इस संयोग से आयोजन किया जा रहा है जो भारतीय समाज को हर स्तर पर क्या बूढ़ा, क्या जवान, बच्चे तक संगम में डुबकी लगाने को खिंचे चले आ रहे हैं। इतनी भीड़ के बावजूद लोग कई किलोमीटर दूर से भूखे-प्यासे चले आ रहे हैं। यह महाकुम्भ का समाज पर प्रभाव नहीं तो क्या है? लोग भूख-प्यास एवं थकान की चिन्ता किए बिना संगम आ रहे हैं। जो लोग भूखे-प्यासे आ रहे हैं उन्हें रास्ते में लोगों तथा शासन द्वारा सहायता भी उपलब्ध कराई जा रही है। कहीं पर भंडारे, लंगर तो कहीं पर अन्य माध्यम से भक्तों की सेवा समाज के लोग कर रहे हैं।

जिस प्रकार से लोग महाकुम्भ में आ रहे हैं ऐसा लग रहा है कि पूरा मानव समाज संगम में डुबकी लगा रहा है। कोई किसी से जाति नहीं पूछ रहा, केवल एक श्रद्धालु के रूप में देख रहा है। लोग पूरे उत्साह से संगम के अमृत जल में स्नान कर रहे हैं और पूरे एक माह तक कल्पवास कर रहे हैं। पूरा भारतीय समाज संगम स्नान के लिए उत्सुक है। इस सदी का यह सबसे बड़ा आयोजन साबित हो रहा है। करोड़ों की संख्या में लोग यहाँ डुबकी लगा रहे हैं। पूरा शहर भक्तों की भीड़ से पटा है। प्रशासन भीड़ नियंत्रित करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहा है जिससे श्रद्धालु अच्छे से स्नान कर सकें। विदेश से भी लोग महाकुम्भ में स्नान करने आ रहे हैं। महाकुम्भ का आयोजन समाज को पूरी तरह से प्रभावित कर रहा है जिससे लोगों में भाईचारा बढ़ा है।

प्रयागराज सभी तीर्थों में श्रेष्ठ है तभी तो इसे तीर्थराज कहा जाता है। यहाँ आने से और संगम में डुबकी लगाने से पापों से मुक्ति मिल जाती है। प्रयागराज भारत का विशिष्ट, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र है। ब्रह्मा ने सृष्टि कार्य पूर्ण होने पर प्रथम यज्ञ यहीं पर किया था। 'प्र' अर्थात् श्रेष्ठ एवं याग अर्थात यज्ञ से मिलकर 'प्रयाग' नाम पड़ा है। प्रयाग की श्रेष्ठता को त्रिदेवों ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से मुक्ति दिलाने के कारण तीर्थराज की उपाधि से सुशोभित किया है। कुम्भ शब्द का वर्णन विभिन्न सनातन धर्मग्रंथों और पुराणों में मिलता है। जैसे- जलपात्र, धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग किए जाने वाले घड़े, यौगिक क्रियाओं में श्वसन अभ्यास और पवित्र स्नान स्थलों के संदर्भ में। कुम्भ शब्द वैदिक साहित्य, उपनिषदों, पुराणों और महाकाव्यों में गहन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इसका अर्थ अमृत और ज्ञान का भण्डार भी होता है।

ऋग्वेद में वर्णन है कि हम उस कुम्भ (घड़े) में रखे अमृत को पीकर अमरत्व को प्राप्त करें। अथर्ववेद में कुम्भ रूपी घड़े में गंगा जल रखने की बात कही गई है। महाभारत में कुम्भयोनि की बात अगस्त्य ऋषि ने कही है। भागवत पुराण में कुम्भ का अर्थ कुम्भ मेले से है, जो चार तीर्थ स्थलों में आयोजित है जिसमें स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है। योग एवं आयुर्वेद में कुम्भक शब्द का प्रयोग प्राणायाम में होता है। महाकुम्भ का वर्णन इतिहास, पुराणों में मिलता है। एक पौराणिक कथा समुद्र-मंथन की प्रचलित है। जिसमें समुद्र से निकले अमृत-कलश से अमृत वितरण के विवाद के बीच प्रयागराज में अमृत की एक बूँद गिरने की कथा से जुड़ा है। तभी से यहाँ पर कुम्भ का आयोजन होता है। संगम में प्रत्येक 12 वर्ष में कुम्भ का आयोजन होता है। जैसा कि वर्णन है कि महाकुम्भ चार जगहों पर आयोजित होता है- प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। जो प्रत्येक 12 वर्ष में एक जगह लगता है तो 12 गुणे 12 = 144 वर्ष बाद यह संयोग बना है जहाँ पर पूरा भारतीय समाज बिना किसी भेदभाव के एकत्र हुआ है।

कुम्भ का प्रामाणिक विवरण गुप्तवंश (चौथी-छठी शती) से मिलता है। कुम्भ को व्यवस्थित रूप हर्षवर्धन (7वीं शती) ने दिया। हर्षवर्धन के बारे में वर्णन है कि यह कुम्भ में अपनी अर्जित सम्पत्ति तब तक दान देता था, जब तक वह पूरी तरह से खत्म न हो जाए। अपने पहने वस्त्र तक दान दे देता था और अपनी बहन से वस्त्र उधार लेकर पहनता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपनी यात्रा विवरण में कुम्भ का उल्लेख किया है। महाकुम्भ समाज में अपना अमिट प्रभाव छोड़ता है। यह धार्मिक अनुष्ठानों की परम्परा का महापर्व है। कुम्भ में विभिन्न संत समाज एवं सम्प्रदाय एकत्र होते हैं, अपने ज्ञान का प्रकाश समाज में देते हैं। इस ज्ञान का समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भारतीय समाज महाकुम्भ में अपना योगदान दे रहा है वे मोह-माया से दूर देश कल्याण की भावना से समाज को एक संदेश देते हैं। प्रयाग में आयोजित महाकुम्भ-2025, जो इस बार 144 वर्षों बाद लग रहा है, पूरे 45 दिन चलेगा 13 जनवरी से शुरू होकर 26 फरवरी को महाशिवरात्रि को समापन होगा।

महाकुम्भ भारतीय संस्कृति को भी प्रभावित कर रहा है। आज भारत का प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति को पहचान रहा है। भारत का युवा वर्ग अपनी सांस्कृतिक धारोहर को देखकर गौरव का अनुभव कर रहा है। पूरा विश्व महाकुम्भ के आयोजन को आश्चर्य के रूप में देख रहा है। हमें इस आयोजन के माध्यम से अपनी संस्कृति का ज्ञान होता है कि भारतीय संस्कृति कितनी महान है, जहाँ पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना रहती है। मेले में अनेक साधु-संत, धर्मात्मा आते हैं जो सनातन संस्कृति को महत्ता प्रदान करते हैं। यहाँ पर कल्पवासी पूरे एक माह पारिवारिक समस्याओं को त्यागकर अपना ध्यान पूजा-पाठ में लगाते हैं, जो सनातन संस्कृति पर कुम्भ के प्रभाव को दिखाता है। कुम्भ में आए लोग कल्याण की भावना से यज्ञ, हवन, दान, पुण्य, स्नान, ध्यान एवं धार्मिक कृत्यों का आयोजन करते हैं। लोग प्रयागराज महाकुम्भ में शय्या दान करते हैं, जगह-जगह

भण्डारों एवं लंगर का आयोजन किया जाता है।

भारतीय संस्कृति को महाकुम्भ पूरी तरह से प्रभावित कर रहा है। लोग अध्यात्म से जुड़कर एक अलग अनुभूति प्राप्त कर रहे हैं। यहाँ पर आने से एक अजीब-सी शांति का अनुभव होता है। लोग अनेक कष्ट सहकर महाकुम्भ पहुँच रहे हैं केवल संगम के दर्शनमात्र से उनके कष्ट दूर हो रहे हैं और एक नई ऊर्जा का संचार उनके मन में होने लगता है। इस बार का महाकुम्भ 13 जनवरी (पौष पूर्णिमा) से शुरू होकर, 14 जनवरी मकर संक्रांति (शाही स्नान), 29 जनवरी मौनी अमावस्या (शाही स्नान), 3 फरवरी बसंत पंचमी (शाही स्नान), 12 फरवरी माघी पूर्णिमा और 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के साथ पूर्ण हो रहा है। यह पर्व बच्चों से लेकर युवा और बूढ़ों तक को प्रभावित कर रहा है। सभी वर्ग के लोग अपनी संस्कृति से जुड़ने को आतुर हैं। इस अमृत स्नान में जो व्यक्ति डुबकी लगा लेगा वह अपने को धन्य समझेगा। लोगों की इतनी भीड़ आ रही है कि उन्हें इस स्नान का प्रसाद लेना है चाहे कितने कष्ट क्यों न सहना पड़े। लोगों का शांतिपूर्ण रूप से संगम क्षेत्र में कहीं भी स्नान करना चाहिए न कि एक ही जगह।

महाकुम्भ भारतीय संस्कृति की भव्यता पूरे विश्व को दिखा रहा है। आज पूरा विश्व भारतीय सनातन संस्कृति की झलक इस कुम्भ में देख रहा है। इस दिव्य एवं भव्य कुम्भ के आयोजन ने एक बार हमारी संस्कृति का चित्र विश्व धरातल पर फैलाया है। आज हम भारतीयों को अपनी संस्कृति पर गर्व करने का अवसर इस आयोजन ने दिया है। महाकुम्भ में आकर हमें जो शांति का अनुभव होता है, वह इस भौतिकवादी दुनिया में देखने को नहीं मिलता है। लोग इस आयोजन का हिस्सा बनकर अपना जन्म धन्य बनाने को लालायित हैं और वे इस अवसर का पूरा लाभ उठा रहे हैं। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति जीने और जीने दो के सिद्धांत पर चली आ रही है। महाकुम्भ की जड़ें भारतीय संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी है, अनेक आक्रांता आये लेकिन वे इस आयोजन को रोक नहीं पाए। अनेक संस्कृतियाँ भारतीय संस्कृति में समाहित हो गई लेकिन यह आयोजन सदियों से अनवरत चला आ रहा है।

आज महाकुम्भ 2025 का आयोजन हमें अपनी संस्कृति से जुड़ने का एक अवसर एवं माध्यम प्रदान कर रहा है, जहाँ पर एक जगह पूरे भारत के लोग एक साथ एकत्र हो रहे हैं। हमें एक ही जगह पूरे भारत की संस्कृति की झांकी दिख जाती है और हम एक दूसरे की संस्कृति को जानते-समझते हैं। इस आयोजन ने पूरी भारतीय संस्कृति के आदान-प्रदान का रास्ता साफ कर दिया है। हमें एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है जहाँ से सभी भारतीय समान हैं और एक ही संस्कृति के दर्शन होते हैं। और वह है सनातन संस्कृति, जो विश्व एवं भारत का कल्याण चाहती है। आज प्रत्येक सनातनी को अपने धर्म एवं संस्कृति पर गर्व करना चाहिए कि यह आयोजन पूरे भारत को एक स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया। बिना किसी निमंत्रण के लोग खिंचे चले आ रहे हैं जो उनको अपनी संस्कृति से जोड़ रहा है। यहाँ पर चारों ओर पूजा-पाठ, धर्म-कर्म, यज्ञ आदि

का विधान हो रहा है। आज का युवा समाज भी पूरे मनोयोग से इस आयोजन का साक्षी बन रहा है, युवाओं का अपनी संस्कृति के प्रति बढ़ता आकर्षण महाकुम्भ की देन है।

इस महाकुम्भ में कोई भेदभाव नहीं है इसलिए भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के लिए कुम्भ एक महान पर्व माना जाता है। यह महाकुम्भ एक ऐसा विशाल पर्व है जहाँ सनातन हिन्दू संस्कृति अपने संपूर्ण वैभव-समृद्धि और सौन्दर्य के साथ दिखाई देती है। यह हमारी आर्य संस्कृति का वृहत्तम मिलन बिन्दु है। यह आयोजन भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का उत्सव है। भारत की महान संस्कृति को दिखाता है; लोगों की आस्था, धीरज और मानवीय भावना का महिमामंडन करता है। इस आयोजन का महत्त्व राष्ट्रीय सीमाओं के आगे जाकर विश्व को भारत की सांस्कृतिक ताकत दिखाता है कि भारत को विश्व-गुरु बनने से कोई रोक नहीं पाएगा। इस 45 दिन के आयोजन ने पूरे भारत में अध्यात्म की लहर दौड़ा दी है। आज पूरा भारत दान-पुण्य, धर्म की बात कर रहा है। सनातन संस्कृति दूसरों के कल्याण में अपना कल्याण देखती है। भारत के अनेक राज्यों की अलग-अलग संस्कृति है किन्तु जब महाकुम्भ की बात होती है तो सिर्फ एक ही संस्कृति के दर्शन होते हैं और वह है सनातन संस्कृति, जो सदियों से अजर-अमर है। लोग एक सांस्कृतिक जुड़ाव इस कुम्भ से लगाते हैं। यहाँ पर संस्कृतियों की दूरी समाप्त हो जाती है और केवल मानवता की संस्कृति के दर्शन होते हैं जो आने वाले कल के लिए अच्छा संकेत है।

संगम की त्रिवेणी में आने के बाद लोगों के मन से भेदभाव का विचार निकल जाता है और केवल उन्हें संगम स्नान करके पुण्य लेना रहता है। भारत के लोग पूरे मनोयोग से इस आयोजन को सफल बनाने में लगे हैं, कुछ अव्यवस्थाओं के अलावा बाकी सब सही चल रहा है। इस महाकुम्भ ने जो ख्याति प्राप्त की है वह अभी तक के आयोजन ने नहीं प्राप्त किया था। यहाँ पर आने वाला हर सनातनी अपनी माटी से प्रेम की भावना लेकर आ रहा है फिर वह विदेश में रहने वाले भारतीय ही क्यों न हों, जो सात समुद्र पार रह रहे हैं वे भी अपनी संस्कृति से जुड़ने के लिए इस आयोजन में आ रहे हैं। सब मिलाकर देखा जाय तो आज पूरा भारतीय समाज अपनी संस्कृति पर गर्व कर रहा है और इससे जुड़ने के लिए बिना भेदभाव के संगम में डुबकी लगा रहा है। महाकुम्भ ने पूरा भारत एक ही स्थान पर एकत्र कर दिया है।

महाकुम्भ में आने वाले सभी भारतीय अपनी संस्कृति से जुड़कर अध्यात्म की दुनिया में विचरण करते हैं। हमारी सांस्कृतिक जड़ें इतनी गहराई से जुड़ी हैं जो सदैव मानवता को पाप से दूर रहने और पुण्य अर्जित करने का संदेश देती हैं। प्राचीन काल से ही राजा-महाराजा कुम्भ के आयोजन एवं सहयोग में अपना योगदान देते आ रहे हैं। मौर्यवंश एवं गुप्तवंश के अनेक राजाओं तथा हर्षवर्धन जैसे दानी राजाओं ने कुम्भ को सफल बनाने में अपना सहयोग सदैव दिया। लोगों की आस्था इस आयोजन से जुड़ी है जो उन्हें इस कुम्भ में खींच ला रही है। यहाँ पर लोग दान-पुण्य कर रहे हैं हवन, पूजा-पाठ इत्यादि करके अपना जीवन धन्य बना रहे हैं, जो आने वाली पीढ़ी को

अपनी संस्कृति से जोड़ने का काम कर रहा है। यह आयोजन मानव को धर्म के मार्ग पर ले जाने को प्रेरित कर रहा है। समाज की असमानता एवं भेदभाव को मिटाने का कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष

इस महाकुम्भ के आयोजन ने भारत की संस्कृति एवं समाज पर अपना प्रभाव पूरी तरह से छोड़ा है। सभी के बीच पनपे भेदभाव को मिटा दिया, लोग एक ही स्थान पर एकत्र होकर स्नान ध्यान, पूजा–पाठ, धर्म–कर्म, दान, पुण्य आदि धार्मिक अनुष्ठान आदि कर रहे हैं। इस समय पूरे भारतीय समाज में सनातन संस्कृति के दर्शन हो रहे हैं। लोग बिना किसी भेदभाव के संगम की रेती पर धूनी रमाए बैठे हैं। इस 45 दिन के आयोजन का समापन 26 फरवरी 2025 को होगा, लेकिन इस महाकुम्भ ने पूरे भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधकर अपनी संस्कृति से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है जिससे जुड़कर प्रत्येक भारतीय को अपनी संस्कृति पर गर्व करना चाहिए। हमें इस महाकुम्भ में संकल्प लेना चाहिए कि मानव कल्याण में योगदान देंगे।

संदर्भ-ग्रंथ सूची-

1. श्रीवास्तव, के.सी., **प्राचीन भारत का इतिहास**, इलाहाबाद, संस्करण 1991, पृ. 486
2. ह्वेनसांग के विवरण, पृ. 485
3. **ऋग्वेद**- 1.28.4
4. **अथर्ववेद**- 19.53.3
5. **महाभारत**- कुम्भयोनि, आदिपर्व।
6. पर्यटन मंत्रालय की रपटश 2024
7. बी.बी.सी.
8. हिन्दुस्तान टाइम्स।
9. महाजन, विद्याधर- **प्राचीन भारत का इतिहास**, नई दिल्ली 1989, पृ0 599
10. काम, मैक्लिन- **तीर्थयात्रा और शक्ति इलाहाबाद में कुम्भमेला १७५६ से १९५४ तक**।
11. सूचना एवं जन संपर्क विभाग (डीपीआईआर), उत्तर प्रदेश सरकार।
12. मिश्र जे.एस.- महाकुम्भ पृथ्वी पर सबसे बड़ा शो पृ. 136
13. मनुस्मृति- चौखंभा संस्करण वाराणसी।
14. प्रसाद, ईश्वरी- **प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म, दर्शन**, इलाहाबाद 1960
15. दूबे सत्यनारायण- **भारतीय सभ्यता और संस्कृति**, इंदौर, 1984

महाकुम्भ और सनातन चेतना
(श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष संदर्भ में)

डॉ. विश्वम्भर द्विवेदी*

हमारे भारतवर्ष में महाकुम्भ का आयोजन एक अद्भुत घटना है। इस वर्ष प्रयागराज में होने वाला कुम्भ 144 वर्ष के पश्चात् हुआ है। इस अवसर पर गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के तट पर करोड़ों मनुष्यों/श्रद्धालुओं ने स्नान किया, जिसमें बालक, वृद्ध, नवजवान सभी सम्मिलित हैं। प्रकट रूप से यह स्नान का एक पर्व है, पुण्य लाभ का एक पर्व है और मान्यता के अनुसार अमृत कलश से छलकी हुई बूँदों से पवित्र जल में अमृत स्नान करके मोक्ष और अमरत्व प्राप्त करने का स्नान है। यह सब सर्वविदित तथ्य है, जिनमें भारतीय जनमानस की आस्था अत्यन्त गहराई के साथ बैठी हुई हैं। किन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि इस आस्था का आधार क्या है? इस आस्था को बल कहाँ से प्राप्त होता है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए भारतीय सनातन चेतना को समझना पड़ेगा।

भारतीय सनातन चेतना की अभिव्यक्ति अनेक स्थलों पर हुई है। हम यहाँ पर सर्वशास्त्रमयी श्रीमद्भगवद्गीता के नवें और दसवें अध्याय को आधार बनाकर इस सनातन चेतना को समझने का प्रयास करेंगे। दशम् अध्याय में अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं-

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थित:।
अहमादिश्च मध्यम् च भूतानामन्त एव च।। (10.20)[1]

इसका अर्थ है : हे अर्जुन, मैं सब प्राणियों के हृदय में स्थित सबकी आत्मा हूँ, मैं ही सभी प्राणियों का आदि, मध्य और अन्त हूँ, अर्थात् समस्त प्राणी मुझसे ही उत्पन्न होते हैं, मुझमें ही स्थित होकर अन्तत: मुझमें ही विलीन हो जाते हैं।

इसी का विस्तार करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण आगे कहते हैं कि "अदिति के बारह पुत्रों में

*नेशनल पी.जी. कॉलेज, बड़हलगंज, गोरखपुर; मो.नं.: 9918505838

मैं विष्णु हूँ, ज्योतियों में मैं उज्ज्वल किरणों वाला सूर्य हूँ, उन्चास वायुदेवताओं में मरीचि हूँ तथा नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा हूँ।" (10.21) "वेदों में सामवेद हूँ, देवों में इन्द्र हूँ, इन्द्रियों में मन हूँ और प्राणियों में चेतना हूँ।" (10.22)

भगवान श्रीकृष्ण की विभूतियों का वर्णन बहुत विस्तृत है। हमारे प्रयोजन की दृष्टि से निम्नलिखित वर्णन सर्वथा प्रासंगिक प्रतीत होता है।

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्।

झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी।। (10.31)[2]

तात्पर्य यह है कि मैं पवित्र करने वालों में वायु हूँ, शस्त्रधारियों में राम हूँ, मछलियों में मकर हूँ और नदियों में गंगा हूँ। यहाँ पर भगवान् अपने मुख से कह रहे हैं कि हिमालय से निकली पहाड़ों, मैदानों और पवित्र स्थलों से बहती हुई गंगा जी सभी नदियों में पवित्र मानी जाती हैं, और उस गंगा जी में मैं स्वयं अपने दिव्य रूप में प्रवाहित होता हूँ।

उपर्युक्त श्लोक में हमें भारत की सनातन चेतना का एक रूप दिखायी देता है, जिसका सीधा सम्बन्ध महाकुम्भ और संगम के अमृत स्नान से है। गंगा साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हैं। उनकी दिव्यता साक्षात् बह्म की दिव्यता है। इसलिए गंगा में स्नान और विशेषरूप से महाकुम्भ में स्नान, स्वयं भगवान् की दिव्यता में स्नान करना है, एक मनुष्य के रूप में अपने भीतर छिपी हुई दिव्यता का भगवान् की असीमित दिव्यता के साथ एकाकार करना है और अमरता का बोध करना है। स्पष्ट है कि यह अमरता शरीर की अमरता नहीं है। यह आत्मा की अमरता है। यह अपनी क्षुद्र और सीमित अहंकार की सीमा का परित्याग करके अपने ही विराट् स्वरूप का साक्षात्कार करना है। भारत की सनातन चेतना का यही चरम उत्कर्ष है।

यह सनातन चेतना केवल व्यक्तिगत मोक्ष का साधन नहीं है। इसके अनेक पक्ष हैं। विशेष रूप से हम इसके सामाजिक पक्ष का उल्लेख करना चाहेंगे, और इस पक्ष को रेखांकित करने के लिए हम पुनः भगवद्गीता को ही आधार बनाने की चेष्टा करेंगे।

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।

अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।। (3.10)[3]

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।। (3.11)[4]

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।

तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।। (3.12)[5]

उपर्युक्त का तात्पर्य यह है कि सृष्टि के प्रारम्भ में प्रजापति ने यज्ञ सहित मानव जाति की

रचना की, और उन्हें कहा कि इस यज्ञ द्वारा वृद्धि और सुख प्राप्त करो। यह यज्ञ तुम्हें सब वांछित भोग प्रदान करने वाला है। यज्ञ द्वारा तुम देवताओं को प्रसन्न करो और वे प्रसन्न होकर तुम्हें भी प्रसन्न करेंगे। इस प्रकार परस्पर सौहार्द से तुम सभी समृद्धि और कल्याण प्राप्त करोगे। यज्ञ के सम्पन्न होने पर प्रसन्न होकर देवता तुम्हारी इच्छाएँ और आवश्यकताएँ पूर्ण करेंगे। परन्तु जो मनुष्य इन सब उपहारों को देवताओं को अर्पित किये बिना भोगता है, वह निश्चित रूप से चोर है। यहाँ पर हम स्पष्ट रूप से यह देख सकते हैं कि भगवान् ने कर्मयोग का प्रतिपादन करते हुए एक अत्यन्त श्रेष्ठ समाज दर्शन और अद्‌भुत सामाजिक समरसता का विधान किया है। इस समाज दर्शन में केवल मनुष्य और मनुष्य के बीच सम्बन्ध की बात नहीं कही गयी है, अपितु मनुष्य लोक और देव लोक को एक सूत्र में बाँधने की चेष्टा की गयी है। यदि हम महाकुम्भ के विषय में इस दृष्टि से विचार करें तो हमें यह स्पष्ट होगा कि महाकुम्भ के अवसर पर विशाल जनसमुदाय का एकत्र होना, मात्र एक भीड़ नहीं है। इसके पीछे यज्ञ, तप, उपासना और योग का एक अद्‌भुत मेल दिखायी देता है। महाकुम्भ मात्र भक्ति और पूजा नहीं है, वह एक यज्ञ है। इस यज्ञ में व्यक्ति सारे परायेपन को भूल जाता है और यह समझता है कि वह अन्य व्यक्तियों के साथ एक सामूहिक यज्ञ और तपश्चर्या में सम्मिलित हो रहा है। इस महाकुम्भ के अवसर पर दूसरा व्यक्ति वास्तव में दूसरा नहीं रह जाता, अपितु प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से तदाकार हो जाता है। एक की इच्छा दूसरे की इच्छा हो जाती है, एक का कार्य दूसरे का कार्य बन जाता है, अथवा यों कह सकते हैं कि सभी लोग सम्मिलित रूप से एक ही कर्म (अमृत स्नान) के महायज्ञ में साझीदार बन जाते हैं। इस प्रकार हमारी भारतीय संस्कृति की वह विशेषता जिसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कहा गया है, उसका प्रत्यक्ष उदाहरण इस महाकुम्भ के समय इस एकाकार और विराट चेतना के रूप में देखा जाता है।

इस लेख के प्रारम्भ में ही हमने सनातन चेतना की चर्चा की है। अब हम भगवद्‌गीता को ही आधार बनाकर इस सनातन चेतना का एक मूर्तरूप प्रस्तावित करने का प्रयास करेंगे। भगवद्‌गीता के सोलहवें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का विभाजन करके दैवी प्रवृत्तियों का एक विस्तृत विवेचन किया है, जो कि इस प्रकार है–

अभयं सत्त्वसंश्रुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।। (16.1)[6]
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।। (16.2)[7]
तेजः क्षमाधृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ।। (16.3)[8]

उपर्युक्त तीन श्लोकों में भगवान् ने दैवी गुणों का वर्णन करते हुए बताया है कि निर्भयता,

मन की शुद्धता, ज्ञानयोग, दान, इन्द्रिय संयम, त्याग, तेज, क्षमा, धैर्य, मन, वचन और कर्म की शुद्धता, शत्रुभाव का न होना, और अपनी महानता का अभिमान न होना – यही सात्विक कार्य है और यही सात्विक व्यक्ति के लक्षण हैं। उपर्युक्त दैवीय गुणों में से प्रत्येक की विस्तृत व्याख्या की जा सकती है, किन्तु हम यहाँ पर दो गुणों का विशेष रूप से उल्लेख करके भारतीय सनातन चेतना को स्पष्ट करना चाहते हैं। ये दोनों गुण हैं : शत्रुभाव का न होना और महानता का अभिमान न होना। यदि हम इन्हीं दो गुणों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें तो भारतीय सनातन दृष्टि के वैशिष्ट्य को समझ सकते हैं, और उसको वर्तमान धार्मिक और सामाजिक परिदृश्य में स्थापित कर सकते हैं।

शत्रुभाव का न होना (अद्रोह) यह सनातन चेतना के समावेशी स्वरूप को इंगित करता है। यदि हम पाश्चात्य संस्कृति के संदर्भ में देखें तो यह पाते हैं कि वहाँ पर एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के परस्पर सम्बन्ध के प्रति कोई अविवादित दृष्टि नहीं दिखायी देती, अपितु किसी लेखक ने तो यहाँ तक कह दिया है कि दूसरा व्यक्ति हमारे लिए नरक की तरह होता है। इसका तात्पर्य यह है कि वहाँ पर दूसरा व्यक्ति हमारे हितों और हमारी स्वतंत्रता का विरोधी है। ऐसी स्थिति में दूसरे के प्रति शत्रुभाव न होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यदि हम दूसरे गुण अर्थात् अपनी महानता के अभिमान के अभाव पर विचार करें तो यहाँ भी देखते हैं कि सनातन दृष्टि एक विलक्षण धार्मिक–सामाजिक व्यवस्था का संकेत कर रही है। हम यह पाते हैं कि बहुत सी ऐसी सभ्यताएं या मानव समुदाय हैं जो यह समझते हैं कि उनकी ही धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था सर्वश्रेष्ठ है और जो उस व्यवस्था में साझीदार नहीं है या उसे स्वीकार नहीं करते वे निम्न कोटि के लोग हैं। ऐसी संस्कृति बहिष्कार की संस्कृति होती है। वह किसी भी रूप में दूसरे का अस्तित्व स्वीकार नहीं करती। यह दूसरा किसी भी रूप में हो सकता है, जैसे धार्मिक विश्वास के रूप में, धार्मिक पूजा पद्धति के रूप में, वस्त्र धारण के रूप में अथवा शिक्षा और खान–पान के रूप में। जहाँ श्रेष्ठता का ऐसा अभिमान होता है, वहाँ सहनशीलता का अभाव होता है और वहाँ शत्रु भाव एक स्थायी भाव बनकर रह जाता है। इसी प्रकार जहाँ अपनी महानता के प्रति अभिमान होता है, वहाँ भी सहनशीलता का अभाव होता है और सहनशीलता का अभाव विश्व में संघर्ष का कारण बनता है। इस दृष्टि से विचार करने पर हम यह देखते हैं कि दैवी गुणों में अद्रोह और नातिमानिता का जो विवेचन श्रीमद्भगवद्गीता में किया गया है, वह एक सर्वकालिक गुण है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इन गुणों की प्रासंगिकता को समझने में हमें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। हम देख रहे हैं कि आज विश्व में कई तरह के संघर्ष चल रहे हैं। कहीं पर यह संघर्ष धार्मिक आधार पर है, कहीं राजनीतिक कारणों से है। इस तरह के संघर्षों के मूल में उपर्युक्त अद्रोह और नातिमानिता के दैवीय गुणों के अभाव के कारण ही है। इस संदर्भ में भारतीय सनातन चेतना की समावेशी दृष्टि बहुत ही प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो जाती है। वहीं समावेशी दृष्टि महाकुम्भ में भी परिलक्षित होती

है। भौतिक रूप से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है, उसकी इच्छाएँ और आवश्यकताएँ भी भिन्न होती हैं किन्तु जब वही व्यक्ति महाकुम्भ के विलक्षण सामूहिक स्नान में सम्मिलित होते हैं तो वे अपनी भौतिक इच्छाओं और आवश्यकताओं से ऊपर उठ जाते हैं। सभी का एक ही लक्ष्य रह जाता है - अमृत स्नान और अमरत्व की कामना। अमरत्व ही मनुष्य का स्वरूप है। अपनी रोज की जिन्दगी में वह उसे भूला रहता है। महाकुम्भ का पर्व मनुष्य को उसके अमरत्व का स्मरण दिलाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकुम्भ की सनातन दृष्टि हमारे लिए एक तरफ सामाजिक समरसता का संदेश देती है तो दूसरी ओर आत्मोत्थान के लिए मार्ग प्रशस्त करती है ताकि हम कर्म, तप और योग का वरण करते हुए 'आत्मन: प्रतिकुलानि परेशां न समाचरेत्' की भावना से ओत-प्रोत होकर समभाव में अवस्थित होकर एक उत्कृष्ट समाज, संस्कृति और सभ्यता को स्थापित कर सकें और अन्तत: जीवन के परम लक्ष्य अमरत्व एवं मोक्ष लाभ को प्राप्त कर सकें।

सन्दर्भ सूची:

1. श्रीमद्भगवद्गीता, 10.20.
2. तत्रैव, 10.31.
3. तत्रैव, 3.10
4. तत्रैव, 3.11.
5. तत्रैव, 3.12.
6. तत्रैव, 16.1
7. तत्रैव, 16.2.
8. तत्रैव, 16.3.

Mānavikī सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में महाकुम्भ पर्व

अनूप कुमार पांडेय*

सारांश : कुम्भ की उत्पत्ति बहुत पुरानी है और उस कालखंड के समय की है जब समुद्र मंथन के दौरान अमरता को प्रदान करने वाला अमृत-कलश निकला था। इस कलश के लिए राक्षसों और देवताओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ था। अमृत-कलश को असुरों से बचाने के लिए जो देवताओं से अधिक शक्तिशाली थे, उन देवताओं की सुरक्षा बृहस्पति, सूर्य, चंद्र और शनि को सौंपी गई थी। चार देवता असुरों से अमृत-कलश को बचाकर भागे और इसी दौरान असुरों ने देवताओं का पीछा 12 दिन और रातों तक किया। पीछा करने के दौरान देवताओं ने कलश को हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में रखा। इस पवित्र समारोह की स्मृति में ही हर 12 साल में इन 4 जगहों पर कुम्भ पर्व को मनाया जाता है।

मूल शब्द : कुम्भ, देवता, धार्मिक, उज्जैन, प्रयागराज, सूर्य, देवता, असुर इत्यादि।

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति एवं समाज के अतीत से आज तक विविध कालखंडों में अलग-अलग आक्रमणों और दासताओं के अनगिनत चक्रों के बीच भी कुम्भ की महत्ता और उसकी सार्वभौमिकता ने अतीत से वर्तमान तक सनातन धर्म से होते हुए आर्य और हिंदू संस्कृति की एक-सूत्रता का एक मात्र केंद्र बिन्दु है। वर्ण व्यवस्था में बँटी हुई हिंदू संस्कृति अलग-अलग समय में आपस में भले ही विखंडित हो, पर प्रत्येक कालखंड में आपसी बिखराव के जाति, वर्ण, वर्ग और धार्मिक उपेक्षा से इतर संपूर्ण आर्य जनमानस के उदात्त रूप का एक मात्र नैसर्गिक केंद्र कुम्भ है। देवताओं द्वारा अमृतपान के उपरांत घट में बची अमृत की एक बूंद की चाह में अतिप्राचीन काल से आज तक नदियों में स्नान की परंपरा से लोगों को पता नहीं वह अमृत की बूंद मिली या नहीं मिली, पर संस्कृति की संपूर्णता उसकी संप्रभुता और उसकी सार्वभौमिकता के लिए कुम्भ आज भी अमृत रूपी वरदान है।

*सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़, गोरखपुर

कुम्भ शब्द कई स्थानों पर आया है। इससे यह विचार उत्पन्न होता है कि यह सनातन संस्कृति का एक ऐसा महान पर्व है जो कर्मकांड के कुत्सित क्रियाकलापों, मंदिर में वर्ण विशेष के प्रवेश निषेध संबंधी दुष्कर्मों सहित आर्य संस्कृति के निर्बल पक्ष को एक क्षण में नदी की जलधारा में विसर्जित कर देता है। एक नदी के एक तट पर बने दर्जनों घाटों से सैकड़ों जातियां अपने अहम और वहम को विस्मृत कर सनातन संस्कृति की नदी रूपी अमृतधारा में स्नान कर मोक्ष और मुक्ति की प्राप्ति करती हैं। कुम्भ प्राचीनकाल से मध्य एवं आधुनिक सहित सभी ज्ञात कालों में सनातन और आर्य संस्कृति की एकसूत्रता का अमृत रूपी ऐसा प्रवाह है जो सदियों से बहता रहा है। यह शताब्दियों तक प्रवहमान रहेगा और इसकी विशालता, इसकी सुंदरता और आध्यात्मिकता जीवंत रहेगी। इस तरह महाकुम्भ आस्था का सैलाब लिए पूरी दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करता है। आध्यात्मिकता का ज्ञान समृद्ध करता हुआ यह पर्व ज्योतिष, खगोल-विज्ञान, परंपरागत कर्मकाण्ड, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार को कुम्भ यज्ञ के रूप में प्रदर्शित करता है। देश-विदेश के कोने-कोने से लोग इसमें अपनी भागीदारी प्रस्तुत करते हैं। यह धार्मिक पर्व वैश्विक पटल पर शांति स्थापित करता है एवं आपसी मेल-मिलाप का यह संगम इस कुम्भ पर्व को विशेष बनाता है। कुम्भ का इतिहास हिंदू धर्म के इन ग्रंथों में बेहद प्राचीन है।

ऋग्वेद के अनुसार-

जघानं वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पूरो अरदत्र सिन्धून्।
विभेद गिरं नवमित्र कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुतस्व युग्भिः।।(ऋग्वेद, 10/89/7)

अर्थात् इन्द्र सूर्य अथवा विद्युत मेघ को मारता है। जिस प्रकार कुठार जंगलों को काटता है उसी प्रकर वह मेघों की नागरियों को ध्वस्त करता है और नदियों को पानी से युक्त करता है। वह नए घड़े के समान मेघ को भेदन करता है और अपने सहयोगी मरुतों के साथ वर्षा जल को अभिमुख करता है।

भाषा-भाष्य के अनुसार-

दूसरी टीका में नए घड़े की जगह कच्चा घड़ा शब्द दिया है पर आशय वही है- प्रयाग कुम्भ रहस्य में इसका अर्थ करते हुए कहा गया है- कुम्भ पर्व में जाने वाला मनुष्य स्वयं अपने फल रूप से प्राप्त होने वाले दान होमादि सत्कर्मों से काष्ठ काटने वाले कुठारादि की तरह अपने पापों का प्रक्षालन करता है। जिस प्रकार गंगा नदी अपने तटों को नष्ट करती हुई प्रवाहित होती है उसी प्रकार कुम्भ पर्व अपने पूर्वसंचित कर्मों से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन बनावटी पर्वत की तरह बादल को नष्ट-भ्रष्ट कर संसार में सुवृष्टि प्रदान करता है।

शुक्ल यजुर्वेद के अनुसार-

कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भोऽअन्तः।
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधाम्पितृभ्यः।। (19/87)

अर्थात् कुम्भो और कुम्भी के अर्थ द्वारा स्त्री-पुरुष के संयोग से संतानोत्पत्ति का रूपक प्रस्तुत किया गया है। (द्रष्टव्य, भाषा-भाष्य, दयानंद सरस्वती, पृ.729) यहाँ पर इसका अर्थ दिया गया है- कुम्भ पर्व सत्कर्म के द्वारा मनुष्य को इहलोक में शारीरिक सुख देने वाला और जन्म-जन्मान्तरों में उत्कृष्ट सुखों को देने वाला है। पर्वपरक यह अर्थ उदात्त भावना से युक्त है।

इस तरह इन खंडो और श्लोकों के माध्यम से इस धार्मिक पर्व को ग्रंथों के अनुसार पवित्र माना जाता है। इससे पूर्व पहले ज्ञात ऐतिहासिक कुम्भ का आयोजन राजा हर्षवर्धन के राज्यकाल 643 ईस्वी में आरंभ हुआ था। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी भारत यात्रा का उल्लेख करते हुए कुम्भ पर्व के आयोजन का उल्लेख किया है। उन्होंने साथ ही साथ राजा हर्षवर्धन की दानवीरता का भी उल्लेख किया है। ह्वेनसांग ने कहा है कि राजा हर्षवर्धन हर पांच साल में नदियों के संगम पर एक बड़ा आयोजन करते थे, जिसमें वह अपना पूरा कोष गरीबों और धार्मिक लोगों में दान दे देते थे। परम्परानुसार बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा के किनारे पर कुम्भ का आयोजन होता है। दूसरा जब बृहस्पति के मेष राशि में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चंद्र के मकर राशि में होने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुम्भ का आयोजन होता है। तीसरा कुम्भ बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में आने पर नासिक में गोदावरी के किनारे पर आयोजित होता है और बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में क्षिप्रा तट पर कुम्भ का आयोजन होता है।

महाकुम्भ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना का एक जीवंत प्रतीक है। यह पर्व भारत की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय एकता को दर्शाता है। महाकुम्भ भारत के विभिन्न हिस्सों से आए करोड़ों श्रद्धालुओं को एक साथ जोड़ता है। देश के हर कोने से साधु-संत, तीर्थयात्री और आमजन इस महाकुम्भ में आयोजित पवित्र स्नान के लिए एकत्रित होते हैं, जो भारतीय संस्कृति को विविधता में एकता के स्वरूप को दर्शाता है।

यह पर्व भारत की सनातन परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं का उत्सव है। ऋग्वेद, पुराणों और अन्य प्राचीन ग्रंथों में कुम्भ मेले का उल्लेख मिलता है, जो भारतीय सभ्यता की प्राचीनता और सांस्कृतिक निरंतरता को प्रमाणित करता है। महाकुम्भ में भाग लेने वाले करोड़ों लोग अपनी धार्मिक आस्था के साथ-साथ भारत की गौरवशाली संस्कृति का अनुभव करते हैं। इससे भारतीयता की भावना को बल मिलता है और देश की सांस्कृतिक थाती के प्रति गर्व की अनुभूति होती है।

यह पर्व जाति, भाषा, क्षेत्र और वर्ग के भेदभाव को मिटाकर एक समान आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। कुम्भ में सभी लोग समान रूप से भाग लेते हैं, जिससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलता है। महाकुम्भ न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर भी भारतीय संस्कृति, योग, ध्यान और अध्यात्म का प्रचार करता है।

निष्कर्ष-

कुम्भ पर्व केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि भारत की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत का एक अद्‌भुत संगम भी है। इसकी जड़ें हमारी पौराणिक कथाओं में हैं और यह सदियों से करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था और विश्वास का केंद्र बना हुआ है।

यह पर्व आत्मशुद्धि, मोक्ष प्राप्ति और सामाजिक समरसता का प्रतीक है, जहाँ साधु-संतों से लेकर आम श्रद्धालु तक एक साथ मिलते हैं। कुम्भ न केवल धार्मिक स्नान और अनुष्ठानों का अवसर प्रदान करता है, बल्कि अध्यात्म, दर्शन और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार का भी माध्यम बनता है। आधुनिक समय में भी कुम्भ अपनी परंपराओं को संजोए रखते हुए वैश्विक स्तर पर पहचान बना चुका है। कुम्भ पर्व आस्था, भक्ति, ज्ञान और संस्कृति का महासंगम है, जो न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। समग्रत: कह सकते हैं कि कुम्भ न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधि है अपितु यह हमारे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का भी ध्वजवाहक है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. **संवेदना** 2022 वॉल्यूम 4, इश्यू 2
2. **ऋग्वेद**, 10/89/7
3. **भाषा-भाष्य**, पृष्ठ संख्या 888-889
4. **शुक्ल यजुर्वेद** 19/87
5. काणे, पी.वी. **धर्मशास्त्र का इतिहास**, प्रथम से चतुर्थ भाग, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ स्थान, लखनऊ
6. गोयल, एस. आर. **अ रिलीजियस हिस्ट्री ऑफ एंश्यिंट इंडिया**, मेरठ 1984
7. दुबे, सत्यनारायण, **भारतीय सभ्यता और संस्कृति**, इन्दौर 1984
8. ईश्वरी एवं शैलेन्द्र शर्मा: **प्राचीन भारतीय संस्कृति कला, राजनीति धर्म दर्शन**, इलाहाबाद 1960
9. पालकर, सत्यकेतु, **प्राचीन भारत का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन**, नई 6. मत्स्य पुराण अनुवादक राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री, आनंदाश्रम प्रेस पूना।
10. **माकण्डेय पुराण**, कलकत्ता 1879
11. कामा मैक्लिन: **तीर्थ यात्रा और शक्ति इलाहाबाद में कुम्भ मेला १७५६ से १९५४ तक**।

Mānaviki सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्तःअनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

महाकुम्भः सनातन चेतना का प्रतीक

शैलेश कुमार*

शोध-सारांश : महाकुम्भ सनातन की एकता का प्रतीक है। सनातनियों के लिए पर्व सर्वोपरि है। प्रयागराज का महाकुम्भ विश्व का सबसे बड़ा मानव जमावड़ा है जो सबका ध्यान आकृष्ट कर यह संदेश देना चाहता है कि मनुष्य जाति सनातन के प्रति कृतज्ञ है।

महाकुम्भ में भव्य, अद्‌भुत और आश्चर्यजनक दृश्य वाले पवित्र अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं। इस महाकुम्भ में साधु-संतो के द्वारा प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं को जीवंत बनाये रखने का उत्कृष्ट कार्य किया जाता है। अखाड़े महाकुम्भ की आत्मा बन जाते है और श्रद्धालुओं को ईश्वर के साथ गहरे आध्यात्मिक संबंधों की ओर ले जाते हैं। महाकुम्भ में अखाड़े दीर्घ काल से सनातन ध र्म की विभिन्न परम्पराओं और सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करते चले आ रहे हैं। संसार के सबसे बड़े आध्यात्मिक समागम के रूप में मनाया जाने वाला महाकुम्भ मेला करोड़ों लोगों की आस्था, संस्कृति और प्राचीन परम्परा का संगम है। हिंदू पौराणिक कथाओं में महाकुम्भ का वर्णन पवित्र त्योहार एवं बड़े उत्सव के रूप में किया गया है। महाकुम्भ में पंचतत्त्व के रहस्य का केन्द्र है एवं प्रकाश और ध्वनि का विज्ञान समाहित है।

भारतीय संस्कृति की शाश्वत आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक है महाकुम्भ। 13 जनवरी 2025 से प्रारम्भ महाकुम्भ (प्रयागराज में) पर देश के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने महाकुम्भ को भारतीय सनातन संस्कृति का प्रतीक घोषित कर दिया है। "जब-जब ऐसे विशाल एवं वृहत्तम महाकुम्भ का आयोजन होता है तब-तब भक्ति तथा आस्था का अद्‌भुत संगम (मिलन) होता है। सनातन धर्म में कुम्भ का विशेष महत्त्व है। कुम्भ आत्मजागृति का प्रतीक है। कुम्भ मानवता का अनंत प्रवाह है और आध्यात्मिक प्रेरणा का स्रोत है।"

*शोधार्थी, इतिहास-विभाग, महामाया राजकीय महाविद्यालय, श्रावस्ती सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

मूल शब्द : महाकुम्भ, जीवंत, निरंतर, प्रवाह, श्रद्धालु, सांस्कृतिक कल्पवास, अलंकृत, आत्ममंथन, अमृतपान, आत्मसाक्षात्कार, परमानंद, प्रतीकात्मक, दिव्य, भव्य, त्रिवेणी, परम्परा, नवीनीकरण, प्रतीकात्मक, संगम महागाथा, आगाज (शुभारंभ), समागम (आयोजन), महामिलन महोत्सव।

प्रस्तावनाः

'प्रयागराज महाकुम्भ'–2025 में अपनी सनातन आभा के साथ पूज्य साधु-संतगण देश-विदेश से पधारने वाले श्रद्धालुओं तथा अतिथियों का भव्य सम्मान किया गया है।[1] महाकुम्भ, विश्व को सनातन भारतीय संस्कृति से साक्षात्कार कराने का एक सुअवसर प्रदान करता है।[2] प्रयागराज में जनमानस संगम की रेती पर दिव्य-भव्य, स्वच्छ-सुरक्षित और डिजिटल महाकुम्भ में आस्था और उल्लास के साथ संगम में डुबकी लगा रहा है। महाकुम्भ में अभेद्य सुरक्षा व्यवस्था, बेहतर स्वास्थ्य सुविधा, आधुनिक स्वच्छता प्रणाली, विस्तारित परिवहन नेटवर्क, वाटरड्रोन, रोबोटिक लाइफबॉय और एआई कैमरे जैसी व्यवस्थाओं से श्रद्धालुओं को महाकुम्भ में अनूठा अनुभव प्राप्त हो रहा है। महाकुम्भ 2025 ने सनातन धर्म की पवित्र परंपराओं और तकनीक के बीच एक सुदृढ़ सामंजस्य स्थापित किया है। महाकुम्भ स्नान को अमृत स्नान की संज्ञा दी गई है। महाकुम्भ भारत की एकात्मकता के जीवंत प्रतीक, आध्यात्मिकता, समता और समरसता का प्रतीक है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं चेतना का महोत्सव महाकुम्भ हमारी सांस्कृतिक धरोहर है।[3] कुम्भ सनातन धर्म का एक प्रमुख तीर्थोत्सव है। भारत में महाकुम्भ प्रत्येक 12 वर्ष के चक्र में बृहस्पति द्वारा पूर्ण की गई प्रत्येक परिक्रमा के शुभ अवसर पर चार नदी-तटस्थ तीर्थस्थलों यथा प्रयागराज (गंगा-यमुना-सरस्वती के त्रिवेणी संगम) हरिद्वार (गंगा), नासिक (गोदावरी) और उज्जैन (शिप्रा) में महोत्सव के रूप में एकमासपर्यन्त मनाया जाता है। कुम्भ पर्व को पवित्र तीर्थस्थल के रूप में जाना जाता है। सन्तों साधकों एवं तत्त्वदर्शियों का मानना है कि कुम्भ के अवसर पर उक्त नदियों में स्नान करना विगत पापों के लिए प्रायश्चित का एक साधन है। महाकुम्भ पर्व के पुनीत अवसर पर तीर्थसेवन एवं स्नान विगत पापों से मुक्ति प्रदान करता है।[4] महाकुम्भ अमरत्व के लिए अमृत विषयक पौराणिक कथाओं में प्रयुक्त हुआ है। कुम्भ शब्द का व्युत्पत्तिपरक प्रयोग चारों वेदों सहित अन्य वैदिक और उत्तरवैदिक वाङ्मय में हुआ है। अनेक सनातन धर्माचार्यों का मानना है कि कुम्भ मेले का आयोजन अनादि काल से चलता चला आ रहा है जो वैदिक ग्रन्थों में उल्लिखित समुद्र मंथन के आख्यान से पुष्ट होता है।

पौराणिक ग्रन्थों में सद् और असद् शक्तियों के द्वारा, सृष्टि के आदि में समुद्र-मंथन के बाद 'अमृत कुम्भ' के प्राप्त होने का वर्णन किया गया है। अमरता प्राप्त करने के लिए देवता एवं दानव 'अमृत कुम्भ' के लिए लड़ते है। किंवदंती के बाद के दिनों में विस्तार करते हुए 'अमृत कुम्भ' से अमृत की कुछ बूँदों को चार स्थानों पर गिराया जाता है और यही चार कुम्भ मेलों की उत्पत्ति का सार है।[5] महापर्व के रूप में कुम्भ-महोत्सव का श्रेय पारम्परिक रूप से शंकराचार्य को

दिया जाता है। यद्यपि 19वीं शताब्दी से पूर्व कुम्भ मेला नामक इस सामूहिक तीर्थोत्सव का कोई ऐतिहासिक साहित्यिक प्रमाण नहीं है।[6] कुम्भ यह बताता है कि सृष्टि की सृजन शक्ति बनाए रखने के लिए संस्कृति के सूत्रों का निरंतर नवीनीकरण जरूरी है। कुम्भ इसी का हिस्सा है। महाकुम्भ में सनातन संस्कृति के हर वर्ग के उपासक, आराधक, शस्त्र से लेकर शास्त्र तक में पारंगत विद्वान् एकत्र होकर सनातन की नवीनता और निरंतरता के लिए मंथन का प्रयास करते हैं।[7] कुम्भ आस्था, आत्मा और आत्मीयता का सबसे बड़ा प्रतीक है। करोड़ों लोग सदियों से इस पर्व को तन्मयता से मनाते चले आ रहे हैं। यह सनातनियों के लिए धार्मिक पर्व ही नहीं है, बल्कि इसमें मानवता का सबसे बड़ा अंश निहित है। कुम्भ आज दुनिया का सबसे बड़ा पर्व माना जा सकता है। यह पर्व नदियों के उत्सव से जुड़ा है। जल न केवल हमारे शरीर का मुख्य घटक है, बल्कि पृथ्वी और समुद्र का भी मुख्य आधार होने के साथ-साथ हमारे जीवन का भी आधार है। जहाँ जल है, वहीं जीवन है। यह सत्य है कि कुम्भ की परिकल्पना सिर्फ एक धर्म विशेष के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए की गई थी। जो हमारे शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है। हमारे शरीर में सबसे अधिक जल ही है जो पृथ्वी में भी है।[8]

महाकुम्भ सम्पूर्ण मानव समाज, सम्पूर्ण साहित्य, भाषा, संस्कृति, राष्ट्र, स्वतंत्रता, और समय आदि विषय के बारे में बहुत कुछ सोचने-विचारने का एक सु-अवसर प्रदान करता है।[9] महाकुम्भ भारतीय लोक परम्परा पर आधारित एकात्म मानववाद की अवधारणा पर आधारित प्रत्येक मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एकीकृत पर्व बताया गया है। हमारा सनातन विश्व का व्यापक तत्त्व है। यह मनुष्य के सभी पहलुओं से सम्बन्ध रखने वाला तत्त्व है। भारत में सदियों से महाकुम्भ आंतरिक एकता का प्रतीक बना हुआ है जिसके फलस्वरूप अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है।[10] कुम्भ पर्व में मौलिक एकता का विचार सदैव बना रहा है। कुम्भ के उत्सव से भारतीयों की प्राचीन धार्मिक भावनाओं एवं विश्वासों से भी इस सारभूत एकता का परिचय मिलता है। भारत की सात पवित्र नदियों में गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु कावेरी तथा मोक्षदायिनी नगरियों- अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिपुरी तथा द्वारिकापुरी देश के अनेक भागों में बसी हुई देश के सभी निवासियों के लिए समान रूप से श्रद्धेय है। पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में सनातनी पर्व महाकुम्भ का विशद् एवं व्यापक रूप से उल्लेख मिलता है।[11] भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय' की मूल अवधारणा पर आधारित है। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मानवीय मूल्यों के आधार पर भारतीय संस्कृति महाकुम्भ उत्सव के आदर्शों को अग्रसर कर रही है।[12]

कुम्भ मानवता का सबसे बड़ा उत्सव है।[13] यह समस्त मानव समाज को एक जीवंत संदेश देता है कि हम सबका जीवन उसी निरंतर प्रवाहित होते हुए जल की तरह है, जो हमें अपने भीतर

के स्रोतों को हमे जानने और समझने का एक दिव्य अवसर देता है। यह मेला न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक शुद्धता का भी प्रतीक है।[14] यह हर मानव को अपनी जड़ से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह मेला न केवल भारतीय संस्कृति की विशालता को दर्शाता है, बल्कि विश्व बंधुत्व का भी संदेश देता है। यह महोत्सव हमें अपने भीतर की शुद्धता और संतुलन को समझने की प्रेरणा देता है, ताकि हम आत्ममंथन कर सकें।[15] निश्चित रूप से इस परम्परा को बनाये रखने हेतु भारतीय जन-मानस को जागृत, सजग एवं सचेत रखने की प्रेरणा इस उत्सव से प्राप्त होता है।[16] भारतीय सनातन धर्म आज भी अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक आभ्यांतरिक शक्ति के बल पर जीवित है। सनातन धर्म ने अपनी विराट काया धारण कर संसार को आश्चर्यचकित कर दिया है। भारतीय, सनातन धर्म, मूर्तिपूजा, पौराणिक कथाएं यहाँ तक कि अद्वैतवाद और निरीश्वरवाद को भी अपने हृदय में स्थान देता है।[17] इस अवसर पर साधु-संतों के मुख से निकली हुई वाणी समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए होती है।[18]

यह कुम्भ पर्व भारतीय संस्कृति की धरोहर है जो निरन्तरता, लचीलापन, सहिष्णुता, ग्रहणशीलता, आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय एवं अनेकता में एकता का संदेश देता है। हजारों वर्षो के बाद भी यह परम्परा व संस्कृति हमारे समाज में आज भी अपने मूल स्वरूप में जीवित है। इस पर्व में करोड़ों भारतीयों की आस्था और विश्वास आज भी उतना ही है, जितना हजारों वर्ष पूर्व था। गीता और उपनिषदों के संदेश हजारों सालों से हमारी प्रेरणा और कर्म का आध ार रहे हैं। भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थों का विशिष्ट स्थान रहा है। कुम्भ एवं इसके जैसे अनगिनत पर्वों ने ही इन पुरुषार्थों के माध्यम से भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता का एक अद्‌भुत समन्वय स्थापित किया है। हमारी संस्कृति में जीवन के लौकिक और पारलौकिक दोनों पहलुओं को धर्म से सम्बद्ध किया गया है।[19] भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को समझने के लिए महाकुम्भ की यात्रा हर मनुष्य के लिए जरूरी है। दिव्य, भव्य-डिजिटल, एकता एवं सौहार्द का पर्व महाकुम्भ समस्त संस्कृतियों का मिलन पर्व है।[20] जब-जब बारह वर्षों पर कुम्भ का आयोजन त्रिवेणी के तट पर होता है, तब-तब आस्था का सैलाब उमड़ पड़ता है। भक्ति की लहरों में करोड़ों लोग अमृत स्नान कर पुण्य प्राप्त करते हैं। स्नान का यह दृश्य भारतीय संस्कृति और परंपरा की गहराई को दर्शाता नजर आता है। महाकुम्भ के प्रति दुनिया का आकर्षण अद्‌भुत, अकल्पनीय है। विश्व में रहने वाले सनातन धर्मावलंबियों के साथ सनातन धर्म के प्रति आकर्षित अनेक विदेशी नागरिक भी महाकुम्भ 2025 के उत्सव का साक्षी बन रहे हैं।[21]

उपसंहार :

सनातन धर्म में महाकुम्भ का बहुत महत्त्व है। प्रयागराज का कुम्भ मेला धर्म, आस्था और आध्यात्मिकता की त्रिवेणी के साथ-साथ संस्कृतियों, परंपराओं और भाषाओं का एक जीवंत मिश्रण

है। यह एक 'लघु भारत' को प्रदर्शित करता है, जहाँ पर करोड़ों धर्मावलम्बी बिना किसी औपचारिक निमंत्रण के एक साथ आते हैं। कुम्भ मेले में करोड़ों तीर्थयात्री पवित्र नदियों के संगम तट पर स्नान करते हैं। यह स्नान आध्यात्मिक शुद्धि और नवीनीकरण का प्रतीक है। कुम्भ मेला धरती पर एक अद्वितीय और विशालतम एवं सांस्कृतिक आयोजन है। यह पर्व धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक शुद्धता का प्रतीक है। कुम्भ मेला एक जीवंत संदेश देता है। यह उत्सव संस्कृति की विशालता के साथ विश्व बंधुत्व का संदेश देता है। कुम्भ का अर्थ केवल जल में डुबकी लगाना नहीं है, बल्कि यह जीवन के मर्म को जानने का एक माध्यम है। यह एक अमृत मंथन की यात्रा है। कुम्भ आत्मसाक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह भावना हमें अमृत को पहचानने और उसे जीवन में उतारने की प्रेरणा देता है। कुम्भ मेला एक संगम है, जहाँ नदियों के जल का संगम होता है और दिलों का भी संगम होता है। यह पर्व संगम के साथ-साथ संयोग और समन्वय का भी प्रतीक है। संगम केवल दो नदियों का मिलन नहीं है, बल्कि यह आस्था और व्यवस्था का संगम है, जो हमें यह सिखाता है कि जीवन में केवल आस्था ही नहीं बल्कि व्यवस्थित और नियंत्रित जीवन भी आवश्यक है। कुम्भ एकता का महायज्ञ, जहाँ पंथों का भेद मिट जाता है। भारत पवित्र स्थलों व तीर्थों का देश है। गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा जैसी पवित्र नदियों की यह भूमि है। यहाँ सम्पूर्ण मानवता का संगम होता है, संस्कृतियों का संगम होता है। अत: हम कह सकते है कि कुम्भ मानवता का सबसे बड़ा उत्सव है।

सन्दर्भ-ग्रन्थः

1. **अमर उजाला :** वर्ष 18, अंक 272, गोरखपुर संस्करण, 5 जनवरी, 2025, पृ. 8
2. वही, पृ. 8
3. **अमर उजाला**, वर्ष 18, अंक 293, गोरखपुर संस्करण, 29 जनवरी 2025, पृ. 9
4. **स्वदेश :** लखनऊ - मुख्य संस्करण, 31 जनवरी 2025, पृ. 11
5. वही, पृ. 11
6. वही, पृ. 11
7. **अमर उजाला :** वर्ष 18 अंक 291, गोरखपुर संस्करण, 24 जनवरी 2025, पृ. 6
8. **अमर उजाला :** वर्ष 18 अंक 289, गोरखपुर संस्करण, 22 जनवरी 2025, पृ. 4
9. **हिन्दुस्तानी जुबान :** त्रयमासिक शोध-पत्रिका, अक्टूबर-दिसंबर 2005, पृ. 36
10. पंडित दीनदयाल उपाध्याय' जन्म शताब्दी वर्ष-2016, पृ. 3
11. वही, पृ. 15
12. वही, पृ. 16
13. **अमर उजाला :** वर्ष 18 अंक 294, गोरखपुर संस्करण, 28 जनवरी 2025, पृ. 1
14. **अमर उजाला :** वर्ष 18 अंक 250, गोरखपुर संस्करण, 14 दिसंबर 2025, पृ. 1

15. **अमर उजाला :** वर्ष 18 अंक 281, गोरखपुर संस्करण, 14 जनवरी 2025, पृ. 2
16. **कृत्रिका**- अर्द्धवार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, वर्ष-1 अंक-9, जनवरी-जन 2008, पृ. 70
17. स्वामी विवेकानन्द **: सूक्तियां एवं उपदेश**, साधना पब्लिकेशन्स-दिल्ली, 2005, पृ. 69
18. लालचन्द दूहन जिज्ञासु **: कबीर वाणी सत्यज्ञानामृत**, मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2006, पृ. 2013
19. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जन्म शताब्दी वर्ष, पृ. 17
20. **अमर उजाला :** वर्ष 18, अंक 280, गोरखपुर संस्करण, 13 जनवरी 2025, पृ. 2
21. वही, पृ. 2

Mānavikī सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

भारतीय सनातन संस्कृति, समाज और कुम्भ मेला

डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र*

शोध संक्षेप : कुम्भ मेला तीन महीने तक चलने वाला धार्मिक समागम है, जो हर तीन साल में भारत चार अलग-अलग शहरों में क्रमश: आयोजित किया जाता है। इसे पृथ्वी पर सबसे बड़ा मानव समागम माना जाता है।[1] आज से कई शताब्दियों पहले से आयोजित हो रहे इस कुम्भ मेले को अकादमिक चर्चाओं में बहुत कम ध्यान दिया जाता है। दुनिया भर में होने वाली सामूहिक समारोह सदियों की घटनाओं के संबंध में, और यहाँ तक कि भारत में बहुत छोटे पैमाने पर होने वाले आयोजनों के लिए, कुम्भ मेला सुरक्षा और प्रबंधन पर अपने बेहतर ट्रैक रिकॉर्ड के लिए खड़ा है।[2]

भारत में सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ। नदियों से न सिर्फ यहाँ के लोगों की आजीविका जुड़ी है, बल्कि इनका सांस्कृतिक महत्त्व भी है। नदियों के किनारे आयोजित होने वाले उत्सवों-सांस्कृतिक आयोजनों में सबसे महत्त्वपूर्ण है कुम्भ मेला। प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में बारह वर्ष के अंतराल पर कुम्भ का आयोजन होता है। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से लाखों लोग स्नान के लिए जुटते हैं। तमाम संत-महात्मा और अखाड़ों का इसमें जमावड़ा तो होता ही है. अनेक सांस्कृतिक आयोजन भी होते हैं।

बीज शब्द : कुम्भ मेला, पौराणिक कथा, साधु-संत, कल्पवास, शाही स्नान

कुम्भ मेले का इतिहास

कुम्भ पर्व हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार देवताओं और राक्षसों के बीच दूध से बने जीवन के आदि सागर को मंथन करके जीवन के अमृत के लिए हुए पौराणिक युद्ध को संदर्भित करता है। कहा जाता है कि अमृत के लिए संघर्ष के कारण कलश झुक गया और चार बूंदें इलाहाबाद, नासिक, उज्जैन और हरिद्वार के चार शहरों पर गिरीं, जहाँ हर 3 साल में कुम्भ मेला

*असिस्टेण्ट प्रोफेसर-समाजशास्त्र, लाल बहादुर शास्त्री स्मारक पी.जी.कॉलेज, आनन्दनगर-महराजगंज, (उ.प्र.)-273155; मो0- 9415384472, ईमेल-praveen9415384472@gmail.com

आयोजित किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक शहर हर 12 साल में इस आयोजन की मेजबानी करता है। राशि चक्र के विशेष संयोजनों के आधार पर तिथियाँ पूर्व निर्धारित होती हैं। चारों शहरों में नदियों के तट पर आयोजित होने वाले कुम्भ मेले से जुड़ी मुख्य परंपरा त्योहार की 3 महीने की अवधि के दौरान कुछ शुभ दिनों में नदी में स्नान करना है।[3] चूंकि प्रयागराज दो पवित्र नदियों, गंगा और यमुना तथा अदृश्य सरस्वती का संगम स्थल है, इसलिए वहाँ आयोजित होने वाला कुम्भ मेला सबसे पवित्र माना जाता है और अन्य तीन शहरों की तुलना में यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। तीर्थयात्रियों में विभिन्न संप्रदायों या 'अखाड़ों' के धार्मिक और पवित्र पुरुष और महिलाएं तथा उनके बड़ी संख्या में अनुयायी शामिल होते हैं, जिनके पास हर बार अनुष्ठान स्नान के लिए नदी में प्रवेश करने का एक पूर्व-निर्धारित क्रम होता है। उनके पीछे अन्य भक्त होते हैं जो नदी में पवित्र डुबकी लगाते हैं। यह आयोजन विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के बीच धार्मिक चर्चाओं, भक्ति गायन, पवित्र पुरुषों और महिलाओं और गरीबों के सामूहिक भोजन और धार्मिक सभाओं का स्थल भी है, जहाँ सिद्धांतों पर बहस की जाती है और उन्हें मानकीकृत किया जाता है।[4] कुम्भ मेला भारत में सबसे बड़ा और सबसे महत्त्वपूर्ण आवधिक मेला है, जिसमें दुनिया भर से हिंदू श्रद्धालु आते हैं। माना जाता है कि विशेष रूप से प्रयागराज गंगा में स्नान के दौरान होने वाले शुद्धिकरण अनुष्ठान हिंदू धर्मशास्त्र के अनुसार पुनर्जन्म के चक्र को बाधित करते हैं।[5] सबसे पवित्र दिन हर 144 साल में एक बार आते हैं। यह पृथ्वी पर सबसे बड़ा मानव जमावड़ा है, इतना बड़ा कि एकत्रित व्यक्तियों की हरकतें अंतरिक्ष से देखी जा सकती हैं।[6]

कुम्भ मेले से जुड़ी पौराणिक कथा[7]

कुम्भ का मतलब होता है घड़ा। दरअसल, कुम्भमेले की शुरुआत एक पौराणिक कहानी से हुई है। पौराणिक कहानी के अनुसार, एक बार देवताओं और राक्षसों के बीच समुद्र मंथन हुआ। हुआ ये कि ऋषि दुर्वासा ने देवताओं को शाप दिया था, जिससे वे कमजोर हो गए। राक्षसों ने इसका फायदा उठाकर देवताओं को हरा दिया। जिसके बाद सभी देवता भगवान् विष्णु के पास मदद माँगने गए। भगवान् विष्णु ने कहा कि अमृत पाने के लिए समुद्र मंथन करना होगा। अमृत, यानी ऐसा अमर पेय जो पीने से देवता फिर से ताकतवर हो जाएंगे। अब देवताओं ने राक्षसों को मना लिया कि चलो, मिलकर समुद्र मंथन करते हैं। राक्षस भी अमृत के लालच में तैयार हो गए। जब समुद्र मंथन हुआ, तो कई चीजें निकलीं। जैसे कामधेनु गाय, विष और आखिर में अमृत का कलश। जैसे ही अमृत कलश निकला, राक्षस और देवता दोनों उसे पाने के लिए झगड़ने लगे। इस बीच भगवान इंद्र के बेटे जयंत ने अमृत कलश उठाया और वहाँ से भाग गए। अब राक्षसों ने जयंत का पीछा किया। इस दौरान 12 दिनों तक देवताओं और राक्षसों के बीच लड़ाई चली। जयंत अमृत कलश को लेकर भागते रहे और इसी दौरान अमृत की कुछ बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों - प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक पर गिर गईं। इसलिए इन जगहों को पवित्र माना जाता है और यहाँ कुम्भ मेले

का आयोजन होता है।

सम्पूर्ण में यदि देखें तो कुम्भ मेले का अर्थ हुआ "एक सभा मिलन जहाँ अमृत हो।" कुम्भ को लेकर कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं जिनमें देव और दानवों द्वारा समुद्रमन्थन की कथा सबसे मान्य मानी जाती है।

कुम्भ मेला हिंदुओं का धार्मिक त्योहार है जो प्रत्येक बारह वर्ष पर आता है।[7] प्रयागराज में कुम्भ गंगा और यमुना नदियों के संगम स्थान पर मनाया जाता है। आज यह दुनिया का सबसे बड़ा सामूहिक आयोजन बन गया है जो लाखों लोगों को अपनी ओर खींचता है। यह कुछ हफ्ते चलता है जिस दौरान तीर्थयात्री इन शुभ नदियों में स्नान करते हैं। हिंदू धर्म से जुड़े कई अनुयायी यहाँ समूह में एकत्र होते हैं। पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह से सफलतापूर्वक कुम्भ पर्व का आयोजन हुआ है उसने कुम्भ को और भी अधिक प्रसिद्धि दिलायी है। असंख्य दीपों से कुम्भ के दौरान तट जगमगा उठते हैं। कुम्भ-शास्त्र, गृहस्थ, साधन का समागम है। हिंदुओं में यह सर्वाधिक लोकप्रिय पर्व है। कुम्भ में तीर्थयात्रियों को विभिन्न मठों से जुड़े शंकराचार्यों, महामंडलेश्वर और साधु-संतों को एक स्थान पर देखने का अवसर मिलता है। ऐतिहासिक कालखंड में ऐसा साक्ष्य मिलता है राजा हर्षवर्धन के शासनकाल में कुम्भ के उल्लेख मौजूद हैं। जहाँ नदियों का मुख्य सम्मेलन होता है वहाँ ऐसा माना जाता है कि राजा हर्षवर्धन अपनी समस्त संपत्तियों को इस सम्मेलन में बांट देते थे।

प्रसिद्ध यात्री ह्वेनत्सांग ने अपनी यात्रा वृत्तांत में कुम्भ का उल्लेख किया है। इस यात्रा वृत्तांत में ह्वेनत्सांग ने राजा हर्षवर्धन के गुणों का बखान भी किया है। कुम्भ पर्व भारत देश के मूल और उसकी संस्कृति को समझने का अनूठा मौका यह प्रदान करता है। कुम्भ मेले में किसी को किसी भी प्रकार के निमंत्रण की आवश्यकता नहीं है। हर वर्ग का व्यक्ति इसमें अपनी सहभागिता प्रस्तुत कर सकता है। करोड़ों तीर्थ यात्री देश-विदेश से इसका हिस्सा बनते हैं। प्राथमिक स्नान के अलावा विभिन्न वेदों, यज्ञों में उच्चारण, भक्ति गीत, भक्ति नृत्य, आध्यात्मिक कथाओं पर विभिन्न मंचन, वेद-मंत्र उच्चारण, प्रार्थनाओं का सुंदर समागम होता है। विभिन्न सिद्धांतों पर वाद-विवाद साधु और संतों के द्वारा इस मौके पर होता है। यह अपना ज्ञान जगत् को उपलब्ध कराते हैं। मानवता की अमूल्य धरोवर है कुम्भ, जहाँ तीर्थयात्रियों, कल्पवासियों, स्नानार्थियों का संगम होता है। यह आस्था का सैलाब पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करता है। लगभग पचास दिन चलने वाले इस मेले में विभिन्न तरह के कर्मकांड होते हैं। श्रद्धालु आरती, स्नान, कल्पवास, दीपदान, त्रिवेणी संगम पर परिक्रमा करते हैं। भारत में प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों को ईश्वर के तुल्य माना जाता है। नदी, पर्वत, वृक्ष आदि की आराधना आदिकाल से होती आ रही है। नदियां यहाँ आस्था का केंद्र रही हैं। विभिन्न नदियों पर आरती के माध्यम से इसे हम सनातन काल से देखते आ रहे हैं। इन आरतियों में विभिन्न जनसमूह शामिल होता है। इसी प्रकार गंगा और यमुना के तटों के अलावा संगम तट पर भी सुबह और शाम की आरती होती आ रही है।

अखाड़े और साधु-संत

आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना करना अखाड़ों का मुख्य उद्देश्य है। अलग-अलग संगठनों में बंटे अखाड़े एकता के प्रतीक हैं। अखाड़ा शब्द अखण्ड शब्द से बना है। वैष्णव अखाड़े के इष्टदेव भगवान् विष्णु हैं। आदिगुरु शंकराचार्य ने सनातन धर्म की रक्षा हेतु अखाड़ों की स्थापना की। उदासीन अखाड़ा इसकी तीसरी श्रेणी है। सिख सम्प्रदाय के आदिगुरु श्री नानकदेव के पुत्र श्री चन्द्रदेव जी को उदासीन मत का प्रवर्तक माना जाता है। इस पन्थ के अनुयायी मुख्यत: प्रणव अथवा ओम् की उपासना करते हैं।

अखाड़ों के साधु-संत-शास्त्र और शस्त्र विद्या में पारंगत होते हैं। अलग-अलग संगठनों में बंटे अखाड़े एकता के प्रतीक हैं। अखाड़ा मठों में नागा संन्यासियों का एक विशेष स्थान है। शैव अखाड़े के इष्ट भगवान् शिव हैं। अखाड़ों के प्रमुख आचार्य महामण्डलेश्वर के रूप में जाने जाते हैं। अखाड़ों में नागा संन्यासियों का विशेष महत्त्व है। प्रत्येक नागा संन्यासी किसी न किसी अखाड़े से संबद्ध होता है। शास्त्र और शस्त्र इसके मूल में होता है। मेले में यह अखाड़े आकर्षण का केंद्र बनते हैं। मेले के दौरान इन अखाड़ों की भव्यता अद्भुत होती है। अखाड़ों को व्यवस्थित करने के लिए एक समिति का निर्माण किया गया है जिसमें मुख्यत: पाँच लोग शामिल होते हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश व शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। अखाड़ों में संख्या के अनुसार सबसे बड़ा अखाड़ा जूना अखाड़ा है उसके बाद निरंजनी अखाड़ा और उसके बाद महानिर्वाणी अखाड़े का स्थान आता है। अखाड़ों के अध्यक्ष महामंडलेश्वर के रूप में जाने जाते हैं। शाही स्नान के समय यह सभी महामंडलेश्वर शाही रथों पर आसीन होते हैं। उनके सचिव हाथी पर होते हैं। आज इन अखाड़ों को श्रद्धाभाव से देखा जाता है। मेले के समय इन अखाड़ों की भव्यता देखते ही बनती है।

शाही स्नान का महत्त्व

शाही स्नान कुम्भ मेले का केन्द्रीय आकर्षण होता है। प्रयागराज के अति प्राचीन निवासी प्रयागवाल होते हैं। कर्मकाण्डों में शाही स्नान का विशेष महत्त्व है। कुम्भ मेले में आम लोग और संत मिलकर पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। नदियों में स्नान का अर्थ है कि व्यक्ति इसमें नहाकर सभी पापों को धो देता है। स्वयं को तथा अपने-अपने पूर्वजों को जीवन-मरण के चक्र से यह मुक्त करता है और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। स्नान के साथ-साथ भक्तगण नदी के तट पर पूजा-पाठ भी करते हैं और साधु-संतों के साथ मिलकर सत्संग भी करते हैं। शाही स्नान कुम्भ मेले का प्रमुख स्नान है, महोत्सव का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग है। पचास दिन चलने वाले इस कुम्भ का पहला स्नान मकर संक्रांति से शुरू होता है यह इसका पहला स्नान का दिन होता है। कुम्भ में शाही स्नान को राजयोगी स्नान के नाम से भी जानते हैं। शाही स्नान के बाद ही आमजन को स्नान करना होता है।

कुम्भ मेले में कल्पवास का महत्त्व

कुम्भ मेले में कल्पवास का प्रमुख स्थान होता है। संगम के तट पर ध्यान और वेदों के अध्ययन को कल्पवास कहते हैं। इसका विधान हजारों वर्षों से चला आ रहा है। पद्मपुराण और ब्रह्मपुराण के अनुसार कल्पवास की अवधि पौष मास के शुक्लपक्ष की एकादशी तक है। ऋषियों ने गृहस्थों के लिए कल्पवास का विधान निर्धारित किया क्योंकि वह जंगलों में ध्यान नहीं कर सकते हैं। इस दौरान जो भी गृहस्थ संकल्प लेकर आता है वह इस समय पर्णकुटी में रहता है और ध्यान करता है। व्रत, उपवास, दानपूजन, सत्संग और तर्पण का बहुत महत्त्व इसमें होता है। ऐसी मान्यता है कि जो कल्पवास की प्रतिज्ञा करता है वह अगले जन्म में राजा का जन्म लेकर पैदा होता है। लेकिन जो मोक्ष की संकल्पना लेकर कल्पवास करता है उसे जरूर मोक्ष की प्राप्ति होती है।

उपसंहार

महाकुम्भ धार्मिक अनुष्ठानों और परंपराओं का एक महापर्व है। इसमें मुख्य अनुष्ठान 'पवित्र स्नान' है, जिसे सभी श्रद्धालु पवित्र नदियों में करते हैं। माना जाता है कि यह स्नान आत्मा की शुद्धि और पापों से मुक्ति दिलाता है। अखाड़ों के साधु-संतों की शोभायात्रा, धार्मिक प्रवचन, यज्ञ, ध्यान और साधना आदि इस आयोजन के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। कुम्भ के समय विभिन्न संत समाज और संप्रदाय यहाँ एकत्र होते हैं और अपने आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करते हैं। इस दौरान होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक आयोजन, लोकगीत और नृत्य इसे एक उत्सवमय स्वरूप प्रदान करते हैं। महाकुम्भ को न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। यह आस्था, संस्कृति और आध्यात्मिकता के संगम का प्रतीक है, जो न केवल भारत के लिए बल्कि समस्त विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह सामाजिक एकता, सांप्रदायिक सौहार्द्र और आध्यात्मिक उत्थान का प्रतीक भी है। महाकुम्भ में लाखों लोग एक ही उद्देश्य से एकत्र होकर मानवता की भावना को मजबूत करते हैं, यह आयोजन समाज में भाईचारे, सहिष्णुता और धार्मिकता की भावना को बढ़ाने के साथ ही भारत की जीवंत सांस्कृतिक धरोहर का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

१. एम. वोर्टमैन, एस. बलसारी, एस.आर. होल्मन, पी.जी. दुनिया की सबसे बड़ी सामूहिक सभा में ग्रीनो जल, स्वच्छता और,17 (2015), पृ. 5

२. खन्ना टी. कुम्भ मेला: अल्पकालिक मेगा सिटी का मानचित्रण। मेहरोत्रा आर, वेरा एफ, एक डी, संपादक। ओस्टफिल्डर्न, जर्मनी: हत्जे कैंट्जय 2015.

३. कुम्भ मेले की आधिकारिक वेबसाइट। पौराणिक पहलू. भारत: कुम्भ मेला; 2013 यहाँ उपलब्ध है: http://kumbhmelaallahabad.gov.in/english/mythologicalaspect.html

४. कुम्भ मेले की आधिकारिक वेबसाइट। कुम्भ के अनुष्ठान. भारत : कुम्भ मेला; 2013. पर उपलब्धहै; http://kumbhmelaallahabad.gov.in/english/rituals_kumbhmela.html

५. भारत का शाही राजपत्र. खंड 13, 1903. यहाँ उपलब्ध है; http://dsal.uchicago.eduèreference/gazetteer/pager.html?objectid=DS405.1.I34_V13_058.gif

६. कैरिंगडन डी. कुम्भ मेला। न्यू साइंटिस्ट 2001, 25 जनवरी। यहाँ उपलब्ध है; http://www.newscientist.com/articleimages/dn360/1-kumbh-mela.html

७. यहाँ उपलब्ध है; https://www.jansatta.com/religion/kumbh-mela-ki-katha-in-hindi-why-it-is-celebrated-after-12-years-know-here-maha-kumbh-mela-itihas-importance-and-mythological-story/3761151

Mānavikī सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्तःअनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

महाकुम्भः आराधना से साधना तक

सुश्री श्वेता सिंह*

सार संक्षेप : महाकुम्भ भारतीय सनातन संस्कृति का जीवन्त प्राकट्य है। यह पूर्णता का प्रतीक है। कुम्भ ऐसा विचित्र मेला है, जहाँ वे संत मिलते हैं, जिन्हें कुछ नहीं चाहिए और वे सांसारिक लोग भी मिलते हैं, जिन्हें बहुत कुछ चाहिए। इस महासंगम में तपस्वी अपने अर्जित पुण्य सब पर बिखेर देते हैं। कुम्भ मेला एक ऐसा आध्यात्मिक महोत्सव है, जहाँ क्षणभंगुर संसार में उलझे व्यक्ति को जीवन के परम लक्ष्य पर चिन्तन करने, अतृप्त मन को निज पूर्णता से अवगत होने और परमात्मा से अपने अक्षुण्ण संबंध को अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह सुअवसर है सूक्ष्म और स्थूल जगत् के संबंध को अनुभव करने का। सिद्धों-साधकों की पावन, कल्याणमयी ऊर्जा में अनुगृहीत होने का। कुम्भ मेले मे कल्पवास का बड़ा महत्व है। यह कुछ दिन वहाँ वास करते हुए आत्मचिन्तन करने और सत्य-संकल्पी होकर समाज में लौटने का अवसर देता है। योग-यज्ञ, जप-यज्ञ और भक्ति-यज्ञ अनुपम समागम है महाकुम्भ।

बीज शब्द : महाकुम्भ, कल्पवास, आध्यात्मिक, साधक, दैवसत्ता, गिरि, कंदरा, मठ, पारमार्थिक, आत्मपरिष्करण

प्रस्तावनाः

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ घट या घड़ा है। आध्यात्मिक भाषा में घट का तात्पर्य है-हृदय। महा का तात्पर्य है-श्रीमन्नारायण, श्रीहरि, श्रीगोविन्दादि भगवन्नाम-गुणधाम। सबके हृदय में भगवान् का नित्य वास है। जीव और परमात्मा का मिलन ही महाकुम्भ है।

पौराणिक मान्यतानुसार, सतयुग में देवताओं और दैत्यों ने अमृत की अभिलाषा से समुद्र-मंथन किया, जिससे चौदह रत्नों के प्राकट्य कीश्रृंखला के अन्त में धन्वंतरि जी अमृत-कलश लेकर प्रकट हुए। देव-दनुज अमृत-पान हेतु परस्पर द्वंद्व करने लगे। देवताओं के संकेत से देवराज

*शोध छात्र सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर (उ.प्र.); सम्पर्क सूत्र-8115629957

इन्द्र पुत्र जयंत अमृत-कलश लेकर आकाशमार्ग से देवलोक की ओर चले, तब दैत्यों ने गुरु शुक्राचार्य के कहने पर जयंत का पीछा किया। जयंत से छीनाझपटी मे अमृत की बूंदें कलश से छलककर तीर्थराज प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिरीं, तभी इन स्थानों पर अर्धकुम्भ और महाकुम्भ का शुभारंभ हुआ। अमृतपान को लेकर देव-दैत्यों में 12 दिन तक युद्ध चला, उसी समय श्रीहरि परमसुन्दरी मोहिनी रूप में अमृतकलश लेकर प्रकट हुए। उनका रूपलावण्य देखकर देव और दानव विमोहित हो गए। भगवान् सर्वप्रथम देवताओं को अमृतपान कराने लगे। इसी मध्य राहु नाम का असुर देवभेष धारण कर देवताओं के बीच बैठ गया, जिसे सूर्य व चन्द्र ने संकेत से भगवान् को बताया और भगवान् ने चक्र से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया, किन्तु अमृतपान के कारण उसकी मृत्यु नहीं हुई, बल्कि वह दो भागो में विभक्त हो गया - राहु और केतु।

अमृतपान हेतु यह युद्ध 12 दिन तक चला। देवताओं के 12 दिन मनुष्यों के 12 वर्ष के तुल्य होते हैं। जिस समय जयंत अमृत कलश लेकर आकाश मार्ग से देवलोक जा रहे थे, उस समय चंद्र-सूर्य ने उनकी रक्षा की थी, तत्समयानुसार वर्तमान राशियों पर चंद्र-सूर्यादिक ग्रह जब आते है, तब कुम्भ का योग होता है। जिस वर्ष, जिस राषि पर सूर्य-चंद्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग मे कुम्भ का योग होता है। जब देवगुरु बृहस्पति वृषभ राशि में और ग्रहों के राजा सूर्य मकर राशि में होते हैं तो महाकुम्भ का आयोजन प्रयागराज मे किया जाता है।[1]

परमार्थ प्रकृति का मूल स्वर है। धरती, अंबर जल, पवन, प्रकाश, आदि के रूप में परमात्मा स्वयं भी पारमार्थिक कार्यों मे संलग्न हैं। भगवान् नारायण लोक-कल्याण की संसिद्धि के लिए मंदरांचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण कर समुंद्र-मंथन में कूर्म का रूप धारण कर देवगणों के सहायक हुए, जिसकी मूल भावना सृजन की ही थी । समुद्र मंथन अर्थात् मनोमंथन अर्थात् हम जब भी मंथन करते हैं तो निश्चित रूप से कोई संकल्प लेते हैं। यदि संकल्प शुभ व पारमार्थिक हो तो नियंता, नियति परमात्मा, प्रकृति व सकल दैवसत्ता अभीप्सित लक्ष्य की संप्राप्ति में सहायक बनने लगते है। वेदों मे कहा गया है कि **'तन्मे मनःशिवसंकल्पमस्तु'** अर्थात् जो मनोजयी है, वही अमृतत्व का अधिकारी है। निरभिमानिता ईश अनुग्रह और समस्त लौकिक-पारलौकिक अनुकूलताओं का मूल है। समुद्र-मंथन में निकला अमृत श्रम की ही निष्पत्ति थी। देव और दानव संग्राम में अमृत-घट से छलकी बूंदों से महिमामंडित चार स्थानों मे कुम्भ राग गूंजता है। इस पर्व के मध्य पवित्र सलिलाओं का जल अमृत तुल्य हो जाता है। इसके अतिरिक्त वैचारिक मंथन से सत्संग रूपी अमृत भी प्राप्त होता है।[2]

आत्मपरिष्करण और जीवन निर्माण की आधारशिला है सत्संग। शास्त्रों मे उल्लेख है कि संत व सत्पुरुषों के सान्निध्य में श्रद्वा एवं विश्वास की मथानी और सत्संग-स्वाध्याय से उपार्जित विचार-अमृत ही अनंतता, अपराजेयता, अमृतत्व व जीवन सिद्धि का मूल है। जिस प्रकार क्षीर का

मंथन करने से उसमें दही, मक्खन, घृत आदि औषधीय गुणों से युक्त पदार्थ प्रकट होते हैं, उसी प्रकार सत्संग, स्वाध्याय और सत्पुरुषों के सान्निध्य में जीवन की संपूर्णता प्रकट होती है। भारत की कालजयी, मृत्युंजयी संस्कृति की दिव्य अभिव्यक्ति कुम्भ पर्व में गिरि, कंदरा, मठ, मन्दिर और आश्रमों में रहने वाले लाखों संन्यासियों और संतों का दर्शन व सान्निध्य त्रिविध तापो का शमन करने वाला होता है। इस नश्वर जगत् में ज्ञान, विवेक और विचार सत्ता ही चिरस्थायी है।[3] सृष्टि के स्वाभाविक क्रम में जन्म, विकास, ह्रास और अंत सभी अनंत में विसर्जित होते रहते हैं। सनातन धर्म का वैशिष्ट्य व सौन्दर्य आह्वान और विसर्जन की प्रक्रिया में सहज दृष्टिगोचर है। विसर्जन ही श्रेष्ठ सृजन की भूमिका तैयार करता है। हमारी संस्कृति में विसर्जन का अर्थ है पुनः सृजन। आध्यात्मिक मूल्यों के प्रस्फुटन, निर्बाध ज्ञान परम्परा का विकास, जल संरक्षण और समष्टि के कल्याण को समर्पित कुम्भ पर्व इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ उत्सवकाल में धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एंव वैचारिक आयोजनों की श्रृंखला के लिए जनमानस का आह्वान कर स्वस्थ व सकारात्मक विचारों का सृजन किया जाता है। तदुपरांत विश्व को प्रेम, शांति, सद्भाव और समरसता के अनेक सूत्र देकर कुम्भ पर्व का विसर्जन कर दिया जाता है। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि भारत की सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक एकता और दिव्यता की अनुपम अभिव्यक्ति महाकुम्भ पर्व आराधना से साधना तक की यात्रा है।[4]

निष्कर्षः

महाकुम्भ पर्व एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है कि कैसे विभिन्न संस्कृति और पृष्ठभूमि के लोग एकजुट होकर आध्यात्मिक एवं सामाजिक उद्देश्य को पूरा करते हैं। यह दिखाता है कि कैसे हजारों वर्ष पुरानी आस्थाएं न केवल धार्मिक जीवन को, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय जीवन को भी प्रभावित करती है। यह महाकुम्भ एकात्मकता, समरसता, आराधना, साधना और परंपराओं के संरक्षण का प्रतीक है। साथ ही यह मानवता और पर्यावरण के प्रति दायित्व का भी स्मरण कराता है। महाकुम्भ ऐसा अद्वितीय धार्मिक एंव सामाजिक आयोजन है, जो भारतीय सभ्यता व संस्कृति के अस्तित्व को जीवित रखता है और उसे समय के साथ समृद्ध बनाता है।

संदर्भ ग्रंथ-सूचीः

1- चोपड़ा, धनंजय- **भारत में कुम्भ-२०२३** पृ.सं.-12

2- निशंक, पोखरियाल रमेश- **विश्व धरोहर महाकुम्भ -२०१९** पृ.सं.-55

3- सक्सेना, कुमार गोविन्द- **प्रयाग महाकुम्भ-आस्था का उत्सव** -2002 पृ.सं.-62

4- गिरि, अवधेशानंद स्वामी- संपादकीय **दैनिक जागरण**-07.01.2025

महाकुम्भ-2025: सुशासन के आवरण में सनातन सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक

डॉ. विनय कुमार पटेल*

शोध सार : महाकुम्भ, भारतीय संस्कृति और सनातन परंपराओं का अभूतपूर्व आयोजन, एक ऐसी चेतना का प्रतीक है जो व्यक्ति, समाज, और ब्रह्मांड के बीच गहन संबंध को दर्शाता है। इसका आधार न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक पहलुओं पर है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, और पर्यावरणीय चेतना का भी परिचायक है। महाकुम्भ मेला भारतीय संस्कृति और परंपराओं का एक अनूठा और विश्वविख्यात आयोजन है। इसे न केवल भारत का बल्कि समस्त मानवता का एक आध्यात्मिक पर्व माना जाता है। इस अद्वितीय आयोजन में करोड़ों श्रद्धालु, साधु-संत, और साधक गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर एकत्रित होते हैं। महाकुम्भ का महत्त्व केवल धार्मिक आयोजन तक सीमित नहीं है; यह भारतीय संस्कृति, सनातन परंपराओं और सार्वभौमिक चेतना का प्रतीक भी है। इस शोध पत्र में, हम महाकुम्भ को सनातन चेतना के प्रतीक के रूप में विश्लेषित करेंगे।

यह शोध पत्र महाकुम्भ के ऐतिहासिक, पौराणिक, और सामाजिक आयामों का अध्ययन करता है और इसे सनातन चेतना के प्रतीक के रूप में स्थापित करता है। शोध में महाकुम्भ के महत्त्व, उसकी व्यापकता, और आधुनिक युग में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

प्रमुख शब्दावलियाँ : महाकुम्भ, सनातन चेतना, भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता, सामाजिक समरसता, पर्यावरणीय चेतना, वैश्विक चेतना

प्रस्तावना

महाकुम्भ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता की आत्मा है। यह आयोजन हर 12 वर्षों में चार स्थानों-हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन, और नासिक में आयोजित होता है। इसकी पृष्ठभूमि वैदिक और पौराणिक परंपराओं में गहराई से जुड़ी हुई है। महाकुम्भ की महत्ता को समझने के लिए इसे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखना आवश्यक है।

*सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग; सोनपति देवी महिला पी.जी. कॉलेज, महराजगंज

महाकुम्भ का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

महाकुम्भ का उल्लेख वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में मिलता है। समुद्र-मंथन की कथा इस आयोजन की आधारशिला है। जब अमृत-कलश की कुछ बूँदें पृथ्वी पर गिरीं, तो वे चार स्थानों-हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन, और नासिक में गिरीं। इसी के आधार पर इन स्थानों पर कुम्भ मेले की परंपरा का आरंभ हुआ। महाकुम्भ की परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है। यह आयोजन पौराणिक कथाओं और धार्मिक मान्यताओं पर आधारित है। इसकी उत्पत्ति समुद्र-मंथन की कथा से जुड़ी हुई है, जिसमें अमृत-कलश की प्राप्ति के लिए देवताओं और असुरों ने समुद्र का मंथन किया। यह कहा जाता है कि अमृत-कलश से कुछ बूँदें हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में गिरीं, और इन स्थानों पर कुम्भ मेले का आयोजन शुरू हुआ।

प्राचीन ग्रंथों में संदर्भ: महाकुम्भ का वैदिक और पौराणिक महत्त्व

महाकुम्भ का उल्लेख वेदों, पुराणों और महाकाव्यों में मिलता है। इसे आत्मा की शुद्धि, कर्मों के फल से मुक्ति, और ईश्वर के साथ एकत्व प्राप्त करने का साधन माना गया है। महाकुम्भ केवल तीर्थ यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा और ब्रह्मांड के बीच संबंध स्थापित करने का एक माध्यम है। यह सनातन धर्म की अद्वितीयता को उजागर करता है, जिसमें व्यक्ति, समाज और ब्रह्मांड की त्रिवेणी को समान महत्त्व दिया गया है।[1]

वेद: महाकुम्भ को आत्मा और ब्रह्मांड के मिलन का माध्यम बताया गया है।

पुराण: स्कंद पुराण, भागवत पुराण, और मत्स्य पुराण में कुम्भ का वर्णन मिलता है।

महाकाव्य: रामायण और महाभारत में महाकुम्भ के आयोजन का वर्णन।

महाकुम्भ और सनातन चेतना

भारतीय जीवन पद्धति एक ऐसी पद्धति है जो विश्व को एक परिवार (वसुधैव कुटुंबकम्) के रूप में देखता है। महाकुम्भ इस चेतना का जीवंत उदाहरण है, जहाँ लाखों लोग जाति, वर्ग, भाषा, और क्षेत्र के भेदभाव को त्यागकर संगम पर स्नान करते हैं। यह आयोजन 'एकता में अनेकता' और 'अनेकता में एकता' का प्रतीक है। महाकुम्भ सनातन धर्म की गहराई, व्यापकता और अद्वितीयता का प्रतीक है। यह आयोजन न केवल धार्मिक उत्सव है, बल्कि सनातन चेतना को जाग्रत और सुदृढ़ करने का एक महापर्व भी है। इसकी जड़ें भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं में गहराई से समायी हुई हैं।

सनातन धर्म में नदियों को पवित्र और देवी स्वरूप माना गया है। महाकुम्भ में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर स्नान आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति का प्रतीक है। यह सनातन जीवनदर्शन का एक जीवंत उदाहरण है।

महाकुम्भ में वेद, उपनिषद्, पुराण और अन्य ग्रंथों के ज्ञान का प्रचार-प्रसार होता है।

साधु-संतों के प्रवचन और सत्संग सनातन धर्म की गूढ़ शिक्षाओं को समाज तक पहुंचाते हैं। सनातन धर्म का मूल सिद्धांत (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) महाकुम्भ में प्रत्यक्ष अनुभव होता है। यह आयोजन आत्मा, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच संतुलन का संदेश देता है।

महाकुम्भ में योग और ध्यान का विशेष महत्त्व है। यह आयोजन योग साधना और आत्मचिन्तन के माध्यम से सनातन धर्म की आध्यात्मिक गहराइयों को प्रकट करता है। यह आयोजन समाज में धर्म, सहिष्णुता और करुणा के मूल्यों को पुनर्स्थापित करता है। जाति, वर्ग और भेदभाव से परे, महाकुम्भ सबको समान दृष्टि से देखता है, जो सनातन चेतना का प्रमुख सिद्धांत है।

महाकुम्भ सनातन धर्म के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को भी उजागर करता है। नदियों की पवित्रता, प्रकृति के संरक्षण और जीवन के सभी रूपों के प्रति सम्मान का संदेश यह आयोजन देता है। यह आयोजन आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना का संगम है। साधु-संतों और अखाड़ों के माध्यम से सनातन धर्म की परंपराएं, रीति-रिवाज और मूल सिद्धांत सजीव हो उठते हैं।

भारतीय सनातन चेतना केवल व्यक्तिगत मुक्ति की बात नहीं करती, बल्कि पूरे समाज और विश्व की भलाई के लिए कार्य करने का आह्वान करती है। महाकुम्भ इस विचार को साकार करता है। महाकुम्भ सनातन धर्म की अनंतता, उसके गहन दर्शन और उसके जीवन-मूल्यों को नए सिरे से स्थापित करता है। यह आयोजन धर्म, संस्कृति और आध्यात्मिकता का ऐसा संगम है, जो विश्व को शांति और प्रेम का संदेश देता है।[2]

आध्यात्मिक चेतना

महाकुम्भ व्यक्ति को आत्मा की शुद्धि और ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जोड़ता है। यह आयोजन साधना, योग, और ध्यान के माध्यम से आत्मिक उन्नति का अवसर प्रदान करता है। महाकुम्भ आत्मा की शुद्धि और ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ पुनः संयोजन का अवसर प्रदान करता है। यह आयोजन साधना, योग, ध्यान, और आत्म-अनुशासन की परंपरा को प्रोत्साहित करता है। महाकुम्भ एक अद्वितीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है, जो भारत की प्राचीन परंपरा, धर्म और चिन्तन का प्रतीक है। हर 12 साल में चार पवित्र स्थलों - प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, और नासिक में आयोजित होने वाला यह मेला करोड़ों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

महाकुम्भ का मुख्य उद्देश्य आत्मशुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति है। श्रद्धालु पवित्र नदियों में स्नान कर अपने पापों से मुक्ति का अनुभव करते हैं। यह आयोजन वेद, उपनिषद्, पुराण और अन्य धर्मग्रंथों के ज्ञान और शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार भी करता है। आध्यात्मिक चिन्तन के दृष्टिकोण से महाकुम्भ का महत्त्व अपार है। यहाँ साधु-संत, योगी और गुरुजन अपने अनुभव और ज्ञान साझा करते हैं। साधना, ध्यान और प्रवचन के माध्यम से लोग आत्मा, ब्रह्म और प्रकृति के गहन रहस्यों

को समझने का प्रयास करते हैं। महाकुम्भ हमें एकता और सहिष्णुता का संदेश देता है। विभिन्न जाति, धर्म और संप्रदाय के लोग यहाँ मिलकर एक आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण करते हैं। यह मानवता को जोड़ने वाला एक सशक्त माध्यम है। इस आयोजन में आस्था और विज्ञान का अनूठा संगम देखने को मिलता है। पवित्र नदियों का महत्त्व, जल संरक्षण और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रेरणा देता है। महाकुम्भ न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार का मंच भी है।

सांस्कृतिक चेतना

यह आयोजन भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धता को उजागर करता है। विभिन्न भाषाओं, परंपराओं, और संस्कृतियों के लोग यहाँ एकत्रित होते हैं, जो 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत को साकार करते हैं। महाकुम्भ भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को प्रस्तुत करता है। यहाँ विभिन्न राज्यों, भाषाओं, और परंपराओं के लोग एकत्रित होते हैं, जिससे भारतीय संस्कृति का सार्वभौमिक स्वरूप प्रकट होता है। महाकुम्भ भारत की सांस्कृतिक चेतना का अद्भुत प्रतीक है, जो धर्म, परंपरा और लोकजीवन की गहरी झलक प्रदान करता है। यह आयोजन न केवल आध्यात्मिकता का केंद्र है, बल्कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता की विविधता को भी उजागर करता है।

हर 12 वर्ष में प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित महाकुम्भ में करोड़ों श्रद्धालु शामिल होते हैं, जो इसे दुनिया का सबसे बड़ा जनसमूह आयोजन बनाता है। यह आयोजन भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़े धार्मिक और सामाजिक मूल्यों का पुनर्जागरण करता है। महाकुम्भ में होने वाले प्रवचन, भजन-कीर्तन और धार्मिक सभाएं लोकमानस को आध्यात्मिक दिशा देने के साथ-साथ सांस्कृतिक परंपराओं को सहेजने का कार्य करती हैं। यहाँ की झांकियां, मेले और उत्सव भारत के विविध रूपों को एक मंच पर प्रस्तुत करते हैं। यह आयोजन सांस्कृतिक चेतना को बढ़ावा देता है, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों और जातियों के लोग मिलकर भारतीयता की एकता और अखंडता को प्रकट करते हैं। यहाँ का हर अनुभव प्राचीन संस्कृति की समृद्धि और आध्यात्मिकता की गहराई का परिचायक है। महाकुम्भ केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक उत्सव है। कला, संगीत, नृत्य और लोकसंस्कृति की अनगिनत झलकियां इस मेले को सजीव और प्रेरणादायक बनाती हैं। यह आयोजन पर्यावरण संरक्षण, जल की पवित्रता और मानवता के कल्याण के संदेश को भी समाज तक पहुंचाता है। महाकुम्भ भारत के सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है और इसे विश्वभर में अद्वितीय बनाता है।[3]

सामाजिक चेतना

महाकुम्भ समाज में समानता और एकता का संदेश देता है। जाति, धर्म, और वर्ग के भेदभाव को त्यागकर यहाँ सभी लोग संगम पर स्नान करते हैं। महाकुम्भ सामाजिक समरसता और मानवता

की समानता का प्रतीक है। यहाँ आने वाले हर व्यक्ति को समान अधिकार और सम्मान मिलता है, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या वर्ग से हो। महाकुम्भ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन है, बल्कि यह सामाजिक चेतना को जागृत करने का एक सशक्त माध्यम भी है। यह भारत के विविध समाजों को एक मंच पर लाकर एकता, समरसता और सामुदायिक भावना को प्रोत्साहित करता है।

इस आयोजन में लाखों-करोड़ों लोग एकत्रित होते हैं, जो भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक भिन्नताओं के बावजूद समान आस्था और उद्देश्य के साथ जुड़ते हैं। महाकुम्भ समाज के सभी वर्गों को यह संदेश देता है कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं। महाकुम्भ में सामूहिक स्नान, प्रवचन और सत्संग के माध्यम से समाज को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। यह आयोजन दान, सेवा और परोपकार की भावना को बल देता है, जिससे समाज में सहयोग और करुणा का संचार होता है। साधु-संतों और समाज सुधारकों के प्रवचन समाज में व्याप्त अज्ञानता, अंधविश्वास और असमानता को दूर करने का प्रयास करते हैं। महाकुम्भ जातिवाद और भेदभाव को मिटाने के लिए एक मजबूत मंच प्रदान करता है, जहाँ हर व्यक्ति समानता का अनुभव करता है। महाकुम्भ सामाजिक समस्याओं जैसे पर्यावरण संरक्षण, जल संकट और स्वच्छता जैसे मुद्दों पर भी जागरूकता फैलाने का कार्य करता है। सरकार और सामाजिक संगठनों द्वारा इन विषयों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह आयोजन हमें सहिष्णुता, भाईचारे और सहयोग की शिक्षा देता है। महाकुम्भ समाज को एक दिशा प्रदान करता है, जहाँ लोग व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर सामूहिक हित और मानवता के कल्याण के लिए प्रेरित होते हैं।[4]

पर्यावरणीय चेतना

महाकुम्भ गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी नदियों की पवित्रता और महत्त्व को रेखांकित करता है। यह आयोजन स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता को बढ़ाता है। महाकुम्भ केवल धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह पर्यावरणीय चेतना का भी एक प्रमुख केंद्र बन चुका है। यह आयोजन जल, प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने का एक सशक्त माध्यम है, जो समाज को स्थायी विकास की ओर प्रेरित करता है।

महाकुम्भ का मुख्य आकर्षण पवित्र नदियों में स्नान है, जो जल के शुद्धिकरण और संरक्षण की महत्ता को रेखांकित करता है। यह आयोजन नदियों की पवित्रता बनाए रखने और प्रदूषण मुक्त रखने का संदेश देता है। सरकार और सामाजिक संगठनों के प्रयास से महाकुम्भ के दौरान 'स्वच्छ गंगा' और 'नमामि गंगे' जैसे अभियानों को बढ़ावा दिया जाता है। यह आयोजन जल संसाधनों के संरक्षण और उनके पुनरुद्धार की प्रेरणा देता है। महाकुम्भ में पर्यावरणीय चेतना फैलाने के लिए वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान और पुनः उपयोग योग्य सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है। प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाकर कचरा प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साधु-संतों और पर्यावरणविदों के प्रवचन लोगों को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने और

उसके महत्त्व को समझने के लिए प्रेरित करते हैं। यह आयोजन प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने का संदेश देता है।

महाकुम्भ में लाखों लोग एकत्रित होते हैं, जिससे पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है। इस आयोजन को 'हरित कुम्भ' बनाने के प्रयास में सौर ऊर्जा, जैविक उत्पाद और सतत संसाधनों का उपयोग किया जाता है। महाकुम्भ हमें यह सिखाता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति का कर्तव्य है। यह आयोजन लोगों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील और जागरूक बनाता है।

इस प्रकार, महाकुम्भ भारतीय परंपरा और आध्यात्मिकता के साथ-साथ पर्यावरणीय चेतना का वाहक है, जो भावी पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण की नींव रखता है।[5]

महाकुम्भ और आधुनिक संदर्भ

महाकुम्भ ने आधुनिक युग में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखा है। महाकुम्भ गंगा, यमुना और सरस्वती जैसी पवित्र नदियों की महत्ता को रेखांकित करता है। यह आयोजन जल संरक्षण, स्वच्छता, और पर्यावरणीय संतुलन के प्रति जन जागरूकता का माध्यम भी है। महाकुम्भ सनातन धर्म और आधुनिकता का समन्वय है।

महाकुम्भ आधुनिकता और परंपरा का अद्भुत संगम है। यह आयोजन सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों को आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बनाता है। उदाहरणस्वरूप: डिजिटल तकनीक का उपयोग; श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण और वर्चुअल दर्शन आदि।

पर्यावरण-अनुकूल उपाय: प्लास्टिक-मुक्त आयोजन और जैविक अपशिष्ट प्रबंधन।

वैश्विक भागीदारी: महाकुम्भ अब न केवल भारत बल्कि विश्व स्तर पर आकर्षण का केंद्र बन चुका है, जिससे इसकी सांस्कृतिक और धार्मिक प्रासंगिकता बढ़ी है।

महाकुम्भ और वैश्विक चेतना: महाकुम्भ का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह आयोजन विश्व के विभिन्न भागों से आने वाले लोगों को भारतीय आध्यात्मिकता और संस्कृति से परिचित कराता है। यह मानवता के लिए सार्वभौमिक प्रेम, करुणा, और सामंजस्य का संदेश देता है। महाकुम्भ केवल भारत का धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह वैश्विक चेतना का प्रतीक भी बन चुका है। इसे विश्व के सबसे बड़े जनसमूह आयोजन के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो भारत की प्राचीन परंपराओं और मूल्यों को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करता है। यह आयोजन दुनिया भर से लाखों श्रद्धालुओं, पर्यटकों और शोधकर्ताओं को आकर्षित करता है। महाकुम्भ के माध्यम से भारतीय संस्कृति, योग, ध्यान और आध्यात्मिकता का वैश्विक प्रचार-प्रसार होता है।

महाकुम्भ के दौरान साधु-संतों और विचारकों के प्रवचन केवल धार्मिक नहीं होते, बल्कि विश्व शांति, मानवीय मूल्यों और सहअस्तित्व का संदेश भी देते हैं। यह आयोजन मानवता को

एकता, सहिष्णुता और करुणा का महत्त्व समझाता है। वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन और नैतिकता के मुद्दों पर भी महाकुम्भ के मंच से विचार व्यक्त किए जाते हैं। यह आयोजन दुनिया को जल संरक्षण, स्वच्छता और सतत विकास के महत्त्व को समझने की प्रेरणा देता है। महाकुम्भ में विभिन्न देशों और संस्कृतियों के लोग आकर भारतीय परंपराओं के साथ संवाद स्थापित करते हैं। यह आयोजन वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामूहिक चेतना को मजबूत करता है। संगीत, नृत्य और कला की झांकियों के माध्यम से भारत की विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर विश्व के समक्ष प्रस्तुत होती है। यह आयोजन भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा को साकार करता है। संयुक्त राष्ट्र ने भी महाकुम्भ को वैश्विक विरासत का दर्जा दिया है, जिससे यह आयोजन अंतरराष्ट्रीय महत्त्व का केंद्र बन गया है। यहाँ से भारत दुनिया को अपनी आध्यात्मिक संपदा और पर्यावरणीय दृष्टिकोण का संदेश देता है।

महाकुम्भ एक ऐसा मंच है, जहाँ मानवता के लिए सकारात्मक विचार और समाधान साझा किए जाते हैं। यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि वैश्विक समस्याओं के समाधान और एक बेहतर दुनिया के निर्माण के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

तकनीकी समावेशः (ऑनलाइन पंजीकरण, वर्चुअल दर्शन, डिजिटल प्रबंधन प्रणाली)

वर्तमान में आयोजित हो रहे महाकुम्भ-2025 जैसे विशाल आयोजन में तकनीक का प्रयोग इसे और अधिक प्रभावी, व्यवस्थित और आधुनिक बनाता है। आधुनिक तकनीकी नवाचार न केवल इस मेले को सुगम बना रहे है, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए सुविधाओं को भी सुलभ बना रहे हैं। महाकुम्भ में तकनीक का सबसे प्रमुख उपयोग डिजिटल प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप्स के माध्यम से हो रहा है। ये ऐप्स श्रद्धालुओं को रूट मैप, स्नान की तिथियाँ, पार्किंग स्थल और अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियां प्रदान कर रहे हैं। भीड़ प्रबंधन के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ड्रोन तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। ड्रोन कैमरे पूरे आयोजन क्षेत्र की निगरानी करते हैं, जिससे सुरक्षा सुनिश्चित होती है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए फेस रिकग्निशन तकनीक का उपयोग किया जा रहा है, जो गुमशुदा लोगों को खोजने और किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर नजर रखने में मदद करता है।

महाकुम्भ में पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु ई-टिकटिंग और कैशलेस लेन-देन की सुविधा प्रदान की जा रही है, जो इस आयोजन में डिजिटल इंडिया की दिशा में एक बड़ा कदम बनाती है। श्रद्धालु डिजिटल भुगतान के माध्यम से सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। नदियों की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए सेंसर तकनीक का उपयोग किया जा रहा है, जो पानी की गुणवत्ता की निगरानी करता है और प्रदूषण को नियंत्रित करता है। रोबोटिक तकनीक का उपयोग स्वच्छता अभियानों में किया जा रहा है, जो मेला क्षेत्र को साफ रखने में मदद करता है। यह तकनीक स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्यों को भी बल देती है।

स्मार्ट सिटी मॉडल के तहत वाई–फाई हॉटस्पॉट और चार्जिंग स्टेशन जैसे तकनीकी नवाचार भी लाखों श्रद्धालुओं को सुविधा प्रदान कर रहे हैं। लाइव स्ट्रीमिंग और वर्चुअल रियलिटी (VR) के माध्यम से दुनिया भर के लोग महाकुम्भ का अनुभव कर सकते हैं। इससे आयोजन की वैश्विक पहुंच बढ़ती है।[6] इस प्रकार, महाकुम्भ में तकनीक का प्रयोग इसे परंपरा और आधुनिकता का अद्वितीय संगम बनाता है, जो न केवल धार्मिक बल्कि प्रबंधन और नवाचार का भी आदर्श उदाहरण है।

महाकुम्भ का वैश्विक दृष्टिकोण

महाकुम्भ विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का प्रतिनिधित्व करता है। यह आयोजन मानवता को प्रेम, करुणा, और सह–अस्तित्व का संदेश देता है। महाकुम्भ का वैश्विक दृष्टिकोण इसे न केवल भारत का धार्मिक आयोजन बनाता है, बल्कि विश्व मंच पर भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और परंपराओं का प्रतीक भी। यह आयोजन भारत के 'वसुधैव कुटुंबकम्' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) के दर्शन को साकार करता है।

हर 12 वर्ष में आयोजित होने वाला यह मेला न केवल करोड़ों भारतीयों को जोड़ता है, बल्कि दुनिया भर से आये लाखों श्रद्धालुओं, पर्यटकों और शोधकर्ताओं को भी आकर्षित करता है। महाकुम्भ का आयोजन विश्व की सबसे बड़ी मानव सभा के रूप में प्रसिद्ध है, जो मानवता और शांति का संदेश देती है। यह आयोजन योग, ध्यान और भारतीय दर्शन का वैश्विक मंच बन गया है। विदेशी पर्यटक भारतीय आध्यात्मिकता और साधना के गहन अनुभव के लिए यहाँ आते हैं। महाकुम्भ में वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों, जैसे जल संरक्षण, स्वच्छता और सतत विकास पर विचार–विमर्श किया जाता है। यह आयोजन पर्यावरणीय चेतना को बढ़ावा देने का वैश्विक केंद्र बनता जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया के माध्यम से महाकुम्भ का लाइव प्रसारण इसे दुनिया के हर कोने में पहुंचाता है। यह आयोजन भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आध्यात्मिक परंपराओं को विश्व स्तर पर प्रचारित करता है। संयुक्त राष्ट्र ने महाकुम्भ को वैश्विक सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी है। इससे भारत की प्राचीन परंपराओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक नयी पहचान मिली है। महाकुम्भ में विभिन्न देशों से आए लोग भारतीय संस्कृति और समाज के साथ जुड़ते हैं। यह आयोजन सांस्कृतिक आदान–प्रदान और वैश्विक एकता का संदेश देता है। यह आयोजन धर्म, संस्कृति और मानवता के गहन संवाद का माध्यम है। साधु–संतों और विद्वानों के प्रवचन वैश्विक शांति, सहिष्णुता और सद्भाव का संदेश देते हैं। महाकुम्भ भारत को वैश्विक स्तर पर एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक नेतृत्व प्रदान करता है। यह आयोजन वैश्विक चेतना को मानवता के हित में जागरूक करने का एक सशक्त माध्यम बन चुका है।[7] इस प्रकार, महाकुम्भ केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि एक वैश्विक आंदोलन है, जो मानवता, शांति और सतत विकास के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

अंतरराष्ट्रीय पर्यटन का केंद्र

महाकुम्भ में विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। यह आयोजन भारतीय संस्कृति, संगीत, कला, और भोजन का वैश्विक प्रदर्शन करता है। महाकुम्भ न केवल भारत का प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय पर्यटन का एक बड़ा केंद्र भी बन चुका है। हर 12 वर्ष में आयोजित होने वाला यह महोत्सव करोड़ों श्रद्धालुओं के साथ-साथ दुनिया भर के पर्यटकों और शोधकर्ताओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह आयोजन भारतीय संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिकता को समझने के लिए विदेशी पर्यटकों के लिए एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। योग, ध्यान और साधना के प्रति रुचि रखने वाले पर्यटक महाकुम्भ में भाग लेकर भारतीय आध्यात्मिक धरोहर का अनुभव करते हैं। महाकुम्भ के दौरान विदेशी पर्यटक यहाँ की झांकियों, धार्मिक अनुष्ठानों, भजन-कीर्तन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय समाज की विविधता को करीब से देखते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से महाकुम्भ की वैश्विक पहचान और अधिक मजबूत हुई है। यह आयोजन न केवल भारत की धार्मिक धरोहर, बल्कि इसकी सांस्कृतिक और सामाजिक समृद्धि का परिचायक है।

महाकुम्भ में विदेशी पर्यटक नदियों के पवित्र स्नान, साधु-संतों के प्रवचन और अखाड़ों के अनुष्ठानों में भाग लेकर भारतीय धर्म और दर्शन का अनुभव करते हैं। पर्यटन उद्योग के लिए महाकुम्भ एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है। होटल, गाइड, हस्तशिल्प और स्थानीय व्यापार को इससे प्रोत्साहन मिलता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था में सुधार होता है।

सरकार और पर्यटन विभाग महाकुम्भ के दौरान विशेष सुविधाएं, जैसे बहुभाषी गाइड, अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए अलग क्षेत्र और ऑनलाइन जानकारी उपलब्ध कराते हैं। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक महाकुम्भ के माध्यम से भारतीय खान-पान, पारंपरिक वेशभूषा और लोककला के साथ जुड़ते हैं, जो उन्हें भारत की सांस्कृतिक गहराई का अहसास कराता है।

विदेशी शोधकर्ता महाकुम्भ में आकर भारत के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों का अध्ययन करते हैं। यह आयोजन मानव सभ्यता के इतिहास और संस्कृति का एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार, महाकुम्भ न केवल भारत की धार्मिक परंपराओं का प्रतीक है, बल्कि यह अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन का ऐसा केंद्र बन चुका है, जो विश्व भर के लोगों को भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता के साथ जोड़ता है।

महाकुम्भ का सार्वभौमिक संदेश

महाकुम्भ ब्रह्मांडीय चेतना और मानवता की एकता का प्रतीक है। यह आयोजन भौतिकता से परे आत्मिक जागरूकता को बढ़ावा देता है। महाकुम्भ केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन

नहीं है, बल्कि यह पूरी मानवता के लिए एक सार्वभौमिक संदेश का प्रतीक है। यह आयोजन आस्था, एकता, शांति और सहिष्णुता का ऐसा मंच है, जो समस्त विश्व को जोड़ने की प्रेरणा देता है। महाकुम्भ का मुख्य संदेश 'वसुधैव कुटुंबकम्' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) के आदर्श पर आधारित है। यहाँ लाखों लोग जाति, धर्म, भाषा और भौगोलिक भिन्नताओं को भूलकर समान आस्था और श्रद्धा के साथ एकत्रित होते हैं। यह आयोजन मानवता को यह सिखाता है कि भौतिक सुखों से ऊपर उठकर आत्मा की शुद्धि और ब्रह्मांड के प्रति प्रेम का महत्व समझा जाए। यह आध्यात्मिकता और आंतरिक शांति का संदेश देता है। महाकुम्भ में नदियों के प्रति सम्मान और पवित्र स्नान के माध्यम से प्रकृति के साथ सामंजस्य का महत्व बताया जाता है। यह आयोजन जल संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन का संदेश भी देता है। यह आयोजन समाज में व्याप्त भेदभाव, जातिवाद और असमानता को दूर कर समरसता और समानता की भावना को बढ़ावा देता है। महाकुम्भ में हर व्यक्ति को समान दर्जा मिलता है, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से हो। महाकुम्भ विश्व शांति और सहिष्णुता का संदेश देता है। साधु-संतों और विद्वानों के प्रवचन मानवता को नैतिक मूल्यों, करुणा और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। यह आयोजन धर्म और विज्ञान के बीच सामंजस्य स्थापित करने का भी उदाहरण है। यहाँ श्रद्धा और आधुनिक तकनीक का संगम समाज को प्रगति और परंपरा के संतुलन का संदेश देता है।

महाकुम्भ विभिन्न संस्कृतियों के आदान-प्रदान का मंच बनकर विश्व को भारतीय परंपरा और दर्शन से जोड़ता है। यह आयोजन सार्वभौमिकता और सामूहिक चेतना को जागृत करता है। यह मेला मानवता को यह सिखाता है कि जीवन केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं है, बल्कि दूसरों के कल्याण और पूरे समाज की भलाई के लिए जीने का प्रयास करना चाहिए।

इस प्रकार, महाकुम्भ का सार्वभौमिक संदेश एक बेहतर दुनिया के निर्माण, शांति, प्रेम और समर्पण के मूल्यों को अपनाने का आह्वान करता है। यह आयोजन मानवता को एकता और संतुलन के सूत्र में पिरोने का प्रयास है।[8]

निष्कर्ष

महाकुम्भ केवल धार्मिक आयोजन नहीं है; यह भारतीय संस्कृति, सनातन परंपराओं और मानवता के मूल्यों का प्रतीक है। यह आयोजन आत्मा, समाज, और ब्रह्मांड के बीच के गहरे संबंध को स्थापित करता है। आधुनिक युग में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है और यह भविष्य में भी मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा। महाकुम्भ सनातन धर्म की गहराई, विविधता और सार्वभौमिकता का प्रतीक है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है जो हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है और ब्रह्मांडीय चेतना से साक्षात्कार कराती है। यह आयोजन भारतीय संस्कृति की विशिष्टता को दर्शाता है और इसे विश्व मंच पर स्थापित करता है। महाकुम्भ का

महत्त्व समय के साथ और बढ़ता जा रहा है, और यह भविष्य में भी मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ :

1. **कुम्भ माहात्म्य** (स्कंद पुराण): चौखंबा संस्कृत सीरीज, वाराणसी (1960), पृष्ठ-221
2. भगवद्गीता: **जीवन दर्शन और अध्यात्म**, गीताप्रेस, गोरखपुर (1972), पृष्ठ-144
3. काणे, पी.वी. : **धर्मशास्त्र का इतिहास**, भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे (1930-1962), पृष्ठ-229
4. शास्त्री, डॉ. सत्यव्रत: **भारत की सांस्कृतिक परंपराएं**, सहित्य अकादमी, नई दिल्ली (1995), पृष्ठ-142
5. डॉ. राधाकृष्णन: **नदियों का सांस्कृतिक महत्त्व**, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली (1980), पृष्ठ-193
6. मिश्रा, डॉ. राजेन्द्र : **आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण और महाकुम्भ**, प्रबुद्ध प्रकाशन, लखनऊ (2010), पृष्ठ-56
7. दुबे, डॉ. कन्हैयालाल : **भारतीय तीर्थयात्राएं : ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन**, भारतीय विद्या भवन, मुंबई (1990), पृष्ठ-153
8. नारायण, डॉ. बी.एन. : **वैदिक खगोलशास्त्र**, न्यू एज इंटरनेशनल, नई दिल्ली (2008), पृष्ठ-98

Mānaviki सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

अमृतकुम्भ
(कुम्भपर्व की पृष्ठभूमि में)

डॉ. सुशीलकुमार पाण्डेय 'साहित्येन्दु'*

शोध सारांश : अमृत भारतीय संस्कृति में अमरत्व का प्रतीक है, जिसका उल्लेख वेद, पुराण और उपनिषदों में मिलता है। यह समुद्र मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों में से एक है, जिसे पीने से अमरता मिलती है। देवताओं और असुरों के बीच अमृत के लिए संघर्ष हुआ, जिसमें विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर असुरों को छल से पराजित किया और देवताओं को अमृत पिलाया। इस संघर्ष के दौरान अमृत की बूँदें हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में गिरीं, जहाँ कुम्भ पर्व मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, अमृत कलश को लेकर इंद्र के पुत्र जयन्त का पीछा हुआ, जिससे ये बूँदें छलकीं। कुम्भ पर्व का समय ज्योतिषीय गणना पर आधारित है। बृहस्पति के राशि परिवर्तन और सूर्य-चंद्र की स्थिति के अनुसार 12 वर्षों में यह पर्व चार पवित्र स्थानों पर आयोजित होता है। इन तीर्थों में नदियों (गंगा, यमुना, सरस्वती, शिप्रा) के जल को अमृतमय माना जाता है। दार्शनिक दृष्टि से अमृत ब्रह्मज्ञान, आत्मशुद्धि और संयमित जीवन का प्रतीक है। उपनिषद् इसे मृत्यु पर विजय और सनातन सत्य की प्राप्ति से जोड़ते हैं। गुरु गोरखनाथ के अनुसार, स्वस्थ जीवनशैली ही अमृत है। साहित्य में अमृत को जल, प्रेम, राजसम्मान और आध्यात्मिक उपदेश का रूपक भी दिया गया है। कुम्भ शब्द की व्युत्पत्ति कुत्सित तत्त्वों को दूर करने वाला या तेजोवर्धक के रूप में की गई है। यह पर्व मानव देह को अमृतमय बनाने, राष्ट्रीय एकता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है। प्रयाग के संगम को तीर्थराज कहा जाता है, जहाँ अमावस्या पर स्नान को मोक्षदायी माना जाता है। अमृत की अवधारणा भारतीय चिंतन में व्यापक है, जो मृत्युंजयी चेतना और शाश्वत मूल्यों की प्रतीक है। इस प्रकार, कुम्भ पर्व अमृत की खोज का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उत्सव है, जो मानव को दिव्य जीवन की ओर प्रेरित करता है।

बीज शब्द : समुद्रमंथन, अमृत-कुम्भ, आत्मशुद्धि, उपनिषद्, कल्पित पदार्थ, तालुमूल, ब्रह्मज्ञान, कामधेनु, अमृत कलश, अमरत्व, सनातन।

अमृत का आशय है-जो मृत या मरा न हो अर्थात् सदा जीवित रहने वाला अमृत कहा जाता है। अमर को अमृत कहते हैं। यह एक प्रकार का कल्पित पदार्थ है जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि इसे खाने या पीने से प्राणी सदा के लिए अमर हो जाता है। अमृत के लिए पीयूष, सुधा तथा अमिय आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। पुराणों के अनुसार अमृत समुद्र मंथन के समय

*पटेल नगर, कादीपुर, सुल्तानपुर, उ.प्र.-228145, मो.न.-9532006900

निकला था। अमृत शब्द अनेक अर्थों में आता है। जैसे जल को अमृत कहा जाता है। दार्शनिक सम्प्रदाय में ईश्वर या परमात्मा अमृत है। गुरु का सदुपदेश अमृत, तालुमूल में स्थित चन्द्रमा से निकलने वाला रस अमृत है जिसे योगी जीभ उलटकर पीता है।[1] ध्यानबिंदु उपनिषद् की मान्यता है कि भ्रूमध्य, ललाट तथा नासिकामूल को अमृत स्थान जानना चाहिए। वह महान् ब्रह्म स्थान है।[2] गुरु गोरखनाथ का कथन है कि गगन में औंधा कुआँ है जिसमें अमृत का वास है जो गुरु वाला है उस अमृत को भरपूर पीता है, पर गुरुहीन प्यासा ही रह जाता है।[3] एक धारणा यह भी है कि जो वस्तु सुख देवे वह अमृत है। विष्णु शर्मा ने कहा है कि 'शीत में अग्नि अमृत है, प्रिय का दर्शन अमृत है, राजसम्मान अमृत है तथा क्षीर का भोजन अमृत है।[4] भारतीय साहित्य में अमृत की कल्पना अति प्राचीन काल से है। अथर्ववेद की कामना है कि 'मृत्यु हमसे दूर हो और अमृतपद हमें प्राप्त हो।[5] ईशावास्य उपनिषद् का विचार है कि जो उन दोनों सम्भूति (ब्रह्म) और विनाश (प्रकृति) को साथ-साथ जान लेता है, वह विनाश (प्रकृति) से मृत्यु को पार करके सम्भूति (ब्रह्म) से अमृतत्व को प्राप्त करता है।[6] अमृत ब्रह्मज्ञान को कहते हैं। कठोपनिषद् का कथन है कि जो इस ब्रह्म को जानते हैं, वे अमृत हो जाते हैं।[7] गुरु गोरखनाथ स्वस्थ जीवन को अमृत तुल्य मानते हैं। उनका विचार है कि जिसका आसन दृढ़ है, आहार दृढ़ है तथा निद्रा दृढ़ है, ऐसा पुत्र (संत व्यक्ति) कभी मरता नहीं, कभी बूढ़ा नहीं होता।[8] गुरुगोरखनाथ का मत है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संयम होना चाहिए। इन सारे विवेचनों से स्पष्ट है कि अमृत का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है।

ऊपर कहा गया है कि अमृत समुद्रमंथन से निकले हुए चौदह रत्नों में एक है। दैत्य लोग अमृतकलश ले भागे थे और अन्त में विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर दैत्यों को अपने वश में कर लिया और उनसे अमृतकुम्भ लेकर देवताओं को अमृत पिला दिया था। राहु ने देवताओं की पंक्ति में बैठकर अमृत पी लिया पर कण्ठ से नीचे उत्तरने के पूर्व ही वह मारा गया। उसका सिर अमर हो गया और ब्रह्मा ने उसे एक ग्रह बना दिया।[9] मत्स्यपुराण के अनुसार 12 देवासुर संग्रामों में से चौथा देवासुर संग्राम है जिसका सम्बन्ध अमृत मंथन से है।[10] ब्रह्मपुराण का कथन है कि अमृत मंथन का सम्बन्ध चौथे देवासुर संग्राम से है जिसमें इन्द्र ने प्रह्लाद को हराया था।[11] जब देवासुर संग्राम में देवता असुरों को न हरा सके तब विष्णु ने देव और असुर को साथ ले क्षीरसागर मथा जिसमें सोम, लक्ष्मी, कौस्तुभ, उच्चै:श्रवा घोड़ा, ऐरावत तथा अमृत आदि 14 रत्न निकले थे। समुद्रमंथन का कारण अमृत की प्राप्ति था।[12] श्रीमद्‌भागवत पुराण के अनुसार देवासुर संग्राम की, कठिनाइयों पर विजय पाने हेतु विष्णु ने क्षीर सागर के मंथन की सलाह दी थी जो मन्दार पर्वत, वासुकि नाग तथा असुरों की सहायता से पूरा हुआ। इस अवधि में सर्वप्रथम हलाहल विष निकला जिसे शंकर ने ग्रहण किया। फिर कामधेनु निकली जिसे ऋषियों ने अग्निहोत्र के लिए लिया। उच्चै:श्रवा घोड़े को बलि ने लिया। ऐरावत तथा कौस्तुभ मणि विष्णु ने लिए। पारिजात, अप्सरा और लक्ष्मी हरि को प्राप्त हुए। वारुणीदेवी को असुरों ने लिया। अन्त में अमृत लिए धन्वन्तरि निकले।

मोहिनी रूप धारण कर विष्णु ने अमृत का वितरण किया।[13] भारत के चार स्थानों पर अमृत कलश के छलकने की कथा कही गयी है। अमृत कलश लेकर कौन उड़ा था। उसके लिए दो नाम आते हैं, जयंत तथा गरुड़।

स्कन्दपुराण के अनुसार देवताओं और असुरों द्वारा समुद्र मंथन करने पर जब अमृत-कलश निकला तो देवता और असुर अमृत को प्राप्त करने के लिए आपस में उलझ पड़े। इन्द्र ने उस कलश को वहाँ से ले जाने के लिए अपने पुत्र जयन्त को संकेत किया। जयन्त उस कलश को लेकर दौड़ा। यह देखकर असुरों ने उसका पीछा किया। उधर देवता भी असुरों के पीछे दौड़े और सुर और असुरों का तुमुलयुद्ध होने लगा। तदनन्तर असुरों ने जयन्त से अमृत कलश, हरिद्वार गोदावरी (नासिक) और अवन्तिका (उज्जैन) में छीना। इस छीना-झपटी में कुम्भ से कुछ अमृत की बूँदें छलककर इन स्थानों पर गिर पड़ीं। जहाँ बूँदें गिरीं वहीं पर यह कुम्भ पर्व मनाया जाता है। असुर और देवों में यह युद्ध बारह दिनों तक चला। देवताओं का एक दिन मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है। इसलिए यह पर्व बारह वर्ष के बाद मनाया जाता है।[14]

डॉ. ब्रह्मानन्द शुक्ला ने अमृत के छलकने के संदर्भ में गरुड़ तथा जयन्त दोनों का नामोल्लेख किया है। इन्होंने किसी पुराण का नाम नहीं दिया बस इतना ही कहा कि पुराणों में इससे सम्बन्धित तीन कथाएँ उपलब्ध हैं। प्रथम कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा ने देवराज इन्द्र को प्रसन्न होकर एक दिव्य माला दी थी, जिसे अहंकार के वशीभूत होकर इन्द्र ने अपने हाथी ऐरावत के मस्तक पर रख दिया। तदनन्तर ऐरावत ने उसे अपने पैरों से रौंद दिया जिसे क्रोधी स्वभाव वाले दुर्वासा ने अपना अपमान समझा तथा इन्द्र को शाप दे दिया, जिससे सारे संसार में हाहाकार मच गया। रक्षार्थ देवों तथा असुरों ने मिलकर विष्णु की कृपा से समुद्र मंथन किया, जिसमें से अमृत कुम्भ निकला। अमृत कुम्भ को क्षीरसागर तक ले जाने में पक्षिराज गरुड़ को हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक इन चार स्थानों पर रखना पड़ा। जो कालान्तर में कुम्भ स्थल के नाम से जाने गये। (इस कथा में अमृत कलश के सम्बन्ध में छीना-झपटी की कोई बात नहीं है)। दूसरी कथा कद्रू और विनिता की है जो महर्षि कश्यप की पत्नियाँ थी। सूर्य के अश्व काले हैं या सफेद, इस बात पर दोनों में विवाद हो गया। विवाद के बढ़ जाने पर यह तय हुआ कि जो हार जायेगी, वह दूसरे की दासी बनेगी। इधर कद्रू ने अपने पुत्र नागराज वासुकी की सहायता से सूर्य के श्वेत घोड़ों का रंग काला करवा दिया। फलतः विनिता पराजित हुई। अन्त में विनिता ने कद्रू से दासित्व से मुक्त करने की प्रार्थना की। इस पर कद्रू ने पुनः यह शर्त रखी कि यदि नागलोक से अमृत कुम्भ लाकर (विनिता) उसे दे दे तो दासित्व से मुक्त हो जायेगी। विनिता ने अपने पुत्र गरुड़ से वह अमृत घट लाने को कहा। जब गरुड़ नागलोक से अमृतकुम्भ ला रहे थे तब वासुकी की सूचना पर इन्द्र ने मार्ग में चार बार आक्रमण किया, जिससे अमृत की बूँदें पृथ्वी लोक में चार स्थानों पर क्रमशः हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में छलककर गिर पड़ीं। अतः उन चारों स्थानों पर कुम्भ पर्व

होने लगा। तीसरी तथा सर्वमान्य कथा है तदनुसार, अमृतकुम्भ को पाने के लिए देवों और दानवों में युद्ध छिड़ गया, क्योंकि अमृत पीकर दोनों ही अमर होना चाहते थे। युद्ध की भयावह स्थिति को भाँप कर देवताओं ने इन्द्र के पुत्र जयन्त को इशारा कर दिया जिससे वह अमृत कुम्भ लेकर भाग चला। दैत्यगण क्षणिक दिग्भ्रमित हुए किन्तु अपने गुरु शुक्राचार्य के आदेश पर अमृत कलश को लेने हेतु जयन्त का पीछा किया। घोर परिश्रम के बाद जयन्त को बीच मार्ग में पकड़ा एवं अमृत कलश पर अधिकार जताना चाहा, जिसके कारण देवों तथा दानवों में निरन्तर बारह दिनों का युद्ध होता रहा। युद्ध के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों क्रमशः, प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक में अमृत कलश से अमृत की कुछ बूंदें छलक कर गिर पड़ीं, यद्यपि उस समय चन्द्रमा ने अमृत के छलकने, सूर्य ने कलश के फूटने तथा बृहस्पति ने दैत्यों के हाथों में जाने से बचाने का भरसक प्रयास किया था। इन चारों स्थानो पर अमृत कलश से छलकी हुई बूँदें व्याप्त हो गयी जिन्हें गंगा, यमुना, सरस्वती, शिप्रा ने अपनी जलराशि में समेट लिया। फलतः अमृत प्राप्ति की कामना से इन तीर्थ स्थानों पर कुम्भपर्व का आयोजन होने लगा।[15] प्रो. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव ने पौराणिक कथा के आधार पर लिखा है कि दैत्यों से छीने गये और परवर्तीकाल में गरुड़ द्वारा ले जाये गये अमृत कुम्भ की बूँदें उक्त चार स्थानों पर छलक कर उन सरिताओं के जल में मिल गयी थी।[16] प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी का मत है कि जब समुद्र मंथन के पश्चात् अमृत कलश निकला तब देवताओं ने इसे देवराज इन्द्र के पुत्र जयन्त को सौंपा था, कि वो इसे लेकर सुरक्षित भाग जाये।[17] इस प्रकार अमृत कलश का सम्बन्ध जयंत तथा गरुड़ दोनों से मिलता है।

कुम्भ शब्द के अनेक अर्थ हैं– यथा–‘**कुत्सितं उम्भयति दूरयति जगध्तिायेति**’ जो जीवन को कुत्सित तत्त्वों से दूर कर देता है–वह कुम्भ है। ‘**कुं भावयति दीपयति तेजोवर्धनेति कुम्भः**’ जो पृथ्वी को सुशोभित करता है, तेज से उद्दीप्त करता है, वह कुम्भ है। ‘**कुम्भयति पूरयति सकल क्षुत्पिपासादि द्वन्द्वजातम् निवर्तयति इति कुम्भः**’ – जो जल से पूर्ण करता हो, भूख प्यास के द्वन्द्वों से निवृत्त करता है उसे कुम्भ कहते हैं।[18]

भारतीय सांस्कृतिक चिन्तन में ‘अमृत कुम्भ’ का विशेष स्थान प्रयाग में अक्षयवट है। अक्षयवट अमरत्व का, सनातनता का प्रतीक है। प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है। उन नदियों के माहात्म्य वर्णन अनेक पुराणों में आये हैं। अन्य स्थल तीर्थ कहे जाते हैं पर प्रयाग को तीर्थराज कहा जाता है। ज्योतिष गणनानुसार प्रतिवर्ष माघ मास में चंद्र एवं सूर्य मकर राशि में अवस्थित होते हैं, परंतु बृहस्पति का बारह राशियों का चक्र पूरे बारह वर्षों में पूर्ण होता है। इसी से माघ मास की अमावस्या तिथि को प्रयाग में कुम्भ पर्व का आयोजन किया जाता है। मानव देह भी कुम्भ ही है। कुम्भ पर्व मानव देह में अमृत को समाहित करने का सन्देश देता है। यह अमृत आत्मशुद्धि का है, राष्ट्रीय चेतना के संस्कार का है, पर्यावरण प्रदूषण निवारण का है। उपनिषदों का कथन है कि हमें अंधकार की ओर नहीं प्रकाश की ओर चलना चाहिए, असत् की ओर नहीं सत्

की ओर चलना चाहिए। मृत्यु की ओर नहीं, अमृत की ओर चलना चाहिए। प्रयाग के कुम्भ पर्व में अमृत कुम्भ से अमृत छलक रहा है विविध रूपों में उसे हमें प्राप्त करना चाहिए।

संदर्भः

1. **मानक हिन्दी कोश**, रामचन्द्र वर्मा।
2. भ्रूमध्ये तु ललाटे तु नासिकायास्तु भूतलः।
   जानीयादमृतस्थानं तद्ब्रह्मायतनं महत्।। **ध्यानबिन्दु उपनिषद्**, 40।
3. गगन मंडल में औंधा कुँवा तहँ अमृत का वासा।
   सगुरा होइ सु भरि-भरि पीवै, निगुरा जाइ पियासा।। **गोरखबानी सबदी**, 23।
4. अमृतं शिशिरे वह्निरमृतं प्रियदर्शनम्।
   अमृतं राजसम्मानममृतं क्षीरभोजनम्।। **पंचतंत्र**, 1-139।
5. परै तु मृतयुरमृतं न ऐतु। **अथर्ववेद** 19-3-62।
6. सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद् वेदोमयं सह।
   विनाशेन मृतयुं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नते।। **ईशावास्योपनिषद्**, 14 ।
7. य एतद् विदुरमृतास्ते भवन्ति। **कठोपनिषद्** 2-3-9।
8. आसण दिढ़ अहार दिढ़ जे न्यद्रा दिढ़ होई।
   गोरष कहै सुणौ रे पूता मरै न बूढ़ा होई।। **गोरखबानी**।
9. (क) **मत्स्यपुराण** 249.14 से लेकर 250-251।
   (ख) **वायुपुराण** 23.90, 52.37, 92.9।
   (ग) **विष्णुपुराण** 01, 9, 80.11।
10. (क) **मत्स्यपुराण** 47, 43.48, 249.5 ।
    (ख) **विष्णुपुराण** 97.78, 79 ।
11. **ब्रह्माण्डपुराण**, 3.72, 73.79, 4.6, 7 ।
12. (क) **मत्स्यपुराण** 1.9, 249.14, अंत तक।
    (ख) **वायुपुराण** 23.90, 52.37, 92.9 ।
    (ग) **विष्णुपुराण** 1, 9, 80 से 111 ।
13. **श्रीमद्भागवतपुराण**, 8-6-21 से 25, 31 से 32 ।
14. **पुराणकथाकोश** (डॉ. रामशरण गौड़) पृ.-68।
15. हिन्दुस्तानी (कुम्भ अंक), ब्रह्मानंद शुक्ल, पृ. 55-56।
16. हिन्दुस्तानी (कुम्भ अंक), प्रो. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, पृ.-52।
17. हिन्दुस्तानी (कुम्भ अंक), प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी, पृ.-102।
18. हिन्दुस्तानी (कुम्भ अंक), ब्रह्मानंद शुक्ल, पृ.-54।

नारदपुराण में प्रयाग के मकर स्नान का शैक्षिक दर्शन

डॉ. समीरकुमार पाण्डेय*

शोध सारांश : भारतीय पुराण ग्रन्थ ज्ञान-विज्ञान के अक्षय भण्डार हैं। भारतीय सांस्कृतिक चेतना लौकिक प्रगति के साथ ही पारलौकिक प्रगति पर विशेष बल देती है। भारतीय पुराण कथाएँ मानव की अन्तश्चेतना के परिष्कार में सहायक हैं। स्वस्थ चिन्तन, मनन एवं अनुश्रवण से व्यक्ति का चित्त निर्मल एवं स्वच्छ होता है जिससे वह समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी बन जाता है। प्रयाग में माघ मास में मकर स्नान के समय कुम्भपर्व का भी आयोजन होता है जो प्रमुख रूप से बारह वर्षों के बाद लगता है। पुराणों के अनुसार प्रयाग में त्रिवेणी तट पर अमृत की कुछ बूँदें छलकी थीं, उसी परम्परा में सम्प्रति प्रयाग में कुम्भपर्व का आयोजन हो रहा है। प्रयाग भूमि की चर्चा अनेक पुराणों में आती है। नारदपुराण के उत्तर भाग में प्रयागभूमि की विशेष चर्चा आयी है।

बीज शब्द : सांस्कृतिक शिक्षा, जलीय स्वच्छता, तीर्थ विकास, दानपरक शिक्षा, विश्वमानवता, आध्यात्मिक चेतना, पुण्यपुरियाँ, तत्त्वदर्शी, विश्वपरिवार

सांस्कृतिक शिक्षा

प्रयाग में माघमास स्नान की गुणवत्ता प्रतिपादित करते हुए पुरोहित वसु ब्रह्मापुत्री मोहिनी से कहते हैं कि-"तीनों लोकों में प्रयाग से बढ़कर परम पवित्र तीर्थ नहीं है। प्रयाग परमपद-स्वरूप है। उसका दर्शन करके मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। अतः सम्पूर्ण देवताओं से सुरक्षित प्रयागतीर्थ में जाकर जो ब्रह्मचर्य का पालन तथा देवता और पितरों का तर्पण करते हुए एक मास तक वहाँ निवास करता है, वह जहाँ-कहीं भी रहकर सम्पूर्ण मनोवांछित कामनाओं को प्राप्त कर लेता है। गंगा और यमुना का संगम सम्पूर्ण लोकों में विख्यात है। वहाँ भक्तिपूर्वक स्नान करने से जिसके-जिसके मन में जो-जो कामना होती है, उसकी वह कामना अवश्य पूर्ण हो जाती है। हरिद्वार, प्रयाग और गंगासागर संगम में स्नान करने मात्र से मनुष्य अपनी रुचि के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के धाम में चला जाता है। माघ मास में सितासित संगम के जल में जो स्नान किया जाता है, वह सौ कोटि

*सहायक आचार्य, बी.एड्. विभाग, संत तुलसीदास पी.जी. कॉलेज, कादीपुर, सुल्तानपुर, उ.प्र.

कल्पों में भी कभी पुनरावृत्ति का अवसर नहीं देता।"[1]

इन पंक्तियों से अपनी सांस्कृतिक शिक्षा के सूत्र मिलते हैं। प्रयाग की भूमि गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम की भूमि है। सरस्वती ज्ञान की देवी हैं। यहाँ इन्द्रिय संयम की भी शिक्षा मिलती है। इन्द्रिय संयम से प्रगति का पथ प्रशस्त होता है। अध्यात्म भारतीय सांस्कृतिक शिक्षा का अविभाज्य अंग है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव भारतीय आध्यात्मिक चेतना के मान्य देवगण हैं। भारतीय सांस्कृतिक शिक्षा में जल की पवित्रता का विशेष स्थान है। गंगा-यमुना के नीर की पवित्रता निरन्तर बनाये रखने की शिक्षा मिलती है। प्रयागतीर्थ में अरुणोदय के समय माघ शुक्ला सप्तमी प्राप्त हो तो वह एक हजार सूर्यग्रहणों के समान है। यदि अयनारम्भ के दिन प्रयाग का स्नान मिले तो कोटिगुना पुण्य होता है और विषुव योग में लाख गुने फल की प्राप्ति होती है।[2]

खगोलीय शिक्षा

भारतीय शैक्षिक दर्शन में खगोलीय विद्या का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सूर्यग्रहण, अयनारम्भ विषुव योग आदि खगोलीय शिक्षा के अंग हैं। मकर स्नान खगोलीय शिक्षा के प्रति भी जागरूक करता है।

जलीय स्वच्छता विषयक शिक्षा

गंगा द्रवीभूत ब्रह्म स्वरूप हैं। सरस्वती ज्ञान की अधिष्ठात्री हैं। यमुना सूर्य तनया हैं। ये तीनों नदियाँ मात्र जलस्रोत नहीं हैं, बल्कि मानव-मेधा के परिष्कार का सर्वोत्तम साधन हैं। माघ मास में त्रिवेणी तट पर अनेक साधु-संत विद्वान् एवं ज्ञानी आते हैं जो अपनी-अपनी अमूल्य धनराशि का निर्मूल्य वितरण करते हैं। इस समय का स्नान अनन्त फल देने वाला होता है। उल्लेखनीय है कि अनेक पुराण प्रयाग में गंगा और यमुना के संगम का ही वर्णन करते हैं, जबकि नारद पुराण सरस्वती का विस्तार से उल्लेख करता है। पुरोहित वसु के शब्दो में- 'वासुदेव, हरि, कृष्ण और माधव' आदि नामों का बार-बार स्मरण करें। मनुष्य अपने घर पर गरम जल से साठ वर्षो तक जो स्नान करता है, उसके समान फल की प्राप्ति सूर्य के मकर राशि पर रहते समय एक बार के स्नान से हो जाती है। बाहर बावड़ी आदि में किया हुआ स्नान बारह वर्षो के स्नान का फल देनेवाला है। पोखरे में स्नान करने पर उससे दूना और नदी आदि में स्नान करने पर चौगुना फल प्राप्त होता है। देवकुण्ड में वही फल दसगुना और महानदी में सौगुना होता है। दो महानदियों के संगम में स्नान करने पर चार सौ गुने फल की प्राप्ति होती है; किंतु सूर्यके मकर राशि पर रहते समय प्रयाग की गंगा में स्नान करने मात्र से वह सारा फल सहस्रगुना होकर मिलता है-ऐसा बताया गया है। इस प्रयाग तीर्थ को पूर्वकाल में ब्रह्माजी ने प्रकट किया था, जिसके गर्भ में सरस्वती छिपी हैं, वह श्वेत और श्याम जल की धारा ब्रह्मलोक में जाने का मार्ग है। हिमालय की घाटियों में जो तीर्थ हैं, उनमें माघ मासका स्नान सब पापों का नाश करनेवाला है। सब मासोंमें उत्तम माघ मास यदि बदरीवन में

प्राप्त हो तो वह मोक्ष देनेवाला है। नर्मदा के जलमें माघ का स्नान पापनाशक, दु:खहारी, सम्पूर्ण मनोवांछित फलों का दाता तथा रुद्रलोक की प्राप्ति करानेवाला कहा गया है। सरस्वती के जल में वह सब पापराशियों का नाशक तथा सम्पूर्ण लोकों के सुखों की प्राप्ति करानेवाला बताया गया है। गंगा का जल यदि माघ मास में सुलभ हो तो वह पापरूपी ईंधन को जलाने के लिये दावानल, गर्भवास के कष्ट का नाश करनेवाला तथा विष्णुलोक एवं मोक्ष की प्राप्ति कराने वाला बताया गया है।[3]

नारदपुराण प्रयाग में मकर स्नान के माध्यम से जलीय स्वच्छता का उत्तम वर्णन करता है। शरीर में लगभग 75 प्रतिशत जल का अंश है। कहा भी जाता है कि जल ही जीवन है। भगवान् नारायण क्षीरसागर में ही शयन करते हैं। सूर्य के मकर राशि में होने पर प्रयाग की गंगा में स्नान अत्यन्त पुण्यदायक होता है। विभिन्न नदियाँ हमारी धार्मिक आस्था का आधार हैं। आज का भौतिक वातावरण इतना विकृत हो गया है कि वह अपनी धरोहर नदियों के जल की महत्ता नहीं समझ पा रहा है, इन नदियों के जल को जितना स्वच्छ होना चाहिए उतना आज हैं नहीं। प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है कि वह नदियों को प्रदूषण से बचाये। नदियाँ स्वच्छ रहेंगी तो प्राणी भी स्वस्थ रहेंगे।

तीर्थ विकास की शिक्षा

तीर्थों का स्नान नवीन चेतना को ऊर्जस्वित करता है साथ ही भारत की भौगोलिक परिस्थितियों से अवगत कराता है जिससे राष्ट्रीय चेतना विश्व बंधुत्व का भाव जागृत होता है। दूर-दूर देश से आये हुए ज्ञानियों एवं तीर्थयात्रियों से मिलन होता है। मकर स्नान सामाजिक एकता-समरसता को भी जागृत करता है। पुरोहित वसु का कथन है कि पश्चिमवाहिनी गंगा दर्शनमात्र से ही ब्रह्महत्या आदि पापों का निवारण करनेवाली है। देवि! पश्चिमाभिमुखी गंगा यमुनाके साथ मिली हैं। वे सौ कल्पों का पाप हर लेती हैं। माघ मास में तो वे और भी दुर्लभ हैं। पृथ्वी पर वे अमृतरूप कही जाती हैं। गंगा और यमुना के संगम का जल 'वेणी' के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें माघ मास में दो घड़ी का स्नान देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। पृथ्वी पर जितने तीर्थ तथा जितनी पुण्यपुरियाँ हैं, वे मकर राशि पर सूर्य के रहते हुए माघ मासमें वेणी में स्नान करने के लिये आती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, रुद्र, आदित्य, मरुद्गण, गन्धर्व, लोकपाल, यक्ष, किन्नर, गुह्यक, अणिमादि गुणोंसे युक्त अन्यान्य तत्त्वदर्शी पुरुष, ब्रह्माणी, पार्वती, लक्ष्मी, शची, मेधा, अदिति, रति, समस्त देवपत्नियाँ, नागपत्नियाँ तथा समस्त पितृगण ये सब के सब माघ मासमें त्रिवेणी-स्नानके लिये आते हैं। सत्ययुग में तो उक्त सभी तीर्थ प्रत्यक्ष रूप धारण करके आते थे, किंतु कलियुगमें वे छिपे रूप से आते हैं। पापियों के संगदोष से काले पड़े हुए सम्पूर्ण तीर्थ प्रयागमें माघ मास में स्नान करने से श्वेत वर्ण के हो जाते हैं।

मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव।
स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। (ना. उत्तर. 63। 13-14)

'गोविन्द! अच्युत! माधव! देव! मकर राशि पर सूर्य के रहते हुए माघ मास में त्रिवेणी के जल में किये हुए मेरे इस स्नान से संतुष्ट हो आप शास्त्रोक्त फल देने वाले हों।'

इस मन्त्र का उच्चारण करके मौनभाव से स्नान करें।[4] भारतीय संस्कृति मे तीर्थों का अनेक दृष्टियों से विशेष महत्त्व है। तीर्थ हमारी सांस्कृतिक चेतना के अमूल्य अध्याय हैं। हमारे पूर्वजों द्वारा हमें सौंपी गयी अमूल्य धरोहर हैं। तीर्थ प्रकृतिप्रदत्त अनुपम वरदान हैं। तीर्थों के विकास से आर्थिक विकास होता है तथा सामाजिक समरसता का प्रसार होता है। तीर्थ विकास की शिक्षा हमें अपने सांस्कृतिक सनातन मूल्यों को सुरक्षित बनाये रखने की प्रेरणा देती है साथ ही भौगोलिक स्वच्छता की भी शिक्षा देती है।

पुण्य प्राप्त करने की शिक्षा

भारत देवभूमि है। यहाँ की धरती से विश्वपरिवार की अवधारणा निर्मित हुई है। भारत की प्रतिष्ठा में गंगा, यमुना के संगम का प्रयाग का कुम्भ अवसर का विशेष योगदान है। ऋषि सनक ने नारद से कहा है कि–गंगा और यमुना का जो संगम है, उसी को महर्षि लोग शास्त्रों में उत्तम क्षेत्र तथा तीर्थों में उत्तम तीर्थ कहते हैं। ब्रह्मा आदि समस्त देवता, मुनि तथा पुण्य की इच्छा रखनेवाले सब मनुष्य श्वेत और श्याम जल से भरे हुए उस संगम–तीर्थ का सेवन करते हैं। गंगा को परम पवित्र नदी समझना चाहिये; क्योंकि वह विष्णु के चरणों से प्रकट हुई है। इसी प्रकार यमुना भी साक्षात् सूर्य की पुत्री हैं। ब्रह्म्! इन दोनोंका समागम परम कल्याणकारी है। मुने! नदियोंमें श्रेष्ठ गंगा स्मरणमात्र से समस्त क्लेशों का नाश करनेवाली, सम्पूर्ण पापोंको दूर करनेवाली तथा सारे उपद्रवों को मिटा देनेवाली है।

समुद्रपर्यन्त पृथ्वी पर जो–जो पुण्यक्षेत्र हैं, उन सबसे अधिक पुण्यतम क्षेत्र प्रयाग को ही जानना चाहिये। जहाँ ब्रह्माजी ने यज्ञ द्वारा भगवान् लक्ष्मीपति का यजन किया है तथा सब महर्षियों ने भी वहाँ नाना प्रकार के यज्ञ किये हैं। सब तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य प्राप्त होते हैं, वे सब मिलकर गंगाजी के एक बूँद जल से किये हुए अभिषेक की सोलहवीं कला की भी समता नहीं कर सकते। जो गंगा से सौ योजन दूर खड़ा होकर भी 'गंगा–गंगा' का उच्चारण करता है, वह भी सब पापों से मुक्त हो जाता है; फिर जो गंगा में स्नान करता है, उसके लिए तो कहना ही क्या है। भगवान् विष्णु के चरण कमलों से प्रकट होकर भगवान् शिव के मस्तक पर विराजमान होने वाली भगवती गंगा मुनियों और देवताओं के द्वारा भी भलीभाँति सेवन करने योग्य हैं, फिर साधारण मनुष्यों के लिए तो बात ही क्या है?[5]

भारतीय शैक्षिक दर्शन में पुण्य प्राप्त करना मानव जीवन की चरम उपलब्धि मानी गयी है। पुण्य का शैक्षिक दर्शन व्यवस्थित समाज की परिभाषा रचता है। विश्व विकास की विकास भूमिका लिखता है। मकर स्नान से हमें पुण्य की प्राप्ति होती है। यह पुण्य भौतिक तथा आध्यात्मिक

दोनों दृष्टि से लाभकर है। विभिन्न क्षेत्रों से आये ऋषियों, महर्षियों, दार्शनिकों तथा कलाविदों से नाना प्रकार के ज्ञान मिलते हैं। ज्ञान, विद्या और शिक्षा की त्रिवेणी प्रयाग के मकर स्नान में परिलक्षित होती है। पुण्य प्राप्त करने की शिक्षा मानव जीवन को मंगल बनाती है।

दानपरक शिक्षा

दान भारतीय सांस्कृतिक चेतना का महत्त्वपूर्ण अंग है। दान से दाता का मन प्रसन्न होता है और पाने वाले को प्रसन्नता के साथ धन भी मिल जाता है। भारतीय समाज दाता को समाज में अधिक सम्मान देता है। विचारणीय विषय है कि यदि किसी के पास धन है, परन्तु वह न तो दान करता है और न तो भोग करता है तो उसका धन विनष्ट ही हो जायेगा। विवेकी दान को उत्तम मानते हैं। यदि वह दान प्रयाग में त्रिवेणी तट पर कुम्भपर्व की अवधि में हो तो अति उत्तम। पुरोहित वसु का कथन है कि-अपने वैभव विस्तार के अनुसार सबको प्रयाग में दान करना चाहिये। इससे तीर्थ का फल बढ़ता है। जो गंगा और यमुना के बीच में सुवर्ण, मणि, मोती या दूसरा कोई प्रतिग्रह देता है एवं जो वहाँ लाल या कपिल वर्ण की ऐसी गौ देता है. जिसकी सींग में सोना, खुरों में चाँदी, गले में वस्त्र हो, जो दूध देती हो और बछड़ा उसके साथ हो; शुक्ल वस्त्र धारण करनेवाले, शान्त, धर्मज्ञ, वेदज्ञ एवं श्रोत्रिय ब्राह्मण को विधिपूर्वक जो पूर्वोक्त गौ देकर स्वीकार कराता है तथा उसके साथ बहुमूल्य वस्त्र और नाना प्रकारके रत्न भी देता है, उस गौ तथा बछड़ेके शरीर में जितने रोमकूप होते हैं, उतने सहस्र वर्षों तक वह दाता स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है। उस दानकर्म से दाता लोग कभी नरक का दर्शन नहीं करते। सामान्य लाखों गौओं की अपेक्षा एक ही दूध देनेवाली गौ दान करें। वह एक ही गौ स्त्री-पुत्र तथा भृत्यवर्ग का उद्धार कर देती है। इसलिये सब दानों में गोदानका महत्त्व अधिक है।[6]

नारदपुराण में वर्णित प्रयाग के माघ मास के मकरस्नान कुम्भपर्व का शैक्षिक दर्शन भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम अध्याय है, विश्वमानवता की मांगलिक पृष्ठभूमि का परिचायक है।

संदर्भः

1. **नारदपुराण**, उत्तर भाग पृ. 707।
2. **नारदपुराण**, उत्तर भाग पृ. 708।
3. **नारदपुराण**, उत्तर भाग पृ. 706-707।
4. **नारदपुराण**, उत्तर भाग पृ. 706।
5. **नारदपुराण**, पूर्व भाग पाद पृ. 22।
6. **नारदपुराण**, उत्तर भाग पृ. 707।

(नारद पुराण गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित है।)

Mānaviki सामाजिक–मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

महाकुम्भ (प्रयागराज) 2025 : एक भौगोलिक अध्ययन

सन्तोष यादव*

सारांश : कुम्भ शब्द पवित्र अमृत कलश से व्युत्पन्न हुआ है, आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं मिलनसारिता का पर्व है कुम्भ। हिन्दू धार्मिक तीर्थयात्रियों के बीच कुम्भ एक सर्वाधिक पवित्र पर्व है। कुम्भ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से शुरू नहीं हुआ था अपितु इसका इतिहास समय द्वारा ही बना दिया गया है। वैसे भी धार्मिक परम्पराएँ हमेशा आस्था एवं विश्वास पर टिकती हैं न कि इतिहास पर। कुम्भ जैसा विशाल पर्व संस्कृतियों को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए ही आयोजित होता है। कुम्भ विश्व का सबसे बड़ा सामूहिक आयोजन है। इन आयोजनों में लाखों लोग सक्रिय रूप से भाग लेते हैं तथा इस आयोजन के माध्यम से विभिन्न समूहों के बीच बातचीत एवं मेलजोल बढ़ता है। इस प्रकार के आयोजन से विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो पर्यावरण पर अवांछनीय प्रभाव छोड़ती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में महाकुम्भ–2025 का एक भौगोलिक अध्ययन किया गया है जिसमें आने वाले श्रद्धालुओं के लिए की गयी व्यवस्थाओं तथा विभिन्न चुनौतियों से निपटने के लिए शासन–प्रशासन द्वारा की गयी तैयारियों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : कुम्भ, पर्व, परम्परा, आध्यात्मिकता, पर्यावरणीय।

प्रस्तावना:

कुम्भ भारतीय संस्कृति का संगम व आध्यात्मिकता का ऊर्जा स्रोत है। कुम्भ पर्व ने भारत की भौगोलिक एवं सामाजिक एकता को मजबूत किया है। सदियों से हरिद्वार, उज्जैन, नासिक व प्रयाग में आयोजित कुम्भ के अवसर पर साधु–संतों एवं विद्वानों ने धर्म, समाज, अर्थ, राजनीति आदि विषयों पर गहन मंथन कर समाज व देश को आगे बढ़ने के लिए दिशा प्रदान की है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारतीय संस्कृति में कुम्भ पर्व का बहुत अधिक महत्त्व है। कुम्भ पर्व में देश–विदेश से भारी संख्या में श्रद्धालुओं का सम्मिलित होना गौरव का विषय है। प्रयागराज के गंगा के पावन संगम तट पर आयोजित होने वाला यह कुम्भ मेला संसार का विशालतम समागम के साथ–साथ सांस्कृतिक आयोजन के रूप में जाना जाता है।

*शोध छात्र, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, प्रयागराज; Email: santoshdv022@gmail.com; Mobile: 9198628224

कुम्भ मेला हमारी समृद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। पुराणों में भी कुम्भ पर्व का उल्लेख मिलता है। 'कुम्भ' का अर्थ है –'घड़ा'। इस पर्व का सम्बन्ध समुद्र–मंथन के दौरान निकले उत्कृष्ट कलश से जुड़ा हुआ है। इसका आयोजन नासिक, हरिद्वार, उज्जैन एवं प्रयागराज में क्रमशः होता है–

कुम्भ के प्रकार –	महाकुम्भ– प्रत्येक 144 वर्षो में (प्रयागराज, 2025)
	कुम्भ – प्रत्येक 12 वर्षो में
	अर्धकुम्भ– प्रत्येक 6 वर्षो में
प्रमुख स्नान –	मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या, वसंत पंचमी

कुम्भ मेला, नदी में स्नान कर जल अर्पण तक ही सीमित न होकर यह अपने भौतिक शरीर को स्वच्छ कर अपनी आन्तरिक ऊर्जा को स्वयं व दूसरों की सेवा में लगाने की भावना है। मानवता ही वास्तविक धर्म होता है, इसका जीवंत उदाहरण है कुम्भ मेला। कुम्भ के धार्मिक और मानवतावादी स्वरूप को समझने के लिए यह जानना अनिवार्य है कि सनातन धर्म क्या है और क्यों कुम्भ धार्मिक अनुष्ठानों से आगे बढ़कर मानवता का पाठ पढ़ाता है। बड़ी मछली छोटी मछली का भोग करती है, यह सांसारिक नियम है, परन्तु जब बड़ी मछली की सुरक्षा की सोचें तो यह विचार धर्मसंगत होता है, विष्णु पुराण में सर्वप्रथम भगवान् विष्णु के मत्स्य रूप का वर्णन केवल संयोग मात्र नही है, धर्म का मूल भाव ही बलवान द्वारा कमजोरों की रक्षा करना है। कुम्भ भी इसी धारणा से आयोजित होता आया है। छठवीं शताब्दी में राजा हर्षवर्धन द्वारा कुम्भ स्नान करके अपना सर्वस्व गरीबों में दान देने का उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तक में किया है। वह यह दर्शाता है कि यदि कोई मानुष धर्मसंगत है तो वह सदा दान और मानव सेवा में लीन रहेगा।

कुम्भ का महत्त्वः

तत्राभिषेकं यः कुर्यात् हंगामे शसितव्रतः।
तुल्यं फलमवान्यिति राजसूयोश्र्वमेधयोः।।

इतिहास, धर्म और आस्था का समागम हर कुम्भ में देखने को मिलता है। इतिहास इसका साक्षी रहा है। गुप्त साम्राज्य (320 से 600 ई.) के समय पुराण आदि साहित्य के आधार पर कुम्भ पर्व के स्थान व काल स्थाई रूप से निर्मित होकर वर्तमान में विकसित हुए हैं। विभिन्न मतानुयायियों का यह भी मत है कि सम्राट हर्षवर्धन के (606 ई. से 647 ई.) द्वारा कुम्भ मेले का सूत्रपात हुआ। प्रसिद्ध यात्री ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत में कुम्भ मेले की महानता का उल्लेख किया है। चीनी यात्री ह्वेनसांग के लिखित विवरण से यह विदित होता है कि हर्षवर्धन स्वयं बौद्ध होते हुए भी अपनी परम धर्म सहिष्णुता और उदारता के कारण प्रत्येक पाँचवीं में छठवें वर्ष प्रयाग में त्रिवेणी तट पर बौद्धिक सनातनधर्मी तथा बौद्ध विद्वानों का विशाल सम्मेलन बुलाकर धर्मावलोकन की व्यवस्था करते थे। इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम देखेंगे कि झाँसी गजेटियर हमें बताता है कि 1751 ईस्वी में

अहमद खाँ बंगस ने दिल्ली के वजीर अवध के नवाब सफदरजंग को परास्त करके इलाहाबाद के किले को घेर लिया था। वह नगर पर अधिकार करने ही वाला था कि इस समय प्रयागराज का कुम्भ आ गया। जिसमें देश-विदेश के विभिन्न धर्मानुरागियों का समागम हुआ, उसमें नागा संन्यासियों का एक विशाल समूह भी श्री राजेंद्र गिरि जी के नेतृत्व में आया। उन्होंने कुम्भ पर्व में किये जाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों को पूर्ण किया तत्पश्चात शस्त्र धारण कर फरवरी से अप्रैल तक अहमद खाँ बंगस की सेना के साथ युद्ध किया और उसे परास्त कर प्रयाग की रक्षा की। इसी प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व गोदावरी (नासिक) चारों कुम्भों में कुम्भ के समय दशनामी संन्यासियो के नेतृत्त्व में धार्मिक अनुष्ठान होते रहते हैं।

पौराणिकता:

कुम्भ का आधुनिक इतिहास 850 साल पुराना है। इसके आधुनिक आयोजन की शुरुआत आदिशंकराचार्य द्वारा की गयी थी। कुम्भ की उत्पत्ति के विषय में मान्यता है कि जब दैवीय व आसुरी शक्तियों का युद्ध हो रहा था तब दोनों का समन्वय कराने के लिए समुद्र-मंथन का आयोजन किया गया। विष्णु पुराण के अनुसार हिमालय के उत्तर में लाखों वर्ष पहले क्षरोद नामक मीठे पानी का समुद्र था। यहाँ मंदराचल को मथानी और वासुकीनाग को रस्सी बनाकर देवताओं तथा दानवों ने क्षिरोद सागर में मंथन शुरू किया। मंदराचल का आधार बनने के लिए भगवान् विष्णु ने कूर्मावतार धारण किया। मंथन करने से पहले विष उत्पन्न हुआ इससे तीनों लोको को बचाने के लिए भगवान् शिव ने इसे अपने गले में धारण कर लिया। इस मंथन में चौदह प्रकार के अद्भुत रत्न निकले जिसमें एक अमृत-कलश भी था, इसको लेकर देवों व असुरों के बीच विवाद हो गया। इस विवाद में पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ अमृत कलश रखा गया था उन स्थानो पर कुम्भ का आयोजन होता है। स्कन्द पुराण के अनुसार समुद्र-मंथन से प्राप्त अमृत कुम्भ से अमृत की कुछ बूँदें चार स्थानों पर गिरा इसलिए भारत में कुम्भ पर्व के चार भेद हो गये। प्रथम गंगाद्वार (हरिद्वार), द्वितीय तीर्थराज (प्रयागराज), तृतीय धारा (उज्जैन) और चतुर्थ गोदावरी तट (नासिक) में घटने वाले इस योग को कुम्भ योग के नाम से पुकारते हैं।

धार्मिक आस्था व सनातन अध्यात्म की समरसता प्रयाग के कुम्भ पर्व में देखने को मिलता है। कहते हैं कि जो मनुष्य कुम्भ पर्व के समागम में स्नान करते हैं, वे सांसारिक बन्धन से मुक्त हो अमरत्व को प्राप्त करते हैं। कार्तिक मास में 1000 बार माघ मास में 100 बार गंगा स्नान करने और वैशाख मास में एक करोड़ बार नर्मदा स्नान करने का जो फल है, वही फल एक बार कुम्भ पर्व का स्नान करने का होता है। प्रयाग में स्नान करने का अपार महत्त्व है, जो माघ मास में और अधिक हो जाता है। कूर्म पुराण के अनुसार यहाँ स्नान करने से सभी पापों का विनाश होता है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। पुराणों के अनुसार स्नान के पुण्यस्वरूप स्वर्ग मिलता है। स्कंद पुराण के अनुसार भक्तिभाव पूर्ण स्नान करने से जिनकी जो कामना होती है, वह निश्चित रूप से पूर्ण होती

है। अग्नि पुराण में कहा गया है कि इससे वही फल मिलता है जो करोड़ गायों को दान करने से मिलता है और मनुष्य सर्वथा पवित्र हो जाता है। जब तक पृथ्वी पर पर्वत तथा समुद्र रहेंगे तब तक गंगा जी में कुम्भ से उत्पन्न अमृत विद्यमान रहेगा।

चुनौतियाँ तथा समाधानः

वर्ष 2019 में 14 जनवरी से 4 मार्च तक प्रयाग में संगम तट पर अर्धकुम्भ मेले का आयोजन किया गया। 55 दिनों तक चलने वाला दुनिया के इस सबसे बड़े आयोजन में एक सरकारी गणना के अनुशार लगभग 24 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया। अकेले 4 फरवरी, 2019 को मौनी अमावस्या के शाही स्नान के दिन लगभग 5 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने संगम में स्नान किया। जहाँ तक कुम्भ मेले के दौरान पर्यावरणीय चुनौती का प्रश्न है तो यह विचारणीय होगा कि जिस नगर की संख्या 12 लाख से अधिक हो और कुम्भ के दौरान प्रतिदिन आने वाले श्रद्धालुओं, तीर्थयात्रियों की संख्या करोड़ों में हो, वहाँ मानव एवं पर्यावरण के मध्य सामंजस्य स्थापित करना असीम चुनौती होगी। यहाँ यह वर्णन करना समीचीन होगा कि वर्ष 2013 में महाकुम्भ के दौरान जब लगभग 10 करोड़ से ज्यादा व्यक्तियो ने संगम में डुबकी लगाई। मेले के प्रथम स्नान दिवस के दौरान उत्तर प्रदेश के स्टेट पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड द्वारा करवाई गई जाँच में संगम के जल में बॉयोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बी.ओ.डी.) की मात्रा 7 मिलीग्राम प्रति लीटर पाई गई जो अधिकतम मान्य स्तर के दोगुने से भी ज्यादा थी। वहीं दूसरी तरफ 2025 के महाकुम्भ में अब तक स्नानार्थियों की संख्या 40 करोड़ पार कर चुकी है। इतनी भारी मात्रा में उमड़े भीड़ को नियंत्रित कर पाना प्रशासन के लिए चुनौतीपूर्ण है। इसके सफल आयोजन करने में आने वाली अनगिनत समस्याओं का सामना करना पड़ा। जिसमें कुछ मूलभूत आने वाली समस्याओं में श्रद्धालुओं की भीड़ एवं ट्रैफिक का प्रबंध करना है। एक निश्चित समय के लिए विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले शहर प्रयागराज में भीड़ के प्रबंध के लिए कुम्भ के अंदर को दुगुना किया गया है। समूचे क्षेत्र को 25 सेक्टरों में बाँटा गया और प्रत्येक सेक्टर में जन सुविधा की व्यवस्था सुचारु रूप से की गई। एक सेक्टर से दूसरे सेक्टर में जाने के लिए 30 पांटून के पुल का निर्माण किया गया है। स्नान के लिए कई घाटों के निर्माण के साथ-साथ विदेशी सैलानियों के स्नान की व्यवस्था भी की गई। श्रद्धालुओं के भीड़ प्रबंधन के लिए जगह-जगह पर सुरक्षा दल अर्थात् आरएफ, सीआरपीएफ, पुलिस, आर्मी, तैनात किए गए हैं।

दूसरी सबसे बड़ी चुनौती सुरक्षा की थी जिसके लिए विभिन्न पुलिस थानों की अवस्थापना एवं विकास व उच्चीकरण का निर्माण, ड्रोन कैमरा से निगरानी कई सुरक्षा कर्मी अग्निशमन केंद्रों का निर्माण एवं वाच टावर बनाए गए हैं। इसी क्रम में यदि कोई श्रद्धालु अपने परिजन से बिछड़ जाता है तो उसे अपने परिजन को संगम तट पर खोज पाना बहुत कठिन हो जाता है जिसके लिए खोया-पाया विभाग बड़ी तत्परता से मेला परिसर के साथ-साथ बाहर के अंदर भी बार-बार घोषणा

की जा रही जिससे भूले बिछड़े लोगों को एक दूसरे से मिलने में आसानी हो सके। मूलभूत सुविधाएँ जैसे बिजली, पानी, खाद्य पदार्थ, रहने की सुविधा, मोबाइल नेटवर्क, बैंकिंग सुविधा भी श्रद्धालुओं को सुचारु रूप से पहुंचना भी चुनौती रहा है। महाकुम्भ 2025 की थीम 'जन भागीदारी से जन कल्याण' है । इस महाकुम्भ की शुरुआत 13 जनवरी 2025 से हुई है। प्रयागराज में महाकुम्भ-2025 का आयोजन 4000 हेक्टेयर (15,812 बीघा) में हुआ है। प्रशासन ने संगम तट पर 41 घाट तैयार किए हैं, जिसमें 10 पक्के और 31 अस्थाई है। इतने बड़े स्तर पर मेले का आयोजन प्रशासन के लिए हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है।

तीसरी चुनौती पर्यावरण एवं स्वच्छता से संबंधित है। विशाल संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं के कारण मेला क्षेत्र को निरंतर स्वच्छ रखना बहुत बड़ी चुनौती है, जिसके लिए स्वच्छताग्राही एवं स्वच्छता दूतों की सेवाएँ ली गई जो निरंतर अपने काम को सजगता से कर रहे हैं। मेले में सफाई के लिए 10,000 से ज्यादा सफाई कर्मचारी तैनात हैं। मेले में 1,50,000 से ज्यादा शौचालय और यूरिनल की व्यवस्था की गयी है। मेले में सफाई के लिए 300 से ज्यादा सक्शन वाहन और जेट स्प्रे सफाई प्रणाली का इस्तेमाल किया गया। इन सब व्यवस्थाओं के बावजूद मेला क्षेत्र में विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है; जैसे- श्रद्धालुओं के अपार जनसंख्या का विचरण संगम के तटीय क्षेत्र में होता है प्रत्यक्ष रूप से खुले में श्रद्धालुओं द्वारा मल-मूत्र का विसर्जन करना पर्यावरण के लिए सर्वाधिक घातक है। यह केवल जल प्रदूषण ही नहीं बल्कि वायु तथा मृदा प्रदूषण का भी मुख्य कारण है।

स्नानार्थियों द्वारा स्नान के दौरान साबुन डिटर्जेंट तथा तेल का इस्तेमाल करने से नदियों में जल प्रदूषण की वृद्धि होती है। पर्व के दौरान विभिन्न स्नान के समय साधु-संन्यासियों द्वारा नदी के जल में बाल छिलवाने की परंपरा है। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार इस संस्कार से जल प्रदूषण का स्तर अत्यंत बढ़ जाता है। इस दौरान श्रद्धालुओं में रक्तजनित व्याधियों तथा पेट के रोगों का संबंधित घटनाओं में वृद्धि हो जाती है।

सामान्यतः कुम्भ पर्व के स्नान के दौरान श्रद्धालुगण केवल आस्था से वशीभूत होकर बिना विचार किये गंगा-यमुना के पावन जल में फूलमाला, प्लास्टिक, कपड़े तथा अन्य अनावश्यक वस्तुएँ फेंके जाते हैं, जो न सिर्फ नदियों के लिए बल्कि पर्यावरण के अन्य घटकों के लिए भी दीर्घकालिक संकट उत्पन्न करते हैं।

अपार जन सैलाब उमड़ने से नगर के साथ-साथ संगम क्षेत्र में भी आधारभूत संरचनाओं में गुणात्मक सुधार नहीं होने से धूल और गंदगी में भी अत्यधिक वृद्धि हो जाती है जो इस दौरान वायु प्रदूषण के मुख्य कारण होते हैं। सामान्यतः कुम्भ पर्व के दौरान तीर्थयात्री, कल्पवासी भोजन पकाने हेतु परंपरागत चूल्हे में लकड़ी तथा उपलों का प्रयोग करते हैं, जो वायु प्रदूषण में वृद्धि के कारण बनते हैं। कुम्भ मेले जैसे किसी आयोजन में पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित करना बेहद

चुनौतीपूर्ण होता है। करोड़ों की संख्या में अपने पाप धोने आए स्वागताकांक्षी अपने पीछे शहर में गंदगी का गुबार, अव्यवस्था के मंजर छोड़ जाते हैं।

इन सभी विलक्षणताओं को तथा पूर्व में घटित घटनाओं को दृष्टिगत रखते हुए कई महीनों तक चलने वाले विशाल पर्व का आयोजन सभी के लिए चुनौतीपूर्ण है। इस विशाल जनसमूह के लिए अस्थाई आवास की सुविधा यात्रियों के लिए पर्याप्त संख्या में यातायात के साधन ट्रेन तथा बसों की उपलब्धता, रहने के लिए होटल तथा धर्मशाला आदि की व्यवस्था, पेयजल, चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था, बिजली की व्यवस्था, कूड़ा-कचरा निस्तारण की व्यवस्था स्नान हेतु नदी पर घाटों की व्यवस्था, यातायात नियंत्रण, स्नान के पश्चात् तीर्थयात्रियों की सुरक्षित वापसी तथा आपराधिक उपद्रवी तत्त्वों पर नियंत्रण आदि बातें प्रशासन के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण है।

निष्कर्षः

प्रयागराज-2025 का महाकुम्भ मेला में विभिन्न प्रकार की तार्किक चुनौतियों के बावजूद यह एक ऐतिहासिक आयोजन होने का वादा करता है, जो पिछले आयोजनों की सफलता को आगे बढ़ाते हुए नवाचार की प्रगति को अपनाएगा। प्रयागराज का समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ताना-बाना, अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ मिलकर तीर्थयात्रियों को आस्था, एकता और भक्ति का एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करेगा। आयोजन की सतर्क योजना और परम्परा के साथ आधुनिक तकनीक का मेल कुम्भ मेले को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा, जो बड़े पैमाने पर आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उत्सवों की मेजबानी के लिए एक वैश्विक मानक स्थापित करेगा। जब लाखों-करोड़ों जनसमूह एक बार फिर संगम पर एकत्रित होंगे, तो 2025 का महाकुम्भ मेला भारत की स्थायी आध्यात्मिक विरासत और विविधता और सद्भाव का जश्न मनाने की उसकी प्रतिबद्धता का एक शक्तिशाली प्रतीक बना रहेगा।

सन्दर्भः

- https://kumbh.gov.in/
- https://pib.gov.in/Pressreleaseshare-aspx?PRID=1567238
- http://indianculture.gov.in/intangible-culture-heritage/social-practices-rituals&and-festive-events/kumbh-mela-0
- https://pib.gov.in/PressReleasePage-aspx?PRID=2080741

Mānaviki सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

कुम्भ मेलों का ऐतिहासिक महत्त्व

डॉ. वीरेन्द्र चावरे*

सारांश : कुम्भ मेला हर 6 वर्षों में आयोजित होता है, जो न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से अपितु सांस्कृतिक और खगोलशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यह आयोजन न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरे विश्व में धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक प्रतिष्ठित है। प्रस्तुत शोधपत्र में कुम्भ मेले के ऐतिहासिक, धार्मिक और खगोलशास्त्रीय महत्त्व का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। कुम्भ मेले के ऐतिहासिक महत्त्व को देखते हुए प्रशासनिक प्रबंधन के विभिन्न आयामों, जैसे विभागों के बीच समन्वय, बुनियादी ढाँचे का विकास, जनसंचार प्रबंधन, अग्निशमन प्रबंधन, तथा भोजन एवं जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं जैसी आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता पर विशेष घ्यान दिया जाना चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

'कुम्भ, अर्धकुम्भ और सिंहस्थ' अनिरुद्ध जोशी द्वारा लिखित आलेख, कुम्भ मेले के इतिहास और महत्त्व पर प्रकाश डालती है। इसी क्रम में, संजय शुक्ला की ई-पुस्तक 'सिंहस्थ-कुम्भ महापर्व 2016, उज्जैन' के सिंहस्थ कुम्भ महापर्व का फोटोग्राफिक दस्तावेजीकरण करते हुए इसके सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। वहीं, सिद्धार्थ शंकर गौतम की पुस्तक 'सनातन संस्कृति का महापर्व सिंहस्थ' सिंहस्थ कुम्भ के अनुष्ठानों, परंपराओं और महत्त्व का समृद्ध विवरण प्रस्तुत करती है, जो पाठकों को इसकी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत की गहरी समझ प्रदान करती है।

कुम्भ का आयोजन और उद्देश्य

कुम्भ मेला हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक जैसे चार पवित्र स्थलों पर विशेष खगोलीय योग के समय आयोजित होता है। इस मेले का मुख्य उद्देश्य संत-महात्माओं, मठाधीशों, शंकराचार्यों और साधु-संतों के मार्गदर्शन में धर्म और वेदों के अनुरूप दिव्य उपदेशों को जनमानस के हृदय में श्रद्धा और भक्ति के साथ स्थापित करना है। यह पर्व मानव जीवन के कष्टों को दूर करने और आध्यात्मिक शुद्धि के उद्देश्य से आयोजित होता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्य, चंद्रमा और

*सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन, अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

बृहस्पति का विशेष संयोग कुम्भ मेले का आधार होता है। सूर्य को राजा, चंद्र को मंत्री और बृहस्पति को देवगुरु माना जाता है। इन तीनों ग्रहों के विशिष्ट योग से ही कुम्भ पर्व का निर्धारण होता है।

कुम्भ का ऐतिहासिक महत्व

पुरातन समय से ही तीर्थ स्थलों के प्रति गहरी श्रद्धा प्रकट करते हुए जनमानस को आत्मकल्याण की दिशा में प्रेरित करने का प्रयास किया गया है। प्राचीन काल में ऋषियों-मुनियों ने समाज की भलाई और लोककल्याण के लिए धार्मिक और पवित्र स्थानों पर विभिन्न ज्ञान सत्रों का आयोजन किया। इन आयोजनों के माध्यम से धर्म का महत्त्व और उसकी प्रासंगिकता को समझाने के साथ-साथ समाज को नई प्रेरणा प्रदान की जाती थी। धार्मिक स्थलों पर इन आयोजनों का उद्देश्य धार्मिक संस्कृति, परंपराओं और आत्मीयता को अक्षुण्ण बनाए रखना था। पूरे भारत की सांस्कृतिक झलक, धार्मिक आस्था की नींव, और जनता के बंधुत्व का अनुभव एक स्थान पर सहजता से हो सके, यही इन आयोजनों का मुख्य उद्देश्य था। इसी परंपरा में मनाया जाने वाला प्रमुख धार्मिक पर्व है 'कुम्भ'।

'कुम्भ' शब्द वास्तव में एक विशेष खगोलीय संयोग का प्रतीक है, जो ग्रहों और राशियों के विशेष योग से बनता है। अथर्ववेद के अनुसार, सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी ने कहा कि उन्होंने चार पवित्र कुम्भ पर्वों की रचना कर उन्हें प्रयाग, उज्जैन, हरिद्वार और नासिक जैसे पावन स्थलों पर स्थापित किया। 'कुम्भ' का अर्थ है कलश, और कुम्भ महापर्व की कथा भी इसी कलश से जुड़ी हुई है। हालाँकि, यह कोई साधारण कलश नहीं है, बल्कि अमृत कलश है, जो कुम्भ महापर्व की पृष्ठभूमि का आधार है। प्राणायाम की तरह कुम्भ पर्व को भी तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है- 1. पूरक (श्वास भरना), 2. कुम्भक (श्वास रोकना), और 3. रेचक (श्वास छोड़ना)। शरीर को भी एक घड़े या कुम्भ के रूप में देखा गया है, जिसमें प्राणों और श्वासों का प्रवाह होता है। कुम्भ पर्व मानो श्वासों का महा उत्सव है, जहाँ अनगिनत श्वासें मिलती हैं, भरती हैं, और खाली होती हैं। यह पर्व मानवीय जीवन की गहराई और आध्यात्मिकता का प्रतीक है।

सिंहस्थ कुम्भ महापर्व भारतीय धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा उत्सव है। इसे सनातन धर्मावलंबियों का विश्व का सबसे बड़ा मेला माना जाता है। कुम्भ पर्व के संदर्भ में पुराणों में कई कथाएँ वर्णित हैं। भारतीय संस्कृति में कलश का विशेष स्थान है, जो केवल कला और संस्कृति ही नहीं, बल्कि संपूर्ण सृष्टि का प्रतीक है। कुम्भ पर्व में स्नान को मोक्षदायक कहा गया है, जहाँ मोक्ष का अर्थ सांसारिक बंधनों से मुक्ति पाना है। आदिशंकराचार्य ने भारत को धर्म के सूत्र में बाँधने के लिए अपने अनुयायी संन्यासियों को दशनामी परंपरा में संगठित किया और कुम्भ पर्व में प्रथम स्नान का अधिकार दिलाया। भारतीय संस्कृति में कुम्भ मंगल का प्रतीक माना गया है। हालाँकि, यह पर्व भारत में कब से मनाया जा रहा है, इसके बारे में विद्वानों की एकमत

राय नहीं है। देवताओं और असुरों के बीच हुए समुद्र-मंथन से जुड़ी घटनाएँ कुम्भ पर्व के प्रारंभिक संदर्भ माने जाते हैं, जो पुराणों और इतिहास में समान रूप से वर्णित हैं।

कुम्भ महापर्व का पौराणिक महत्त्व

कुम्भ पर्व के आयोजन से जुड़ी कई कथाएँ प्रचलित हैं, लेकिन इनमें सबसे प्रामाणिक कथा समुद्र-मंथन से संबंधित है। पौराणिक कथा के अनुसार, देवता और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया, जिसमें अमृत का कलश प्राप्त हुआ। अमृत को दानवों से बचाने के लिए इसकी रक्षा का कार्य बृहस्पति, चंद्रमा, सूर्य और शनि को सौंपा गया। इस बीच, इंद्र के पुत्र जयंत अमृत कलश लेकर भाग गए। दानवों ने इस चाल को समझ लिया, जिससे देवताओं और दानवों के बीच घोर युद्ध छिड़ गया। यह युद्ध 12 दिनों तक चला, जो मानव के लिए 12 वर्षों के बराबर था। इस संघर्ष के दौरान अमृत की कुछ बूंदें धरती पर हरिद्वार, प्रयागराज (इलाहाबाद), नासिक और उज्जैन में गिरीं। सूर्य, गुरु और चंद्रमा ने अमृत कलश की रक्षा में विशेष भूमिका निभाई। इन्हीं ग्रहों की विशिष्ट स्थिति में कुम्भ पर्व मनाने की परंपरा आरंभ हुई। मान्यता है कि जहाँ-जहाँ अमृत की बूंदें गिरीं, वहाँ की नदियाँ-गंगा, यमुना, गोदावरी और क्षिप्रा-अमृतमय हो गईं। ग्रहों की विशिष्ट स्थिति के साथ बनने वाले योग में महाकुम्भ पर्व का आयोजन होता है।

कुम्भ महापर्व हर 6 वर्षों में हरिद्वार में गंगा तट, प्रयाग में गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम पर आयोजित किया जाता है। इस पर्व के दौरान संत परंपरा का पालन किया जाता है। मान्यता है कि साधु-संतों के 13 अखाड़े-शैव, वैष्णव और उदासीन परंपराओं से जुड़े संत परंपरा का निर्वहन करते हैं। पर्व के दौरान त्रिशूल स्थापना, धर्म ध्वजा की स्थापना, पेशवाई और शाही स्नान जैसी धार्मिक गतिविधियाँ संपन्न होती हैं।

कुम्भ पर्व का महत्त्व

भारत में घटनाओं और व्यक्तित्वों को स्थायी रूप से जनजीवन और संस्कृति का हिस्सा बनाने के लिए न केवल इतिहास और साहित्य का सृजन हुआ, बल्कि इन्हें सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से भी जोड़ा गया। धार्मिक पर्व, जैसे रामनवमी आदि, हमें हमारे पूर्वजों और उनके कार्यों की स्मृति दिलाते हैं। प्रतिवर्ष मनाए जाने वाले ये पर्व और उत्सव हमारे मन में जिज्ञासा और ज्ञान की उत्सुकता उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार, इन परंपराओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों से जुड़ाव होता है और हमारा इतिहास अमर बन जाता है।

भारतीय व्रत, पर्व, पूजा-पाठ, कर्मकांड और सांस्कृतिक उत्सव जैसे शरदोत्सव और वसंतोत्सव, अपने भीतर गहरे ऐतिहासिक महत्त्व समेटे हुए हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने इन ऐतिहासिक घटनाओं को मंत्रों और सूत्रों के माध्यम से संरक्षित किया। प्रत्येक भारतीय इन परंपराओं से अपने जीवन के लिए अमूल्य प्रेरणा प्राप्त करता है और अपने पूर्वजों की तरह जीवन में स्फूर्ति

और ऊर्जा का अनुभव करता है। भारतीय संस्कृति, इतिहास और जीवन मूल्य अमर हैं, क्योंकि वे सनातन और वर्तमान का हिस्सा हैं। यही कारण है कि भारत को 'अमृत भूमि' कहा जाता है और इसकी संस्कृति सनातन और अटल मानी जाती है। यूनान और रोम जैसे साम्राज्य मिट गए, लेकिन भारत आज भी अपनी पहचान और संस्कृति के कारण खड़ा है। यह हमारी महान परंपराओं और महापुरुषों के प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने हमारे जीवन में इतिहास और संस्कृति को गहराई से पिरो दिया है। कुम्भ पर्व हमारे इतिहास की एक महान घटना की स्मृति को जीवित रखता है। यह पर्व देवताओं और असुरों के बीच हुए संघर्ष (देवासुर संग्राम) की याद दिलाता है, जिसमें देवताओं ने अमृत प्राप्त किया था। यह विजय आध्यात्मिकता की भौतिकता पर, ईश्वरत्व की नश्वरता पर और अमरत्व की मृत्यु पर जीत को दर्शाती है। कुम्भ पर्व के माध्यम से, हम अमृत कुम्भ की उस कथा का स्मरण करते हैं, जिसने जीवन के मूल्यों और उनकी महत्ता पर गहन विचार करने के लिए प्रेरित किया। कुम्भ पर्व का महत्त्व केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। यह पर्व हमें न केवल इतिहास की प्रेरणा देता है, बल्कि वर्तमान जीवन की समस्याओं का समाधान भी सुझाता है। इस पर्व की परंपरा हमारे जीवन में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विचारों को बनाए रखने का माध्यम है। कुम्भ पर्व इसीलिए मनाया जाता है कि हम अपने इतिहास और संस्कृति के अद्‌भुत आदर्शों को समझ सकें और उन्हें अपने जीवन में आत्मसात कर सकें।

निष्कर्ष:

प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ मेला-2025 ने न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व को पुनः स्थापित किया, बल्कि प्रशासनिक प्रबंधन और समन्वय की उत्कृष्टता का भी परिचय दिया। इस महापर्व में जहाँ करोड़ों श्रद्धालु अपनी आस्था और विश्वास के साथ शामिल हुए, वहीं प्रशासन ने उनकी सुरक्षा, यातायात, आवास, स्वास्थ्य और स्वच्छता से संबंधित व्यवस्थाओं को प्रभावी ढंग से लागू कर मेले को सुव्यवस्थित बनाया। स्थायी विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए, प्रशासन ने शहर और मेला क्षेत्र में ऐसी संरचनाओं और सुविधाओं का निर्माण किया, जिनसे भविष्य में भी लाभ प्राप्त हो सके। स्थानीय समुदाय, सेवाभावी संस्थाओं और विभिन्न सरकारी विभागों के समन्वित प्रयासों ने इस आयोजन को अद्वितीय बना दिया। महाकुम्भ-2025 का यह अनुभव यह सिखाता है कि कैसे पारंपरिक धार्मिक आयोजनों को आधुनिक प्रशासनिक दृष्टिकोण से संपन्न किया जा सकता है। यह आयोजन न केवल भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता की जीवंतता का प्रतीक बना, बल्कि समर्पण, संगठन और सामूहिक प्रयास के महत्त्व को भी रेखांकित करता है। महाकुम्भ मेला उत्तर प्रदेश प्रशासन के प्रबंधन कौशल और जनभागीदारी की एक उत्कृष्ट मिसाल बनकर उभरा है, जो भविष्य के आयोजनों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

संदर्भ सूची:

1. जोशी, अनिरुद्ध '**कुम्भ, अर्धकुम्भ और सिंहस्थ**' वेबदुनिया हिन्दी।
2. शंकर गौतम, सिद्धार्थ '**सनातन संस्कृति का महापर्व सिंहस्थ**', प्रभात पैपरबैक्स, नई दिल्ली, 2016.
3. शुक्ला, संजय '**सिंहस्थ- कुम्भ महापर्व २०१६, उज्जैन**' भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, इण्डियन म्यूजियम, कोलकत्ता, पश्चिम बंगाल, 2016.
4. शर्मा, सुशील कुमार '**सिंहस्थ २०१६-क्या खोया, क्या पाया**', हिन्दीकुन्ज.कॉम।
5. सिंहस्थ-2016 प्रशासकीय प्रतिवेदन, उज्जयिनी।
6. www.ijsr.net/archive/v6i4/17031701accessed on 05/01/2024.
7. www.iciest.in/Paper9102.pdf accessed on 10/01/2024.

महाकुम्भ-आस्था, संस्कृति, परम्परा और मानवता के संगम का भव्य उत्सव

प्रो. सुषमा पाण्डेय* कु. नित्या गुरुंग**

सारांश : महाकुम्भ, जिसे विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक और सामाजिक आयोजन में से एक माना जाता है, यह भारतीय इतिहास, आस्था, परम्परा और संस्कृति का अद्वितीय प्रतीक है। यह कार्यक्रम मात्र धर्म से ही नहीं संबंधित है, अपितु यह अध्यात्म और विश्व बंधुत्व के विचारों के विश्वासों का संगम है। पौराणिक कथाओं में कुम्भ को समुद्र मंथन की कथा से जोड़ा जाता है, जो इसे धार्मिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण बनाती है। आध्यात्मिकता के अलावा यह कार्यक्रम सामाजिक एकता, भाईचारा और मानवता का संदेश संपूर्ण विश्व को प्रदान करने का कार्य करती है। असंख्य श्रद्धालु, संत और तीर्थयात्री विभिन्न पृष्ठभूमियों से आकर बिना किसी भेदभाव से महाकुम्भ में भाग लेते हैं। वर्तमान काल में महाकुम्भ जैसे भव्य कार्यक्रम के आयोजन के लिए और प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने के लिए विभिन्न तकनीकी उपकरणों का प्रयोग किया गया है, जिसकी सहायता से महाकुम्भ जैसे वैश्विक मेले का आयोजन सुगमता एवं सरलतापूर्वक हो पाना संभव हो सका है। हालाँकि इस भव्य आयोजन के साथ पर्यावरणीय समस्याएँ, प्रबंधकीय योजनाएँ, नदी संरक्षण और भीड़ नियंत्रण जैसी चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में महाकुम्भ के विभिन्न आयाम जैसे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय एवं प्रशासकीय आयाम पर चर्चा की गयी है जो इस आयोजन को अद्वितीय बनाने का कार्य करता है। महाकुम्भ विश्व के पटल पर भारत के गौरव का प्रतीक है।

मुख्य शब्द : महाकुम्भ, आस्था, संस्कृति, परम्परा, संगम।

प्रस्तावना

महाकुम्भ विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक एवं सामाजिक समागम है जो प्रत्येक 12 वर्षों के अंतराल में आयोजित किया जाता है। यह राष्ट्रीय एकता और विश्व-बंधुत्व की भावना का एक सजीव उदाहरण है, जहाँ असंख्य भक्त, तीर्थयात्री और साधु-संन्यासी अपने आप इस आयोजन में मोक्ष की प्राप्ति की लालसा लिए जुड़ते हैं। यह मात्र एक पर्व नहीं, अपितु आस्था, भक्ति और उत्साह

*आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, **शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

का अतुल्य समागम है जो श्रद्धालुओं को साथ लाने का कार्य करता है। महाकुम्भ शब्द हिंदू परंपराओं और पौराणिक कथाओं के संदर्भ में अत्यधिक महत्त्व रखता है। महाकुम्भ शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के दो शब्द 'महा' और 'कुम्भ' के समागम से हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ क्रमशः महान और कलश से है। हिंदू पौराणिक कथाओं में कुम्भ शब्द समुद्र मंथन के दौरान निकले अमृत कलश का प्रतीक है। महाकुम्भ की जड़ें 'समुद्र मंथन' की कथा से जुड़ी हैं। पुराणों के अनुसार, देवताओं और असुरों ने अमृत की प्राप्ति के लिए क्षीरसागर में मंथन किया। किन्तु अमृत को प्राप्त करने के लिए दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध हुआ। देवताओं और दानवों के संघर्ष के मध्य धरती पर कुछ बूंदें अमृत की गिरीं और उन्हीं पवित्र स्थानों पर 12 वर्षों के अंतराल पर कुम्भ का आयोजन किया जाता है। ये स्थान हैं–

1. प्रयागराज (इलाहाबाद)– जो गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदी के संगम पर है।
2. हरिद्वार– जो गंगा नदी के तट पर है।
3. उज्जैन– जो क्षिप्रा नदी के तट पर है।
4. नासिक– जो गोदावरी नदी के तट पर है।

ये स्थान कुम्भ मेले के लिए पवित्र स्थल बने जहाँ प्रत्येक 12 वर्षों में महाकुम्भ मनाया जाता है। किंवदंती में यह भी उल्लेख है कि इस समय के दौरान ग्रहों की स्थिति इन पवित्र नदियों में स्नान के आध्यात्मिक लाभों को बढ़ाती है। महाकुम्भ का सनातन धर्म में अत्यधिक महत्त्व है। यह धारणा है कि इस अवधि के दौरान पवित्र नदियों में स्नान कर डुबकी लगाने से साक्षात् मोक्ष की प्राप्ति होती है। महाकुम्भ एक धार्मिक एवं सामाजिक त्योहार है, जहाँ पर संपूर्ण विश्व अपने मन से सभी कटुभाव, द्वेष और बुराई को दूर करके राष्ट्रीय एवं विश्व एकता का परिचय देता है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

कुम्भ मेला एक अत्यन्त ही प्राचीन पर्व है। कुम्भ मेला का पहला ऐतिहासिक विवरण 643 ई. में चीनी बौद्ध भिक्षुक ह्वेनत्सांग द्वारा लिखा गया था। जो बौद्ध शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत आए थे। ह्वेनत्सांग ने अपनी पुस्तकों में माघ मेले में होने वाले उत्सव का विवरण दिया और राजा हर्षवर्धन की उदारता का अत्यन्त ही सजीव विवरण प्रस्तुत किया। पाँचवीं या छठीं शताब्दी का नरसिंह पुराण भी इस तथ्य का प्रमाण है कि गुप्तकाल में एक महीने तक चलने वाला मेला होता था, जहाँ विभिन्न वर्गों एवं विभिन्न संप्रदायों के विद्वान एकत्रित होकर चर्चा करते थे। प्रोफेसर डी. पी. दुबे के अध्ययन ने बताया कि कुम्भ मेले की उत्पत्ति 12वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के कारण हुई थी। प्रोफेसर दुबे के अध्ययन के अनुसार, यह उत्सव आध्यात्मिक प्रवचन और सामाजिक सामूहिक समारोह के लिए एक मंच के रूप में विकसित हुआ था। यह मेला व्यक्ति की अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

महाकुम्भ का ज्योतिषीय महत्त्व

महाकुम्भ का ज्योतिषीय महत्त्व बहुत गहरा है, जो आकाशीय पिण्डों की चाल की गहराई से जुड़ा हुआ है। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार, ग्रहों की स्थिति विशेष रूप से बृहस्पति (गुरु) और सूर्य महाकुम्भ के समय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह घटना तब होती है जब यह आकाशीय पिण्ड एक ऐसे तरीके से सरेंखित होते हैं, जिसे अत्यधिक शुभ और आध्यात्मिक विकास के लिए अनुकूल माना जाता है। कुम्भ मेले के दौरान बृहस्पति का मेष राशि में प्रवेश करना प्रमुख ज्योतिषीय कारकों में से एक है। इस खगोलीय घटना को बृहस्पति के मेष राशि में प्रवेश के रूप में माना जाता है, जिसके बारे में यह कहा जाता है कि यह आध्यात्मिक जागृति उच्च दिव्य कृपा और सकारात्मक ऊर्जा की अवधि लाता है। आध्यात्मिक पुण्य को प्राप्त करने और मोक्ष प्राप्त करने के लिए इसे सबसे शक्तिशाली माना जाता है। ज्योतिषीय रूप से यह अवसर व्यक्तिगत चिन्तन एवं सकारात्मक ऊर्जा निर्धारित करने के लिए और अपने कर्मों के ऋणों को साफ करने के लिए प्रदान करता है। महाकुम्भ आध्यात्मिक प्रथाओं में संलग्न होने और शरीर व आत्मा दोनों की शुद्धि के लिए अत्यन्त ही अनूठा क्षण होता है।

महाकुम्भ का सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व

पवित्र गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम पर प्रत्येक 12 वर्षों में कुम्भ का आयोजन अपने आप में गहरा सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व रखता है, जो ईश्वरीय खोज और मोक्ष की यात्रा का प्रतीक है। महाकुम्भ के दौरान पवित्र नदियों में स्नान करने से व्यक्ति को शुद्धि प्राप्त होती है। किन्तु यह शुद्धि मात्र शारीरिक शुद्धि से नहीं अपितु आत्मा की पवित्रता से संबंधित है। महाकुम्भ के दौरान व्यक्ति अपनी नकारात्मक ऊर्जा का त्याग कर अपने पापों से मुक्ति पाता है और अपने तन–मन को पवित्र करता है। शाही स्नान महाकुम्भ पर्व का सबसे महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है। जहाँ भक्त, संत और तपस्वी इत्यादि वैदिक मंत्रों के बीच भोर में पवित्र नदी में डुबकी लगाते हैं। महाकुम्भ के दौरान किए जाने वाले यज्ञ, अनुष्ठान और पूजा का अत्यन्त ही महत्त्व है, जहाँ प्रत्येक अनुष्ठान पौराणिक रूप से महत्त्व रखता है। महाकुम्भ में भाग लेने वाले संत, विद्वान् एवं गुरु इत्यादि के मार्गदर्शन की सहायता से व्यक्ति एवं संसार को नैतिक मार्ग प्रदर्शित होता है, जिस पथ पर यात्रा करने से समाज अपने उत्कृष्ट आदर्श तक पहुँचता है। गुरुओं और संतों का सान्निध्य समाज को ज्ञान और संस्कार प्रदान करता है जिससे व्यक्ति को परम सत्य की अनुभूति होती है।

महाकुम्भ में भाग लेने वाले संत साधु और गुरु समाज में अध्यात्म और धार्मिक सद्भाव की स्थापना करते हैं। वहीं नागा संप्रदाय के साधु व्यक्ति को वैराग्य और सांसारिक क्षणभंगुरता का बोध कराते हैं और समाज को परमात्मा के सत्य से अवगत कराते हैं। गुरुओं का सान्निध्य व्यक्ति मात्र के विकास के लिए नहीं अपितु संपूर्ण संसार में ज्ञान की स्थापना के लिए अत्यन्त आवश्यक है। महाकुम्भ इसी ज्ञान की स्थापना के लिए और सौहार्द की भावना को बनाए रखने के लिए सभी

संतों और गुरु संप्रदाय को एक साझा मंच प्रदान करता है। महाकुम्भ में आए प्रत्येक संत का विश्व को एकमात्र संदेश यह है कि व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासन लाए और अहंकार की भावना का त्याग कर आत्मावलोकन की यात्रा पर चले और समाज को अपनी आदर्श स्थिति तक पहुँचाए। महाकुम्भ अपने आप में एक प्रक्रिया है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्व–अवलोकन द्वारा परम लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करता है।

महाकुम्भ का सामाजिक महत्त्व

महाकुम्भ मेला दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक समागमों में से एक है, जो भारतीय संस्कृति एवं परम्परा में निहित सामाजिक समरसता को प्रदर्शित करने का कार्य करता है। विश्व एवं समाज में फैल रही अव्यवस्था और अराजकता के लिए महाकुम्भ अत्यन्त अतुलनीय सकारात्मक उदाहरण है। महाकुम्भ जैसे आयोजन में एक ही स्थान पर एक ही नदी में असंख्य श्रद्धालु अपने पापों को धुल कर सामाजिक एकता का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण बनने का कार्य करते हैं। जहाँ बिना किसी द्वेष और कटु भाव के सभी तीर्थयात्री, संत–साधु, विभिन्न जाति और वर्ग के व्यक्ति एक साथ आते हैं। यह समागम समुदाय और समानता की भावना को बढ़ावा देता है। महाकुम्भ धार्मिक महत्त्व से परे भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह आध्यात्मिक नेताओं, गुरुओं के नेतृत्व में दर्शन नैतिकता और सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करने के लिए एक साझा मंच प्रदान करता है। महाकुम्भ तीर्थयात्रियों के बीच पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा देकर सामाजिक सद्भाव में योगदान देता है। इसी प्रकार महाकुम्भ मेला मात्र एक धार्मिक सभा ही नहीं अपितु एकता, सौहार्द, आस्था और भारतीय सभ्यता व संस्कृति के स्थायी सामाजिक ताने–बाने का प्रतीक है।

महाकुम्भ का आर्थिक महत्त्व

महाकुम्भ मेला न केवल एक धार्मिक समागम है बल्कि एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक आयोजन भी है। मेले के दौरान तीर्थयात्रियों, पर्यटकों और विक्रेताओं की भारी आमद से काफी आर्थिक गतिविधियाँ उत्पन्न होती हैं, जिसके कारण मेला शहर में और उसके आसपास के क्षेत्र को आर्थिक लाभ होता है। इस आयोजन में वस्तुओं और सेवाओं की मांग की वृद्धि होती है, जिससे स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा मिलता है। लाखों तीर्थयात्रियों के इस क्षेत्र में आने से होटल, गेस्ट हाउस, रेस्टोरेंट, परिवहन प्रदाता और स्ट्रीट वेंडर्स की आय में वृद्धि होती है। आयोजन के दौरान स्थापित अस्थाई आवास, खाद्य स्टॉल और अन्य सुविधाओं के अवसर उत्पन्न होते हैं और लघु उद्योगों को विकास करने का अवसर मिलता है। महाकुम्भ परोक्ष और अपरोक्ष रूप से रोजगार के अवसर प्रदान करता है, जिससे हजारों लोगों को आजीविका प्राप्त होती है। कारीगरों और शिल्पकारों को लाभ मिलता है क्योंकि उनके उत्पादों और पारम्परिक शिल्प वस्तुओं को आयोजन के दौरान बाजार मिलता है। यह मेला वैश्विक स्तर पर पर्यटन को भी बढ़ावा देता है, यह विदेशी पर्यटकों को

आकर्षित करता है जो विदेशी मुद्रा आय में योगदान करते हैं। महाकुम्भ मेला एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक उत्प्रेरक है जो स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को उत्तेजित करने का कार्य करता है, रोजगार पैदा करता है, बुनियादी ढाँचे में सुधार करता है और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देता है। इसका आर्थिक प्रभाव आयोजन की अवधि मात्र तक ही नहीं अपितु भारत के आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संगठनात्मक एवं प्रशासनात्मक पहलू

महाकुम्भ के आयोजन को सुगमतापूर्वक चलाने के लिए केंद्रीय सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन का आपसी समन्वय होना अति आवश्यक है। ये संस्थाएँ विभिन्न सार्वजनिक सेवाओं और धार्मिक अनुष्ठानों में अपना योगदान देती हैं। धार्मिक अखाड़े और धार्मिक संगठन भी इस कार्यक्रम में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हुए अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन कर प्रत्येक नागरिक की सहायता करने का प्रयास करते हैं। आयोजन में विभिन्न योजनाओं सरकारी बजटों और निजी दान द्वारा धनराशि आती है, जिससे कार्यक्रम को आर्थिक बल प्राप्त होता है। प्रशासन ने जनसंचार के लिए विभिन्न मीडिया हेल्पलाइन और डिजिटल प्लेटफॉर्म का निर्माण किया है जिसकी सहायता से वास्तविक समय में लोगों को आवश्यक सहायता और आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। कुम्भ मेले में चल रहे जनसंचार के विभिन्न पोर्टल यात्रियों की सुविधा और आपातकाल में मदद पहुँचाने के लिए अति आवश्यक है। महाकुम्भ में करोड़ों तीर्थयात्रियों की यात्रा को मंगलमय और सरल बनाने के लिए राजकीय सरकार केंद्रीय सरकार और प्रशासनिक व्यवस्था की आपसी एकता की सहायता से वैश्विक स्तर के कार्यों को देखा जा सकता है। भक्तों के ठहरने के लिए अस्थाई आवासों, शिविरों और तंबुओं की व्यवस्था की गयी है। इसके साथ–साथ स्वच्छता और स्वच्छ जल की आपूर्ति को सुनिश्चित किया गया है। महाकुम्भ में शौचालयों, पानी के टैंकरों और ड्रेनेज सिस्टम की व्यवस्था की गयी है। यातायात को सुगम बनाने के लिए विशेष रूप से नयी ट्रेनों, बसों और शटल सेवाओं को भी शुरू किया गया है। स्वास्थ्य सेवाओं और आपातकालीन सेवाओं के लिए मेला क्षेत्र में ही अस्थाई अस्पतालों का निर्माण किया गया है जो मेले में आए प्रत्येक नागरिक की सुविधा के लिए है। कचरे के प्रबंधन के लिए पर्यावरण अनुकूल योजनाएँ अपनायी गयी हैं जैसे कचरे का पृथक्करण और पुनर्चक्रण। पर्यावरणीय जागरूकता को बनाने के लिए और नदियों की सुरक्षा के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए प्रशासन ने विभिन्न कदम उठाए हैं जिससे नदियों में स्वच्छता बनी रहे। नागरिक सुरक्षा के लिए नवीन तकनीकी उपकरणों जैसे सी.सी.टी.वी., ड्रोन और आधुनिक निगरानी प्रणाली की सहायता ली गयी है, जिससे कार्यक्रम स्थल को सुरक्षा मिलती है। भीड़ प्रबन्धन के लिए विशेष द्वार, विशेष मार्ग और विशेष निकासी योजना बनायी गयी है। इसके साथ ही आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन टीमों को भी तैनात किया गया है। प्रशासकीय तंत्र महाकुम्भ आयोजन में केंद्रक का कार्य कर रही है

ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि महाकुम्भ में भाग लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति मात्र गंगा, यमुना और सरस्वती नदी के संगम का ही नहीं बल्कि केंद्र सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन के आपसी तालमेल का साक्षी बन रहा है। महाकुम्भ का प्रबंध वैश्विक स्तर पर अपने संयोजित प्रबंधन और समर्पण का एक अतुलनीय उदाहरण बन रहा है।

महाकुम्भ का वैश्विक महत्त्व

यह सिर्फ एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ऊर्जा, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक समरसता का प्रतीक भी है। इसकी महत्ता केवल भारतीय सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अब वैश्विक स्तर पर भी ध्यान आकर्षित कर रहा है। महाकुम्भ का वैश्विक महत्त्व इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रभाव में निहित है। यह आयोजन भारत की प्राचीन परंपराओं को संरक्षित करने के साथ-साथ उन्हें विश्व पटल पर भी प्रस्तुत करता है। हर बार करोड़ों विदेशी पर्यटक, शोधकर्ता और आध्यात्मिक साधक इसमें भाग लेते हैं, जिससे यह न केवल एक धार्मिक उत्सव बल्कि एक वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान का मंच भी बन जाता है। 2017 में यूनेस्को ने इसे 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' के रूप में मान्यता दी, जिससे इसका महत्त्व और अधिक बढ़ गया। आधुनिक समय में महाकुम्भ ने स्वयं को तकनीकी और पर्यावरणीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लिया है। डिजिटल तकनीक की मदद से अब श्रद्धालु ऑनलाइन जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, पंजीकरण कर सकते हैं और लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से घर बैठे भी अनुष्ठानों का लाभ उठा सकते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का भी एक प्रभावी माध्यम बन गया है, जिससे दुनिया भर के लोग भारतीय परंपराओं, योग, ध्यान और आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होते हैं। समय के साथ महाकुम्भ ने अपनी प्रासंगिकता बनाए रखी है और आधुनिकता के साथ तालमेल बैठाते हुए भी अपनी पारंपरिक मूल आत्मा को बनाए रखा है। यह आयोजन न केवल आध्यात्मिकता को पुनर्जीवित करता है, बल्कि समाज में एकता, शांति और सेवा की भावना को भी बढ़ावा देता है। यह दुनिया का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम होने के साथ-साथ मानवता के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण भी है, जहाँ विभिन्न पंथों, संस्कृतियों और राष्ट्रीयताओं के लोग एक ही उद्देश्य के लिए एकत्रित होते हैं -आध्यात्मिक उत्थान और आत्मशुद्धि।

उपसंहार

महाकुम्भ एक दैवीय महासंगम है, जो आध्यात्मिकता, संस्कृति, भव्यता और मानवता के महासागर को एक साथ समाहित करता है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक आत्मा का एक उज्ज्वल प्रतिबिंब है, जो सहस्राब्दियों से चली आ रही परंपराओं, अनुष्ठानों और आध्यात्मिक सिद्धांतों का जीवंत प्रमाण है। महाकुम्भ, जिसकी तुलना दुनिया के किसी भी अन्य आयोजन से नहीं की जा सकती, यह दिव्य शक्ति और भक्ति का महासमर रचता

है। यह आयोजन न केवल धार्मिक विश्वासों की परिणति है, बल्कि यह एक अलौकिक यात्रा भी है, जिसमें लाखों साधु-संत, नागा बाबा, तपस्वी और श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं, जो अपने तप और साधना से इस क्षण को और भी दिव्य बना देते हैं। जब सूर्योदय की प्रथम किरणें गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर पड़ती हैं, तब वह दृश्य किसी स्वर्गीय चित्रण से कम प्रतीत नहीं होता। महाकुम्भ का आयोजन केवल श्रद्धा और भक्ति तक सीमित नहीं है, यह एक दैवीय व्यवस्था और प्रशासनिक चमत्कार भी है। जब करोड़ों श्रद्धालु एक ही समय में एक नगर में आते हैं, तो इसे सुव्यवस्थित रूप से संभालने के लिए सरकार, प्रशासन और धार्मिक संगठनों का एक अद्भुत समन्वय आवश्यक होता है। आर्थिक दृष्टिकोण से, महाकुम्भ एक विशाल व्यापारिक केंद्र के रूप में भी कार्य करता है, जिससे लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलता है। इसके अलावा, यहाँ आध्यात्मिक और योग शिविरों का आयोजन भी होता है, जहाँ देश-विदेश से विद्वान और योगी अपने ज्ञान का प्रसार करते हैं। महाकुम्भ का वैश्विक प्रभाव भी किसी से छिपा नहीं है। यह आयोजन भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक शक्ति को विश्व स्तर पर प्रदर्शित करता है। इस आयोजन के दौरान विभिन्न संस्कृतियों का संगम देखने को मिलता है, जिससे अन्तरराष्ट्रीय संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी बढ़ावा मिलता है। सामाजिक दृष्टि से, महाकुम्भ एकता, समर्पण और सह-अस्तित्व का जीवंत प्रतीक है। यहाँ राजा और रंक, संत और गृहस्थ, विद्वान और आमजन सभी एक ही स्थान पर, समान उद्देश्य से आते हैं- आध्यात्मिक उन्नति और आत्मशुद्धि। यह आयोजन हमें सिखाता है कि मानवता किसी भी भौतिक विभाजन से ऊपर है, और सच्ची आध्यात्मिकता सबको एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। महाकुम्भ केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि यह एक सनातन युग का पुनर्जागरण है। यह केवल स्नान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि की प्रक्रिया है। यह केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन की यात्रा है। जब अगला महाकुम्भ आएगा, तो यह न केवल श्रद्धालुओं को बल्कि पूरी दुनिया को अपनी भव्यता, दिव्यता और आध्यात्मिक शक्ति से मोहित करेगा। महाकुम्भ भारतीय संस्कृति की उस अनन्त धारा का प्रतीक है, जो समय के प्रवाह में कभी धूमिल नहीं होती, बल्कि हर बार और अधिक प्रकाशमान होकर उभरती है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. अरोरा, पी. (2013). **'कुम्भ मेला : एक वैश्विक दृष्टिकोण'**; अन्तरराष्ट्रीय अध्ययन पत्रिका, 3(2), 56-72।
2. मिश्रा, एस. (2019). **'कुम्भ मेला और भारत पर सामाजिक-आर्थिक प्रभाव'**; अर्थशास्त्र प्रभाव अध्ययन पत्रिका, 14(3), 45-58।
3. शर्मा, आर., और कुमार, ए. (2017). **'कुम्भ मेला की लॉजिस्टिक्स : एक वैश्विक धार्मिक आयोजन का प्रबंधन'**; आयोजन प्रबंधन पत्रिका, 25(1), 123-138।

4. सिंह, एस. (2015). **'महाकुम्भ और इसका सांस्कृतिक धरोहर : अनुष्ठानों और विश्वासों का अध्ययन';** भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 6(2), 111–129।

5. पटेल, एम., और देसाई, ए. (2021). **'कुम्भ मेला में प्रौद्योगिकी की भूमिका';** प्रौद्योगिकी नवाचार पत्रिका, 10(3), 245–257।

6. गुप्ता, पी. (2018). **'कुम्भ मेला एक वैश्विक घटना के रूप में : सांस्कृतिक प्रभाव';** वैश्विक सांस्कृतिक समीक्षा, 22(4), 97–113।

7. वर्मा, डी. (2020). **'धार्मिक पर्यटन के माध्यम से आर्थिक विकास : कुम्भ मेला का एक अध्ययन'**। पर्यटन अर्थशास्त्र पत्रिका, 32(2), 187–202।

8. यूनेस्को. (2017). **'कुम्भ मेला : अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता';** यूनेस्को रिपोर्ट्स, 8, 45–51।

महाकुम्भ का परिचय एवं मानव जीवन में महत्त्व

डॉ. आरती सिंह*

सार संक्षेप : महाकुम्भ एक दुर्लभ आयोजन है जो 12 वर्ष पूर्णकुम्भ के बाद यानी 144 साल बाद आता है, इसलिए इस आयोजन को महाकुम्भ कहते हैं। यह सिर्फ प्रयागराज में आयोजित होता है जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती (पौराणिक) नदियों का पवित्र संगम होता है। कुम्भ मेले का आयोजन किस स्थान पर कब होगा, यह ग्रह और राशियों पर निर्भर करता है। कुम्भ मेले में सूर्य, चंद्र और गुरु (बृहस्पति) ग्रहों का विशेष महत्त्व होता है। जब सूर्य और गुरु एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते हैं तभी महाकुम्भ मेले का आयोजन होता है, और इसी आधार पर तीर्थ स्थान निर्धारित किए जाते है। कुम्भ मेला सनातन धर्म के सबसे बड़े और सबसे पवित्र धार्मिक आयोजनों में से एक है, जो हर 12 वर्ष में एक बार होता है। यह सिर्फ धार्मिक आयोजन न होकर खगोलीय घटनाओं से जुड़ी एक पुरातन परंपरा है। कुम्भ मेला भारत में आयोजित होने वाला एक विशाल मेला है। इसमें करोड़ों श्रद्धालु हर 12 वर्ष पर प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में से किसी एक स्थान पर एकत्र होते हैं, और नदी में पवित्र स्नान करते हैं। प्रत्येक 12वें वर्ष के अतिरिक्त प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के बीच 6 वर्ष के अंतराल में अर्धकुम्भ भी होता है। 2013 के कुम्भ के बाद 2019 में प्रयाग में अर्धकुम्भ मेले का आयोजन हुआ था और अब 2025 में पूर्ण महाकुम्भ मेले का आयोजन हो रहा है।

बीज शब्द : महाकुम्भ, प्रयागराज, पौराणिक, खगोलीय, ज्योतिषीय, संक्रांति, औषधिकृत, अंतरात्मा, एकाग्रता, सनातन, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, अनुष्ठान, आत्मशुद्धि, कल्पवास, ऋग्वेद।

कुम्भ मेला ज्योतिष गणनाओं के अनुसार पौष पूर्णिमा के दिन आरंभ होता है और मकर संक्रांति इसका विशेष ज्योतिषीय पर्व होता है। जब सूर्य और चंद्रमा वृश्चिक राशि में और बृहस्पति मेष राशि में प्रवेश करते हैं तो इस योग को कुम्भ स्नान योग कहते हैं। इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है। यह भी माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुलते हैं। इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है। कुम्भ का शाब्दिक अर्थ घड़ा, सुराही, बर्तन है, यह शब्द वैदिक

*अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर।

ग्रंथों में पाया जाता है। इसका अर्थ पौराणिक कथाओं में अमरता (अमृत) से सम्बन्धित किया जाता है। मेला शब्द का अर्थ है किसी एक स्थान पर मिलना, एक साथ चलना, सभा में या फिर विशेष रूप से सामुदायिक उत्सव में उपस्थित होना। यह शब्द ऋग्वेद और अन्य प्राचीन हिंदू ग्रंथों में भी पाया जाता है। इस प्रकार कुम्भ मेले का अर्थ अमरत्व का मेला है।

पौराणिक विश्वास जो कुछ भी हो, ज्योतिषियों के अनुसार कुम्भ का असाधारण महत्त्व बृहस्पति के कुम्भ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित 'हर की पौड़ी' स्थान पर गंगा नदी के जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अंतरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने वाले लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। 'कुम्भ-पर्व' के सन्दर्भ में कहा गया है कि "कुम्भ का पर्व हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक चार तीर्थ स्थान में मनाया जाता है। यह चारों ही एक से बढ़कर एक परम पवित्र तीर्थ है। इन चारों तीर्थों में प्रत्येक 12 वर्ष के बाद कुम्भ पर्व होता है।"[1]

आध्यात्मिक दृष्टि से अर्धकुम्भ के काल में ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है। हालांकि सभी हिंदू त्योहार सामान्यत: श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाए जाते हैं पर यहाँ अर्धकुम्भ तथा कुम्भ मेले के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है। कुम्भ पर्व के आयोजन को लेकर दो-तीन पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं, जिसमें सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुम्भ से अमृत बूंदें गिरने को लेकर है। कहा जाता है कि भगवान् विष्णु के सुझाव पर देवता और दैत्य आपसी संधि करके क्षीरसागर का मंथन किए, जिससे अमृत कलश निकला। इसे इंद्र पुत्र जयंत आकाश में लेकर उड़ गए। इसको लेकर देव और दानव दोनों में 12 दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। इस परस्पर मारकाट के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों- प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक पर कलश से अमृत की कुछ बूंदें गिरी थीं इस दृष्टि से भी यह तीर्थ स्थान पुण्य स्थल हैं। संजोग मिश्र कहते हैं कि "मां गंगा, मां यमुना और अदृश्य मां सरस्वती के पवित्र संगम में श्रद्धा और आस्था से ओत-प्रोत साधु, संतों, श्रद्धालुओं, कल्पवासियों, स्नानार्थियों एवं गृहस्थों ने स्नान करते हैं और पुण्य को प्राप्त करते हैं।"[2]

कुम्भ मेला सनातन धर्म का सबसे बड़ा और सबसे पवित्र धार्मिक आयोजनों में से एक है, जो हर 12 वर्ष में एक बार होता है। यह सिर्फ धार्मिक आयोजन न होकर खगोलीय घटनाओं से जुड़ी एक चिर पुरातन परंपरा है। इसमें ग्रहों की स्थिति का विशेष महत्त्व होता है, और इसी आधार पर इसका आयोजन होता है। कुम्भ मेला का धार्मिक, आध्यात्मिक महत्त्व बहुत बड़ा है। यह सनातन धर्म की आस्था, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। कुम्भ मेले में स्नान करने से पाप धुलते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। हर 12 वर्ष में आयोजित होने वाला महाकुम्भ न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है बल्कि मानवता को एकता, शांति और भक्ति का

संदेश देता है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के त्रिवेणी संगम पर महाकुम्भ का आयोजन होता है, जो आज शुद्धि और मोक्ष का द्वार है। कुम्भ पर्व के माहात्म्य को प्रतिपादित करते हुए महाकुम्भ-पर्व में कहा गया है कि "कुम्भ पर्व में जाने वाला मनुष्य स्नान, दान आदि सत्कर्मों के फलस्वरूप अपने पापों को वैसे ही नष्ट करता है जैसे कुठार वन को काट देता है। जिस प्रकार गंगा नदी अपनी तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है उसी प्रकार कुम्भ पर्व मनुष्य की पूर्व संचित कर्मों से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन कच्चे घड़े की तरह बादलों को नष्ट-भ्रष्ट कर संसार में सृष्टि प्रदान करता है।"[3]

कुम्भ मेला सिर्फ एक धार्मिक आयोजन नहीं है बल्कि यह सामाजिक एकता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतीक है। यह मेला भारतीय समाज की एकता और आस्था का प्रतीक है। इसमें अमृत स्नान के साथ मंदिर दर्शन, दान-पुण्य और अन्य धार्मिक अनुष्ठान शामिल होते हैं। महाकुम्भ में भाग लेने वाले नागा साधु, अघोरी और संन्यासी सनातन धर्म की परंपरा की गहराई और विविधता को दर्शाते हैं। महाकुम्भ का यह आयोजन सनातन धर्म की आस्था, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। कुम्भ मेला भारतीय समाज में व्याप्त शुद्धता सामान्य भाईचारा और दिव्यता के संदेश को प्रसारित करता है। प्रत्येक 12 वर्ष में आयोजित होने वाला कुम्भ मेला न केवल व्यक्तिगत आस्था बल्कि सामाजिक एकता का भी प्रतीक है। यहाँ सभी धर्म, जाति, वर्ग और समुदायों के लोग एकत्रित होते हैं।

इसे और अधिक प्रमाणित करते हुए महाकुम्भ-पर्व में कहा गया है कि "कुम्भ के अवसर पर भारतीय संस्कृति और धर्मानुप्राणित सभी संप्रदायों के धर्मानुयायी एकत्रित होकर अपने समाज, धर्म एवं राष्ट्र की एकता-अखंडता के लिए विचार-विमर्श करते हैं। स्नान, दान, तर्पण तथा यज्ञ का पवित्र वातावरण देवताओं को भी आकृष्ट किये बिना नहीं रहता है। ऐसी मान्यता है कि इस महापर्व पर सभी देवतागण तथा अन्य पितर, यक्ष, गंधर्व आदि पृथ्वी पर उपस्थित होकर न केवल मनुष्य मात्र अपितु जीव मात्र को अपनी पावन उपस्थिति से पवित्र करते रहते हैं।"[4]

कुम्भ मेला भारतीय समाज में व्याप्त शुद्धता, सामान्य भाईचारा और दिव्यता के संदेश को प्रसारित करता है। प्रत्येक 12 वर्ष में आयोजित होने वाला कुम्भ मेला न केवल व्यक्तिगत आस्था बल्कि सामाजिक एकता का प्रतीक है। यहाँ सभी धर्म, जाति, समुदाय के लोग एकत्र होते हैं। इस एकता में न केवल सामाजिक समानता की भावना होती है, बल्कि यहाँ भारतीय संस्कृति के मूल्यों की भी अभिव्यक्ति होती है। कुम्भ मेला वह अवसर है जिसमें हम तनाव और अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को त्यागकर आत्मशुद्धि के लिए गंगा स्नान करते हैं ताकि हमारी आत्मा पवित्र हो सके और हम अन्तर्मन की गहराई में जाकर आत्मसाक्षात्कार करने का प्रयास करें। साथ ही इस मेले में एक दूसरे के प्रति प्रेम, सम्मान और भाईचारे का भाव जागृत होता है। यही है सनातन धर्म का संदेश 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात् संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है। कुम्भ मेला भारतीय संस्कृति का

प्रतीक है, क्योंकि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने दायित्व को आत्मसात् कर धर्म के प्रति जागरूक होता है। सनातन धर्म के अनुसार जीवन केवल भौतिक सुखों के लिए नहीं बल्कि आत्मा के शुद्धिकरण और जीवन को उच्चतम आदर्शों पर जीने के लिए है। कुम्भ मेले में श्रद्धालु उपवास कर इस भाव को जागृत करते हैं, और जीते हैं। कुम्भ मेला सिखाता है कि हर व्यक्ति में समान दिव्यता और परमतत्त्व का समावेश है फिर चाहे वह किसी भी जाति, धर्म और समुदाय का हो। कुम्भ मेले के अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के संदर्भ में श्री संजोग मिश्र कहते हैं कि "संगम की रेती पर एक से बढ़कर एक उच्च शिक्षा प्राप्त साधु संन्यासी धर्म और अध्यात्म के प्रचार-प्रसार में लगे हैं। दिव्य-ज्योति जागृति संस्थान के कई प्रचारक ऐसे हैं जिन्होंने बी.टेक, एम.टेक, पी-एच.डी. आदि डिग्रियां हासिल की है और महाकुम्भ में हिंदी के साथ अंग्रेजी में प्रवचन कर रहे हैं। विदेशों के धार्मिक कार्यक्रम में यह संन्यासी अंग्रेजी भाषा में सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।"[5]

इस प्रकार जैसा कि महाकुम्भ का शाब्दिक अर्थ साधारणतः घड़ा ही है किंतु इसके पीछे यह समुदाय में पात्रता के निर्माण की रचनात्मक शुभकामना, मंगल कामना एवं जनमानस के उद्धार की प्रेरणा निहित है। महाकुम्भ का यह पर्व अपनी पूर्ण सार्थकता को सिद्ध करता है और जनमानस का कल्याणकारी मार्ग प्रशस्त करता है।

सन्दर्भ सूचीः

1. महाकुम्भ-पर्व, प्रकाशक एवं मुद्रक, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ सं. 17
2. मिश्र, संजोग, दिव्य-महाकुम्भ, दैनिक समाचार पत्र हिंदुस्तान में 24 जनवरी 2025 को प्रकाशित खबर, पृष्ठ सं. 12
3. महाकुम्भ-पर्व, प्रकाशक एवं मुद्रक, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ सं. 2
4. महाकुम्भ-पर्व, प्रकाशक एवं मुद्रक, गीता प्रेस, गोरखपुर पृष्ठ सं. 9
5. मिश्र, संजोग, दिव्य-महाकुम्भ, दैनिक समाचार पत्र हिंदुस्तान में 26 जनवरी 2025 को प्रकाशित खबर, पृष्ठ सं. 16

प्रयागकुम्भ का माहात्म्य

हरिकेश यादव*

सारांश : हमारे सम्पूर्ण प्राचीन वाङ्मय में वेदों से लेकर मध्यकालीन हिन्दी भक्ति साहित्य तक, प्रयाग को तीर्थराज एवं त्रिवेणी संगम को सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल का पवित्रतम स्थान बताया गया है। विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद तक प्रयाग के संगम को महिमामण्डित करता हुआ कहता है कि जो श्वेत एवं नील नदियों के संगम पर स्नान करते हैं, वे सदा के लिये अमर हो जाते हैं। कवि कुलगुरु कालिदास का कथन है कि यहाँ स्नान करने से दार्शनिक तत्त्वावबोध के बिना भी मोक्ष प्राप्त हो जाता है और जीव फिर से जन्म नहीं लेता। मत्स्य, पद्म, कूर्म एवं भविष्य आदि पुराणों में 'प्रयाग-माहात्म्य' के ऊपर स्वतन्त्र रूप से अनेक अध्याय लिखे गये हैं। स्नान के अतिरिक्त प्रयाग में दान का भी अत्यधिक महत्त्व है। पुराणों के अनुसार वेणी तट पर किया गया दान सहस्रगुण अधिक फलदायी होता है। गोदान, क्षौरकर्म, पितृतर्पण एवं श्राद्ध आदि के लिये यह सर्वाधिक उपयुक्त स्थान माना गया है। यहाँ देह त्याग के पश्चात् पुनर्जन्म नहीं होता, ऐसी दृढ़ मान्यता है, अतः प्रयाग आकर मृत्यु का स्वेच्छा से वरण करनेवालों की कमी नहीं रही। जहाँ कुमारिल भट्ट आदि विद्वानों ने तुषाग्नि में अपना शरीर विसर्जित किया, वहीं कलचुरि सम्राट कर्ण ने अपनी सौ रानियों के साथ संगम में प्रवेश करके मुक्ति प्राप्त की।

बीज शब्द : तीर्थ, कुम्भ, कल्पवास, माहात्म्य, माघ मास, अमरत्व, समुद्र मंथन, अमृतकलश, पुण्यलाभ, महादान पर्व, सांस्कृतिक धरोहर।

"को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ, कलुषपुंज कुंजर मृगराऊ।"[1]

भारतवर्ष के धार्मिक स्थलों में प्रयाग का स्थान सर्वोपरि है जो तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस के उपर्युक्त श्लोक से भी परिलक्षित होता है। जहाँ अन्य तीर्थस्थल किसी एक नदी के तट पर स्थित हैं, यह दो महान नदियों के पवित्र संगम पर स्थित है। काशी, मथुरा, अयोध्या, उज्जैन इत्यादि अन्य नगरियों में किसी एक देवविशेष की उपस्थिति मानी जाती है, जबकि प्रयाग में सभी देवताओं का सामान्य निवास माना गया है। स्नान, दान, मुण्डन तो किसी भी तीर्थ में हो सकता है, किन्तु

*सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़, गोरखपुर
ई-मेल: harry-hkyadav8808088@gmail.com

कल्पवास का विधान तो सिर्फ यहीं के लिए है। विभिन्न तीर्थों में मनुष्य अपने पाप धोने के लिए जाया करते हैं, लेकिन समस्त तीर्थ अपनी-अपनी शुद्धि के लिए प्रयाग में ही आते हैं। इन्हीं विशेषताओं के दृष्टिगत पुराणादि ग्रन्थों में प्रयाग को 'तीर्थराज' की पदवी से विभूषित किया गया है।

मेष राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ।
उज्जयिन्यां भवेत कुम्भः सदामुक्तिम प्रदायकः।।[2]
(नारदपुराण)

अर्थात् जिस वर्ष माघ मास में बृहस्पति ग्रह वृष (या मेष) राशि पर होता है उस वर्ष प्रयाग का माघमेला 'कुम्भपर्व' नाम से जाना जाता है। इस अवसर पर पूरे विश्व से लोग यहाँ आते हैं। वैसे तो कुम्भमेला प्रयाग के अलावा हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक में भी होता है, लेकिन स्नानार्थियों की सर्वाधिक भीड़ प्रयाग में ही होती है, जो इसकी महत्ता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। विश्वभर में किसी एक अवसर पर लोगों की सबसे विशाल भीड़ इकट्ठा होने का कीर्तिमान प्रयाग के 'कुम्भपर्व' का ही रहता है। 'कुम्भपर्व' प्रयाग में हर बारह वर्ष पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त कुम्भपर्व से छठवें वर्ष अपेक्षाकृत कुछ छोटा मेला होता है, जिसे 'अर्द्धकुम्भ' पर्व कहते हैं। भारतवर्ष के समस्त धार्मिक पर्वों में कुम्भ मेला सर्वोपरि है।

भारतीय संस्कृति में कुम्भ को 'आस्था और विश्वास का महापर्व' के रूप में आदर प्राप्त है। न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से प्रत्युत सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी कुम्भ पर्व का महत्त्व अद्वितीय है। 'कुम्भ पर्व' दो शब्दों के योग से निर्मित है, जिसमें 'कुम्भ' का शाब्दिकार्थ है, कलश अथवा शरीर तथा 'पर्व' का अर्थ है, समागम अथवा एकत्रण। परन्तु ध्यातव्य है कि वैदिक वाङ्मय में और 'कुम्भ' शब्द का प्रयोग कलश के अतिरिक्त प्रायः जल और अमृत की अभिव्यंजना के निमित्त किया जाता था। अस्तु, 'कुम्भ पर्व' का शाब्दिक साभिप्राय है- 'अमरत्व का समागम'।

दूसरे परिप्रेक्ष्य में पौराणिक सन्दर्भों के अनुसार जो अमृतमय जल से पूर्ण करता है, जो क्षुत्पिपासादि अनेक द्वन्द्वों से निवृत्त करता है, उसे ही 'कुम्भ' कहते हैं[3]-

कुम्भ्यति अमृतेन पूरयति सकल क्षुत्।
पिपासादि द्वन्द्वजातं निर्वतयति इति कुम्भः।।
(मत्स्यपुराण)

कुम्भ पर्व के संदर्भ में एक विशेष आख्यान लोकविश्रुत है। पद्मपुराण के सृष्टिखंड में इस आख्यान का सुविस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। आख्यानानुसार आबाल वृद्ध परिचित प्रसिद्ध महर्षि दुर्वासा के शाप से पुरन्दर इंद्र सहित सभी देवतागण शक्तिहीन हो गए। देवताओं की शक्तिक्षीणता

का ज्ञान होते ही, दैत्यगुरु शुक्राचार्य की आज्ञा से दैत्यराज बलि ने स्वर्ग पर स्वाधिपत्य स्थापित कर लिया। फलतः उक्त अराजक व्यवस्था के निराकरण हेतु देवगण ब्रह्माजी के नेतृत्व में जगन्पालक भगवान् विष्णु की शरण में गए। भक्तवत्सल भगवान् ने उनकी समस्या का निराकरण बताते हुए कहा, "हे देवगण, क्षीरसागर में अपरिमित रत्नों के साथ 'अमृत कलश' भी विद्यमान है; जो आपके आर्त का शमन करने में सक्षम है। अतः आप सभी दैत्यों से सन्धि करके साथ में समुद्र मंथन के निमित्त प्रयाण करें।"

श्री भगवान् के निर्देशानुसार देवगण और असुरों ने नागराज वासुकी को 'रज्जू', श्रेष्ठिरत्नसज्जित मदराचल पर्वत को 'मथनी' तथा कच्छप रूप जगतपालक भगवान् विष्णु को मथना का 'शुद्धाधार' बनाकर समुद्र मंथन में सन्नद्ध हुए। समुद्र मंथन से कुल चतुर्दश प्रकार के रत्नों का प्राकट्य हुआ, "श्री, मणि, रंभा, वारुणी, अमृत कलश, शंख, गजराज, धेनु, धनुष, शशि, कल्पतरु, धन्वन्तरि, विष एवं वाजि।"

ध्यातव्य है कि 'अमृत कलश' के प्रकट होते ही तत्क्षण इंद्रात्मज जयंत उस कलश को लेकर भागने हेतु सफलतम उद्यत हुए। परिणामस्वरूप दैत्यों और देवों ने भी उस 'अमृत कलश' को स्वाभिरक्षा में लेने हेतु जयंत का पीछा करना प्रारम्भ कर दिया। उक्तालोक में दैत्यों और देवों में कुल 12 दिनों तक संघर्ष चलता रहा। परस्पर संघर्ष के उक्त 12 दिवस मानव जाति के 12 वर्ष के सदृश है। संघर्ष के दौरान जयंत से 'अमृत कलश' से अमृत की चार बूँदें देवलोक में, चार बूँदें रसातल में और चार बूँदें पृथ्वी पर जा गिरीं। पृथ्वी पर गिरीं अमृत बूँदों के स्थान प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन थे, जो कालान्तर में कुम्भ पर्व के आयोजन स्थान के कारण बने। नारद पुराण के वचनानुसार दैत्यों और देवों के इस युद्ध के दौरान 'चंद्रदेव' ने उस अमृत कुम्भ से 'अमृत रस' के छलकने से, 'सूर्यदेव' अमृत कुम्भ के 'टूटने' से और देवगुरु बृहस्पति एवं शनिदेव ने अमृत कलश की दैत्यों से रक्षा की। यही कारण है कि इनके परस्पर तादात्म्य की विशेष स्थितियाँ ही 'कुम्भ पर्व' के आयोजन के समय और तिथि का निर्धारण करती हैं।[4]

चन्द्रः प्रश्रवणादक्षां सूर्यो विस्फोटनाद्दथौ ।
दैत्येभ्यश्र गुरु रक्षां सौरिर्देवेन्द्रजाद् भयात्।।
सूर्येन्दुगुरुसंयोगस्य यद्राशौ यत्र वत्सरे।
सुधाकुम्भप्लवे भूमे कुम्भो भवति नान्यथा।।
(नारदपुराण)

प्रयाग में स्नान-दान का माहात्म्य

मत्स्यपुराण में प्रयाग में गंगा और यमुना नदी के संगम पर स्नान की, विशेषकर माघ के महीने में और सूर्य के मकर राशि में संक्रमण के अवसर पर, महिमा भारतीय शास्त्रों में बहुधा

वर्णित है।[5] स्नान के अतिरिक्त यज्ञ और महादान के लिए भी प्रयाग सर्वोपरि रहा है। शास्त्रों के अनुसार स्वयं ब्रह्मा ने यहाँ यज्ञ किया था, जो इस तीर्थ के नामकरण का कारण भी बना। पौराणिक काल में अनेक राजा–महाराजाओं ने यहाँ अश्वमेधादि यज्ञ किये थे। गुप्तवंश के सम्राट् समुद्रगुप्त ने भी यहाँ अश्वमेध यज्ञ किया था, जिसकी स्मृतिस्वरूप 'प्रयाग–प्रशस्ति' यहाँ के अशोक स्तम्भ में उत्कीर्ण है।

पुण्यलाभ के लिए यज्ञ के अतिरिक्त महादान का आयोजन भी पुराणों में सविस्तार दिया गया है। सोलह प्रकार के महादानों में से किसी भी एक प्रकार का महादान प्राचीन काल में अनेक राजाओं द्वारा किया गया था। किसी महादान पर्व का प्रामाणिक वर्णन हमें सर्वप्रथम कन्नौज के राजा हर्षवर्द्धन शिलादित्य का मिलता है। ह्वेनसांग के विवरण के अनुसार, हर्षवर्द्धन अपने पाँच वर्षों में अर्जित धन–दौलत को छठें वर्ष प्रयाग आकर महादान पर्व में दान कर देता था। वर्ष 644 ई. में हर्ष ने छठाँ महादान पर्व आयोजित किया था, जिसमें ह्वेनसांग भी उपस्थित था।

ह्वेनसांग लिखता है कि हर्ष के पूर्वजों ने भी इस महादान पर्व का नियमित आयोजन किया था और हर्ष भी उस परम्परा का निर्वहन कर रहा था। ह्वेनसांग के चीनी शिष्य श्रमण ह्यू ली ने अपनी पुस्तक[6] में महादान पर्व के आयोजन का सविस्तार विवरण दिया है। पुस्तक के अनुसार यह पर्व लगभग 75 दिन तक चलता था। हर्ष का आवासीय शिविर गंगा के उत्तरी तटपर (वर्तमान नागवासुकी/दारागंज सलोरी क्षेत्र) लगता था, जबकि महादान मण्डप संगम से अनतिदूर (वर्तमान परेड ग्राउण्ड / अलोपीबाग क्षेत्र) बनता था। इसमें पहले दिन बुद्ध की मूर्ति स्थापित होती थी, दूसरे दिन आदित्यदेव (सूर्य) की तथा तीसरे दिन ईश्वर (शिव) की। दान भी पहले बौद्ध भिक्षुओं को, फिर ब्राह्मण संन्यासियों को, फिर अन्य फकीरों को और अन्त में गरीबों को दिया जाता था।

उपसंहार:

प्रयागकुम्भ एक ऐसा विशाल पर्व है जहाँ सनातन हिन्दू संस्कृति अपने सम्पूर्ण वैभव–समृद्धि और सौन्दर्य के साथ समुपस्थित रहती है। यह आर्य संस्कृति का वृहत्तम मिलन बिन्दु है।[7] भाषा, जाति–पाँति, सम्प्रदाय, विचारधारा, वेश–भूषा सबको एक रंग में रंगता प्रयागकुम्भ राष्ट्रीय एकता का सबसे बड़ा दृष्टांत है। यह विश्व के सबसे बड़े धार्मिक और आध्यात्मिक समागम में से एक है, जहाँ लाखों–करोड़ों की संख्या में लोग आस्था और श्रद्धा से एक स्थान पर समवेत होते हैं। इस पर्व के माहात्म्य को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 2017 में यूनेस्को ने इसे 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में मान्यता दी। इससे यह स्पष्ट है कि कुम्भ का माहात्म्य केवल भारतीय सीमाओं तक सीमित नहीं है, प्रत्युत यह एक वैश्विक धरोहर बन चुका है।

वर्तमान में जब समाज में सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, कुम्भ पर्व भारतीय समाज को अपने प्राचीन मूल्यों और परम्पराओं की ओर उन्मुख होने के निमित्त एक श्रेष्ठ अवसरात्मक माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित है। यह पर्व एक ऐसा उत्सव है, जहाँ व्यक्ति अपने जीवन

के उद्देश्य और अस्तित्व पर चिन्तन करता है। कुम्भ पर्व के दौरान धार्मिक और आध्यात्मिक प्रवचन लोगों को पुनः अपनी संस्कृति से जुड़ने की प्रेरणा देते हैं। अस्तु, कुम्भ पर्व भारतीय संस्कति का एक ऐसा पवित्र पर्व है, जो आध्यात्मिकता, सामाजिकता और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, प्रत्युत भारतीय समाज के वैविध्यपूर्ण तत्वों को एकीकृत करने वाला एक अनोखा आयोजन है, जो समग्र सृष्टि को संदेश देता है-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।"

सन्दर्भः

1. तुलसीदास, **रामचरितमानस**, अयोध्याकाड, 105(1)।
2. **नारदपुराण**, उत्तरभाग, अध्याय 63, श्लोक 13-14।
3. **मत्स्यपुराण**, अध्याय 106, श्लोक 10।
4. **नारदपुराण**, पूर्वभाग, अध्याय 6।
5. **मत्स्यपुराण**, अध्याय 274, श्लोक 4-7।
6. **'लाइफ ऑफ ह्वेनसांग'**, श्रमण ह्यू ली, प्रो. सैमुएल बील कृत अंग्रेजी अनुवाद, पृ.सं. 186।
7. Jain, S. (2018)- **Pilgrimage and spirituality: Understanding the significance of Prayag Kumbh Mela**- Journal of South Asian Studies, 26(3), 112-130

Mānaviki सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

भारतीय समाज और संस्कृति पर कुम्भ का प्रभाव

डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय*

सारांश : दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक समागम के रूप में मनाया जाने वाला महाकुम्भ मेला सनातनी आस्था, संस्कृति और प्राचीन परंपरा का अद्‌भुत और बेमिसाल मिश्रण है। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह पवित्र त्योहार बारह वर्षों में चार बार मनाया जाता है, जो भारत के चार प्रतिष्ठित शहरों हरिद्वार, उज्जैन, नासिक एवं प्रयागराज में बहने वाली सबसे पवित्र नदियों गंगा, शिप्रा और गोदावरी के बीच घूमता है। इनमें से प्रत्येक शहर पवित्र नदियों यथा-गंगा, शिप्रा, गोदावरी और खासकर प्रयागराज (पूर्वनाम इलाहाबाद) गंगा, यमुना एवं पौराणिक सरस्वती के संगम के किनारे स्थित हैं। महाकुम्भ मेला अनुष्ठानों का एक भव्य आयोजन है। इसमें स्नान सबसे महत्त्वपूर्ण है। त्रिवेणी संगम पर आयोजित इस पवित्र समागम में भाग लेने के लिए लाखों तीर्थयात्री एकत्रित होते हैं, जो इसमें विश्वास रखते हैं कि पवित्र जल में डुबकी लगाने से व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो सकता है।

13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक प्रयागराज एक बार फिर इस शानदार उत्सव का केंद्र बना हुआ है, जो करोड़ों तीर्थयात्रियों और आगंतुकों को भक्ति, एकता और भारत की आध्यात्मिक विरासत की जीवंत अभिव्यक्ति को देखने के लिए आकर्षित कर रहा है। इस भव्य आयोजन में धार्मिक अनुष्ठानों से परे खगोल विज्ञान, ज्योतिष, सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं और आध्यात्मिक ज्ञान का समृद्ध मिश्रण शामिल है। क्योंकि इस अवसर पर लाखों भक्त और तपस्वी त्रिवेणी संगम में पवित्र स्नान सहित पवित्र अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए एकत्र होते हैं जो कि विविधता में एकता को समाहित किये हुए है। कुम्भ का त्योहार बाजार या मेले का त्योहार नहीं है बल्कि यह ज्ञान, तपस्या और भक्ति का त्योहार है। हर धर्म और जाति के लोग इस त्योहार में किसी न किसी रूप में मौजूद होते हैं और यह एक मिनी इण्डिया का रूप ले लेता है। त्योहार में विभिन्न भाषाएं, परंपराएं संस्कृतियां, कपड़े, भोजन और रहन-सहन के तरीके देखे जा सकते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि लाखों लोग बिना किसी आमंत्रण के वहाँ पहुंच जाते हैं।

बीज शब्द :

शाही स्नान : इन तिथियों पर संत, अपने शिष्यों और विभिन्न अखाड़ों (आध्यात्मिक क्रम में) के

*सहा. आचार्य (समाजशास्त्र विभाग), महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सदस्यों के साथ भव्य जुलूस निकालते हैं, जो शाही स्नान या 'राजयोगी स्नान' के नाम से जाने जाने वाले भव्य अनुष्ठान में भाग लेते हैं। यह महाकुम्भ मेले की आधिकारिक शुरुआत का प्रतीक है।

कल्पवास : संस्कृत से उत्पन्न 'कल्प' का अर्थ है ब्रह्मांडीय युग और 'वास' का अर्थ है निवास, जो गहन आध्यात्मिक अभ्यास की अवधि का प्रतीक है।

दीप दान : श्रद्धालु कृतज्ञता के रूप में त्रिवेणी संगम के बहते जल में हजारों प्रज्वलित मिट्टी के दीपक (दीये) पानी में प्रवाहित करते हैं।

प्रस्तावना:

महाकुम्भ मेला पूरे भारत से लोगों का एक विशाल जमावड़ा है जो पवित्र गंगा नदी में स्नान करने के लिए आते हैं। यह आयोजन ज्ञान से भरा हुआ है और इसमें कई अनुष्ठान और सांस्कृतिक गतिविधियाँ शामिल हैं। कुम्भ मेला न केवल दुनिया का सबसे बड़ा मानव समागम है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से सबसे गहरा भी है, जो दुनिया भर से लाखों भक्तों, संतों और साधकों को आकर्षित करता है। प्रयागराज में कुम्भ मेला 2025 लोगों के लिए अपने आध्यात्मिक सार से फिर से जुड़ने, अपनी आत्मा को शुद्ध करने और सहस्राब्दियों से चली आ रही पवित्र यात्रा पर निकलने का एक अनूठा अवसर है। संक्षेप में, कई ग्रहों की स्थिति का हमारे ग्रह के जल और वायु पर प्रभाव पड़ता है। कुछ ग्रहों की स्थिति में, एक विशिष्ट समय के दौरान एक विशिष्ट स्थान के सकारात्मक ऊर्जा स्तर उच्च हो जाते हैं, जो आध्यात्मिक विकास और जागृति के लिए एक आदर्श वातावरण बनाते हैं।

महाकुम्भ कई जातियों, पंथों और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से लाखों लोगों को एक साथ लाता है, जिससे सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है। 2025 में महाकुम्भ मेला सिर्फ एक मेले से कहीं ज्यादा है। यह खुद की ओर एक यात्रा है। अनुष्ठानों और प्रतीकात्मक कर्मों से परे, यह तीर्थयात्रियों को आंतरिक विचारों में संलग्न होने और पवित्रता के साथ अपने संबंध को गहरा करने का अवसर देता है। आधुनिक जीवन की माँगों से भरी दुनिया में, महाकुम्भ मेला एकजुटता, पवित्रता और ज्ञान के प्रतीक के रूप में सामने आता है। यह शाश्वत यात्रा एक मजबूत अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है कि मानवता के विविध मार्गों के बावजूद, हम मौलिक रूप से एकजुट हैं।

महाकुम्भ मेला एक धार्मिक समागम से कहीं अधिक है। यह आस्था, अनुष्ठानों और आध्यात्मिक ज्ञान के साथ जुड़ा एक जीवंत उत्सव है जो भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के सार को दर्शाता है। यह राष्ट्र की गहरी जड़ों वाले लोकाचार को गहराई से दर्शाता है, जो मानवता और परमात्मा के बीच स्थायी संबंध को प्रदर्शित करता है। पवित्र नदियों में पवित्र स्नान, उपवास, दान और भक्ति जैसे सदियों पुराने अनुष्ठानों के माध्यम से यह भव्य समागम यहाँ आने वाले भक्तों को मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है। कुम्भ मेले की परंपराएं समय और स्थान की

सीमाओं से अलग जाकर लाखों लोगों को उनकी पैतृक जड़ों और आध्यात्मिक मूल से जोड़ती हैं। यह एकता, करुणा और विश्वास के शाश्वत मूल्यों का एक जीवंत प्रमाण है जो समाज को एक सूत्र में बांधता है। साधु-संतों का भव्य जुलूस, गूंजते मंत्रोच्चार और नदियों के संगम पर किए जाने वाले पवित्र अनुष्ठान मेले को एक दिव्य अनुभव में बदल देते हैं जो हर भक्त की आत्मा को छू जाता है।

महाकुम्भ के प्रमुख अनुष्ठान और परंपराएं:

शाही स्नान : महाकुम्भ मेला अनुष्ठानों का एक भव्य आयोजन है, इन सभी में स्नान सबसे .महत्त्वपूर्ण है। त्रिवेणी संगम पर आयोजित इस पवित्र समागम में भाग लेने के लिए करोड़ों तीर्थयात्री एकत्रित होते हैं, जो इसमें विश्वास रखते हैं कि पवित्र जल में डुबकी लगाने से व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो सकता है। माना जाता है कि शुद्धिकरण का यह कार्य व्यक्ति और उनके पूर्वजों दोनों को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त कर देता है, जिससे अंततः मोक्ष या आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है। स्नान अनुष्ठान के साथ-साथ तीर्थयात्री पवित्र नदी के किनारे पूजा-पाठ में भी शामिल होते हैं और साधुओं एवं संतों के नेतृत्व में ज्ञानवर्धक प्रवचनों में भाग लेते हैं, जिससे जीवन के अनुभव में आध्यात्मिक गहराई जुड़ जाती है। वैसे तो पूरे प्रयागराज महाकुम्भ के दौरान पवित्र जल में डुबकी लगाना पवित्र माना जाता है, लेकिन कुछ तिथियाँ विशेष महत्त्व रखती हैं, जैसे पौष पूर्णिमा, मकर संक्रांति, वसंत पंचमी आदि। इन तिथियों पर संत, अपने शिष्यों और विभिन्न अखाड़ों (आध्यात्मिक क्रम में) के सदस्यों के साथ भव्य जुलूस निकालते हैं। यह महाकुम्भ मेले की आधिकारिक शुरुआत का प्रतीक है और इस आयोजन का मुख्य आकर्षण है। शाही स्नान की परंपरा इस विश्वास पर आधारित है कि जो लोग अनुष्ठान में भाग लेते हैं उन्हें पवित्र जल में डुबकी लगाने पर पुण्य कर्मों का आशीर्वाद मिलता है और उनसे पहले आए संतों का गहन ज्ञान प्राप्त होता है।

आरती: नदी के किनारों पर मंत्रमुग्ध कर देने वाला गंगा आरती समागम में आए लोगों के लिए एक अविस्मरणीय क्षण होता है। इस पवित्र अनुष्ठान के दौरान पुजारी जगमगाते दीपक पकड़कर दृश्य अभिनय प्रस्तुत करते हुए कठिन धर्मक्रिया करते हैं। गंगा आरती हजारों भक्तों को आकर्षित करती है, जिससे पवित्र नदी के प्रति गहरी भक्ति और श्रद्धा जागृत होती है।

कल्पवास: कल्पवास महाकुम्भ उत्सव का एक गहरा लेकिन कम ज्ञात पहलू है, जो साधकों को आध्यात्मिक अनुशासन, तपस्या और उच्च चेतना के लिए समर्पित एक अनुष्ठान प्रदान करता है। संस्कृत से उत्पन्न 'कल्प' का अर्थ है ब्रह्माण्डीय युग और 'वास' का अर्थ है निवास, जो गहन आध्यात्मिक अभ्यास की अवधि का प्रतीक है। कल्पवास में भाग लेने वाले तीर्थयात्री सादगी का जीवन अपनाते हैं, सांसारिक सुख-सुविधाओं का त्याग करते हैं और ध्यान, प्रार्थना और धर्मग्रंथ अध्ययन जैसे दैनिक अनुष्ठानों में व्यस्त रहते हैं। कल्पवास में वैदिक यज्ञ और होम, पवित्र अग्नि अनुष्ठान जो दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करते हैं और सत्संग, बौद्धिक एवं भक्ति विकास

के लिए आध्यात्मिक प्रवचन भी शामिल हैं। यह गहन अनुभव बड़े तीर्थयात्रा के भीतर गहरी भक्ति और आध्यात्मिक परिवर्तन को बढ़ावा देता है।

प्रार्थना और अर्पण: माना जाता है कि श्रद्धालु कुम्भ के दौरान संगम पर आने वाले देवताओं के सम्मान में देव पूजन करते हैं। श्राद्ध (पूर्वजों को भोजन और प्रार्थना करना) और वेणी दान (गंगा में बाल चढ़ाना) जैसे अनुष्ठान त्योहार के अभिन्न अंग हैं, जो समर्पण और शुद्धि का प्रतीक हैं। सत्संग या सत्य के साथ जुड़ना एक और मुख्य अभ्यास है जहाँ भक्त संतों और विद्वानों के प्रवचन सुनते हैं। ज्ञान का यह आदान-प्रदान आध्यात्मिकता की गहरी समझ को बढ़ावा देता है और उपस्थित लोगों को उच्च आत्म-साक्षात्कार के लिए प्रेरित करता है। कुम्भ के दौरान परोपकार का बहुत महत्त्व होता है। दान के कार्य जैसे गौ दान (गायों का दान) वस्त्र दान (कपड़ों का दान) द्रव्य दान (धन का दान) और स्वर्ण (सोना) दान को सराहनीय माना गया है।

दीप दान: प्रयागराज में कुम्भ मेले के दौरान दीप दान की रस्म पवित्र नदियों को एक मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्य में बदल देती है। श्रद्धालु कृतज्ञता के रूप में त्रिवेणी संगम के बहते जल में हजारों प्रज्वलित मिट्टी के दीपक (दीये) पानी में प्रवाहित करते हैं। अमूमन गेहूँ के आटे से बने और तेल से भरे ये दीपक दिव्य चमक पैदा करते हैं। यह दिव्य प्रतिभा को दर्शाता है, जो आध्यात्मिकता और भक्ति का प्रतीक है। मेले की पृष्ठभूमि में नदी पर टिमटिमाते दीयों का दृश्य, वातावरण को धार्मिक उत्साह और एकता की गहरी भावना से भर देता है, जो तीर्थयात्रियों पर एक अमिट छाप छोड़ता है।

प्रयागराज पंचकोशी परिक्रमा: तीर्थयात्रियों को प्राचीन पद्धतियों से फिर से जोड़ने के लिए प्रयागराज की परिक्रमा करने की ऐतिहासिक परंपरा को पुनर्जीवित किया गया है। इस यात्रा में सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान करने वाले द्वादश माधव और अन्य महत्त्वपूर्ण मंदिरों जैसे पवित्र स्थल शामिल हैं। इसका उद्देश्य युवा पीढ़ी को इस महत्त्वपूर्ण आयोजन की समृद्ध सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विरासत से जुड़ने और उसकी सराहना करने का अवसर प्रदान करते हुए एक ऐतिहासिक अनुष्ठान को पुनर्जीवित करना है।

उपसंहार:

आधुनिकता की उन्मत्त गति की विशेषता वाली दुनिया में, कुछ ही आयोजन ऐसे होते हैं जो लाखों लोगों को अपने से बड़े उद्देश्य की खोज में एकजुट करने की क्षमता रखते हैं। महाकुम्भ मेला, 12 वर्षों की अवधि में चार बार होने वाला एक श्रद्धेय मेला, इस उद्देश्य का उदाहरण है। कुम्भ मेला, दुनिया भर में सबसे बड़ा शांतिपूर्ण सम्मेलन है, जिसमें करोड़ों तीर्थयात्री आते हैं जो अपने पापों को शुद्ध करने और आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए पवित्र नदियों में डुबकी लगाते हैं। तीर्थयात्री 13 जनवरी से 26 फरवरी तक चलने वाले प्रयागराज महाकुम्भ 2025 की अपनी

यात्रा की तैयारी करते हुए आध्यात्मिक अनुष्ठानों की एक श्रृंखला में भाग ले रहे हैं और एक ऐसी यात्रा पर निकल रहे हैं जो भौतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सीमाओं को पार करती है।

हर हिंदू उत्सव और अनुष्ठान के पीछे शास्त्रीय आधार होता है। उन्हें जोश और उत्साह के साथ-साथ एक ठोस वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार के साथ सम्मानित किया जाता है। ये सभी विशेषताएँ मिलकर किसी त्योहार को मनाने या अनुष्ठान करने का कारण प्रदान करती हैं। इन अनुष्ठानों का उद्देश्य किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग पर ले जाना है जहाँ वो पूर्ण मनोवैज्ञानिक संतुलन, नवीनीकरण और विश्राम प्राप्त कर सकें। महाकुम्भ मेला एक ऐसा उत्सव है जिसमें विज्ञान, ज्योतिष और आध्यात्मिकता का समावेश होता है। महाकुम्भ की तिथियों की गणना वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके की जाती है, जिनमें से अधिकांश ग्रहों की स्थिति का उपयोग करते हैं। जब बृहस्पति ग्रह ज्योतिषीय राशि वृषभ में प्रवेश करता है, तो यह सूर्य और चंद्र के मकर राशि में प्रवेश के साथ मेल खाता है। ये परिवर्तन जल और वायु को प्रभावित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रयागराज के पवित्र शहर में पूरी तरह से सकारात्मक वातावरण बनता है। बस उस पवित्र स्थल पर होना और गंगा में पवित्र डुबकी लगाना आध्यात्मिक रूप से आत्मा को प्रबुद्ध कर सकता है, जिससे शारीरिक और मानसिक तनाव कम हो सकता है।

सनातन धर्म में प्रत्येक आध्यात्मिक या धार्मिक गतिविधि का मानव और सामाजिक उत्थान से एक मजबूत संबंध है, जो सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है और साथ ही हमें यह भी याद दिलाता है कि सनातन धर्म जातिगत भेदभाव में विश्वास नहीं करता है, जिससे लाखों लोगों को आर्थिक रूप से बढ़ावा मिलता है। महाकुम्भ मेला 2025 में न केवल आध्यात्मिक जीवन को समृद्ध करने की क्षमता रखता है, बल्कि इसमें उत्तर प्रदेश में दीर्घकालिक आर्थिक विकास को भी गति देने की ताकत है। अपने विशाल आकार और इससे पैदा होने वाली नौकरियों के साथ, इस आयोजन का उद्देश्य एक स्थायी विरासत छोड़ना है, जो राज्य को वैश्विक आर्थिक केंद्र में बदल देगा। इस आयोजन का आर्थिक प्रभाव न केवल तात्कालिक है, बल्कि यह कई वर्षों तक क्षेत्र में पर्यटन, बुनियादी ढाँचे और रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करता रहेगा।

सन्दर्भ-सूची

- बघेल, डॉ. डी. एस. '**भारतीय समाज एवं संस्कृति**', कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 2019।
- 'निशंक', डॉ. रमेश पोखरियाल '**भारतीय संस्कृति : सभ्यता एवं परम्परा**', डॉयमण्ड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2015।
- दिव्याल, विभांशु '**भारतीय समाज और हिन्दू धर्म**', सिद्धार्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2017।
- प्रभा साक्षी, हिन्दी समाचार, नई दिल्ली, 14 दिसंबर, 2024।
- पांचजन्य, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका, दिल्ली, 18 दिसंबर, 2024।

महाकुम्भः समरसताश्च

डॉ. मनीषा त्रिपाठी*

महाकुम्भः केवलं धार्मिकः आयोजनः न अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक एकतायाः समागमः च अस्ति। महाकुम्भ मेला विश्वस्य सामाजिकः सांस्कृतिकः च कार्यक्रमः अस्ति। महाकुम्भः आस्था, श्रद्धा, संस्कृतिम् महान् उत्सवः अस्ति। भारतस्य प्राचीनपरम्पराणां घोषणा विश्वस्य वृहत्तमः सांस्कृतिक समागमः च अस्ति। अस्य कारणात् भारत विविधतायां एकतायाः दर्शनं कथं जगत् दर्शयति? भिन्नाः सम्प्रदायाः अखाराश्च अत्र आगत्य एकस्मिन् ताले समागच्छन्ति। कुम्भनगरे कोटिजनानाम् विशालः समुद्रः कथं समागच्छन्ति इति दृष्ट्वा जगत् स्तब्धं भवति। भारतस्य कृते अपि महत्त्वपूर्ण यतोहि वर्तमानस्य भविष्यस्य च पीढीनां शाश्वतप्रयोजनस्य साक्षात्कारे साहाय्यं करोति।

एकधा पुनः प्रयागराजे अस्मिन् समये महाकुम्भः विशेषः इति कथ्यते तर्हि तस्य पृष्ठतः कारणं यत् मनुष्यः जीवने एकवारमेव महाकुम्भे स्नानस्य अवसरं प्राप्तुं शक्नोति। महाकुम्भस्य अवसरः 144 वर्षाणाम् अनन्तरं आगच्छति। 12 वर्षाणाम् अनन्तरं आयोजितः कुम्भः पूर्णकुम्भः इति कथ्यते, 12 पूर्णकुम्भानां अनन्तरं अयं महाकुम्भः आगच्छति। अतः तस्य विशेषः अनुरागः अस्ति। प्रयागराजस्य महाकुम्भे कोटिजनानाम् आगमनस्य पृष्ठतः कारणं सनातनस्य एषा अखण्डपरम्परा, या शताब्दशः अनुसृता अस्ति। सनातनधर्मस्य सर्वस्पर्शी आध्यात्मिकराष्ट्रीयसनातनपरम्पराभिः ओतप्रोताः तृतीयाः घटनाः सन्ति ये वसुधैव कुटुम्बकं घोषयन्ति। ये सनातनधर्मस्य निरन्तरं आक्रमणं कुर्वन्ति, व्यंग्यं कुर्वन्ति, आलोचनां च कुर्वन्ति तेभ्यः अपि उत्तरं ददाति। सनातनधर्मे अस्पृश्यता, जातिभेदः इति आरोपः कृतः अस्ति, परन्तु एतत् ज्ञातव्यं यत् महाकुम्भस्य आयोजनं पंचगपत्रे लिखितं तिथिं दृष्ट्वा एव भवति तथा च तस्य आयोजनं कस्यापि संस्थायाः पण्डितसमूहेन वा न भवति एतत् सनातनपरम्परायां यत्र कोटिजनाः स्नानार्थम् आगत्य अस्मिन् किमपि प्रकारस्य भेदभावः नास्ति इति सन्देशं ददाति।

*असिस्टेंट प्रोफेसर, गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय चौक बाजार, महराजगंज-273303 (उ.प्र.); मोबाईल नं.: 8009631282

भारतीयसंस्कृतौ महाकुम्भमेले विशेष महत्त्वम् अस्ति। कुम्भमेला चतुर्षु तीर्थस्थानेषु–हरिद्वार, उज्जैन, नासिक, प्रयागराज च भवति। अर्धकुम्भः, पूर्णकुम्भः, महाकुम्भः च शताब्दशः प्रचलिताः सांस्कृतिक–आध्यात्मिकयात्राः सन्ति। एतेषु नगरेषु क्रमेण 12 वर्षेषु पूर्णकुम्भस्य आयोजनं भवति। कुम्भे सनातनधर्मस्य तपस्विनः, ऋषयः, साधुः, साध्वी, कल्पवासी च तीर्थयात्रायां स्नानार्थम् आगच्छन्ति। अस्मिन् धार्मिकघटनायां खगोलीयघटनानो अपि महत्त्वम् अस्ति। यदि वयं प्रयागराजमहाकुम्भस्य विषये वदामः तर्हि यदा बृहस्पतिः वृषभराशिस्थः सूर्यः मकरराशिस्थः भवति तदा महाकुंभः प्रयागराजे भवति। प्रयागराजस्य चर्चा वेदेषु स्तोत्रेषु च भवति। उच्यते, यदा माघ मकरगत रवि होई, तिरथपतिहिं आव सब कोई। अर्थात् यदा सूर्यः मकरराशिं आगच्छति तदा सर्वे दिव्याः महाऋषयः तीर्थप्रयागं प्रति आगच्छन्ति। पूर्णकुम्भस्य प्रत्येकं 12 वर्षेषु घटमानस्य आधारः ज्योतिषीयः पौराणिकः च अस्ति। ज्योतिषशास्त्रम् सूर्यचन्द्रयोः स्थितिः आधारीकृत्य प्रत्येकं 12 वर्षेभ्यः परं योगाः निर्मीयन्ते। यदा बृहस्पतिः मेषे सूर्यचन्द्रः च मकरराशिस्थः तदा प्रयागराजे पूर्णः कुंभः भवति। समुद्रस्य मंथनसमये यदा अमृतघटः बहिः आगतः तदा तस्य केचन बिन्दवः चतुर्थानेषु प्रसृताः इति पौराणिककथासु वर्णितम् अस्ति। एतानि स्थानानि प्रयागराजः, नासिकः, उज्जैनः, हरिद्वारः च आसन्। अत्रैव महाकुम्भस्य परम्परा आरब्धा।

महाकुम्भ–नगरे विशेषेषु राजस्नानस्य परम्परा अस्ति। आचार्य महामण्डलेश्वरः, भिन्न–भिन्न–अखारा–महन्त पेशवाई च शोभायात्रायाः सह कुम्भ–नगरं प्रविशन्ति। महामण्डलेश्वरः अखाराणां महन्तश्च अलंकृतरथेषु उपविशतः। पेशवाई–नगरे गज–अश्व–आरुह्य अखारेषु राज–शोभायात्राः भवन्ति। तस्य अनुयायि–भक्ताः नृत्यकीर्तन–सहिताः पदातिभिः कुम्भ–नगरं गच्छन्ति। अखारेषु शोभायात्रायाः एषः दृश्यः अलौकिकः स्यात्।

महामण्डलेश्वरः महन्तश्च स्वस्व–अखाराणां ध्वजान् स्वैः सह वहतः। पेशवाई अखाराणां भव्यतायाः, शक्तिस्य, अनुशासनस्य च प्रतीकं मन्यते। एषा परम्परा शताब्दपुराणी अस्ति। सन्तैः प्रतिकूलतमेषु परिस्थितिषु अपि एषा परम्परा निर्वाहिता अस्ति। आदिगुरुशंकराचार्येन स्थापितानां अखारानां शस्त्रज्ञानम् आसीत्। एते अखाराः सनातनधर्मस्य पवित्रशास्त्राणां धार्मिकस्थानानां च रक्षणं कृत्वा हिन्दुधर्मस्य रक्षणं कुर्वन्तः आगताः सन्ति। एतेषां अखारानां स्वकीया परम्परा इतिहासः च अस्ति, परन्तु सर्वेषां मूलं उद्देश्यं सनातनस्य ध्वजस्य निर्वाहः एव।

महाकुम्भस्य सामाजिक–आर्थिकं महत्त्वम् अपि अस्ति। वालुकायाः उपरि स्थितं महाकुम्भ–नगरे वृहत–लघु–व्यापारिणां आर्थिक स्थितिम् अपि सुदृढ़ा करोति। न केवलं साधुः ऋषयः, अपितु भारतात् विदेशेभ्यः च वृहत् उद्यमिनः अपि प्रयागराज प्रति आगच्छन्ति। अत्र कोटिशः भक्तानाम् आगमनात् द्विलक्षकोटिद्वयाधिकं व्यापारस्य आयस्य च सम्भावना वर्तते इति कथ्यते। एतेन आयेन वृहत् उद्यमिनः अपि च खाद्यसामग्री, पुष्पमाला, पूजा इत्यादीनां विक्रयणं कुर्वन्तः लघुव्यापारिणः आर्थिकरूपेण सुदृढ़ाः भविष्यन्ति। साधु यत् केन्द्रे राज्ये च भारतीय संस्कृतेः आस्थायाः च महत्त्वं ददाति इति

सर्वकारः अस्ति। युनेस्कोतः कुम्भस्य प्रशंसा प्राप्तस्य अनन्तरं प्रयागराजस्य कुम्भस्य भव्यतायाः विषये अपेक्षाः अधिकतया वर्धिताः सन्ति। महाकुम्भस्य सज्जता यथा राज्येन केन्द्रसर्वकारेण च कृता, उत्तरप्रदेशस्य अर्थव्यवस्था अपि सुधरति। कुम्भमेला न केवलं कुम्भनगराय अपितु समीपस्थक्षेत्रस्य शिल्पिनां च विपणौ अन्तर्राष्ट्रीयख्यातिं आनेतुं सहायकं भवति।

महाकुम्भे प्रयागराजेन सह वाराणसी, अयोध्या च आध्यात्मिकत्रिकोणः अपि भविष्यति इति रोमाञ्चकम्। अस्मिन् विषये विन्ध्यचलं चित्रकूटं च सर्वकारः समावेशयति।

एतेषां सर्वेषां स्थानानां आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक च महत्त्वम् अस्ति। अवश्यं महाकुम्भार्थ प्रयागराजं आगच्छन्तः भक्ताः एतानि स्थानानि द्रष्टुं इच्छां जनयितुं शक्नुवन्ति, येन तेषां अर्थव्यवस्थायाः अपि प्रवर्धनं भविष्यति। एवं प्रकारेण प्रयागराजमहाकुम्भस्य विशालरूपं बहुपक्षतः द्रष्टुं शक्यते। अस्य महोत्सवस्य रहस्यमयतत्त्वं जगत् अवगच्छति। एतादृशी घटना भारते एव सम्भवति।

सनातन धर्मस्य प्रत्येकस्य आध्यात्मिकस्य धार्मिकस्य वा क्रियाकलापस्य मानवीय सामाजिकस्य उत्थानस्य सह दृढ़ः सम्बन्धः भवति, येन सामाजिक सौहार्दं प्रवर्धयति स्मारयति च। यत् करोति येन कोटि जनानाम् आर्थिकोत्साहः प्राप्यते। महाकुम्भ मेला 2025 न केवलं आध्यात्मिक जीवन समृद्धं कर्तुं अपितु उत्तर प्रदेश दीर्घकालीन आर्थिक वृद्धिं चालयितुं क्षमता अस्ति। अस्य आयोजनस्य निरपेक्षपरिमाणेन, तया सृजति रोजगारस्य च उद्देश्यं वर्तते। यत राज्यं वैश्विक आर्थिक केन्द्र परिणमयितुं स्थायि-विरासततां त्यक्तुं शक्नोति अस्य आयोजनस्य आर्थिक प्रभावः न केवलं तत्काल एवं अपितु आगामिषु वर्षेषु क्षेत्रे पर्यटनं, आधारभूत संरचना, रोजगार-सृजनं च प्रोत्साहयति।

Mānavikī सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

महाकुम्भः 'भारतीय ज्ञान परम्परा' का दैदीप्यमान पर्व

ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह*

भारतवर्ष सदा से ही आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता का अग्रदूत रहा है। यह भूमि ऋषि परम्परा की अद्‌भुत उर्वर भूमि रही है, इसी दिव्य भूमि में उद्‌भूत महान व श्रेष्ठ ऋषिकुल ने दर्शन और विज्ञान के एक ऐसे वाङ्मय कोश का सृजन किया है, जो प्रकृति और मनुष्य के मध्य एक ऐसी सामवयता का सृजन करती है जो आध्यात्मिकता, दर्शन और वैज्ञानिकता को लोक के साथ जोड़ते हुए एक पिण्ड या कलश की संकल्पना करती है। यही 'कलश' कालान्तर में अमृत-कलश का स्वरूप धारण कर लेता है।

पौराणिक स्रोतः

महाकुम्भ से सन्दर्भित स्रोत वेदों, पुराणों तथा अन्य औपनिषदिक ग्रन्थों से मिलते हैं। उक्त ग्रन्थों में महाकुम्भ से सम्बन्धित अनेक घटनाओं एवं कहानियों के विषय में जानकारी होती है। इन कहानियों में देवासुर संग्राम तथा समुद्र मन्थन की कथा सर्वाधिक लोकप्रिय है। कथानुसार देवासुर संग्राम के बाद दोनों पक्ष समुद्र-मंथन को राजी होते हैं, मथना समुद्र को होता है और कार्य दुरूह होता है, तो लोक व्यवहार के अनुरूप मथनी और नेति के रूप में मंदराचल पर्वत और नागवासुकि लोक कल्याणार्थ सहर्ष प्रस्तुत हो जाते हैं। मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों को सहर्ष बाँट लिया जाता है, किन्तु पात्रता के प्राचीन सिद्धान्त का अनुपालन करते हुए जब धन्वन्तरि द्वारा अमृत-कलश देवताओं को दे दिया जाता है तो पुनः युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसे में लीलाधारी विष्णु स्वयं मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की लीला रचते हैं और अमृत-कलश के वहन का दायित्व इंद्र-पुत्र जयंत को सौंपा जाता है। अमृत-कलश को प्राप्त कर जयंत दानवों से अमृत की रक्षा हेतु भाग रहे होते हैं और कलश छलक पड़ता है, अमृत की बूंदें पृथ्वी पर चार स्थानों- हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज में भूमिपत हो जाती हैं।

विष्णु के सहायतार्थ सूर्य, चन्द्र, शनि एवं बृहस्पति भी अमृत-कलश के रक्षार्थ निकटस्थ

*प्रवक्ता डाईट, गोरखपुर

भाव में होते हैं, सहोदर राशियाँ सिंह, कुम्भ एवं मेष भी आस-पास ही विचरण कर रही होती है, अतएव क्रमानुक्रम में ये सभी कुम्भ पर्व के प्रतीक का स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं। इस प्रकार अमृत, ग्रहों एवं राशियों की सहभागिता के कारण यह कुम्भ-पर्व ज्ञान, दर्शन, अध्यात्म, विज्ञान और ज्योतिष के पर्व का स्रोत बन जाता है। इंद्र-पुत्र जयंत को अमृत-कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लग जाता है (माना जाता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है)। अत: कालान्तर में उक्त चारों स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुम्भ मेले का आयोजन लोक व्यवहार के रूप में प्रस्फुटित होकर धर्म और अध्यात्म का विशेष पर्व बन जाता है। ऋग्वेद में भी नदी स्नान और आध्यात्मिक शुद्धि के महत्त्व का वर्णन किया गया है। यह कुम्भपर्व की आध्यात्मिक परंपरा की नींव मानी जाती है। इसमें प्रयागराज (तब 'प्रयाग' के रूप में जाना जाता था) को तीर्थराज कहा जाता है और वहां स्नान की महिमा का अप्रतिम गुणगान भी।

वैज्ञानिक और ज्योतिषीय स्रोत:

महाकुम्भ का आयोजन ग्रह-नक्षत्रों की विशेष स्थिति के आधार पर संकल्पित है। जब बृहस्पति, सूर्य और चंद्रमा विशेष राशि-चक्र में आते हैं, एवं ज्योतिष विज्ञान की गणना अनुक्रम में बृहस्पति के मेष राशि-चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर आयोजित महाकुम्भ करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था के प्रतीक के रूप में अवधारित होता है, महाकुम्भ मात्र एक मेला नहीं अपितु आस्था, परंपरा और सनातन संस्कृति के अद्‌भुत समागम के संगम का पर्याय बन जाता है।

ऐतिहासिक स्रोत:

कुम्भ का इतिहास हजारों साल पुराना है, जिसका आरंभिक उल्लेख मौर्य और गुप्त काल में मिलता है। प्राचीन भारत के स्वर्णकाल के रूप में प्रतिस्थापित गुप्तवंश द्वारा कुम्भ के आयोजन को राजकीय संरक्षण में दिव्य, भव्य स्वरूप प्रदान किया जाता था। कालांतर में चीनी यात्री ह्वेनसांग (7वीं शताब्दी) प्रयागराज में संगम पर आयोजित एक विशाल धार्मिक आयोजन की भव्यता से चमत्कृत हो जाता है और अपने यात्रा वृतांतों में इसका विशद् वर्णन करता है। ह्वेनसांग के इन्ही वृतांतों को कुम्भ मेले के प्राचीन स्वरूप के रूप में देखा जाता है। यद्यपि कि प्रारंभिक मेले, वर्तमान कुम्भ मेले जितने बड़े नहीं परिलक्षित होते हैं, लेकिन ये आयोजन भारतीय उपमहाद्वीप के सभी हिस्सों से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते हैं और हिंदुत्व के उदय के साथ-साथ कुम्भ मेले का स्वरूप और महत्त्व भी बढ़ने लगता है।सदियों तक सांस्कृतिक आपात के बाद जब एक बार पुन: मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन का उदय होता है तो कई शाही राजवंशों द्वारा कुम्भ के माहात्म्य को अप्रतिम समर्थन दिया जाता है, विशेष रूप से चोल और विजयनगर साम्राज्यों द्वारा कुम्भ के गौरव को लौटाने का प्रयास किया जाता है। उन्नीसवीं सदी में ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासक जेम्स प्रिंसेप

जैसे पुराज्ञान के संरक्षकों द्वारा कुम्भ मेले के आनुष्ठानिक विधानों, विशाल सभाओं और सामाजिक-धार्मिक गतिशीलता का उल्लेख करते हुए औपनिवेशिक काल में, कुम्भ मेले के प्रबंधन और व्यवस्थित संरचना का वृहद् अभिलेखीकरण किया जाता है। इन साक्ष्यों से समय की गति के अनुरूप कुम्भ के विकास और स्थायित्व के बारे में महत्त्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी प्राप्त होती है।

स्वतंत्रता के बाद महाकुम्भ ने राष्ट्रीय एकता और भारतीय संस्कृति के प्रतीक के रूप में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। स्वतंत्रता के पश्चात् संविधान की भावना के अनुरूप कुम्भ मेला राष्ट्रीय एकता और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रतिबिम्ब के रूप में शनैः शनैः उदीयमान होने लगता है और वर्ष 2017 में बाध्य होकर यूनेस्को द्वारा कुम्भ को मानव जाति की अमूर्त सांस्कृतिक संपत्ति के रूप में मान्यता प्रदान करना पड़ता है। आज का महाकुम्भ आधुनिकता के सामने सनातन की परंपराओं के पुनर्जीवित, पुनर्प्रख्यापित अस्तित्व और अनुकूलन के साक्षी के रूप में अपनी दिव्यता और भव्यता के साथ खड़ा है।

सांस्कृतिक स्रोतः

भारतवर्ष में कुम्भ मेले का आयोजन आदिकाल से चली आ रही सांस्कृतिक परंपरा है। कुम्भ मेले के आयोजन की अपनी एक अलग ही महत्ता है। ऐसा माना जाता है कि अमृत की बूंदें, पृथ्वी के जिन चार स्थानों नासिक, उज्जैन, प्रयागराज और हरिद्वार में गिरीं, ये चारों स्थान आदिदेव महादेव के अलग-अलग स्वरूपों के लिए भी प्रसिद्ध हैं। कुम्भ मेले तीन प्रकार के होते हैं, प्रत्येक 6 वर्ष में आयोजित होने वाले अर्धकुम्भ, हर 12 वर्ष में आयोजित होने वाले पूर्णकुम्भ और हर 144 वर्ष में आयोजित होने वाला महाकुम्भ, जो इस वर्ष 13 जनवरी 2025 से प्रारम्भ होकर और 26 फरवरी 2025 तक निरंतर आयोजित है।

महाकुम्भ मात्र एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि यह भारतीय समाज की एकता और आस्था का प्रतीक है। यहां आकर लोग न सिर्फ अपने पाप धोने की उम्मीद करते हैं, बल्कि यह अनुभव जीवन भर उनकी स्मृतियों में बस जाता है। नागा साधुओं की पेशवाई, अमृत स्नान और करोड़ों लोगों की आस्था का यह मेला भारतीय सनातनी संस्कृति का जीता-जागता उदाहरण है। आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है 'कुम्भ'। ज्ञान, चेतना और उसका परस्पर मंथन कुम्भ मेले का वह आयाम है जो आदि काल से ही सनातन धर्मावलम्बियों की जाग्रत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के खींच कर ले आता है। वास्तव में कुम्भ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं शुरू हुआ था अपितु इसका इतिहास समय के प्रवाह के साथ स्वयं ही बनता चला गया। वैसे भी धार्मिक परम्पराएं हमेशा आस्था एवं विश्वास के आधार पर टिकती हैं न कि इतिहास पर। यह कहा जा सकता है कि कुम्भ जैसा विशालतम मेला संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए ही आयोजित होता है।

आध्यात्मिक स्रोतः

कुम्भ केवल एक मेला या स्नान तक सीमित नहीं, यह पूरे विश्व को 'वसुधैव कुटुंबकम्' का संदेश देने वाला पर्व भी है, इसका केवल धार्मिक या पांथिक महत्त्व मात्र नहीं है, अपितु यह प्राचीन ऋषियों की एक वृहत्तर एवं व्यापक सोच की परिणीति है।

नक्षत्र विशेष में संगम स्नान का ज्योतिषपरक महत्त्व तो है ही, साथ ही कुम्भ का पर्व राष्ट्र की विविध आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान भी सामूहिकता के साथ करने का माध्यम है। भारत के कोने-कोने से एक स्थान पर एकत्रित होकर लोग अपनी ऐसी समस्याओं का समाधान भी प्राप्त कर लेते हैं, जिनका समाधान वे स्थानीय स्तर पर नहीं कर पाते। प्रत्येक सनातन हिंदू उत्सव और अनुष्ठान के पीछे शास्त्रीय आधार होता है। उन्हें जोश और उत्साह के साथ-साथ एक ठोस वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार के साथ आयोजित किया जाता है।

आधुनिकता की उन्मत्त गति की विशेषता वाली दुनिया में, कुछ ही आयोजन ऐसे होते हैं जो लाखों लोगों को अपने से बड़े उद्देश्य की खोज में एकजुट करने की क्षमता रखते हैं। महाकुम्भ में लाखों तीर्थयात्री आते हैं जो अपने पापों को शुद्ध करने और आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए पवित्र नदियों में डुबकी लगाते हैं। वे आध्यात्मिक अनुष्ठानों की एक श्रृंखला में भाग लेते हैं और एक ऐसी यात्रा पर निकलते हैं जो भौतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सीमाओं को पार कर जाती है। महाकुम्भ की ये सभी विशेषताएँ मिलकर किसी त्योहार को मनाने या अनुष्ठान करने का कारण प्रदान करती हैं। इन अनुष्ठानों का उद्देश्य किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग पर ले जाना है जहाँ वे पूर्ण मनोवैज्ञानिक संतुलन, नवीनीकरण और विश्राम प्राप्त कर सकें।

तात्त्विक स्रोतः

धार्मिकता एवं ग्रह-दशा के साथ-साथ कुम्भ पर्व को तत्त्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, जिससे कुम्भ की उपयोगिता सिद्ध होती है। कुम्भ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्त्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है। प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है। कहा भी गया है 'यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' अर्थात् जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इसलिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिलें, इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है-'कुम्भ', और इस मंथन से निरसित ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का प्रसाद है।

वैज्ञानिक स्रोतः

वैश्विक परिप्रेक्ष्यों में कुम्भ मात्र एक मेले या स्नान तक सीमित नहीं है, अपितु सम्पूर्ण

विश्व के लिए वसुधैव-कुटुंबकम् और विश्व-बंधुत्व का संदेशवाहक पर्व भी है। भारत के ऋषिकुल ने प्राचीन काल से अपनी मेधा से विश्व को आश्चर्यचकित किया है। चेतना का अध्ययन, चरक का भैषज विज्ञान, सुश्रुत की शल्य चिकित्सा, कणाद का परमाणु और गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त, बौधायन की भुज कोटि कर्ण प्रमेय, पिंगल का छंदशास्त्र और अन्य अनेक विषय जो आधुनिक वैज्ञानिकों को भी चमत्कृत कर देते हैं, ऐसे ऋषियों का ज्ञान 'भारतीय ज्ञान परम्परा' के रूप में हमारे पास हजारों वर्षों से विद्यमान है। इस ज्ञान के विस्तार से धारणीय विकास, समाधानपरक दृष्टि एवं साहचर्य की भावना का उदय होता है, अतः 'भारतीय ज्ञान परम्परा' पर व्यापक चिन्तन आवश्यक है। वर्तमान परिप्रेक्ष्यों में इस ज्ञान महाकुम्भ को व्यापक स्वरूप देने के लिए आदि शंकराचार्य को आदर्श मानकर भारत की चारों दिशाओं में एक-एक ज्ञान कुम्भों का आयोजन समीचीन है। महाकुम्भ का आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और आर्थिक महत्त्व अद्वितीय है, साथ ही साथ इसकी सामाजिक समरसता का स्वरूप वैज्ञानिक हैं। महाकुम्भ मेला एक ऐसा उत्सव है जिसमें विज्ञान, ज्योतिष और आध्यात्मिकता का समावेश होता है। महाकुम्भ की तिथियों की गणना वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके ही की जाती है, जिनमें से अधिकांश ग्रहों की स्थिति का उपयोग करते हैं। जब बृहस्पति ग्रह ज्योतिषीय राशि वृषभ में प्रवेश करता है, तो यह सूर्य और चंद्र के मकर राशि में प्रवेश के साथ मेल खाता है। ये परिवर्तन जल और वायु को प्रभावित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रयागराज के पवित्र परिक्षेत्र में पूरी तरह से सकारात्मक वातावरण बनता है। बस उस पवित्र स्थल पर होना और गंगा में पवित्र डुबकी लगाना आध्यात्मिक रूप से आत्मा को प्रबुद्ध कर सकता है, जिससे शारीरिक और मानसिक तनाव कम हो सकता है। यह उत्सव तब होता है जब सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति कुछ निश्चित स्थितियों में होते हैं। यह आयोजन नदी संगम पर होता है जहाँ सौर-चक्र में विशिष्ट अवधियों में अद्वितीय शक्तियाँ कार्य करती हैं। माना जाता है कि यह आयोजन जलमार्गों के ऊर्जा मंथन से जुड़कर शरीर को लाभ पहुँचाता है।

सामाजिक समरसता का स्रोतः

महाकुम्भ सामाजिक एकता, समानता, और सहिष्णुता का प्रतीक है। यह आयोजन समाज को न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से जोड़ता है, बल्कि सामाजिक समस्याओं के समाधान, सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महाकुम्भ एक ऐसा सामाजिक पर्व है, जो 'वसुधैव कुटुंबकम्' के आदर्श को साकार करता है और समाज को एकजुट करने का संदेश देता है। महाकुम्भ पूरे भारत से लोगों का एक विशाल समागम है जो पवित्र गंगा नदी में स्नान करने के लिए आते हैं। यह आयोजन ज्ञान से भरा हुआ है और इसमें कई अनुष्ठान और सांस्कृतिक गतिविधियाँ शामिल हैं। कुम्भ मेला न केवल दुनिया का सबसे बड़ा मानव समागम है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से सबसे गहरा भी है, जो दुनिया भर से करोड़ों भक्तों, संतों और साधकों को आकर्षित करता है। प्रयागराज में आयोजित

महाकुम्भ-2025 लोगों के लिए अपने आध्यात्मिक सार से फिर से जुड़ने, अपनी आत्मा को शुद्ध करने और सहस्राब्दियों से चली आ रही पवित्र यात्रा पर निकलने का एक अनूठा अवसर है। कई ग्रहों की स्थिति का हमारे ग्रह के जल और वायु पर प्रभाव पड़ता है। कुछ ग्रहों की स्थिति में, एक विशिष्ट समय के दौरान एक विशिष्ट स्थान के सकारात्मक ऊर्जा स्तर उच्च हो जाते हैं, जो आध्यात्मिक विकास और जागृति के लिए एक आदर्श वातावरण बनाते हैं। सामाजिक मेलजोल का माध्यम के प्रतीक के रूप में महाकुम्भ में करोड़ों तीर्थयात्री, साधु-संत, और पर्यटक एक साथ रहते हैं, जिससे सामाजिक मेलजोल बढ़ता है। यह पर्व समाज के लोगों को एक-दूसरे की संस्कृतियों और परंपराओं को समझने का अवसर प्रदान करता है। यह आस्था और विश्वास का अनूठा समागम है जो धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समाज को जोड़ता है, जिससे समाज में सकारात्मकता और सद्भाव का संचार होता है। सामाजिक समरसता का पोषक के रूप में महाकुम्भ में सभी लोग समान भाव से एकत्र होते हैं, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, या वर्ग से संबंधित हों। वास्तव में यह आयोजन समाज में व्याप्त भेदभाव को मिटाकर समानता और समरसता का संदेश देने का सर्वोत्तम क्षितिज के रूप में उभरता है। यह आयोजन धार्मिक सहिष्णुता और शांति का संदेश देकर विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक विचारधाराओं को एक मंच प्रदान करते हुए सहिष्णुता, शांति और सद्भाव का संदेश देता है, जिससे समाज में तनाव और विवाद कम होते हैं। साधु-संत और विद्वान विभिन्न सामाजिक, आध्यात्मिक, और नैतिक मुद्दों पर विचार-विमर्श करते हैं। यहाँ उठाए गए विषय समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक होते हैं। महाकुम्भ में पूरे परिवार और समुदाय एक साथ यात्रा करते हैं, जिससे आपसी संबंध मजबूत होते हैं। यह आयोजन परिवार और समाज में सहयोग और समर्पण की भावना को बढ़ावा देता है और पारिवारिक और सामुदायिक संबंधों का सुदृढ़ीकरण होता है। महाकुम्भ में समाजसेवी संस्थाएं, साधु-संत, और स्वयंसेवक बड़े पैमाने पर दान, भोजन, और चिकित्सा सेवाएं प्रदान करते हैं। फलतः यह आयोजन परोपकार और सेवा के आदर्शों को बढ़ावा देकर सामाजिक दान और सेवा के अवसर को बढ़ावा देता है। महाकुम्भ में लोक कला, संगीत, नृत्य, और धार्मिक अनुष्ठानों का प्रदर्शन किया जाता है, जो समाज को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है और भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं और धरोहरों का संरक्षण करता है। सिमटते हुए विश्व में महाकुम्भ केवल भारत तक सीमित नहीं रह गया है, अपितु यह यह वैश्विक स्तर पर भारत की संस्कृति और परंपराओं का प्रतीक बन चुका है। इसमें भाग लेने वाले विदेशी तीर्थयात्री भारतीय समाज की विविधता और सांस्कृतिक धरोहर का अनुभव करते हैं।

निष्कर्ष:

महाकुम्भ विविधता में एकता का अद्वितीय उदहारण है। यह कई जातियों, पंथों और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से लाखों लोगों को एक साथ लाता है, जिससे सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है। इस वर्ष आयोजित महाकुम्भ सिर्फ एक मेले से कहीं ज्यादा

है। यह खुद की ओर की जाने वाली एक यात्रा है। अनुष्ठानों और प्रतीकात्मक कर्मों से परे, यह तीर्थयात्रियों को आंतरिक विचारों में संलग्न होने और पवित्रता के साथ अपने संबंध को गहरा करने का अवसर देता है।

आधुनिक जीवन की माँगों से भरी दुनिया में, महाकुम्भ एकजुटता, पवित्रता और ज्ञान के प्रतीक के रूप में सामने आता है। यह शाश्वत यात्रा के एक मजबूत अनुस्मारक के रूप में याद रखा जायेगा और मानवता के विविध मार्गों के बावजूद, हमारी एकजुटता का मौलिक वाहक बनेगा। शांति, आत्म-साक्षात्कार और पवित्रता के पर्याय के रूप में स्थापित सनातन धर्म प्रत्येक मानव के आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक उत्थान से दृढ़ता से जुडा है, जो सामाजिक-सद्भाव और साहचर्य प्रस्फुटित पुष्पित एवं पल्लवित करता है और साथ ही हम सनातनियों को यह स्मरण भी कराता है, कि महाकुम्भ मेला अनुष्ठानों का जीवंत मिश्रण मात्र ही है, जिसके केंद्र में पवित्र स्नान समारोह होता है, अपितु यह गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम, जिसे त्रिवेणी के नाम से जाना जाता है, में आयोजित प्राचीन सभ्यता और अर्वाचीन परम्पराओं का अद्भुत सम्मिश्रण भी है। भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व से करोड़ों भक्त इस महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान को करने के लिए एकत्र होकर त्रिवेणी के पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं और अपने पापों से मुक्ति पाने की कामना करते हैं, और इस प्रकार श्रद्धालुओं और उनके पूर्वजों को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति का वरदान मिलता है जो अंतत: वे मोक्ष या आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग की ओर प्रयाण करते हैं।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची:

1. **श्रीमद्भागवत महापुराण** - समुद्र मंथन की कथा (स्कंध 8, अध्याय 6-12)।
2. **महाभारत** - तीर्थयात्रा और कुम्भ का उल्लेख (वनपर्व, अध्याय 85-86)।
3. **रामायण** - प्रयागराज और त्रिवेणी संगम का उल्लेख (अयोध्याकाण्ड)।
4. **पद्म पुराण** - कुम्भ स्नान की महिमा।
5. **अग्नि पुराण** - ज्योतिषीय गणना और पर्वों का महत्त्व।
6. **स्कंद पुराण** - प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन की धार्मिक महत्ता।
7. ह्वेनसांग (7वीं शताब्दी) - प्रयागराज में कुम्भ मेले का वर्णन।
8. अलबरूनी (11वीं शताब्दी) - भारतीय तीर्थों और ज्योतिषीय अवधारणाओं का उल्लेख।
9. अकबरनामा (16वीं शताब्दी) - प्रयागराज में कुम्भ मेले का आयोजन।
10. जेम्स प्रिंसेप (1838) - प्रयागराज कुम्भ का विस्तृत विवरण।
11. यूनेस्को (2017) - कुम्भ मेले को 'अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' का दर्जा।
12. बृहज्जातकम (वराहमिहिर) - ग्रहों और राशियों की स्थितियों का प्रभाव।

13. सूर्य सिद्धांत - ज्योतिषीय कालगणना और पर्वों की तिथियाँ।

14. पंचांग और खगोलशास्त्र-कुम्भ मेले की तिथियाँ (बृहस्पति, सूर्य और चंद्र की स्थिति के अनुसार।

15. "The Kumbh Mela: Mapping the Ephemeral Megacity" – Ravi SA Rajan & Tarun Khanna.

16. "Pilgrimage and Power: The Kumbh Mela in Allahabad " – Kama Maclean.

17. "Astronomy and Hindu Calendars"– David Pingree.

18. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार - कुम्भ मेले पर आधिकारिक रिपोर्ट।

Mahakumbh in Ancient Scriptures: A Comprehensive Study

VIKAS KUMAR*

Abstract: The Mahakumbh Mela, a grand Hindu festival held every 12 years, is celebrated at four sacred locations—Prayagraj, Haridwar, Nashik, and Ujjain. As the worlds largest religious gathering, its roots lie deep within ancient Hindu scriptures such as the Vedas, Puranas, and epics like the Mahabharata and Ramayana. This paper examines the historical and spiritual significance of Mahakumbh by analyzing its scriptural mentions, mythology, astronomical principles, and associated rituals. The festival's foundation in the churning of the ocean (Samudra Manthan), sacred river worship, and astrological timing demonstrates its unique position in Indian Spirituality. Further, this paper highlights the Mahakumbh's cultural relevance in modern times, (Ganguli, 1883–1896) (Rajagopalachari, 1957), Focusing on its contributions to spiritual awakening, communal harmony, and ecological awareness.

Keywords: Mahakumbh, Hindu scripture, Samudra Manthan, Vedas, Puranas, sacred rivers,astrology, pilgrimage, spirituality, moksha.

*RESEARCH SCHOLAR, Ancient history, archaeology and culture department, Siddharth University, Kapilvastu (UP)

Introduction:

The Mahakumbh Mela is a monumental spiritual and cultural event in Hinduism, drawing millions of devotees, saints, and scholars from across the world. Celebrated cyclically at four sacred sites, it epitomizes the convergence of mythology, astronomy, and spiritual practice. The festival is not merely a religious congregation but a living embodiment of Indias ancient wisdom and philosophical traditions.

The origin of Mahakumbh is deeply tied to Hindu cosmology, particularly the mythological episode of Samudra Manthan. Beyond mythology, ancient texts like the Rigveda and Atharvaveda extol the sanctity of rivers, laying the philosophical foundation for sacred bathing rituals. Later texts like the Puranas elaborate on the spiritual significance of specific pilgrimages, particularly during astrologically auspicious times.

Aim of research: This research aims to explore the multifaceted aspects of Mahakumbh, focusing on its scriptural basis, symbolic elements, ritualistic practices, and its relevance to contemporary society.

1. Scriptural Foundations of Mahakumbh

The Vedas, the most ancient texts of Hinduism, provide the philosophical and spiritual underpinnings of Mahakumbh.

1. The Rigveda (10.75) ***(Griffith, 2013)***, offers hymns that venerate rivers as sacred entities, emphasizing their purifying qualities. The Ganga, Yamuna, and Saraswati are glorified as divine mothers whose waters carry the power to absolve sins.[1]
2. The Atharvaveda (19.66) ***(Bloomfield, 1897)*** describes rituals involving water and its role in promoting both physical and spiritual well-being. These hymns highlight water's connection to cosmic energy and life's sustenance.[2]

3. The Yajurveda emphasizes the significance of sacred offerings in water during rituals, associating it with renewal and liberation.While the term Mahakumbh; is not explicitly mentioned, the emphasis on sacred rivers and water rituals in the Vedas provides the philosophical groundwork of the festival.

<u>1.2 Puranic Narratives :</u>

The Puranas are rich in mythological accounts that directly related to the Mahakumbh.

1. The Bhagavata Purana and Padma Purana recount the story of Samudra Manthan, where the devas (gods) and asuras (demons) churned the ocean to obtain amrita (nectar of immortality). The spilling of this nectar at four locations—Prayagraj, Haridwar, Nashik, and Ujjain—makes these places eternally sacred.[3]
2. The Matsya Purana (Müller, 1890) highlights the importance of pilgrimage and sacred bathing at these sites during specific celestial alignments, emphasizing the purification of body and soul.[5]
3. The Brahmanda Purana details the spiritual benefits of attending the Mahakumbh, linking it to liberation (moksha).

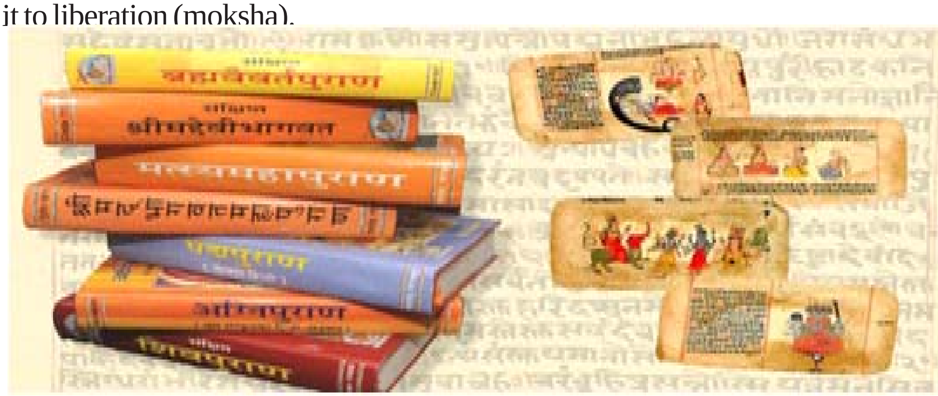

1.3 Epics and Historical Mentions:

The epics Mahabharata and Ramayana provide further validation of the Mahakumbh's sanctity.

1. In the Mahabharata (Ganguli, 1883–1896) Bhishma describes the sanctity of Prayagraj (then Prayag) as the confluence (Sangam) of the Ganga, Yamuna, and Saraswati. This confluence is portrayed as a gateway to liberation.[6]
2. In the Ramayana ***(Rajagopalachari,1957)***, Lord Rama's journey emphasizes the importance of sacred rivers in achieving spiritual goals. The river Ganga, in particular, is depicted as a divine purifier and life-giver.[7]
3. Historical references to large-scale pilgrimages in ancient India suggest that the concept of Mahakumbh evolved as a periodic celebration of these sacred sites.

2. The Mythology of Samudra Manthan:

The Samudra Manthan is the mythological cornerstone of Mahakumbh, representing the eternal struggle between good (devas) and evil (asuras).

1. The Kumbh (pot) containing amrita symbolizes divine wisdom, immortality, and spiritual fulfilment. This pot became the focal point of contention during the churning, leading to the spilling of nectar at the four Kumbh sites.
2. The churning process is symbolic of the human quest for self-realization, with the ocean representing the mind and the nectar signifying enlightenment.
3. The episode highlights the need for balance and cooperation, as even opposing forces collaborated to achieve a higher purpose.This mythological foundation adds a rich layer of symbolism and spiritual meaning to the Mahakumbh, making it more than just a ritualistic gathering.

3. Astronomical and Astrological Principles:

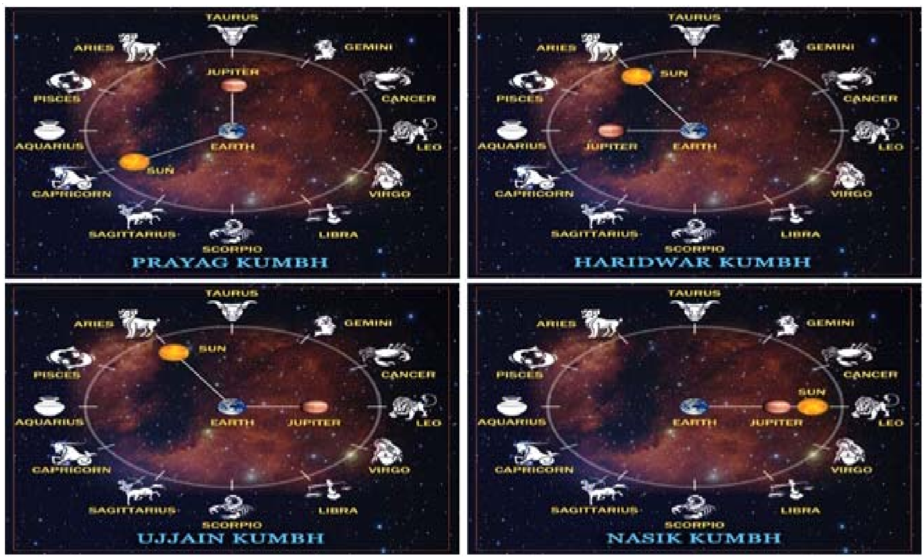

The Mahakumbh is unique in its reliance on precise astronomical calculations.

1. The timing of the festival is determined by the position of Jupiter, the Sun, and the Moon. The Surya Siddhanta ***(Burgess, 1860)*** provides a detailed framework for these calculations, linking them to cosmic harmony.[8]
2. Jupiter's transit into Aquarius and the Sun's presence in Aries are considered highly auspicious. These alignments are believed to enhance the spiritual energy of the sacred sites.
3. Ancient Indian astronomy views these celestial events as opportunities for spiritual renewal, emphasizing the interconnectedness of the universe and human existence.This integration of astronomy with spirituality reflects the advanced understanding of cosmic science in ancient India.

4. Ritual Practices in Mahakumbh:

4.1 Snana (Ritual Bathing) :

Ritual bathing in sacred rivers is the centerpiece of Mahakumbh.

1. The Padma Purana describes the act of bathing as a means to cleanse both physical impurities and karmic sins.[4]
2. The ritual is often accompanied by prayers and offerings, invoking the grace of river deities.
3. Pilgrims believe that bathing during Mahakumbh not only purifies the soul but also ensures a better afterlife.

4.2 Yajnas and Homams

According to History of Dharmashastra[9] ***(Kane, P. V., 1930)*** Yajnas (fire rituals) are performed to invoke divine blessings and purify the environment.

1. The Taittiriya Samhita underscores the role of fire as a medium for communication with the divine.
2. Offerings made during these rituals are believed to bring spiritual and material prosperity.
3. Homams also serve as a communal activity, fostering unity among participants.

4.3 Spiritual Discourses and Congregations

The Mahakumbh is a platform for spiritual leaders to share their wisdom.

1. Saints and scholars deliver discourses on scriptural texts, emphasizing the values of dharma (righteousness) and moksha (liberation).
2. These assemblies promote spiritual learning and introspection, encouraging participants to lead virtuous lives.
3. The exchange of ideas at Mahakumbh often leads to the formation of new philosophical and religious movements.

5. Symbolism and Cultural Relevance

1. The Mahakumbh embodies the universal themes of renewal, unity, and spiritual awakening.
2. Its rituals and practices serve as reminders of humanity's eternal connection with nature and the cosmos.
3. According to India: A Sacred Geography ***(Eck, D. Le, 2012)*** The festival's enduring popularity highlights its relevance as a cultural phenomenon that transcends religious boundaries.[10]

Conclusion:

The Mahakumbh, deeply rooted in ancient scriptures, is a unique confluence of mythology, spirituality, and cosmic science. By examining its origins, rituals, and astrological basis, this paper underscores its timeless relevance as a cultural and spiritual phenomenon. As a symbol of faith and unity, the Mahakumbh continues to inspire millions, fostering a deeper connection with the divine and the natural world.

References

1. Griffith, R. T. H.; Rigveda, Evinity Publishing Inc. (Reprinted Edition), (2013), Page - 161
2. Bloomfield, M. ; Atharvaveda, Oxford University Press, (1897), Page - 57.

3. Prabhupada, A. C. B. S; Bhagavata Purana, Bhaktivedanta Book Trust, (1972), Page - 118
4. Padma Purana, Motilal Banarsidass Publishers (Revised Edition), (1954), Page- 221
5. Müller, F. M. ; Matsya Purana, Oxford University Press, (1890), Page- 137
6. Ganguli, K. M. ; The Mahabharata, Munshiram Manoharlal Publishers. (1883–1896), Page- 83
7. Rajagopalachari, C. ; The Ramayana, Bharatiya Vidya Bhavan, (1957), Page- 182,
8. Burgess, E. ; Surya Siddhanta, American Oriental Society, (1860), Page- 154
9. Kane, P. V. ; History of Dharmashastra, Bhandarkar Oriental Research Institute, (1930), Page- 229
10. Eck, D. L.; India: A Sacred Geography, Random House Publishing Institute, (2012), Page - 178

Mānaviki सामाजिक-मानविकी विषयों की समीक्षित अन्त:अनुशासनात्मक शोध पत्रिका ISSN 0976-0830
वर्ष 16 • अंक 1 • अप्रैल, 2025

सनातन का शंखनाद : रामलला प्राण प्रतिष्ठा और महाकुम्भ-2025

अजय कुमार सिंह* डॉ. प्रदीप कुमार राव**

सृष्टि से पहले सत नहीं था
असत भी नहीं
अंतरिक्ष भी नहीं; आकाश भी नहीं था
छिपा था क्या, कहाँ
किसने ढका था
उस पल तो
अगम अतल जल भी कहाँ था...
सृष्टि का कौन है कर्ता?
कर्ता है या है विकर्ता?
ऊँचे आकाश में रहता
सदा अध्यक्ष बना रहता
वही सचमुच में जानता
या नहीं भी जानता
है किसी को नहीं पता
नहीं पता
नहीं है पता
नहीं है पता
वो था हिरण्यगर्भ सृष्टि से पहले विद्यमान
वही तो सारे भूत जाति का स्वामी महान
जो है अस्तित्वमान धरती आसमान धारण कर

*वरिष्ठ पत्रकार; **कुलसचिव, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम, बालापार, गोरखपुर

ऐसे किस देवता की उपासना करें हम हवि देकर
जिसके बल पर तेजोमय है अंबर
पृथ्वी हरी भरी स्थापित स्थिर
स्वर्ग और सूरज भी स्थिर
ऐसे किस देवता की उपासना करें हम हवि देकर
गर्भ में अपने अग्नि धारण कर पैदा कर
व्यापा था जल इधर उधर नीचे ऊपर
जगा चुके व एकमेव प्राण बनकर
ऐसे किस देवता की उपासना करें हम हवि देकर
ऊँ! सृष्टि निर्माता, स्वर्ग रचयिता पूर्वज रक्षा कर
सत्य धर्म पालक अतुल जल नियामक रक्षा कर
फैली हैं दिशाएँ बाहु जैसी उसकी सब में सब पर
ऐसे ही देवता की उपासना करें हम हवि देकर
ऐसे ही देवता की उपासना करें हम हवि देकर

विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में ऋषि प्रजापति परमेष्ठी द्वारा रचित इस नासदीय सूक्त का संबंध ब्रह्मांड विज्ञान और ब्रह्मांड की उत्पत्ति से है। इस सूक्त में इसी सत्य की अभिव्यक्ति है कि विश्व ब्रह्मांड में एक ही सर्वोच्च सत्ता है, जिसका नाम रूप कुछ भी नहीं है। भारतीय संस्कृति और सनातन में यह मान्यता बद्धमूल है। सनातन का अर्थ है- शाश्वत (सदा बना रहने वाला), अर्थात् जिसका न आदि है न अन्त। वर्तमान में हिन्दू को सनातन का पर्याय माना जाता है लेकिन गहराई से विचार करें तो इसकी व्यापक अवधारणा में सिख, बौद्ध और जैन धर्मावलम्बी भी आते हैं। यहाँ तक कि चार्वाक दर्शन को मानने वाले नास्तिक भी। असल में सनातनधर्मियों के लिए किसी एक विशिष्ट पूजा पद्धति, कर्मकांड या वेशभूषा को मानना जरूरी नहीं है। आवश्यक बस इतना है कि व्यक्ति सनातनधर्मी परिवार में जन्मा हो। वेदांत, मीमांसा, चार्वाक, बौद्ध, जैन आदि किसी भी दर्शन को मानता हो, बस यही इतना किसी के सनातनी होने के लिए पर्याप्त है। हजारों वर्षों के सनातनी इतिहास में इक्कीसवीं शताब्दी में वर्ष 2024 और 2025 का विशेष महत्त्व माना जा रहा है। बहुत से लोग इसे सनातन का स्वर्णिम काल भी मान रहे हैं। 22 जनवरी, 2024 पौष शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को अयोध्या के राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई और 13 जनवरी, 2025 से 26 फरवरी, 2025 तक तीर्थराज प्रयाग में महाकुम्भ का आयोजन। इन दोनों ही आयोजनों को सनातन का शंखनाद और सनातन का जयघोष कहा जा रहा है। यह भारतीय समाज में दोनों ही के गहरे धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व को दर्शाता है। इन दोनों घटनाओं का आपस में गहरा संबंध है और यह भारतीय समाज के धर्म, संस्कृति और आस्था के पुनर्निर्माण की दिशा में

महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर बन सकते हैं। इस लेख में हम इन दोनों घटनाओं के सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक महत्त्व पर चर्चा करेंगे और यह समझने की कोशिश करेंगे कि क्यों इन्हें 'सनातन का शंखनाद' कहा जा रहा है।

हिन्दुत्व जागरण के दो आयाम

21वीं शताब्दी के हिन्दुत्व जागरण के दो आयाम इतिहास में लिखे जाएंगे। पहला रामजन्मभूमि आंदोलन और दूसरा 2025 का प्रयागराज महाकुम्भ। रामजन्मभूमि की मुक्ति के लिए मुगल काल से चला आ रहा संघर्ष ब्रिटिश काल में भी जारी था। सांप्रदायिक आधार पर मुसलमानों के नाम पर बने पाकिस्तान और भारत के विभाजन का दुख पाने के बाद बहुसंख्यक हिन्दू जनमानस को उम्मीद थी कि स्वतंत्र भारत में उसके आदर्श भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि बाबरी ढाँचे के कलंक से मुक्त हो जाएगी। 1949 में जन्मभूमि पर रामलला के प्राकट्य के बाद यह विश्वास और बलवती हुआ। लेकिन तत्कालीन सत्ताधारियों के छद्म धर्मनिरपेक्षतावाद के चलते दशकों तक हिन्दू समाज खुद को उपेक्षित और दबा हुआ महसूस करता रहा। हिन्दुओं के साथ हो रहे इस भेदभाव और अत्याचार के खिलाफ देश में धीरे-धीरे हिन्दू पुनर्जागरण का दौर शुरू हुआ। ब्रिटिश काल से ही हिन्दुत्व को मुखर अभिव्यक्ति दे रहे डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा 27 सितम्बर 1925 को स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), स्वतंत्र भारत में 21 अक्टूबर 1951 को गठित भारतीय जनसंघ, 1964 में स्थापित विश्व हिन्दू परिषद्, 6 अप्रैल 1980 को गठित भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और अन्य कई हिन्दूवादी संगठनों ने साधु-संन्यासियों के साथ इस आंदोलन को धार देनी शुरू की। जैसे-जैसे रामजन्मभूमि आंदोलन बढ़ा वैसे-वैसे हिन्दू समाज को एक नई ऊर्जा मिलती चली गई। इस आंदोलन ने धर्मनिरपेक्षता का पाखंड फैलाकर वोट बैंक की राजनीति करने वालों का नकाब धीरे-धीरे उतार दिया। जनता, प्रतिक्रिया में खड़ी हो गई। रामजन्मभूमि की मुक्ति को लेकर देश भर में उत्पन्न हुई इस जन संवेदना को पहली बार राजनीतिक आधार मिला था। 1980 के दशक में जब आंदोलन तीव्र गति पकड़ने लगा। धर्मसंसद और साधु-संन्यासियों के आह्वान पर कारसेवक अयोध्या कूच करने लगे और मुस्लिम वोट बैंक की चिंता में घुली जा रही सरकारों ने उनका दमन शुरू किया तो हिन्दू समाज उठ खड़ा हुआ। उसे अपने वोट की ताकत का अहसास हो गया और नतीजा यह निकला कि 1984 के बाद आरएसएस और हिन्दूवादी संगठनों के साथ राममंदिर के पक्ष में खुलकर बोलना शुरू करने वाली भाजपा ने 1989 के चुनाव में 85 सीटें जीत लीं। जबकि 1984 के अपने पहले लोकसभा चुनाव में भाजपा सिर्फ 2 सीटें जीतने में ही कामयाब हो पाई थी। यहाँ यह जानना जरूरी है कि 1984 के आम चुनाव पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की हत्या के तुरंत बाद आयोजित किए गए थे। हालाँकि असम और पंजाब में चल रहे उग्रवाद के कारण मतदान 1985 तक के लिए टाल दिया गया था। उस चुनाव में कांग्रेस ने 514 सीटों में से 404 सीटें जीतीं और विलंबित चुनावों में 10 सीटें और जीत ली थीं।

1984 में लालकृष्ण आडवाणी जी भाजपा के अध्यक्ष बने। उनके नेतृत्व में भाजपा राम जन्मभूमि आंदोलन की राजनीतिक आवाज बन गई। इसके पहले विश्व हिन्दू परिषद् ने 1980 के दशक के पूर्वार्द्ध में अयोध्या में बाबरी ढाँचे के स्थान पर राम मंदिर निर्माण के उद्देश्य से एक अभियान की शुरुआत की थी। अयोध्या में मंदिर तुड़वाकर मस्जिद का निर्माण बाबर ने करवाया था। आंदोलन का आधार यही था कि यह स्थान श्रीराम की जन्मभूमि है और यहाँ पर बाबर ने मंदिर तुड़वाकर मस्जिद बनवाया है। भाजपा ने इस अभियान का समर्थन करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे उसे चुनाव में भी इस अभियान का लाभ मिलने लगा। राममंदिर आंदोलन की ताकत के साथ ही भाजपा ने 1989 के लोक सभा चुनावों में 85 सीटें हासिल कीं। उस चुनाव में कांग्रेस और जनता दल के बाद भाजपा लोकसभा में तीसरे सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी। इसे इन 1984 के आम चुनावों में जिस कांग्रेस ने 404 सीटें जीती थीं, उसी कांग्रेस को 1989 में 197 सीटों से संतोष करना पड़ा। जबकि जनता दल को 143 और भाजपा को 85 सीटें मिली थीं। कांग्रेस को सत्ता गंवानी पड़ी थी। जनता दल के समर्थन से विश्वनाथ प्रताप सिंह देश के प्रधानमंत्री बने थे। इस सरकार को भाजपा ने समर्थन दिया था जिसे रथयात्रा पर निकले आडवाणी जी की गिरफ्तारी के बाद वापस ले लिया गया था और विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार गिर गई थी।

1990 में हुए विधानसभा चुनाव में हिमाचल, राजस्थान और मध्य प्रदेश में एक साथ कमल खिला। 25 सितम्बर 1990 को सोमनाथ से शुरू हुई भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा ने पूरे देश को राममय बना दिया। इस रथयात्रा को 30 अक्टूबर को अयोध्या पहुंचना था लेकिन रथ को बिहार में रोक दिया गया। आडवाणी जी गिरफ्तार कर लिए गए। 30 अक्टूबर 1990 और 2 नवंबर 1990 को अयोध्या में उत्तर प्रदेश पुलिस ने कारसेवकों पर गोलियाँ बरसाईं जिसमें कई कारसेवक शहीद हुए। इसके बाद तो जैसे हिन्दू जनमानस, तुष्टिकरण की राजनीति को पूरी तरह समझ गया। 24 जून 1991 को उत्तर प्रदेश में पहली बार भाजपा की सरकार बनी जिसके अगुआ के तौर पर कल्याण सिंह ने राज्य की बागडोर संभाली। हालाँकि छह दिसम्बर 1992 को बाबरी ढाँचा विध्वंस के बाद केंद्र में बैठी तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उत्तर प्रदेश सहित देश के चार राज्यों की भाजपा सरकारों को रातोंरात बर्खास्त कर दिया था। बाबरी ढाँचा विध्वंस के बाद देश में एक बार फिर छद्म धर्मनिरपेक्षतावाद की राजनीति का गंदा खेल खेला गया। कांग्रेस और छद्म धर्मनिरपेक्षतावादी नेता अपने वोट बैंक को सहेजने में जुटे रहे और निर्दोष जनता उन्मादियों की भीड़ का शिकार बनती रही। हिन्दू जनमानस ने लगातार और बार-बार जख्म सहे लेकिन इससे बेपरवाह हिन्दू समाज का ही एक वर्ग खुद की सफाई देने में जुटा रहा। जबकि व्यापक हिन्दू समाज ने लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति अपना विश्वास कम नहीं किया। उधर, आरएसएस, भाजपा और अन्य हिन्दूवादी संगठनों ने हिन्दुओं को वोट की ताकत का अहसास कराना जारी रखा। हिन्दू पुनर्जागरण का अभियान धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा। पहले मतदान से उदासीन रहने वाले या फिर

जातिवाद के चक्कर में वोटों के बिखराव के शिकार होने वाले हिन्दू समाज ने एकजुट होकर मतदान करना शुरू किया। इसके पहले तक मुस्लिम वोट बैंक की बात होती थी और छद्म निरपेक्षतावादी राजनीति सिर्फ उन्हीं की चिंता करती थी। लेकिन अब यह लगने लगा कि हिन्दू समाज अपने हितों को लेकर जागरूक हो रहा है और इस दृष्टिकोण से मतदान भी करने लगा है। नतीजा, खुलकर हिन्दुओं के पक्ष में खड़ी नजर आने वाली भाजपा को 1991 के लोकसभा चुनाव में 120 सीटें मिलीं और 1996 आते-आते केंद्र में सरकार बनाने की स्थिति तक पहुंच गई।

भाजपा ने पहली बार 161 सीटों के साथ केंद्र में सरकार बनाई। अटल बिहारी वाजपेयी भाजपा के पहले प्रधानमंत्री बने लेकिन वे सिर्फ 13 दिन अपने पद पर रह पाए। 1998 के आम चुनाव में भाजपा ने 182 सीटों पर जीत दर्ज की। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की सरकार ने शपथ ली। इस बार जयललिता के नेतृत्व में अन्नाद्रमुक ने समर्थन वापस ले लिया और लोकसभा में विश्वासमत के दौरान एक वोट से सरकार गिर गई। सरकार गिरने के पीछे छद्मधर्मनिरपेक्षतावादियों की अनैतिकता का वह उदाहरण भी मिलता है जिसमें उड़ीसा के तत्कालीन कांग्रेसी मुख्यमंत्री गिरिधर गोमांग ने पद पर रहते हुए भी लोकसभा की सदस्यता नहीं छोड़ी थी। उन्होंने विश्वासमत के दौरान सरकार के खिलाफ मतदान किया था। इस अनैतिकता के चलते देश को एक बार फिर आम चुनावों का सामना करना पड़ा और जनता ने एक बार फिर 182 सीटों के साथ भाजपा के पक्ष में जनादेश दे दिया। उस चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को कुल 306 सीटें मिलीं। अटल बिहारी वाजपेयी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने। गठबंधन की राजनीति की अपनी सीमाओं के बावजूद उस सरकार ने 5 साल के कार्यकाल में कई बड़ी उपलब्धियाँ अर्जित कीं। लेकिन 2004 के चुनाव में एक बार फिर छद्म धर्मनिरपेक्षतावाद और जाति की राजनीति कामयाब हो गई। अगले एक दशक तक हिन्दूवादी राजनीति ने कई उतार-चढ़ाव देखे। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर तमाम जुल्म सहे। लेकिन न समाज ने हिम्मत हारी न उसके हक की बात करने वाले संगठनों ने। अंततः बहुसंख्यक हिन्दू समाज ने अपने वोट की ताकत का अहसास कराया और 2014 में पहली बार देश में नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। उस चुनाव में 336 सीटों के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सबसे बड़ा गठबंधन और 282 सीटों के साथ भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। जबकि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने 59 सीटों पर और कांग्रेस ने 44 सीटों पर जीत हासिल की थी। यह सरकार, पूरी तरह हिन्दुओं की सरकार के तौर पर रेखांकित की गई क्योंकि उस समय तक गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी जी हिन्दुत्व के ब्रांड बन चुके थे और हिन्दू हितों की बात करने के नाते ही छद्म धर्मनिरपेक्षतावादियों के निशाने पर थे। नरेंद्र दामोदरदास मोदी जी ने 26 मई 2014 को देश के प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ली। कम समय में ही उनके नेतृत्व में भाजपा सरकार ने अभूतपूर्व उपलबिधयाँ अर्जित कीं। 2019 के लोकसभा चुनावों में एक

बार फिर भाजपा ने 303 सीटों पर जीत हासिल की और अपने पूर्ण बहुमत को बनाये रखा। भाजपा की अगुवाई वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को 353 सीटें मिलीं। नरेंद्र मोदी जी दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। वैश्विक राजनीति में हिन्दुत्व के सिरमौर बने नरेंद्र मोदी जी ने 2024 के लोकसभा चुनाव में लगातार तीसरी बार जीत हासिल करके प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। इस बार भाजपा को 240 और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को 293 सीटें आई हैं। राममंदिर आंदोलन के साथ भारतीय राजनीति में जहाँ एक तरफ भाजपा लगातार हिन्दुत्व का परचम लहरा रही है तो वहीं कांग्रेस के रसातल में जाने का सिलसिला जारी है। 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने सिर्फ 52 सीटें जीतीं और उसके नेतृत्व वाले गठबंधन ने 92 सीटें। जबकि 2024 के आम चुनाव में पूरा जोर लगाने के बाद भी कांग्रेस की कुल 99 सीटें ही आईं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि देश में बहुसंख्यक हिन्दू समाज अब एकता के ऐसे सूत्र में बंध गया है कि जाति और अन्य संकीर्ण सवालों पर राजनीति करने वालों का बोरिया बिस्तर बंध चुका है। उत्तर प्रदेश में भी 2017 के बाद 2022 में योगी आदित्यनाथ जी की अगुवाई में पूर्ण बहुमत की सरकार ने भगवा परचम लहरा रखा है। इस बीच पाँच सदी से जारी विवाद का समाधान भी निकला। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद राममंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ तो योगी सरकार ने ट्रस्ट द्वारा किए जाने वाले भव्य राममंदिर निर्माण के साथ अयोध्या को चमकाने में दिन-रात एक कर दिया। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण तेजी से हो रहा है। 22 जनवरी 2024 को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी है। हिन्दूवादी विचारधारा में रची-बसी राजनीति 'सबका साथ-सबका विकास' की अवधारणा के साथ उत्तर प्रदेश और पूरे राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जा रही है। इसी बीच 144 साल बाद महाकुम्भ-2025 का दुर्लभ संयोग बना तो प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने इसे विश्व का सबसे बड़ा आयोजन बना डाला।

महाकुम्भ-2025 और राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा : एक ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में कुम्भ मेला एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण धार्मिक आयोजन है, जिसे हर बार क्रम से हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज (इलाहाबाद) में आयोजित किया जाता है। महाकुम्भ मेला हर बार 12 वर्षों में एक बार आयोजित होता है, और यह वह समय होता है जब करोड़ों श्रद्धालु गंगा, यमुना, और सरस्वती (त्रिवेणी संगम) के पवित्र जल में आस्था की डुबकी लगाते हैं। इस बार 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा से प्रारंभ हुए महाकुम्भ-2025, प्रयागराज में 26 फरवरी, महाशिवरात्रि की तिथि तक कुल 45 दिनों में 66 करोड़ 21 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने पावन त्रिवेणी में पवित्र डुबकी लगाकर पुण्य लाभ प्राप्त किया। माना जाता है कि दुनिया में करीब 120 करोड़ सनातनी हैं। इस लिहाज से 2025 के महाकुम्भ में दुनिया के आधे से अधिक सनातनियों ने स्नान किया। महाकुम्भ मेला न केवल आध्यात्मिक महत्त्व रखता है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, परंपरा और एकता का प्रतीक भी है। वहीं, राममंदिर का निर्माण भी भारतीय समाज के

लिए एक ऐसा ऐतिहासिक क्षण है जिसने पूरी दुनिया का ध्यान उनकी ओर खींचा। यह मंदिर अयोध्या में बन रहा है, जहाँ प्रभु राम का जन्म हुआ था। लंबे समय से चल रहे इस विवाद की समाप्ति और अब राममंदिर का निर्माण भारतीय हिंदू समाज के लिए एक बहुत बड़ी धार्मिक विजय है। राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा के समय मंदिर के भीतर भगवान् राम की मूर्ति स्थापित की गई, जो सनातनियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक क्षण था।

सनातन का शंखनाद : धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण

'सनातन' शब्द का मतलब होता है 'अनादि' या 'जो कभी समाप्त न हो'। सनातन धर्म, जिसे हम हिंदू धर्म भी कहते हैं, एक अत्यंत पुरानी और स्थायी परंपरा है, जो समय के साथ विकसित होती रही है लेकिन अपनी मूल अवधारणाओं को सहेजे रखी है। इस धर्म के भीतर वेद, उपनिषद्, भगवद्गीता और रामायण जैसे ग्रंथों का अहम स्थान है। महाकुम्भ-2025 और राममंदिर प्राण-प्रतिष्ठा को 'सनातन का शंखनाद' या 'सनातन का जयघोष' इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि ये दोनों घटनाएँ सनातन धर्म के शाश्वत और अद्वितीय महत्त्व को उजागर करती हैं। महाकुम्भ मेला जहाँ हिंदू समाज की एकता, आस्था और संप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक है, वहीं राममंदिर का निर्माण और उसकी प्राण प्रतिष्ठा सनातन धर्म के आदर्शों और सिद्धांतों की पुनःस्थापना का प्रतीक है। यह 'शंखनाद' भारतीय समाज को एक नई दिशा देने का संकेत है, जिसमें प्राचीन धर्म और संस्कृति की पुनर्रचना की जा रही है। यह एक आह्वान है, जो हिंदू समाज को अपने मूल्यों, परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं के प्रति सजग और जागरूक करता है।

महाकुम्भ और राममंदिर : हिंदू समाज के लिए ऐतिहासिक महत्त्व

महाकुम्भ-2025 की बात करें तो यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं रह गया, बल्कि यह भारतीय समाज की समृद्ध संस्कृति का प्रतीक भी बन गया है। इसमें भाग लेने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं ने अपनी आत्मिक शुद्धता की प्राप्ति के लिए पवित्र नदियों में स्नान किया। इस मेले ने जहाँ देश के कोने-कोने से जुटे भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ जोड़ दिया वहीं दुनिया के तमाम देशों से आए गैर हिन्दुओं को भी सनातनी परंपराओं के पालन के लिए प्रोत्साहित किया। 2024 में अयोध्या में राममंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद 2025 में आयोजित हुआ महाकुम्भ मेला विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो गया। इस मेले ने विश्व भर में फैले सनातनियों में एक अद्भुत धार्मिक ऊर्जा का संचार किया है। यह ऊर्जा, हिंदू समाज को एक नई दिशा में प्रेरित कर रही है। वहीं अयोध्या में राममंदिर का निर्माण भारतीय समाज के लिए एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विजय का प्रतीक है। 1992 में बाबरी ढांचे के विध्वंस के तीन दशक से भी अधिक समय बाद मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ तो समूचे हिन्दू समाज ने 500 से अधिक वर्षों तक थोपी गई मानसिक यंत्रणा से मुक्ति का अनुभव किया। अयोध्या और राममंदिर को केवल एक धार्मिक स्थल के रूप में नहीं, बल्कि हिंदू समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक अस्मिता की पुनःस्थापना के रूप

में देखा जा रहा है। राममंदिर का निर्माण उस सत्य की पुष्टि करता है कि भगवान् राम का जन्म अयोध्या में हुआ था और वहाँ मंदिर को तोड़कर बनाए गए बाबरी ढांचे की जगह पुनः मंदिर का निर्माण अनिवार्य था। यह न केवल हिंदू धर्म की धार्मिक पहचान का प्रतीक है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और गौरव की पुनःस्थापना का संकेत भी है। इस तरह महाकुम्भ-2025 और राममंदिर प्राण-प्रतिष्ठा भारतीय समाज के लिए ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इन दोनों का संयोजन भारतीय संस्कृति और धर्म की पुनःस्थापना की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। 'सनातन का शंखनाद' या 'सनातन का जयघोष' शब्द इन घटनाओं के महत्त्व को उजागर करता है, और यह हमें हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की याद दिलाता है। इन घटनाओं के माध्यम से हम न केवल अपनी आस्था और विश्वास को पुनः जीवित करेंगे, बल्कि एक सशक्त और समृद्ध हिंदू समाज की ओर अग्रसर होंगे।

पवित्र नदियों की गोद में पुष्पित-पल्लवित भारतीय सभ्यता

भारत में वैदिक सभ्यता के विकास के काल की जानकारी हमें मुख्य रूप से वेदों से प्राप्त होती है। इसमें ऋग्वेद सर्वप्राचीन होने के कारण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। ऋग्वैदिक काल या पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ईसा पूर्व) में आर्यों का निवास स्थान सिन्धु और सरस्वती नदियों के बीच में था। इस काल में कौशांबी नगर में पहली बार पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया। आगे चलकर आर्य पूरे उत्तर भारत में फैले। गंगा और उसकी सहायक नदियों के मैदानी इलाकों में मुख्य तौर पर सभ्यता का विकास हुआ। गंगा को भारत में मां का स्थान दिया जाता है और आज भी यह देश की सबसे पवित्र नदी मानी जाती है। ईसा पूर्व छठीं सदी में भारत भूमि पर कई धार्मिक पंथों और संप्रदायों की स्थापना हुई। भारतीय जनमानस को लंबे समय तक प्रभावित करने वाले बौद्ध और जैन धर्म का उदय भी इसी काल में माना जातस है। जैन धर्म के दो तीर्थंकर ऋषभनाथ और अरिष्टनेमि का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ और भगवान् महावीर चौबीसवें तीर्थंकर थे। भगवान् महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व के आसपास वैशाली के पास कुंडग्राम में बताया जाता है। वहीं बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ गौतम (महात्मा बुद्ध) का जन्म 563 ईसापूर्व में शाक्यकुल के राजा शुद्धोदन के घर हुआ था। जैन और बौद्ध दोनों धर्मों ने अहिंसा और सदाचार पर जोर दिया है। दोनों धर्मों ने कर्मवाद, पुनर्जन्म और मोक्ष को महत्त्व दिया है। दोनों धर्मों ने प्रचार-प्रसार के लिए भिक्षु संघों की स्थापना की। बौद्ध धर्म का विस्तार भारत के बाहर भी हुआ। चीन, जापान तथा श्रीलंका और दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों में बौद्ध धर्म का पालन बहुसंख्यक आबादी द्वारा किया जाता है। यह कई देशों का प्रमुख धर्म है।

विदेशी आक्रांताओं का शिकार भारत

एक तरफ जहाँ सनातन और भारत भूमि पर जन्मे अन्य धर्मों ने पूरी दुनिया को सत्य, सदाचार, अहिंसा और प्रेम का संदेश दिया वहीं सदियों पूर्व विदेशी आक्रांताओं ने भारत की

आर्थिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक संपदा को लूटने के इरादे से इस पर आक्रमण करना शुरू कर दिया था। उस दौर में यूनानी और फारसी आक्रमणकारियों की नजर भी इधर पड़ी। ईसा पूर्व चौथी सदी में मकदूनिया का राजा सिकंदर पश्चिम एशिया जीतने के बाद अरब, मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान होते हुए आगे बढ़ रहा था। झेलम और चिनाब के बीच के क्षेत्र में पोरस और सिकंदर के बीच हुए युद्ध के बारे में बताया जाता है कि इसमें पोरस की हार हुई थी। पोरस जब बंदी बनाकर सिकंदर के सामने पेश किया गया और सिकंदर ने उससे पूछा कि तुम्हारे साथ कैसा सुलूक किया जाए तो उसने साहस से उत्तर दिया कि जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है। कहते हैं कि पोरस के उत्तर पर मुग्ध होकर सिकंदर ने उसका हारा हुआ इलाका उसे लौटा दिया। सिकंदर का भारत के वीर योद्धा चन्द्रगुप्त मौर्य की विशाल सेना का सामना होता इसके पहले ही उसकी सेना बुरी तरह खौफजदा हो गई। अंततः सिकंदर को भारत विजय का सपना छोड़कर वहीं से वापस लौटना पड़ा। चौथी सदी ई.पू. में चंद्रगुप्त मौर्य ने सिकंदर के क्षत्रप सेल्यूकस को हराया जिसके चलते उसने हेरात, कंदहार, काबुल और बलूचिस्तान के प्रांत उन्हें सौंप दिए थे। चंद्रगुप्त के बाद बिंदुसार और बिंदुसार के बाद अशोक मौर्य भारत के महान सम्राट बने। उन्होंने मौर्य साम्राज्य को अपने चरम पर पहुँचा दिया था। इतिहास में उल्लखित है कि कलिंग युद्ध अशोक के जीवन का निर्णायक युद्ध था। इस युद्ध में भी अशोक की विजय हुई लेकिन इसमें अपनी सेना द्वारा किए गए नरसंहार के प्रति उन्हें बड़ी ग्लानि हुई। उन्होंने बौद्ध धर्म को अपना लिया। अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाने के बाद इसका दुनिया भर में प्रचार और विस्तार किया। मौर्य साम्राज्य के बाद शुंग राजवंश के राजा पुष्यमित्र के शासनकाल में पश्चिम से यवनों का आक्रमण हुआ। इसके बाद पह्लवों का शासन आया जिनके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती। फिर कुछ समय के लिए शकों के शासन का भी उल्लेख मिलता है। वहीं दक्षिण भारत में चेर, पांड्य और चोल राजाओं के बीच सत्ता संघर्ष चलता रहा था। उस समय मुख्यतः वैष्णव, शैव, बौद्ध और जैन आदि धार्मिक सम्प्रदायों का प्रचलन था। सन् 320 ईस्वी में चन्द्रगुप्त प्रथम अपने पिता घटोत्कच (जिन्होंने गुप्त वंश की नींव डाली थी) के बाद राजा बने। उनके बाद समुद्रगुप्त (340 ईस्वी), चन्द्रगुप्त द्वितीय (380-413 ईस्वी), कुमारगुप्त प्रथम (413-455 ईस्वी) और स्कन्दगुप्त (455-467 ईस्वी) शासक बने। इसके बाद करीब एक सौ वर्षों तक गुप्तवंश का अस्तित्व बना रहा। उस दौर में उत्तर और दक्षिण भारत दोनों में कला और साहित्य का खूब विकास हुआ। इस काल के सबसे प्रतापी राजा समुद्रगुप्त थे। उनके शासनकाल में भारत को सोने की चिड़िया कहा जाने लगा था। 606 ईस्वी में हर्ष का उदय हुआ। 11वीं और 12वीं सदी में भारतीय कला, भाषा और धर्म का प्रचार दक्षिण-पूर्व एशिया में भी हुआ।

बार-बार आक्रमण का शिकार सनातन

भारत और यहाँ की धरती में रचा-बसा सनातन बार-बार विदेशी आक्रमण का शिकार होता रहा। मुहम्मद बिन कासिम ने 712 ईस्वी में सिंध पर आक्रमण किया था। बाबर ने 1519 ईस्वी में

भारत पर अपना पहला आक्रमण किया था। तैमूर ने दिल्ली सल्तनत पर हमला करते हुए 1398 ईस्वी में उत्तरी भारत पर कब्जा किया था। महमूद गजनवी ने 17 बार भारत को लूटा था।

अफगानिस्तान के मुहम्मद गोरी ने 1175 ईस्वी में भारत पर आक्रमण किया था। मुहम्मद गोरी को पृथ्वीराज चौहान ने युद्ध में 17 बार हराया था। पृथ्वीराज चौहान इतने दरियादिल थे कि हर बार उसे माफ करके छोड़ दिया। 18वीं बार मुहम्मद गोरी ने जयचन्द की मदद ली। उसने धोखे से पृथ्वीराज चौहान को हरा दिया। उन्हें बन्दी बना लिया गया। मुहम्मद गोरी उन्हें अपने साथ ले गया। उसने सजा के तौर पर पृथ्वीराज की आँखों को गर्म सलाखों से फोड़वा दिया। जब मुहम्मद गोरी ने चंदबरदाई से पृथ्वीराज चौहान की अन्तिम इच्छा पूछने के लिए कहा तो उसे बताया गया कि पृथ्वीराज शब्दभेदी बाण चलाने में पारंगत हैं और अपनी इस कला का प्रदर्शन करना चाहते हैं। इस पर मुहम्मद गोरी ने उन्हें इसकी इजाजत दे दी। कला के प्रदर्शन के समय मुहम्मद गोरी भी वहाँ मौजूद था। प्रदर्शन शुरू होने वाला था तभी चंदबरदाई ने एक दोहा कहा-

'चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण, ता ऊपर सुल्तान है मत चूके चौहान।' इस दोहे को सुनते ही पृथ्वीराज चौहान को संकेत मिल गया। मुहम्मद गोरी ने जैसे ही शाबाश बोला वैसे ही अपनी दोनों आँखें गँवा चुकने के बावजूद पृथ्वीराज चौहान ने शब्दभेदी बाण से मुहम्मद गोरी को मार दिया। पृथ्वीराज चौहान ने इस तरह अपने अपमान का बदला ले लिया। बाबर ने साल 1526 में पानीपत के मैदान में दिल्ली के अन्तिम सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराकर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की थी। बाबर, तैमूर का वंशज था। उसका जन्म मध्य एशिया में हुआ था। ध्यान रहे यह वही बाबर है जिसके शासनकाल में भारत में बड़ी संख्या में मन्दिर तोड़कर मस्जिदें बनवायी गयीं। बाबर और उसके वंशजों ने सनातनी हिन्दुओं को कुचलने और उन्हें नीचा दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अयोध्या में भगवान् श्रीराम की पवित्र जन्मस्थली पर स्थापित मन्दिर को बाबर ने दिल्ली जीतने के बाद 1528 में तोड़ा था। इसके अलावा, पानीपत के युद्ध के बाद बाबर ने सम्भल में भी एक मन्दिर को तोड़ा था। बाबर के सेनापति मीर बाकी ने राममन्दिर के स्थान पर बाबरी मस्जिद बनवायी थी। कहा जाता है कि बाबर ने अयोध्या के राममन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनवायी फिर यह काम अपने वजीर मीर बाकी खाँ के सुपुर्द करके दिल्ली चला गया था। बाबर के बाद अन्य मुगल शासकों ने भी गैर मुसलमानों खासकर सनातनी हिन्दुओं पर धार्मिक अत्याचार किये और हजारों हिन्दू मन्दिरों को ध्वस्त कर दिया था। मंदिरों के खंडहरों पर मस्जिदें बनाई गईं। उधर, हिन्दुओं की ओर से उनके आदर्श पुरुषों और वीरांगनाओं ने भी समय-समय पर मुंहतोड़ जवाब देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। बाबर के पौत्र अकबर (हुमायूं का बेटा) के समय में मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप ने मुगलिया सल्तनत को कड़ी चुनौती दी थी। अकबर के साथ महाराणा प्रताप का 1576 में हल्दीघाटी में युद्ध हुआ था। यह युद्ध स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया था। इस युद्ध में महाराणा प्रताप ने अपने 20,000 सैनिकों और सीमित संसाधनों के बल पर मुगल

बादशाह अकबर की 85,000 सैनिकों वाली विशाल सेना का सामना किया था। हल्दीघाटी का युद्ध तीन घंटे से ज्यादा चला था। इसमें जख्मी होने के बावजूद महाराणा प्रताप मुगलों के हाथ नहीं आए। मेवाड़ सेना ने तीन समानांतर भागों में मुगल सेना पर हमला किया था। इस युद्ध में कई मुगल लड़े बिना दूर भाग गए थे। महाराणा प्रताप और राजपूतों के युद्धकौशल को देखकर अकबर भी घबरा गया था। महाराणा प्रताप, अपनी वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम और दृढ़ प्रण के लिए इतिहास में अमर हैं। उनकी नीतियाँ शिवाजी महाराज से लेकर ब्रिटिश के खिलाफ बंगाल के स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणास्रोत बनीं।

औरंगजेब ने बनारस के विश्वनाथ मंदिर और मथुरा के केशव राय मंदिर को तुड़वा दिया था। उसे पता चला था कि वाराणसी में हिन्दू ब्राह्मणों की शिक्षाओं ने बड़ी संख्या में मुसलमानों को आकर्षित किया है। उसने इन प्रांतों के सूबेदारों को गैर-मुसलमानों के स्कूलों और मंदिरों को ध्वस्त करने का आदेश दिया था। वीर मराठा राजा शिवाजी ने औरंगजेब के खिलाफ कई बार लड़ाई लड़ी थी। शिवाजी ने अपने राज्य का विस्तार किया और मुगल साम्राज्य को कमजोर किया। शिवाजी ने बीजापुर के चार पहाड़ी किलों पर कब्जा करके विद्रोह की शुरुआत की थी। उन्होंने 1657 में शाहजहाँ के दक्षिण अभियान के दौरान सीधे औरंगजेब का विरोध किया था। 1659 में पुणे में शाइस्ता खान (औरंगजेब के मामा) और बीजापुर सेना को हराया था। 1664 में सूरत के मुगल व्यापारिक बंदरगाह को अपने कब्जे में ले लिया था। शिवाजी ने औरंगजेब की कैद से मुगल पहरेदारों को चकमा देकर निकलने की योजना बनाई थी और इसमें कामयाब भी रहे थे। शिवाजी का जन्म 1630 में शिवनेरी के पहाड़ी किले में हुआ था। उनकी माता का नाम जीजाबाई था। उनके जैसी महान माँ न होती तो शिवाजी जैसा वीर पुत्र भी भारत को न मिल पाता। शिवाजी महाराज को शक्तिशाली योद्धा बनाने में उनकी माँ जीजाबाई का बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने छोटी अवस्था में ही शिवाजी महाराज को गुरु समर्थ रामदास की मदद से एक सैनिक की तरह बड़ा किया था। शिवाजी में देशभक्ति और वीरता की भावना जगाने में माँ जीजाबाई ने कोई कसर नहीं छोड़ी। मित्रता और शौर्य की कहानी 'गढ़ आया पर सिंह गया' सुनकर आज भी रोमांच आता है। माँ जीजाबाई के शब्दों का मान रखने के लिए शिवाजी ने सिंहगढ़ किले को जीतने में अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था। यहाँ तक कि इस युद्ध में उन्होंने अपने सबसे प्रिय तानाजी मालूसरे को भी खो दिया था।

1527-28 ईसवी में बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर मंदिर को तोड़ा था। इस घिनौने कृत्य का हिन्दू जनमानस ने पंडित देवीदीन पांडेय के नेतृत्व में युद्ध के रूप में पहला विरोध किया था। तब से लेकर आज तक 77 से अधिक युद्ध और सैकड़ों दंगे हो चुके थे। इनमें लाखों कारसेवकों की जानें चली गईं। ब्रिटिश काल में भी राममंदिर निर्माण के लिए संघर्ष हुआ जिसमें गोरक्षपीठ की प्रमुख भूमिका रही है। 1855 से 1885 तक गोरक्षपीठाधीश्वर रहे

महंत गोपालनाथ ने रामचरन दास और मुस्लिम पक्षकार आमिर अली से मिलकर समझौते के जरिए इस विवाद का हल निकालने का प्रयास किया था। लेकिन 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर चलने वाले अंग्रेजों ने इस पर अमल नहीं होने दिया। 1917 तक योगिराज बाबा गंभीरनाथ जी ने भी राममंदिर के लिए बड़े स्तर पर प्रयास किए। आजादी के बाद गोरक्षपीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज ने राममंदिर के लिए प्रयास शुरू किए। महंत दिग्वजयनाथ जी महाराज की राममंदिर आंदोलन को गति देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। 22-23 दिसम्बर 1949 की उस रात रामलला का प्राकट्य हुआ तो आरती में महाराज जी उपस्थित थे। गोरखनाथ मठ ब्रिटिश काल से ही रामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन का केंद्र बिंदु बना हुआ था। महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज 1935 में गोरक्षपीठाधीश्वर बने और इसके बाद यह मठ भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण और दक्षिणपंथी राजनीतिक गतिविधियों का भी केंद्र बन गया। महंत जी राममंदिर आंदोलन के प्रमुख नेता बन गए। वह 1937 में हिंदू महासभा में शामिल हुए और उसके बाद राममंदिर के लिए हिन्दू समाज को संगठित करने के अभियान में जुट गए। अयोध्या में उन्होंने स्वयंसेवकों की टीम का नेतृत्व किया। महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज ने बलरामपुर के राजा पाटेश्वरी प्रसाद सिंह और प्रसिद्ध संत करपात्री महाराज के साथ विचार मंथन कर रामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन की रणनीति बनाई। तभी से अखिल भारतीय राम राज्य परिषद् के बैनर तले आंदोलन तेज होने लगा। 1949 में 22-23 दिसम्बर की रात विवादित ढाँचे में रामलला के प्राक्ट्य के बाद भजन-कीर्तन में महंत जी वहाँ उपस्थित थे। तत्कालीन कांग्रेसी सरकार ने मूर्ति को हटाने का हुक्म दिया जिसे उस समय के जिला मजिस्ट्रेट ने मानने से इंकार कर दिया। स्वतंत्र भारत में राममंदिर के लिए सड़क से संसद और न्यायालय तक एक साथ लड़ाई चली। इन सबमें गोरक्षपीठ की प्रमुख भूमिका रही। महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के बाद गोरक्षपीठाधीश्वर बने उनके शिष्य महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने भी रामजन्मभूमि की मुक्ति के लिए आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने राममंदिर आंदोलन को हिन्दू समाज की एकता और राष्ट्रीय स्वाभिमान जागरण का आधार बना दिया। जाति-पंथ, ऊंच-नीच, अमीरी-गरीबी के भेद मिटाते हुए महंत अवेद्यनाथ जी ने 1984 तक आते-आते देश के शैव, वैष्णव सभी पंथों के धर्माचार्यों को एक मंच पर ला दिया। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन हुआ जिसके आजीवन अध्यक्ष महंत अवेद्यनाथ जी महाराज रहे। उनके नेतृत्व में देश में राममंदिर आंदोलन के लिए जन समर्थन जुटाने का अभियान चल पड़ा। माता जानकी की नगरी बिहार के सीतामढ़ी से 24 सितम्बर 1984 को श्रीराम-जानकी रथयात्रा निकाली गई। यह यात्रा 6 अक्टूबर 1984 को अयोध्या पहुंची। अयोध्या में पवित्र सरयू नदी के तट पर 7 अक्टूबर 1984 को हजारों रामभक्तों ने संकल्प लिया। तीर्थराज प्रयागराज और अन्य स्थानों पर भी ऐसी सभाएं हुईं। 8 अक्टूबर 1984 को रथयात्रा लखनऊ पहुंची। लखनऊ के बेगम हजरत महल पार्क में हुए सम्मेलन में 10 लाख से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। 1985 के 31 अक्टूबर और एक नवम्बर

को कर्नाटक के उडुपी में हुई धर्मसंसद के दूसरे अधिवेशन में 75 संप्रदायों के 850 धर्माचार्य शामिल हुए। इसी धर्मसंसद में यह निर्णय हुआ कि विवादित ढाँचे के भीतरी आंगन के दरवाजे पर लगा ताला नहीं खुला तो पूरे देश के हजारों धर्माचार्य अपने लाखों शिष्यों के साथ 9 मार्च 1986 से सत्याग्रह करेंगे। दिगम्बर अखाड़े के महंत परमहंस रामचंद्रदास जी ने घोषणा कर दी कि यदि इस दिन तक ताला नहीं खोला गया तो वह आत्मदाह कर लेंगे। महंत अवेद्यनाथ जी महाराज को सत्याग्रह के संचालन के लिए अखिल भारतीय संयोजक बनाया गया। एक अखिल भारतीय संघर्ष समिति बनाई गई जिसमें 51 प्रमुख धर्माचार्य थे। इस बीच एक फरवरी 1986 को फैजाबाद के जिला जज कृष्ण मोहन पांडेय जी ने विवादित ढाँचे के दरवाजे पर लगा ताला खोलने का आदेश दे दिया। तब तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ जी महाराज वहाँ मौजूद थे। जज कृष्ण मोहन पांडेय जी गोरखपुर के ही जगन्नाथपुर मोहल्ले के थे। 1995 में सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने 'अंतरात्मा की आवाज' शीर्षक से एक किताब लिखी जिसमें उन्होंने यह व्यक्त किया कि अयोध्या में राममंदिर कहे जाने वाले स्थान के बार में उन्होंने जो फैसला लिया वह उनकी अंतरात्मा की आवाज थी। विवादित ढाँचे के भीतरी आंगन का ताला खोलने के उस निर्णय के बाद महंत अवेद्यनाथ जी और अन्य ध र्माचार्यों के आह्वान पर घर-घर दीये जलाए गए थे। महंत जी की अध्यक्षता में 22 दिसम्बर 1989 को दिल्ली में एक विराट हिन्दू सम्मेलन हुआ। इसमें 9 नवम्बर 1989 को श्रीरामजन्मभूमि पर शिलान्यास का कार्यक्रम घोषित किया गया। उस दिन एक दलित से शिलान्यास कराकर महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने राममंदिर आंदोलन को सामाजिक समरसता के गोरक्षपीठ के वृहद अभियान से जोड़ दिया। 1989 में हरिद्वार के संत सम्मेलन में महंत अवेद्यनाथ जी ने राममंदिर निर्माण की तिथि घोषित कर दी। इससे तत्कालीन कांग्रेसी सरकार बुरी तरह घबरा गई। तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री बूटा सिंह और उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी ने महंत अवेद्यनाथ से मिलकर इसे स्थगित करने का अनुरोध किया। उस मुलाकात के बारे में यह उल्लखित है कि बूटा सिंह की पूरी बात सुनने के बाद महंत अवेद्यनाथ जी ने बस इतना जवाब दिया- 'यह फैसला करोड़ों लोगों का है।' महंत जी मंदिर निर्माण शुरू कराने के लिए दिल्ली से अयोध्या के लिए रवाना हुए लेकिन तत्कालीन सरकार ने पनकी में उन्हें गिरफ्तार कर लिया। गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ जी महाराज आजीवन राममंदिर के लिए संघर्ष करते रहे। उनकी अगुवाई में 1992 में 23 जुलाई को एक प्रतिनिधिमंडल तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव से मिला। लेकिन इस पर भी बात नहीं बनी तो 30 अक्टूबर 1992 को दिल्ली में आयोजित पाँचवीं धर्मसंसद में 6 दिसम्बर 1992 को मंदिर निर्माण के लिए कारसेवा शुरू करने का निर्णय लिया गया, जिसकी परिणति सदियों की गुलामी और दुनिया भर के करोड़ों हिन्दुओं की आस्था पर कुठाराघात के साथ राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए कलंक का प्रतीक रहे विवादित बाबरी ढाँचे का ध्वंस कारसेवकों ने कर डाला।

कारसेवकों का बलिदान

बाबरी ढाँचे के बहाने कांग्रेस और खुद को धर्मनिरपेक्षता का स्वयंभू ठेकेदार घोषित करने वाले राजनीतिक दलों ने मुसलमानों को लम्बे समय तक बरगलाकर अपना वोट बैंक बनाने की कोशिश की। स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम दशक में तुष्टिकरण की इन्हीं नीतियों के चलते देश ने विभाजन का दंश झेला और सांप्रदायिक दंगों में लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। निस्संदेह उस त्रासदी के लिए तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की 'फूट डालो राज करो' नीति थी लेकिन कांग्रेस नेताओं का ढुलमुल रवैया, दब्बूपन और मुसलमानों के एक वर्ग को सदा-सदा के लिए अपना वोट बैंक बनाए रखने के लालच ने भी कम महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई। दुर्भाग्य से सांप्रदायिक आधार पर विभाजन की त्रासदी झेलने के बावजूद स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ये नेता अपने दृष्टिकोण में स्पष्टता लाने की बजाए मुसलमानों को अनावश्यक ढंग से खुश करने की कोशिशों में लगे रहे। यहाँ तक कि इसके लिए विभाजन का सर्वाधिक नुकसान और दर्द पाने वाली बहुसंख्यक हिन्दू आबादी के साथ अन्याय करने से भी नहीं चूके। यहाँ यह उल्लेख करना समीचीन है कि कांग्रेस के अंदर भी कुछ नेताओं ने इस अन्याय को महसूस किया और इसके विरुद्ध अपने ढंग से संघर्ष को जारी रखा। गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारतीय एकीकरण की राह में रोड़ा बनने की कोशिश कर रहे जूनागढ़ के मुस्लिम शासक और हैदराबाद के निजाम को जिस प्रकार दुरुस्त किया उससे भविष्य के भारत के प्रति उनकी स्पष्ट सोच की एक झलक मिलती है। उनके ही प्रयासों के परिणामस्वरूप 1951 में सोमनाथ के मंदिर का पुनरुद्धार हुआ। सोमनाथ मंदिर का इतिहास काफी पुराना है और इसे कई बार लूटा और नष्ट किया गया है। 1026 में महमूद गजनवी ने मंदिर पर आक्रमण किया और इसे लूटा, जिससे मंदिर को भारी नुकसान हुआ। कहते हैं कि करीब 50 हजार लोग मंदिर के अंदर हाथ जोड़कर पूजा अर्चना कर रहे थे। उनमें से अधिकतर कत्ल कर दिए गए थे। बाद में गुजरात के राजा भीम और मालवा के राजा भोज ने इसका पुनर्निर्माण कराया। जब सन् 1297 में दिल्ली सल्तनत ने गुजरात पर कब्जा किया तो इसे पाँचवीं बार गिराया गया। मुगल बादशाह औरंगजेब ने 1706 में इसे फिर से गिरा दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जूनागढ़ रियासत को भारत में शामिल करने के बाद, सरदार पटेल ने जुलाई 1947 में सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का आदेश दिया था। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने मंदिर के पुनर्निर्माण का विरोध किया था, लेकिन सरदार पटेल और नेहरू कैबिनेट के एक अन्य मंत्री के. एम. मुंशी ने पुनर्निर्माण को जारी रखा। यह भी एक तथ्य है कि सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण कार्यक्रम में पंडित जवाहरलाल नेहरू शामिल नहीं हुए थे। यही नहीं उन्होंने देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भी इसमें शामिल होने से मना करने की कोशिश की थी। पंडित नेहरू इसे सरकारी कार्यक्रम नहीं मानते थे। उनका मानना था कि मंदिर का पुनर्निर्माण सरकार द्वारा नहीं होना चाहिए। जबकि तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र

प्रसाद जी ने सोमनाथ मंदिर को विदेशी आक्रमण के प्रतिरोध का प्रतीक बताया था। हिंदू धर्म में अपने विश्वास के कारण वह स्वयं को इससे अलग नहीं रख सके थे। बहरहाल, सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के साथ ही व्यापक हिन्दू समाज अयोध्या के राममंदिर, काशी के विश्वनाथ मंदिर की ज्ञानवापी ढाँचे से मुक्ति और मथुरा की श्रीकृष्ण जन्मभूमि के साथ ही देश में अन्य हिन्दू धर्मस्थलों की मुक्ति भी चाहता था। लेकिन नेताओं की तुष्टिकरण की नीतियों के चलते यह संभव नहीं हो पाया। अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति संग्राम के दौरान उत्तर प्रदेश की सत्ता पर काबिज रही तत्कालीन मुलायम सिंह यादव सरकार ने स्वयं को धर्मनिरपेक्षतावादी साबित करने के चक्कर में तुष्टिकरण की सभी सीमाओं को ही तोड़ दिया। उस सरकार ने राम रथ यात्रा के बाद दो अलग-अलग दिनों 30 अक्टूबर 1990 और 2 नवंबर 1990 को अयोध्या में निहत्थे कारसेवकों पर गोलियाँ चलवाईं। इसमें कई कारसेवकों की जान चली गई। लोगों के जेहन में कारसेवकों पर हुई पुलिस बर्बरता और गोलीकांड की यादें आज भी ताजा हैं।

हिन्दू एकता के संवाहक योगी आदित्यनाथ

गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने 1996 में योगी आदित्यनाथ को अपना उत्तराधिकार सौंपा। इसी के साथ वह हिन्दू एकता के लिए गोरक्षपीठ के अखिल भारतीय अभियान के संवाहक या अगुआ भी बन गए। उनका जन्म अजय सिंह बिष्ट के रूप में उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले के एक छोटे-से गाँव पंचूर में हुआ था। विज्ञान में स्नातक योगी आदित्यनाथ अपने छात्र जीवन में ही सामाजिक गतिविधियों और आंदोलनों में सक्रिय रहने के साथ अध्यात्म के प्रति लगाव महसूस करने लगे थे। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद 1992 में वह महंत अवेद्यनाथ से मिले। इस मुलाकात के बाद संन्यासी बनने को लेकर उनका स्पष्ट मन बन गया। उन्होंने अपने परिवार को बता दिया कि वह नाथपंथ में संन्यास ग्रहण करने जा रहे हैं। 1996 में महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने उन्हें दीक्षा दी और गोरक्षपीठ का उत्तराधिकार सौंप दिया। संन्यासी बनने के बाद उन्हें योगी आदित्यनाथ का नाम मिला। वह अपने गुरु महंत अवेद्यनाथ जी के साथ रामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन से भी जुड़ गए। योगी आदित्यनाथ श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति की बैठकों में शामिल होने लगे। विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल और हिन्दू महासभा के नेता और अयोध्या का संत समाज इन बैठकों में मौजूद होता था। 1998 में महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया। तब योगी आदित्यनाथ उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी भी बन गए। वह 1998 में देश के सबसे कम उम्र के सांसद बने और प्रखर हिन्दूवादी नेता के तौर पर उभरकर सामने आए। राममंदिर आंदोलन, गोहत्या पर प्रतिबंध, समान आचार संहिता और धर्मान्तरण पर प्रतिबंध जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर गोरक्षपीठ द्वारा चलाए जाने वाले अभियानों, सम्मेलनों और बैठकों में उनकी वाणी ध्यान से सुनी जाती थी। देखते ही देखते उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि देश के

कोने-कोने में वह हिन्दू हृदय सम्राट के तौर पर पहचाने जाने लगे। 1997-98 में में एक समय ऐसा आया जब धीरे-धीरे राममंदिर आंदोलन राजनीतिक परिदृश्य से हटने लगा था। तब योगी आदित्यनाथ ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में विश्व हिन्दू महासम्मेलन और विराट हिन्दू संगम कराकर इसे फिर से जीवंत कर दिया। उन्होंने 2002 में 'हिन्दू युवा वाहिनी' का गठन कर युवाओं को एकजुट किया और राममंदिर आंदोलन को गाँव-गाँव, घर-घर पहुंचा दिया। योगी आदित्यनाथ 19 मार्च 2017 को पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने और तभी साफ हो गया कि अब प्रदेश में हिन्दुओं की उपेक्षा के दौर का अंत हो चुका है। उन्होंने भारतीय स्वाभिमान और राष्ट्रीयता के प्रतीक भगवान् श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या को विश्व मानचित्र पर नए सिरे से रेखांकित कराने का संकल्प लिया और इस अभियान में जुट गए। सबसे पहले फैजाबाद जिले का नाम बदलकर अयोध्या किया गया। इसी क्रम में आगे इलाहाबाद का भी नाम बदलकर तीर्थराज को प्रयागराज के रूप में अधिसूचित किया गया। अयोध्या को नगर निगम घोषित किया गया। सरकारी उपेक्षा के चलते अब तक सुविधाओं से दूर रही अयोध्या नगरी ने पिछले सात वर्षों में विकास की नई ऊंचाइयों को छुआ। 2017 से यहाँ दीवाली में होने वाले भव्य दीपोत्सव का प्रकाश पूरे विश्व को चमत्कृत करता है। दीपोत्सव-2024 में 25 लाख 12 हजार 585 दीप प्रज्वलित कर एक बार फिर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया गया, जिसके निर्माण के लिए गोरक्षपीठ की पाँच पीढ़ियों ने संघर्ष किया उस राममंदिर के निर्माण का मार्ग वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री रहते प्रशस्त होना, भव्य राममंदिर का निर्माण और उसमें रामलला की प्राण प्रतिष्ठा ऐसा सुखद संयोग है जिसकी प्रतीक्षा हिन्दू समाज पिछले 500 वर्षों से कर रहा था। अयोध्या विवाद में भारत के सुप्रीम कोर्ट द्वारा अंतिम निर्णय 9 नवंबर 2019 को घोषित किया गया था। देश की सर्वोच्च अदालत ने हिंदू मंदिर बनाने के लिए एक ट्रस्ट को जमीन सौंपने का आदेश दिया। साथ ही सरकार को मस्जिद बनाने के उद्देश्य से सुन्नी वक्फ बोर्ड को 5 एकड़ जमीन देने का आदेश भी दिया था। इस आदेश का अनुपालन करते हुए योगी सरकार ने मुस्लिम पक्ष को अयोध्या के धन्नीपुर में जमीन का आवंटन भी तत्काल कर दिया था। राम मंदिर निर्माण के लिए श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की स्थापना की गई। मंदिर निर्माण की शुरुआत के लिए 5 अगस्त 2020 को भूमिपूजन किया गया था। राम मंदिर का निर्माण पारंपरिक नागर शैली में किया गया है, जिसमें मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया है। मंदिर को प्रसिद्ध वास्तुकार चंद्रकांत बी सोमपुरा ने डिजाइन किया है। इसका निर्माण पत्थर से किया गया है, और इसमें लोहे या स्टील का उपयोग नहीं किया गया है। मंदिर के लिए जो चबूतरा बनाया गया है, उसे ग्रेनाइट पत्थरों से तैयार किया गया है। मुख्य मंदिर का निर्माण 5 अगस्त 2020 को भूमिपूजन के साथ शुरू हुआ था, जो 22 जनवरी 2024 को प्राण प्रतिष्ठा के साथ पूरा हुआ। राममंदिर, भारतीय संस्कृति, आस्था, राष्ट्रीयत्व और सामूहिक शक्ति का प्रतीक बन गया है। राजा राम हर भारतीय और विश्व भर में फैले सनातनियों के आदर्श हैं। वे सत्यनिष्ठा के प्रतीक, सदाचरण और आदर्श पुरुष के साकार

रूप मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उनकी जन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण सनातन समाज के संकल्प, संघर्ष और जिजीविषा का परिणाम है। यही कारण है कि अब यह उमंग और उत्सव का अवसर बन गया है। एक पर्व और पूरे उल्लास के साथ हिन्दू समाज राममंदिर निर्माण की खुशियाँ मना रहा है और हर वर्ष मनाता रहेगा।

कुम्भ और महाकुम्भ

राममंदिर के अलावा प्रयागराज में संगम तट पर 2019 के कुम्भ और 144 वर्षों बाद आए 2025 के महाकुम्भ को भी हिन्दू एकता के वैश्विक प्रदर्शन और 'सनातन के शंखनाद' या 'सनातन के जयघोष' के तौर पर देखा जा रहा है। योगी आदित्यनाथ सरकार ने इन दोनों आयोजनों को सफलतापूर्वक कराने में अपनी पूरी ताकत झोंकी और जिसका परिणाम समूचे विश्व ने देखा। 2019 में, प्रयागराज में कुम्भ मेला 15 जनवरी से 4 मार्च तक आयोजित हुआ था, जिसमें मकर संक्रांति के साथ शुरुआत हुई और महाशिवरात्रि के साथ समापन हुआ था। तब भी 'स्वच्छ कुम्भ और सुरक्षित कुम्भ' की थीम के साथ, मेले में साफ-सफाई और सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया था। अनुमान है कि 2019 के कुम्भ में 23 करोड़ से अधिक लोगों ने संगम में डुबकी लगाई थी। धार्मिक तपस्वियों, साधुओं और महंतों की असाधारण उपस्थिति के लिए वह मेला प्रसिद्ध हुआ। महाकुम्भ-2025 में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक, कुल 45 दिनों में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने संगम में डुबकी लगाई, जो एक नया रिकॉर्ड है। हर दिन औसतन करीब एक करोड़ 47 लाख श्रद्धालुओं ने पावन त्रिवेणी में पुण्य की डुबकी लगाई। सनातन धर्म के इस सबसे बड़े धार्मिक आयोजन में पहली बार ऐसा लगा कि हर दिन कोई स्नान पर्व है। महाकुम्भ के दौरान कई ऐसे दिन रहे जब लगातार एक करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का यहाँ आना हुआ। श्रद्धालुओं के प्रयागराज पहुंचने का सिलसिला ऐसा चला जिसकी कल्पना महाकुम्भ शुरू होने से पहले किसी ने नहीं की थी। श्रद्धालुओं की वास्तविक संख्या के आगे सरकार के अनुमानित आँकड़े काफी पीछे रह गए। महाकुम्भ के आरंभ से पहले निरंजनी अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरि ने एक पॉडकॉस्ट में इसे पूर्णकुम्भ बताया था। उन्होंने बताया था कि इस बार यह 12-12 वर्षों के 12 चरण को पूरा करके आया है। उनके इस मत को ज्यादातर संतों का समर्थन मिला। यह बात पूरी दुनिया में कुछ इस तरह फैली कि फिर यह पर्व अपने आप में एक रिकॉर्ड ही बन गया। महाकुम्भ मेले के दौरान कई दिन करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने स्नान किया। संगम स्नान का क्रम ऐसा बना कि कई दिनों तक टूटा ही नहीं। कुल मिलाकर 2025 का महाकुम्भ इतिहास में दर्ज हो गया। इसमें राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, राज्यपाल, कई प्रदेशों के मुख्यमंत्री, मंत्री, विदेशी मेहमान और बालीवुड सितारों समेत कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गंगा पूजन से की। महाकुम्भ के दौरान मेला परिसर में दो

राज्यों (उत्तर प्रदेश और राजस्थान) की कैबिनेट की बैठक हुई। महाकुम्भ मेला 4000 हेक्टेयर की महाकुम्भ नगरी में बसाया गया था। यहाँ 13 अखाड़ों ने सनातन परंपरा का निर्वाह किया। इसमें स्वच्छता, सुरक्षा, सुव्यवस्था के नए मानक गढ़े गए। महाकुम्भ में आस्था और आधुनिकता का अद्भुत संगम देखने को मिला और रामराज्य की संकल्पना साकार होती दिखी। पहली बार 13.5 किलोमीटर का गंगा पथ बनाया गया। महाकुम्भ में कई विश्व रिकॉर्ड भी बने। महाकुम्भ की तैयारियों की समीक्षा और अन्य कार्यक्रमों के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अक्तूबर से फरवरी तक 17 बार प्रयागराज पहुंचे। महाकुम्भ में एक से बढ़कर एक चर्चित हस्तियाँ देखने को मिलीं। एप्पल के सहसंस्थापक और सीईओ स्टीव जॉब्स की पत्नी लॉरेन पावेल ने यहाँ भगवा वेश में प्रवास और पूजन-अर्चन किया। अभिनेत्री ममता कुलकर्णी भी 23 साल बाद यहाँ चर्चा में आईं। किन्नर अखाड़े ने उन्हें महामंडलेश्वर बनाया। अदाणी समूह के गौतम अदाणी, रिलायंस के मुकेश अंबानी और इंफोसिस की सुधा मूर्ति समेत सभी बड़े औद्योगिक घराने महाकुम्भ में पहुंचे। अक्षय कुमार, पंकज त्रिपाठी, कैटरीना कैफ, रवीना टंडन, विवेक ओबेराय, प्रीति जिंटा, सोनाली बेंद्रे समेत तमाम फिल्मी सितारे यहाँ पहुंचे। खली, सुनील गावस्कर, साइना नेहवाल, कुंबले और सुरेश रैना भी आए। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी संगम में डुबकी लगाई। जानकारों का कहना है कि महाकुम्भ ने धार्मिक आस्था को सम्मान देने के साथ ही उत्तर प्रदेश और देश के लिए आर्थिक समृद्धि के दरवाजे भी खोले। इसके जरिए निकली आर्थिक गंगा से उत्तर प्रदेश और केंद्र सरकार का खजाना तो भरा ही, अप्रत्यक्ष अन्य राज्यों को भी फायदा हुआ। माना जा रहा है कि निकट भविष्य में प्रयागराज में कारोबारी गतिविधियों में और तेजी आएगी। बताया जा रहा है कि महाकुम्भ के 45 दिनों में 66.30 करोड़ लोगों के प्रयागराज आने से साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये से अधिक का टर्नओवर हुआ है।

माना जा रहा है कि महाकुम्भ-2025 के आर्थिक प्रभाव का क्षेत्र प्रयागराज से 150 किलोमीटर के दायरे में स्पष्ट और प्रत्यक्ष ढंग से रहा। इससे यह स्पष्ट हो गया कि यह पर्व आस्था और वाणिज्य दोनों का केंद्र है। इससे उत्तर प्रदेश की जीडीपी में कम से कम एक प्रतिशत वृद्धि का भी अनुमान है। महाकुम्भ के लिए केंद्र सरकार ने हजारों ट्रेनें चलाईं जिससे रेलवे को भारी आमदनी हुई। हवाई उड़ानों से भी निजी कंपनियों के साथ सरकार को बड़ा आर्थिक लाभ हुआ। महाकुम्भ के दौरान प्रयागराज में रोज लाखों वाहनों की आवाजाही रही। इसकी वजह से प्रयागराज और आसपास के जिलों में डीजल-पेट्रोल की खपत में करीब 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जाहिर है कि इससे जीएसटी कलेक्शन भी बढ़ा। उत्तर प्रदेश के चारों एक्सप्रेस वे हों या फिर नेशनल हाईवे। सामान्य दिनों की अपेक्षा महाकुम्भ के दौरान इन पर वाहनों की तादाद काफी बढ़ी हुई थी। त्रिवेणी संगम के स्नान पर्वों पर आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे, यमुना एक्सप्रेसवे, बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे और पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर वाहनों की खूब आवाजाही हुई। इसके चलते टोल टैक्स के जरिए

यूपीडा को भी भारी आमदनी हुई। नेशनल हाइवे पर टोल टैक्स के जरिए एनएचआई की भी कमाई बढ़ी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के आर्थिक सलाहकार केवी राजू कहते हैं कि महाकुम्भ के चलते उत्तर प्रदेश की ब्रांडिंग दुनिया भर में हुई। इससे छोटे-बड़े दुकानदारों से लेकर बड़ी कंपनियों तक को फायदा हुआ। स्थानीय समाज और अर्थव्यवस्था को भारी फायदा मिला। प्रयागराज में करोड़ों श्रद्धालुओं के आगमन से स्थानीय व्यापारियों, होटल मालिकों, रेस्टोरेंट और अन्य सेवाओं को आर्थिक लाभ हुआ। योगी सरकार ने इस पहलू को भी ध्यान में रखा। महाकुम्भ में स्थानीय उत्पादों और हस्तशिल्प का भी प्रदर्शन किया गया। इससे स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। साथ ही भविष्य में भी रोजगार के अवसर भी बढ़ने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने की उम्मीद जगी। कम से कम 5 लाख लोगों के लिए स्थाई और अस्थाई रोजगार के अवसर बने। इन सब आर्थिक गतिविधियों और महाकुम्भ के अलग-अलग पहलुओं का अध्ययन अब देश और विदेश के संस्थान कर रहे हैं। हावर्ड विश्वविद्यालय, आईआईएम बंगलुरू, आईआईएम अहमदाबाद, कानपुर आईआईटी, लखनऊ विश्वविद्यालय और गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद सहित कई प्रतिष्ठित संस्थानों में महाकुम्भ-2025 का अध्ययन हो रहा है।

महाकुम्भ से बना नया धार्मिक सर्किट

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के आर्थिक सलाहकार केवी राजू का कहना है कि महाकुम्भ-2025 ने भविष्य के लिए एक धार्मिक-सांस्कृतिक सर्किट अयोध्या, प्रयागराज, वाराणसी, मिर्जापुर, चित्रकूट के जरिए बना दिया है। उनके अनुसार प्रयागराज को केंद्र बिंदु मानकर कई जिलों की आर्थिक गतिविधियों में इजाफा हुआ है। यह बिल्कुल सही भी है। महाकुम्भ के दौरान प्रयागराज के साथ-साथ वाराणसी, अयोध्या, मिर्जापुर, चित्रकूट, गोरखपुर और प्रदेश के अन्य कई जिलों में धार्मिक स्थलों पर उमड़ी भीड़ से इस सर्किट के मूर्त रूप लेने के स्पष्ट संकेत देखने को मिले। महाकुम्भ के दौरान प्रयागराज के साथ अयोध्या, वाराणसी और अन्य धार्मिक नगरियों की यात्रा हिंदू धर्म के विभिन्न पहलुओं को एक साथ समेटती है। इस सर्किट ने उन श्रद्धालुओं को एक संपूर्ण धार्मिक यात्रा का अनुभव प्रदान किया जो एक साथ इन प्रमुख तीर्थ स्थलों का दर्शन करना चाहते थे। इन शहरों के बीच का सफर न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से भी एक समृद्ध अनुभव बन गया। भगवान् राम की जन्मस्थली अयोध्या का भव्य राममंदिर हिंदू धर्म के प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है। इस मंदिर का निर्माण एक ऐतिहासिक घटना रही है, जो 5 सदियों तक चले विवाद और संघर्ष के बाद अब पूरा हुआ है। महाकुम्भ के दौरान प्रयागराज के साथ अयोध्या में भी श्रद्धालु रामलला, हनुमानगढ़ी और अन्य मंदिरों के दर्शन के लिए आते रहे। यह धार्मिक सर्किट का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया। वहीं भगवान् शिव की नगरी काशी हिंदू धर्म का एक अत्यंत पवित्र स्थल है। महाकुम्भ के दौरान यहाँ भी करोड़ों भक्तों की आवाजाही रही। बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहाँ गंगा स्नान और बाबा विश्वनाथ के दर्शन

के लिए उमड़ते रहे।

दुनिया के लिए भीड़ प्रबंधन का नया मॉडल बना

महाकुम्भ-2025 ने सनातन धर्म की आध्यात्मिक महिमा को ही प्रदर्शित नहीं किया बल्कि दुनिया भर में भीड़ प्रबंधन के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान भी बना दिया। महाकुम्भ के मेले में रोज औसतन 1.47 करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में स्नान किया और बिना किसी व्यवधान के अपने घरों को लौटे। यह तादाद दुनिया के कई देशों की कुल आबादी से भी अधिक थी। इतनी बड़ी संख्या में जुटे लोगों का प्रबंधन करना अपने आप में एक बड़ा चैलेंज था। योगी आदित्यनाथ सरकार और प्रशासन ने अपनी सूझबूझ से न सिर्फ दिव्य और महाकुम्भ 2025 का सफलतापूर्वक संचालन किया बल्कि इसे एक मॉडल के रूप में भी दुनिया के सामने पेश किया। 13 जनवरी से 26 फरवरी तक 45 दिन के महाकुम्भ में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालु शामिल हुए। यह देश की कुल आबादी की करीब आधी संख्या है। महाकुम्भ नगर 45 दिनों में भारत और चीन के बाद तीसरी सबसे ज्यादा आबादी वाला क्षेत्र बन गया था।

युवाओं का उल्लास

महाकुम्भ-2025 युवाओं के भी उल्लास का प्रतीक बन गया। दिल्ली विश्वविद्यालय के राजधानी कॉलेज की एक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार महाकुम्भ आने वाले श्रद्धालुओं में आधे से अधिक युवा थे। इसमें 41 प्रतिशत लोगों की उम्र 31 से 50 वर्ष के बीच की थी। करीब 27 प्रतिशत लोग 18-30 वर्ष के थे। 50 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों की भागीदारी 24 प्रतिशत के करीब थी। बड़ों के साथ बच्चों ने भी बढ़चढ़ कर महाकुम्भ में भाग लिया। महाकुम्भ आने वालों में 18 वर्ष से कम उम्र के प्रतिभागियों की संख्या 8 प्रतिशत के करीब थी। इस अध्ययन का विषय था- 'महाकुम्भ में धार्मिक पर्यटन का आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रभाव'। अध्ययन की अगुवाई डॉ. शिवाजी सिंह ने की। डॉ. निधि मित्तल, वसुधा जॉली और शैली गुप्ता ने सर्वेक्षण किया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यह सर्वेक्षण 15-16 फरवरी 2025 को किया गया। इसमें पर्यटकों, विक्रेताओं, पेशेवरों, छात्रों और स्थानीय निवासियों के अलावा विभिन्न हितधारकों को शामिल किया गया था। सर्वेक्षण के परिणामों के अनुसार महिला-पुरुष प्रतिनिधित्व में महिलाओं की भागीदारी 49 प्रतिशत थी। पुरुषों की भागदारी 42 प्रतिशत थी। नौ प्रतिशत प्रतिभागियों ने स्वयं को अन्य के रूप में दर्ज कराया। सर्वेक्षण में मध्य प्रदेश (19 प्रतिशत), उत्तर प्रदेश (27 प्रतिशत), बिहार (21 प्रतिशत), राजस्थान और हरियाणा जैसे राज्यों के प्रतिभागी शामिल थे। सर्वेक्षण में शामिल लगभग 73 प्रतिशत प्रतिभागी पहली बार महाकुम्भ मेले में आए थे।

राष्ट्रीय और वैश्विक आध्यात्मिक उत्सव बन गया महाकुम्भ-2025

महाकुम्भ-2025 एक राष्ट्रीय और वैश्विक आध्यात्मिक उत्सव बन गया। कुम्भ अपने आरंभ से भारत की विरासत का हिस्सा रहा है, लेकिन लोग इसका मतलब भगदड़, अव्यवस्था और गंदगी मान चुके थे। अबकी इस धारणा के विपरीत कुछ अलग और नया दिखा। लीक से हटकर काम हुए और इतिहास बन गया। भारत के चार प्रमुख तीर्थ स्थलों – प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में प्रत्येक बारह वर्षों में कुम्भ का आयोजन होता है। यह पर्व न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक धारा, जीवन मूल्यों और सनातन धर्म की शाश्वतता को भी प्रदर्शित करता है। महाकुम्भ-2025 एक सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान का भी प्रतीक बन गया। इस आयोजन ने न सिर्फ यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को बल्कि पूरे विश्व को आध्यात्मिक जागरण और शांति का संदेश दिया। यह भी साफ किया कि आस्था, विश्वास और आध्यात्मिक उत्थान से ही जीवन की वास्तविकता समझी जा सकती है। इससे सनातन धर्म का शंखनाद हुआ। इससे जुड़े हर व्यक्ति को अपने जीवन की सच्चाई और उद्देश्य का अहसास हुआ। आज के समय में जब दुनिया भौतिकवाद और विकृतियों से भर गई है, महाकुम्भ-2025 के आयोजन ने मानवीय संवेदनाओं, परंपराओं और आध्यात्मिकता को फिर से प्रमुखता प्रदान किया। यह भारतीय संस्कृति, परंपरा, और सभ्यता का प्रतिनिधि बना। भारत की विशाल सांस्कृतिक धारा में 2025 में हुए इस महाकुम्भ का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान स्थापित हो गया है। यह भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान का प्रतीक बन गया है। इसने भारतीयता की जड़ों से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है जो पिछले कुछ दशकों में विभिन्न पश्चिमी प्रभावों के कारण कमजोर हो गए थे। महाकुम्भ 2025 में भारतीय संस्कृति का भी पुनः शंखनाद हुआ है। इसने विश्व के सामने भारतीय परंपरा, संस्कृतियों और धर्म की श्रेष्ठता को उजागर किया है। इस आयोजन ने भारत के कोने-कोने से ही नहीं बल्कि पूरे विश्व से लोगों को एकत्र कर दिया। यह एक तरह से वैश्विक संगम का प्रतीक बन गया जहाँ विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और जातियों के लोग मिलकर एक-दूसरे से संवाद करते हैं। महाकुम्भ 2025 में इस संगम के माध्यम से पूरे विश्व में एकता और भाईचारे का संदेश गया है। इस आयोजन ने यह भी दर्शाया कि सनातन धर्म का मूल उद्देश्य मानवता की सेवा है। सनातन कभी भी किसी भेदभाव का समर्थन नहीं करता है। इसके साथ ही महाकुम्भ ने अपने पर्यावरण और प्रकृति के साथ जुड़ने का मौका भी दिया। इसने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, नदी संरक्षण और पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा दिया। श्रद्धालु न केवल आध्यात्मिक शुद्धता की ओर अग्रसर हुए बल्कि वे पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी संवेदनशील हुए। नदी संरक्षण, प्लास्टिक का उपयोग कम करना, और स्वच्छता अभियान जैसे पहलुओं को महाकुम्भ में प्रमुखता दी गई।

महाकुम्भ के दौरान विभिन्न धार्मिक गतिविधियों, साधु संतों के प्रवचन, और विशेष

अनुष्ठानों में शामिल होने का मौका मिला। श्रद्धालुओं ने विशेष मुहूर्त में पवित्र नदियों गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती में स्नान किया। इसे पापों से मुक्ति और पुण्य के अर्जन का सर्वोत्तम उपाय माना जाता है। पूरे 45 दिनों के महाकुम्भ में अलग-अलग शिविरों में विभिन्न संतों और गुरुजनों के प्रवचन होते रहे। इनमें जीवन के उद्देश्य, कर्मों का महत्त्व और साधना के मार्ग को बताया गया। महाकुम्भ के विशाल मेले में देश और दुनिया से करोड़ों लोग एक साथ आए। वे धार्मिक गतिविधियों में तो शामिल हुए ही उनके बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी हुआ। महाकुम्भ के दौरान वेद, उपनिषद् और भगवद्गीता के अध्ययन और श्रवण की व्यवस्था की गई थी। इससे करोड़ों लोगों को सनातन धर्म के गहरे और शाश्वत ज्ञान का लाभ मिला। दुनिया भर के लोगों को सनातन धर्म के उन शाश्वत मूल्यों से जुड़ने का अवसर मिला जो जीवन को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

योगी सरकार ने झोंक दी ताकत

2017 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद पर विराजमान होने के बाद गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ ने 'सबका साथ-सबका विकास' की अवधारणा को तो मजबूत किया ही है, हिन्दुत्व और सनातन की धारा को भी आगे बढ़ाया है। वैश्विक पटल पर सनातन के महत्त्व को पूरी तत्परता से रेखांकित किया है। महाकुम्भ 2025 में उनकी सरकार ने बड़े लक्ष्य निर्धारित किए और इन्हें पूरा करने के लिए बड़ी भूमिका निभाती नजर आई। योगी जी की सरकार ने महाकुम्भ को सफल बनाने के लिए कई योजनाओं और प्रयासों को क्रियान्वित किया। महाकुम्भ के दौरान करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु और पर्यटकों की सुरक्षा और सुविधाएं सुनिश्चित करना एक महत्त्वपूर्ण चुनौती थी। योगी सरकार ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए। प्रयागराज, जहाँ महाकुम्भ का आयोजन हुआ, वहाँ भारी पुलिस बल की तैनाती, सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ड्रोन की मदद से निगरानी की गई। इसके अलावा, महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए विशेष टीमों का गठन किया गया। महाकुम्भ के दौरान श्रद्धालुओं के आवागमन के लिए बड़े पैमाने पर परिवहन व्यवस्था की गई। योगी सरकार ने प्रयागराज और आसपास के क्षेत्रों में सड़क नेटवर्क को मजबूत करने के लिए कई परियोजनाओं की शुरुआत की। प्रमुख सड़क मार्गों की चौड़ीकरण, नए पुलों का निर्माण और यातायात व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिए कई उपाय किए गए। रेलवे और बस सेवाओं को बढ़ाया गया ताकि आने-जाने में कोई कठिनाई न हो। साथ ही, विशेष पैदल मार्ग और रैंप भी बनाए गए ताकि श्रद्धालुओं को कोई कठिनाई न हो। महाकुम्भ में बड़ी संख्या में लोग जुटेंगे, ऐसे में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार बेहद आवश्यक होता है। योगी सरकार ने इस दिशा में कई कदम उठाए। महाकुम्भ क्षेत्र में अस्थाई अस्पतालों की व्यवस्था की गई। वहाँ चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराई गईं। इसके अलावा, प्राथमिक उपचार के लिए स्वास्थ्य केंद्र बनाए गए। विशेषज्ञ

डॉक्टरों की टीमें तैनात की गईं। महामारी जैसी स्थिति से बचाव के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित किया गया। महाकुम्भ में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं द्वारा छोड़ा गया कूड़ा-कचरा पर्यावरण के लिए खतरे का कारण बन सकता था। योगी सरकार ने इस पहलू पर विशेष ध्यान दिया है। श्रद्धालुओं को भी जागरूक किया गया। इस बार ऐतिहासिक संख्या के बावजूद सफाई को लेकर श्रद्धालुओं में गजब का अनुशासन भी देखने को मिला। महाकुम्भ स्थल पर स्वच्छता बनाए रखने के लिए 'स्वच्छ भारत मिशन' के तहत सफाई अभियान चलाए गए। कचरा प्रबंधन की बेहतर व्यवस्था के लिए ड्रोन से निगरानी, ऑटोमेटेड कचरा संग्रहण वाहन और स्थानों पर साफ-सफाई के कर्मचारी तैनात किए गए। सरकार का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि कुम्भ क्षेत्र पर्यावरण के अनुकूल और स्वच्छ रहे। महाकुम्भ के बाद सफाई का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बना। महाकुम्भ का मुख्य आकर्षण गंगा में डुबकी लगाना होता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए योगी सरकार ने गंगा के पानी की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए कई उपाय किए। गंगा सफाई और जल संरक्षण की योजनाओं पर काम किया गया। ताकि श्रद्धालुओं को साफ और शुद्ध जल उपलब्ध हो। गंगा के किनारे जल को शुद्ध रखने के लिए नदियों का जल स्तर बनाए रखा गया। जल शोधन संयंत्रों की स्थापना की गई। गंगा नदी के आसपास पर्यावरणीय संरक्षण को बढ़ावा दिया गया। योगी सरकार ने महाकुम्भ में आधुनिक तकनीक का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया। इससे श्रद्धालुओं की सुविधाएं और सुरक्षा दोनों सुनिश्चित की गईं। श्रद्धालुओं को तकनीक के जरिए लंबी कतारों में खड़ा होने से बचाया गया। इसके अलावा, स्मार्टफोन ऐप्स के जरिए श्रद्धालुओं को मार्गदर्शन और अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गईं। गूगल एप की मदद से भी कुम्भ मेला क्षेत्र के रास्तों की जानकारी दी गई। पांच हजार एकड़ में हर रूट पर 6 अलग-अलग पार्किंग स्पेस दिए गए। इसमें 6 लाख बस और चार पहिया वाहन पार्क किए जा सकते थे। भीड़ बढ़ने की संभावना के मद्देनजर आसपास के जिलों (मीरजापुर, भदोही, कौशांबी, जौनपुर, फतेहपुर, प्रतापगढ़, चित्रकूट, रायबरेली) में पार्किंग स्पेस और होल्डिंग एरिया तैयार किए गए। वर्ष 2013 में रेलवे स्टेशन पर भगदड़ में 42 लोगों की मौत हुई थी। उस घटना को ध्यान में रखते हुए मुख्य जंक्शन के साथ नौ अन्य रेलवे स्टेशनों और एयरपोर्ट का विस्तारीकरण भी किया गया। महाकुम्भ, धर्म के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों का भी केंद्र बना रहा। योगी सरकार ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों और धार्मिक आयोजनों को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाओं का खाका तैयार किया था। इस बार महाकुम्भ में प्रसिद्ध संतों और धार्मिक नेताओं के प्रवचन, सत्संग, भव्य भजन संध्या, और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इससे न केवल धार्मिक वातावरण बना बल्कि उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहरों को भी बढ़ावा मिला। महाकुम्भ 2025 में विभागों के साथ सहयोग को बढ़ावा दिया गया। योगी सरकार ने राज्य और केंद्रीय सरकारी एजेंसियों के साथ मिलकर योजनाओं को लागू किया। महाकुम्भ के प्रचार-प्रसार के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल भी बड़े पैमाने पर किया

गया। सोशल मीडिया के माध्यम से श्रद्धालुओं को मार्ग, समय, और आयोजनों आदि महाकुम्भ की महत्त्वपूर्ण जानकारियां दी गईं। यह सुनिश्चित किया गया कि अधिक से अधिक लोग महाकुम्भ में भाग लें और आयोजन सफल हो।

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार के लिए महाकुम्भ–2025 का आयोजन सिर्फ एक धार्मिक कार्य नहीं था बल्कि इसे प्रदेश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा भी बनाना था। योगी सरकार ने महाकुम्भ के आयोजन से जुड़ी स्थायी योजनाओं की शुरुआत की है, जो आने वाले वर्षों में भी लाभकारी साबित होंगी। विशेष रूप से, नदी संरक्षण, ऐतिहासिक स्थल संरक्षण और पर्यटन के दृष्टिकोण से योजनाओं को लागू किया जा रहा है। इससे महाकुम्भ के आयोजन का दीर्घकालिक लाभ मिलेगा और यह उत्तर प्रदेश की धरोहर के रूप में स्थापित होगा। महाकुम्भ 2025 के आयोजन के लिए योगी सरकार के प्रयासों को देखा जाए तो यह प्रमाणित होता है कि सरकार ने न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भी महाकुम्भ के आयोजन को सफलता की दिशा में अग्रसर किया है। सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, यातायात और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रबंधन के साथ–साथ सरकार ने इस विशाल धार्मिक आयोजन को एक सुव्यवस्थित और समृद्ध अनुभव बनाने के लिए कई योजनाओं का क्रियान्वयन किया है। 2025 का महाकुम्भ न केवल धार्मिक महत्त्वपूर्णता का प्रतीक होगा, बल्कि यह राज्य की सामाजिक और आर्थिक समृद्धि को भी बढ़ावा देगा। सबसे बढ़कर यह आयोजन संपूर्ण विश्व को सनातन की निरंतरता, विश्वसनीयता, विशालता और मौलिकता का अनुभव कराते हुए हिंदू समाज की एकता का स्थाई प्रतीक बना है। यह सभी देशवासियों के लिए गौरव का क्षण है। जैसा कि 18 फरवरी 2025 को उत्तर प्रदेश की विधानसभा में अपने अभिभाषण में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने महाकुम्भ की व्यवस्थाओं की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि यह आयोजन जहाँ एक ओर अनेकता में एकता को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर समता और समरसता का संदेश भी दे रहा है, जिससे 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा साकार हो रही है।

परिशिष्ट

परम मोक्षदायिनी प्रयाग की पावन भूमि पर गंगा, यमुना व पौराणिक सरस्वती के संगम क्षेत्र में 12 पूर्णकुम्भों के अन्तराल पर आयोजित महाकुम्भ-2025 ने समूचे विश्वपटल पर भारत की सांस्कृतिक विरासत को जो पहचान दी है, उससे भारतीय जनमानस काफी गौरवान्वित हुआ है। प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ-2025 को सफल बनाने में सुर-लय-ताल की स्वर-लहरियों से स्नानार्थियों, कल्पवासियों एवं अन्य श्रद्धालुओं को मन्त्रमुग्ध करने वाले कवियों, संगीतकारों एवं जानी-मानी हस्तियों के योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। उनके इस योगदान के लिए प्रशस्ति स्वरूप उनके गीतों एवं स्वरों को ज्यों-का-ज्यों प्रस्तुत किया जा रहा है।

1- **महाकुम्भ का महापर्व है,**

हम उल्लास मनाएंगे...
हम कुम्भ की महिमा गाएंगे, हम कुम्भ की महिमा गाएंगे
अति प्राचीन सनातन धारा, कुम्भ से है अस्तित्व हमारा
योग और भक्ति का परचम सकल विश्व लहराएंगे
हम कुम्भ की महिमा गाएंगे, हम कुम्भ की महिमा गाएंगे।
एक तरफ है कुम्भ का मेला, बड़ी ही अद्‌भुत रस्म पुरातन...
और इधर चंद्रोदय मंदिर, सबसे ऊंचा सबसे नूतन
कुम्भ की महिमा गाएंगे, चंद्रोदय भव्य बनाएंगे
हम कुम्भ की महिमा गाएंगे, वृंदावन शान बढ़ाएंगे।
महाकुम्भ का महापर्व है, हम उल्लास मनाएंगे
हम कुम्भ की महिमा गाएंगे, हम कुम्भ की महिमा गाएंगे।।

(महाकुम्भ 2025 के मौके पर भजन सम्राट अनूप जलोटा द्वारा गाया गया मंत्रमुग्ध कर देने वाला ये भजन काफी लोकप्रिय हुआ)

2- **बम लहरी**

बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम-बम लहरी
धूल भभूत लगा माथे पर औघड़ चले गंग नगरी
संग-संग चले है ढोल मजीरे, शंख और चंग गंग नगरी
बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम-बम लहरी
गंगा-अमृत बरसाए-गंगा-तट पर जो आए
गंगा-पावन कर जाए...गंगा, गंगा, गंगा..

औघड़, दानी, ज्ञानी, ध्यानी, सब गंगा तट आते
नर-नारायण भूत मसान, सभी गंगा गुण गाते
आए संगम तीरथ जोगी....ओह...
आए संगम तीरथ जोगी साधु संत या संन्यासी
आके यहाँ सभी कहलाते हैं गंगा तट वासी
छल-छल छलकल, कल-कल करती, लहर-लहर गंगा करती
बूंद-बूंद अमृत प्याली, जीवन घट भरने वाली
मुक्तिवाहिनी गंगा...गंगा-जल से मिल जाए
पानी अमृत बन जाए....गंगा.... हर पाप मिटाए
जीवन रेखा गंगा....बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम-बम लहरी
बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम-बम लहरी
नित्य आचमन करके तेरा, ध्यान धरे हर प्राणि
आरति, कीरत, भजन, कीर्तन गाते सब नर नारि..
नित्य आचमन करके तेरा, ध्यान धरे हर प्राणि
आरती, कीरत, भजन, कीर्तन गाते सब नर नारि...
गो गायत्री की बहना हो...
गो गायत्री की बहना हो, तुम ब्रह्मा वरदान
तुमको पाकर धन्य हुई माँ, भारत की संतान
ऊंचे-ऊंचे शिखर से चलकर, गंगा सागर से मिलकर
मुक्ति की राह बनाती, तुम सबके लिए हो आती
सिद्धिदायिनी गंगा....गंगा को....मन में बसाए
गंगा के....गुण जो गाए... श्रद्धा हो...भक्त कहाए
निर्मल, पावन गंगा।
बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम-बम लहरी
धूल भभूत लगा माथे पर औघड़ चले गंग नगरी
संग-संग चले है ढोल मजीरे, शंख और चंग गंग नगरी
बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम-बम लहरी
गंगा-अमृत बरसाए.......गंगा.....तट पर जो आए
गंगा-पावन कर जाए.....गंगा, गंगा, गंगा.....
बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम-बम लहरी
बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम, बम-बम लहरी

गंगा मईया–गंगा मईया–गंगा मईया–ओ गंगा मईया–
बोलो गंगा मईया की....जय...।।
(प्रयागराज के जाने–माने गायक विदूप अग्रहरि ने प्रसिद्ध भजन गायक अनूप जलोटा के साथ युगल गीत 'बम लहरी' तैयार किया। यह गीत भी महाकुम्भ–2025 के दौरान काफी सुना और पसंद किया गया)

3– **माँ गंगा तुझे प्रणाम**

हर–हर गंगे - हर–हर गंगे - हर–हर गंगे - हर–हर गंगे–हर–हर गंगे–हर–हर गंगे...
माँ गंगा तुझे प्रणाम–माँ गंगा तुझे प्रणाम–तेरी पूजा तेरी अर्चना–तेरी पूजा तेरी अर्चना...
करूं मैं सुबह–शाम, माँ गंगा तुझे प्रणाम....माँ गंगा तुझे प्रणाम...
हर–हर गंगे ... हर–हर गंगे... हर–हर गंगे....हर–हर गंगे.....हर–हर गंगे....हर–हर गंगे...
हो, हो, हो, हो... हो–हो–हो...
तुम शिव की जटा में रहती हो.... ओम नमः शिवाय!
तुम शिव की जटा में रहती हो... तुम इसी धरा पर बहती हो...
जो भी तेरे तट पर आता है, मन वांछित फल पा जाता है....
तेरे पावन जल से ही–तेरे पावन जल से ही–पावन होते चारों धाम
माँ गंगा तुझे प्रणाम.... माँ गंगा तुझे प्रणाम....
हर–हर गंगे......हर–हर गंगे.........हर–हर गंगे........हर–हर गंगे.....हर–हर गंगे...हर–हर गंगे.
हर–हर गंगे.....हर–हर गंगे.....हर–हर गंगे....हर–हर गंगे....हर–हर गंगे...हर–हर गंगे..
तुम जाति–धर्म को ना जानो, ओम नमः शिवाय!
तुम जाति–धर्म को ना जानो, तुम तो सबको अपना मानो
पापी का उद्धार करो तुम ही, भव सागर पार करो तुम ही
तेरे तट से पार उतरे, माँ सीता संग श्रीराम
माँ गंगा तुझे प्रणाम....माँ गंगा तुझे प्रणाम....तेरी पूजा तेरी अर्चना.....तेरी पूजा तेरी अर्चना–
करूं मैं सुबह–शाम, माँ गंगा तुझे प्रणाम...माँ गंगा तुझे प्रणाम...
हर–हर गंगे....हर–हर गंगे.....हर–हर गंगे....हर–हर गंगे....हर–हर गंगे...हर–हर गंगे...
(महाकुम्भ–2025 पर यह भजन प्रसिद्ध भजन गायिका अनुराधा पौडवाल ने गाया है)

4– **ये प्रयागराज है**

प्रथम यज्ञ भूखंड धरा पर आर्य का आगाज है..
प्रथम यज्ञ भूखंड धरा पर आर्य का आगाज है.
है पावन संगम की धरती...ये प्रयागराज है...
ये प्रयागराज है.. ये प्रयागराज है... ये प्रयागराज है... ये प्रयागराज है...

कण-कण में भगवान बसे हैं, पग-पग स्वर्ग से धाम यहाँ...
गंगा, यमुना, सरस्वती के चरण पखारे राम यहाँ...
तीर्थराज प्रयाग है.....तीर्थराज प्रयाग है....तीर्थराज प्रयाग है....तीर्थराज प्रयाग है...
धर्म का ये है राजमुकुट...धर्म का ये है राजमुकुट...सनातनियों का नाज है...
है पावन संगम की धरती...ये प्रयागराज है..ये प्रयागराज है..ये प्रयागराज है...ये प्रयागराज है.
अर्द्धकुम्भ और महाकुम्भ से होता है शृंगार जहाँ, ऋषि और मुनियों को दिखता है अलग-अलग गिरिराज यहाँ
तीर्थराज प्रयाग है...तीर्थराज प्रयाग है...तीर्थराज प्रयाग है...तीर्थराज प्रयाग है...
कल्पवासी और अमृत बूंद...कल्पवासी और अमृत बूंद...सनातनियों का नाज है...
है पावन संगम की धरती..ये प्रयागराज है..ये प्रयागराज है.. ये प्रयागराज है..ये प्रयागराज है.
(इस भजन गीत को प्रसिद्ध गायक आलोक कुमार ने गाया है। यह गीत महाकुम्भ महापर्व की भक्ति का अहसास कराता है)

महाकुम्भ में लोकप्रिय हुए कुछ अन्य भक्ति गीत और भजन

5- **पावन है संगम नगरी**

बड़ी पावन है संगम नगरी, यहाँ छलकी थी अमृत गगरी...
जब सागर का मंथन हुआ था, नाग वासुकि रस्सी बना था
नवरत्न व लक्ष्मी जी निकलीं...यहाँ छलकी थी अमृत गगरी
बड़ी पावन है संगम नगरी, यहाँ छलकी थी अमृत गगरी...
देव-दानव तो सागर को मथते रहे, काल कूट जो निकला तो बचते रहे
कलश अमृत का लाए धन्वंतरी, यहाँ छलकी थी अमृत गगरी
बड़ी पावन है संगम नगरी, यहाँ छलकी थी अमृत गगरी...
हो...हो...हो...हो...हो...हो...अमृत का कलश देव-दानव चाहे
छीना झपटी में दोनों ही छलकाए..., जिद दोनों तरफ से ही पकड़ी
यहाँ छलकी थी अमृत गगरी, बड़ी पावन है संगम नगरी, यहाँ छलकी थी अमृत गगरी
जीत आखिर कमल देवों की हुई, पावन अमृत की यहाँ-वहाँ बूंदें गिरीं
बनी प्रयागराज तीरथ नगरी, यहाँ छलकी थी अमृत गगरी
बड़ी पावन है संगम नगरी, यहाँ छलकी थी अमृत गगरी
बड़ी पावन है संगम नगरी, यहाँ छलकी थी अमृत गगरी...

6- **हर-हर गंगे महारानी**

निर्मल, पावन, अति मन भावन, गंगा तेरी धारा...
पतित पावनी, पाप नाशनी...कहता है जग सारा...

हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...
कल-कल करती बहे धरा पे, तेरा अमृत पानी...
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...
कल-कल करती बहे धरा पे, तेरा अमृत पानी...
हर-हर गंगे महारानी...जय-जय गंगे माँ...हर-हर गंगे माँ...
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे माँ...
गोमुख से निकली गंगा तू लेकर पावन जलधारा...
कामी, क्रोधी, लोभी को भी माँ गंगा तुमने तारा...
पाप नाशनी गंगा माँ, मोक्षदायिनी गंगा माँ...
गोमुख से निकली गंगा तू लेकर पावन जलधारा...
कामी, क्रोधी, लोभी को भी माँ गंगा तुमने तारा...
युगों-युगों से तीनों लोगों में गूंजे तेरी कहानी
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी...
वजू करे मौलाना जल से, पंडित प्यास बुझाता है...
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सबसे तेरा नाता है
पाप नाशनी गंगा माँ, मोक्षदायिनी गंगा माँ...
वजू करे मौलाना जल से, पंडित प्यास बुझाता है...
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सबसे तेरा नाता है
माता कहके तुम्हें पुकारे सारे हिंदुस्तानी
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी... जय-जय गंगे माँ...हर-हर गंगे माँ...
पर्वत, जंगल, मैदानों से बहती हुई गुजरती है
जल तरंग की स्वरलहरी से शिव का वंदन करती है
पाप नाशनी गंगा माँ, मोक्षदायिनी गंगा माँ
पर्वत, जंगल, मैदानों से बहती हुई गुजरती है
जल तरंग की स्वरलहरी से शिव का वंदन करती है

सात सुरों की ध्वनि को सुनकर झूमे औघड़ दानी
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी...
सूर्यदेव भी पहली किरण से गंगा तुझको नमन करें
तेरे तट डुबकी लगा के साधु संत भी भजन करें
पाप नाशनी गंगा माँ, मोक्षदायिनी गंगा माँ...
सूर्यदेव भी पहली किरण से गंगा तुझको नमन करें
तेरे तट डुबकी लगा के साधु संत भी भजन करें
सुबह-शाम तेरी आरती गावें सारे ऋषि, मुनि, ज्ञानी
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी...जय-जय गंगे माँ...हर-हर गंगे माँ...
जो भी शरण में आया माँ, उसका तुमने उद्धार किया
कपिल मुनि से शापित सगर के पुत्रों को भी तार दिया
भक्त भगीरथ की तुमने माँ हर ली सब परेशानी
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी...
धरती की तू प्यास मिटाती, सबके संकट हरती है...
अन्नदाता, धनदाता गंगे, पालन पोज़ण करती है...
पाप नाशनी गंगा माँ, मोक्षदायिनी गंगा माँ...
धरती की तू प्यास मिटाती, सबके संकट हरती है...
अन्नदाता, धनदाता गंगे, पालन पोषण करती है...
धरती के हर जीव पर मईया तेरी मेहरबानी...
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी...जय-जय गंगे माँ... हर-हर गंगे माँ
हरिद्वार, नासिक, प्रयाग में कुम्भ का मेला लगता है...

सभी पंथ के साधु-संत से पावन तट तेरा सजता है...
पाप नाशनी गंगा माँ, मोक्षदायिनी गंगा माँ,
हरिद्वार, नासिक, प्रयाग में कुम्भ का मेला लगता है...
सभी पंथ के साधु-संत से पावन तट तेरा सजता है...
कुम्भ में डुबकी लगाके कटती भक्तों की परेशानी
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी...जय-जय गंगे माँ... हर-हर गंगे माँ
मगरमच्छ पे करती सवारी श्वेत वस्त्र तू धारी माँ
सब जीवों पर कृपा है करती, भक्त जनों की है प्यारी माँ
पाप नाशनी गंगा माँ, मोक्षदायिनी गंगा माँ,
मगरमच्छ पे करती सवारी श्वेत वस्त्र तू धारी माँ
सब जीवों पर कृपा है करती, भक्त जनों की है प्यारी माँ
सब पापों को धोती है माँ गंगे जग कल्याणी
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी...जय-जय गंगे माँ... हर-हर गंगे माँ
अंत समय में गंगा जल जिस नर के मुख में पड़ता है
उसके सारे पाप मिटे, भव सागर पार उतरता है...
पाप नाशनी गंगा माँ, मोक्षदायिनी गंगा माँ,
अंत समय में गंगा जल जिस नर के मुख में पड़ता है
उसके सारे पाप मिटे, भव सागर पार उतरता है...
स्वर्ग की सीढ़ी चढ़ जाता वो, कह गए ऋषि, मुनि, ज्ञानी
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे महारानी...
कल-कल करती बहे धरा पे तेरा अमृत पानी
हर-हर गंगे महारानी...

7- **कुम्भ में जाऊंगी**

कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी

है संगम...जय हो...है संगम...जय हो...तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
गंगा-यमुना-सरस्वती का संगम नींव है, देव मुनिगण वहाँ रहे हैं शोभा भव्य है
वहाँ आए, वहाँ आए...वहाँ आए लाखों संत सखी मैं दर्शन पाऊंगी
वहाँ आए लाखों संत सखी मैं दर्शन पाऊंगी
कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
महिमा कहीं न जाएगी प्रयागराज की, संगम तट पर ऋद्धि बने हर बिगड़े काज की
बड़ा पावन..., बड़ा पावन..., बड़ा पावन...गंगा तीरथ प्रेम से दीप जलाऊंगी...
बड़ा पावन गंगा तीरथ प्रेम से दीप जलाऊंगी...
कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
धर्म, सनातन और संस्कृति भक्ति का मेला
हरि मिलन की पार तरण की भक्तों शुभ बेला
यहाँ होता...यहाँ होता... यहाँ होता पाप का नाश...गंगे-गंगे गाऊंगी
यहाँ होता पाप का नाश...गंगे-गंगे गाऊंगी
कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
कमल सिंह प्रयागराज में अमृत रस बरसे
खाली कोई न लौटेगा माँ गंगा के दर से
खुल जाए...खुल जाए...खुल जाए स्वर्ग के द्वार, भला क्या और मैं चाहूंगी
खुल जाए स्वर्ग के द्वार, भला क्या और मैं चाहूंगी
कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में नहाऊंगी
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...
कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी

कुम्भ में जाऊंगी, सखी मैं कुम्भ में जाऊंगी
है संगम तीरथ राज गंगा में गोता लगाऊंगी...

8- **महाकुम्भ की कथा**

महाकुम्भ की कथा सुनाए, भक्तों सारे ध्यान लगाए...
महाकुम्भ महापर्व है प्यारा, हिन्दू धर्म इसे मानता सारा
महाकुम्भ में जो भी नहाए, पाप सभी उसके मिट जाएं
जीवन में कभी दुःख नहीं आए, जीवन खुशियों से खिल जाए
प्रयागराज है तीरथ पावन, नहाने से मिटती हर उलझन
आशीष देवताओं का मिलता, मोक्ष का रास्ता भी है खुलता
बारह वर्ष के बाद ये आता, आस्था से हर हिन्दू मनाता
पौराणिक कुछ तथ्य बताते, कबसे हम महाकुम्भ मनाते
एक कथा है बहुत ही प्यारी, ध्यान से सुनिए सब नर नारी
एक समय की बात सुनाई, भक्तों अपना ध्यान लगाई
दुर्वासा नामक एक ऋषि थे, क्रोध से इनके सब डरते थे
धरा से लेकर देवलोक तक, इनके नाम से डरते थे सब
क्षण में इनको क्रोध आता था, क्रोध से न कोई बच पाता था
बात है भक्तों एक समय की, इंद्रलोक आए थे महर्षि
इंद्रलोक के पहुंच द्वार पर किसी ने इनका किया न स्वागत
ऋषि को इसपर क्रोध था आया, लेकिन क्रोध नहीं दर्शाया
क्रोध के विष को महर्षि पीकर, इंद्रसभा में पहुंचे ऋषिवर
इंद्रदेव जब देखे ऋषि को, सिंहासन से नहीं उठे वो
सिंहासन पर बैठे-बैठे, प्रणाम इंद्र ऋषिवर को किए थे
इंद्रदेव ने जैसे किया था प्रणाम, झलक रहा उनमें अभिमान
ऋषि ने अपना आशीर्वाद, दिया इंद्र को उठा के हाथ
इंद्र को था लेकिन अभिमान, दिया न इंद्र ने इतना ध्यान
एक वैजयंती माला ऋषिवर, अपने साथ में आए थे लेकर
माला साथ में लाए ऋषि जो, भेंट के रूप में इंद्र को दी वो
इंद्र ने माला ऋषिवर से ली, ऋषिवर को वाणी ये बोली
धन्य हुए हम माला पाए, लेकिन आप क्यों माला लाए
आवश्यकता नहीं थी इसकी, कमी नहीं है यहाँ सुगंध की
ऐसा कहकर इंद्रदेव ने, ऐरावत के गले में डाली

इंद्र के ऐरावत हाथी ने, अपने गले से उसको निकाला
अपने पाँव से उसको कुचला, फेंक के धरती पर वो माला
माला की ये दशा देखकर, ऋषि ने बोला क्रोध में आकर
तुमने किया मेरा अपमान, मिलेगा इसका दुष्परिणाम
जिस वैभव पर अहम है तुमको, क्षण में नष्ट मैं कर दूं उसको
तुमसे सब कुछ छिन जाएगा, पास में कुछ नहीं रह जाएगा
ऋषि ने इंद्र को शाप दिया था, शाप के कारण ऐसा हुआ था
शक्तिहीन हुए इंद्रदेवता, धन-वैभव भी नष्ट हुआ था
जैसे ही कुछ समय था बीता, दैत्य बली थे दैत्यों के राजा
इंद्रलोक पर करी चढ़ाई, देव दैत्य में हुई लड़ाई
इंद्रलोक पर राज जमाया, देवताओं को मार भगाया
देवतागण सभी घबराए, विष्णु जी की शरण में आए
विष्णु जी ने एक सलाह दी, दैत्यों से तुम कर लो संधि
दैत्यों के तुम मिलकर साथ, समुद्र मंथन करिए आप
देवताओं और दैत्यों में अब, संधि दोनों में हो गई जब
समुद्र मंथन किया दोनों, अमृत कलश था निकला उसमें
दोनों ही पीना चाहते थे अमृत, बहस छिड़ गई दोनों में अब
देवताओं ने किया इशारा, कलश को इंद्र का पुत्र ले भागा
उसके पीछे भागे थे दानव, युद्ध हुआ दोनों ही में अब
अमृत दैत्य के हाथ न आए, अंत में अमृत देवता पाए
दोनों में हुई छीना झपटी, कलश से तब कुछ बूंदें छलकीं
छलक के कलश से बूंदें चार, धरती पर गिर गईं एक बार
जहाँ पर बूंदें चार गिरी थीं, धन्य हुई वो चारों ही नगरी
एक उज्जैन दूजे प्रयागराज, तीजे नासिक चौथी हरिद्वार
इन पावन चारों नगरी में, महाकुम्भ का मेला है लगता
बारह बरस के बाद महाकुम्भ, भक्तों की खातिर है लगता
महायुद्ध देवों-दैत्यों का, बारह दिन भक्तों चला था
मानव के लिए बारह दिन ये, बारह बरस के जैसे लगते
इसीलिए महाकुम्भ का उत्सव, बारह वर्षों में है आता
जो इसमें स्नान है करता, उस साधक का पाप है मिटता
प्रयागराज एक नगरी पावन, जहाँ तीन नदियों का संगम

गंगा, यमुना और सरस्वती, सरिताएं हैं ये कहलाती
त्रिवेणी संगम नाम से इनको, नाम से जानते हैं सब भक्तों
जो जन यहाँ करता स्नान, हो जाता उसका कल्याण
संत, ऋषिगण और तपस्वी, नहाने आते हैं लोग सभी ही
चाहे निर्धन या धनवान, करने आते सभी स्नान
कल्पवास का महाकुम्भ में, भक्तों अति उत्तम स्थान है
संगम पर रह करके साधक, इसमें प्रभु का करते ध्यान
वेद-पुराणों ने बतलाया, महाकुम्भ की अद्‌भुत माया
जो इसमें नहाने आता, शुभ रास्ता है खुल जाता
दुःख दरिद्रता कभी न आए, पापी से पापी तर जाता
देवताओं का आशीष पाता, महाकुम्भ में जो भी नहाता
श्रद्धा भाव से जो भी आए, उसका ये नर तन तर जाए
महाकुम्भ की सुनके कहानी, मूर्ख भी बन जाते हैं ज्ञानी

9-**ये महाकुम्भ है**

प्रयागराज के संगम में ये बहती अमृत धारा है
स्वर्ग बना धरती पर जैसे, अद्‌भुत बड़ा नजारा है
डंका बजे सनातन का, अब कोई नहीं विलम्ब है
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
देवों की भूमि भारत ये कहते वेद पुराण हैं
साधु और संतों का भी यहाँ होता सदा सम्मान है
तभी तो कुम्भ स्नान को साधु ही करते प्रारंभ हैं
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
गंगा-यमुना-सरस्वती का पावन संगम कहलाता है
डुबकी लगा ले एक बार जो भव सागर तर जाता है
हो जाएं दुष्कर्म नष्ट सब, सत्कर्मों का प्रारंभ है
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...

है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
पूजा और आरती होती मंत्रों का उच्चारण है
और भक्तों की करे सहायता, चौकन्ना प्रशासन है
सुशासन योगी बाबा का बड़ा मजबूत स्तम्भ है
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
करके कुम्भ स्नान सभी अपना तन-मन पावन कर लो
चंचल बंजारा चाहे भगवन सबके संकट हर लो
सोच सुरेश कहे कलयुग्ग में, सतयुग्ग का आरंभ है
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
है महाकुम्भ, ये महाकुम्भ, ये महाकुम्भ है...
प्रयागराज के संगम में ये बहती अमृत धारा है
स्वर्ग बना धरती पर जैसे, अद्‌भुत बड़ा नजारा है

10-**महाकुम्भ अच्छा लागे से**

गंगा, यमुना, सरस्वती का ये पावन संगम है, भूमि है प्रयाग और संतों का संघ है
धर्म सनातन का मजबूत स्तम्भ है, बारह वर्षों बाद आया महाकुम्भ है, महाकुम्भ है...
पावन संगम तट पे आना, दर्शन साधुओं का पाना, डुबकी संगम में लगाना मन्ने अच्छा लागे से
जानें सारा ही जहान, ये तो पर्व है महान, करना पुण्य और दान मन्ने अच्छा लागे से
हो जाए एक पंथ दो काज, सारे तीर्थों का सरताज, पावन है प्रयागराज, मन्ने अच्छा लागे से
पावन संगम तट पे आना, दर्शन साधुओं का पाना, डुबकी संगम में लगाना मन्ने अच्छा लागे से
जानें सारा ही जहान, ये तो पर्व है महान, करना पुण्य और दान मन्ने अच्छा लागे से
हो जाए एक पंथ दो काज, सारे तीर्थों का सरताज, पावन है प्रयागराज, मन्ने अच्छा लागे से
अमृत की वर्षा जैसे हो रही यहाँ, ऐसा मौका और बोलो मिलेगा कहाँ
करके स्नान सब पापों का नाश हो जहाँ, मनोकामनाएं पूरी होती हैं यहाँ
अमृत की वर्षा जैसे हो रही यहाँ, ऐसा मौका और बोलो मिलेगा कहाँ
करके स्नान सब पापों का नाश हो जहाँ, मनोकामनाएं पूरी होती हैं यहाँ
छोड़ सारे काम-धाम, त्याग ऐश और आराम, करना धर्म पुण्य का काम मन्ने अच्छा लागे से
पावन संगम तट पे आना, दर्शन साधुओं का पाना, डुबकी संगम में लगाना मन्ने अच्छा लागे से
जानें सारा ही जहान, ये तो पर्व है महान, करना पुण्य और दान मन्ने अच्छा लागे से

हो जाए एक पंथ दो काज, सारे तीर्थों का सरताज, पावन है प्रयागराज, मन्ने अच्छा लागे से
मेला लगता पूरे बारह वर्षों बाद है, साधु संतों का मिलता आशीर्वाद है
सत्य है सनातन का ये शंखनाद है, सबसे पहले ये है बाकी इसके बाद है
मेला लगता पूरे बारह वर्षों बाद है, साधु संतों का मिलता आशीर्वाद है
सत्य है सनातन का ये शंखनाद है, सबसे पहले ये है बाकी इसके बाद है
फौजी श्रेष का ये कहना, झूठे फंद में न फंसना, साधु-संतों के संग रहना, मन्ने अच्छा लागे से
पावन संगम तट पे आना, दर्शन साधुओं का पाना, डुबकी संगम में लगाना मन्ने अच्छा लागे से
जानें सारा ही जहान, ये तो पर्व है महान, करना पुण्य और दान मन्ने अच्छा लागे से
हो जाए एक पंथ दो काज, सारे तीर्थों का सरताज, पावन है प्रयागराज, मन्ने अच्छा लागे से

11- **धन्य हो गई योगी कुम्भ में कर स्नान**

बोलो गंगे मईया की... जय हो...
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कर गंगा स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कुम्भ में कर स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कर गंगा स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कुम्भ में कर स्नान
अरे कर गंगा स्नान, कुम्भ में कर गंगा स्नान
मैं तो, हाँ मै तो, मैं तो धन्य हो गई योगी जी कर गंगा स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कुम्भ में कर स्नान
सावित्री माँ के लाल तनै तो कर दिया घना कमाल
पहली बार मन्ने कुम्भ का मेला देखा ऐसा विशाल
मैं तो... मैं तो...मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कर गंगा स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कुम्भ में कर स्नान
प्रयागराज में लगा मेला, हो रही जय-जयकार
दूर-दूर से गंगा नहाने आए नर और नारी
मैं तो... मैं तो...मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कर गंगा स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कुम्भ में कर स्नान
ऊंच-नीच का भेद भाव नहीं, नहा रहे सब एक साथ
आसमान से फूलों की तन्नै करवा दी बरसात
मैं तो... मैं तो...मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कर गंगा स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कुम्भ में कर स्नान
साधु-संत भी खुशी मना रहे, दे रहे आशीर्वाद

साधु-संत भी खुशी मना रहे, दे रहे आशीर्वाद
प्रेम भाव भक्तों में बिखरा इतने वर्षों बाद
मैं तो... मैं तो...मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कर गंगा स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कुम्भ में कर स्नान
देखने इस मेले में विदेशी आए कई करोड़
देखने इस मेले में विदेशी आए कई करोड़
संतराम ने भी इस गाने में दिए छन्द घनजोड़
मैं तो... मैं तो...मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कर गंगा स्नान
मैं तो धन्य हो गई योगी जी, कुम्भ में कर स्नान
योगी आदित्यनाथ जी की... जय हो।

GUIDELINES FOR CONTRIBUTORS

1. Contribution should be submitted in duplicate, the first two impressions of the typescript. It should be typed in font Walkman-Chanakya (Hindi) and in Times New Roman (English) on a quarter or foolscap sized paper, in double-space and with at least one and a half inch margin on the right. Two copies of a computer printout along with a CD are preferred. They should subscribe strictly to the Journal format and style requirements.

2. The cover page of the typescript should contain: (i) title of the article, (ii) name (s) of author(s), (iii) professional affiliation, (iv) an abstract of the paper in less than 150 words, and (v) acknowledgements, if any. The first page of the article must also provide the title, but not the rest of the item of cover page.

3. Though there is no standard length for articles, a limit of 5000 words including tables, appendices, graphs, etc., would be appreciated.

4. Tables should preferably be of such size that they can be composed within one page area of the Journal containing about 45 lines, each of about 85 characters (letter/digits). The source(s) should be given below each table containing data from secondary source(s) or results from previous studies.

5. Figures and charts, if any, should be professionally drawn using such materials (like black ink on transparent papers) which allow reproduction by photographic process. Considering the prohibitive costs of such process, figures and charts should be used only when they are most essential.

6. Indication of notes should be serially numbered in the text of the articles with a raised numeral and the corresponding notes should be given at the end of the paper.

7. A reference list should appear after the list of notes. It should contain all the articles, books, reports, etc., referred in the text and they should be arranged alphabetically by the names of authors or institutions associated with those works.

   (a) Reference to books should present the following details in the same order: author's surname and name (or initials), year of publication (within brackets), title of the book (underlined/italic), place of publication. For example:

   Chakrabarti, D.K. (1997), Colonial Indology: Socio-politics of the Ancient Indian Past, pp. 224-25, New Delhi

   (b) Reference to institutional publications where no specific author(s) is (are) mentioned should present the following details in the same order. institution's name, year of publication (within brackets), title of the publication (underlined/italic), place of publication. For example:

   Ministry of Human Affairs (2001), Primary Census Abstract, New Delhi, pp. xxxviii.

   (c) Reference to articles in periodicals should present the following details in the same on: the author's surname and name (or initials), year of publication (in brackets), title of the article (in double quotation marks), title of periodical (underlined/italic), number of the volume and issue (both using Arabic numerals); and page numbers. For example:

   Siddiqui, F.A. and Naseer, Y. (2004), "Educational Development and Structure of Works participation in western Uttar Pradesh", Population Geography, Vol. 26, Nos. 1 & 2, pp. 25-26.

   (d) Reference in the text or in the notes should simply give the name of the author or institution and the year of publication, the latter within brackets; e.g. Roy (1982). Page numbers too may be given wherever necessary, e.g. (Roy 1982: pp. 8-15).

मानविकी एवं समाज-विज्ञान की अन्तः अनुशासनात्मक शोध पत्रिका

मानविकी

'वर्ष प्रतिपदा', अप्रैल 2025 • वर्ष 16 • अंक 1

ब्रह्मलीन पूज्य महंत अवेद्यनाथ जी महाराज

(18.5.1919 - 12.9.2014)

की पावन स्मृति में

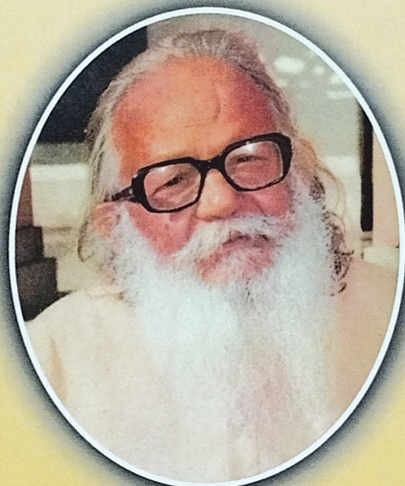

कल्याण सभी जन का मन से
है किया कि सभी अभय होवें,
होकर अवेद्य भी वेद्य धरा पर
संत प्रवर की जय होवे।

ISSN 0976-0830

Published by: **Maharana Pratap Mahavidyalaya, Jungle Dhusan, Gorakhpur (U.P.)**
E-mail: **manvikijournal@gmail.com, mpmpg5@gmail.com**
Designed & Printed at: **R Tech Offset Printers, Delhi**